लेखिका की अन्य कृतियाँ

डार से बिछुड़ी
मित्रो मरजानी
यारों के यार, तिन पहाड़
सूरजमुखी अँधेरे के
हम हशमत

राजकमल प्रकाशन
नयी दिल्ली पटना

ज़िन्दगीनामा - १

ज़िन्दा रुख

कृष्णा सोबती

मूल्य : रु० ४०.००

© कृष्णा सोबती

प्रथम संस्करण : जनवरी १९७९

प्रकाशक : राजकमल प्रकाशन प्राइवेट लिमिटेड,
८, नेताजी सुभाष मार्ग, नयी दिल्ली-११०००२

मुद्रक : सोहन प्रिंटिंग सर्विस,
मोहन पार्क, नवीन शाहदरा, दिल्ली-११००३२

आवरण : इण्डिगो आर्ट्स,
१७ ए, हिन्दुस्तान रोड, कलकत्ता

ZINDAGINAMA : a novel by Krishna Sobti Rs. 40/-

چوں کار از ہماں حیلتے درگزشت
حلالست بُردن بہ شمشیر دست

चूं कार अज़ हमां हीलते दरगुजश्त ।
हलालस्त बुर्दन ब-शमशीर दस्त ॥

जब दूसरे सब रास्ते कारगर न हो सकें तो
जुल्म के खिलाफ तलवार उठा लेना जायज है ।

श्री गुरु गोविन्दसिंहजी

इतिहास/जो नही है
ग्रौर इतिहास/जो है

वह नहीं
जो हकूमतों की
तख्तगाहो मे
प्रमाणो ग्रौर सबूतों के साथ
ऐतिहासिक खातों मे दर्ज कर
सुरक्षित कर दिया जाता है,

वल्कि वह
जो लोकमानस की
भागीरथी के साथ-साथ
वहता है
पनपता ग्रौर फैलता है
और जन सामान्य के
सास्कृतिक पुख्तापन मे
जिन्दा रहता है !

गलबहियों
सी
उमड़ती
मचलती
दूधभरी
छातियों
सी
चनाव
और
जेहलम
की,
धरती
माँ।
बनी
कुरते
के
बन्द
खोलती
दूध
की
बूँदें!
ढरकाने
को।
कनक
के

सुनहली
ढेरों
पर
चमचम
चमकती
मीठी
सजरी
धूप
चाँदी
के
चौंकफूल
पहने
बर्फीली
चोटियों
को
छू
छू
आती
ठण्डी
सुहानी
हवाएँ।
सरसों
के
पीले
खेतों
को
हिलाती
डुलाती
कुलाँचें
भरती
भागीभरे
चनाव
के
अल्हड़

अनोखे
पानियों
पर।
जिसकी
अमृत
की
बूंदों
ने
लहू
के
पेड़
खड़े
कर
दिये
हरे
भरे
खेतों
की
मुंडेरों
पर।
तने
माथे
पर
अक्खड़
तेवर
गेहुंआ
रंग
पर
नखरीली
मूछों
वाले
भारे
गोहरे
चेहरों

पर
गन्दुम
की
इलाही
लाली।
बाहों
के
चूड़े
छनकाती
मक्का
सी
खिली
खिली
शरबती
आँखों
वाली
नयी
ताज़ी
बहूटियाँ।
हँसती
हँसाती
तेवरों
से
रिझाती
खुले
डुले
पंजाब
की
हीरें
और
उनकी
खलन्दड़ी
सहेलियाँ।
धूप

की
बरखा
में
फुलकारियों
की
ओट
कनखियों
से
खुदा
बन
के
खड़े
अड़े
अपने
गबरुओं
को
खेतों
की
देखती
मुंडेरों
पर।
ऐसे
अनोखे
अलबेले
पंजाब
के
दूधिया
घरों
में
रंगली
पीढ़ियों
पर
बैठी
रानियां
धूं-धूं

चरखा
कातती
तकली
पर
महीन
सूत
निकालती
भरी
भरी
गदराई
देहें
मोटे
गाढ़े
खद्दर
पट्टू
में
लिपटी
मेहनत
महारानियाँ।
तपे
तन्दूरों
पर
झुकी
इलाही
गन्ध
भरी
घी
रची
मोटी
वज़नी
रोटियाँ।
पेड़े
उठा
हथेली

से
लगातीं
जिन्दगी
की
सोन्धी
महक
को
लहक
को
जगातीं
लहकाती।
तारों
की
लौ
मुँह
अँधेरे
उठ
बैलों
को
हलों
में
जोत
हर
खेत
का
रखवाला
सदियों
खुले
आसमान
तले
गेहूँ
की
सुनहली
फसलें

उगाता
रहा।
हर
बार
हर
पीढ़ी
का
नौजवान
हर
सुबह
मीठी
देहो
के
गुजल
खोल
खेतों
को
सत्कारता
रहा
हर
शाम
जिसकी
मेहनत
पर
माँ
बहनो
और
साथिनो
ने
अमृत
के
कलश
वार
दिये।

न्योछार
दिये।
तस्वीर
यह
खुदी
रही
मरदाने
पंजाब
की।
उस
सूरमा
तासीर
और
मिश्री
से
आब
की।
हर
धड़कते
दिल
में
फड़कती
बांहों
में
दरियाओं
की
मचलती
लहरों
में।
सब्ज़
जामावर
बनी
इतराती
चौंकाती

सजी
बनी
दुल्हन
सी
धरती
पंजाब
की।
नज़र
परवान
होती
रही
हज़ार
बार
हजार
बार
आसमान
झुका
धरती
पर।
बार
बार
लाख
बार
महका
मोतिया
सेहरो
की
लड़ियों
में।
लाख
बार
ढोल
बजे
बैसाखी

और
लोहड़ी
के।
पांव
की
थिरकन
में
गिद्दे
और
भांगड़े
पड़े।
खेतियों
में
बीज
पड़े
बीज
उगे
और
सोना
रंग
फसलों
के
अम्बार
लगे।
मांएं
अपने
आंचलों
में
उगाती
रहीं
मजबूत
बेटे
बेटियों

पनीरियां ।
पीर
फकीरों
की
मनौतियों
से
बेपअ
लापरवाह
लाड़
प्यारों
से ।
कड़कती
सरदी
और
तपती
लूओं
ने
जिनके
हाड़
मांस
को
कमाया
जिसने
शुंकारते
फुकारते
स्वभाव
को
रचाया
बसाया
जिसने
लड़ाकू
बच्चे
बच्चियों
को

दूध
पिलाया
ऐसी
वीरवाणियों
के
कुरतों
पर
चमकते
रहे
कण्ठे
और
लाखे
रानी हार।
लदी
भरी
बेरियों
तले
चहकती
रही
बच्चों
की
किलकारियाँ
सुबह
शाम
गुच्चियों
से
उछलती
लपकती
गुल्ली डण्डे
और
सौन्ची
की
वारियाँ।
अँगनों

और
पसारों
में
झिलमिलाते
सगुणों
के
बाग
और
फुलकारियाँ।
भण्डार
घरों
मे
मक्का
और
बाजरे
की
महक
से
सराबोर
हर
घर
का
अन्दर
और
बाहर।
वह
खुशहाल
धरती
का
खुशहाल
लिशकारा
आँखों
की
प्यास

बनकर
हर
चौके
की
चंगेरों
के
सगुण
मनाता
रहा।
भर
भर
मूठें
बरतन
भांडों
में
उँडेलता
रहा।
खाने
पहनने
और
जी
भर
भर
जी
लेने
की
रीझें।
जहाँ
का
हर
मेहनतकश
बादशाह
अपने
सिर

फे
साफे
को
अपना
ताज
समझ
सम्भालता
रहा
और
अपने
खेतों
को
अपना
रिजक
समझ
सत्कारता
रहा।
ऐसे
भागीभरे
भरे
पूरे
पंजाब
की
धरती
पर
ज़हर
की
कांगें
घिर
आयीं।
देखते
देखते
लाखों
कदमों

के
हुजूम
उठ
धाये।
चढ़ाइयाँ
बहुत
बार
हुईं
बहुत
बार
हमलावरों
से
सामने।
बहुत
बार
राज
पाट
बदले
पर
चौड़े
सीने
वालों
ने
कड़े
जिगरे
वालों
ने
कभी
हौसले
नहीं
गँवाये
मरने
और

से
खौफ
नहीं
खाये
पर
आज ?
क्या
सूरमाओं
के
सिक्के
बदल
गये !
बाज़ुओं
के
हथियार
लटक
गये !
कन्धे
थचक
गये !
हाथ
मूठों
से
उठे
नहीं।
एक
आवाज़
पर
उठ
खड़े
होने
वालों
की
सोख

गुस्ताख़
लहरें
गुस्से
की
कहाँ
गुम
हो
गयीं !
क्या
कहर
भरी
छातियों
में ?
रब्बी
हुक्म
की
तरह
क्या
ये
फ़ैसले
भी
आख़िरी
हैं !
मुँह
मोड़
लो
अपने
घर
आँगन
से
हरी
भरी
पकी
जड़ो

अपनी
फसलों
से।
पीठ
दे
दो
इस
हरियाली
इस
जड़त
और
इन
नीलाहटों
को।
इस
धरती
पर
अब
हमारे
पुण्य
शेष
हो
गये
हैं।
अब
हमें
बिछुड़
जाना
है
अपनी
धरती
से
अपनी
माँ

से ।
मां
की
मां
से
और
हम
सब
की
मां
से !
इसकी
मिट्ठड़ी
ओट
से
छांह
से ।
इसकी
दूध
भरी
छातियों
से
अब
दूध
नहीं
खून
टपकता
है ।
देखो
पलटकर

मत
देखो

२२ जिन्दगीनामा

चलो
छोड़
चलो
इस
पानी
को
इस
धरती
को
जिसने
हर
मौसम
हर
बहार
मे
सूरमाओ
की
पनीरी
उगायी
थी
जिसने
हाड़
मास
के
इन्सानो
मे
मेहनत
करने
और
जिन्दगी
को
जी
भर

भर
प्यार
करने
की
ललक
जगायी
थी
लौ
लगायी
थी।
अलविदा
आबों
के
आब
को
पंज दरियाअं
के
पजाब
को,
जेहलम
और
चनाब
को।
अलविदा
अपने
पुरखों
की
याद
को
जिनके
खून
और
दूध

बने
बच्चे
अब
फिर
कभी
इस
धूल
में
इस
मिट्टी
में
कभी
नहीं
खेलेंगे
कभी
नहीं
खेलेंगे
इन
ज़िन्दा रुखों
की
छाँह
में
जहाँ
दूर
तक
जमे
थे
रुखे
थे
जड़ों
समेत
इनके
छाँहदार
कबीले।

बेरियों
और
टालियों
तले
दुल्हनों
की
पालकियाँ
अब
कभी
नहीं
उतरेंगी
कभी
नहीं
ठिठकेंगी
दूल्हों
की
साज़
बाज
वाली
घोड़ियाँ
गाँव
की
सीमाओं
पर।
गोरा
लगी
चूनरों
के
टोलों
से
उठते
खिचते
लाड़लों
की

'घोड़ियों'
के
ममतारे
सुर।
फिर
कभी
नहीं
पुकारेंगी
कच्चे
कोठों
से
चिट्टी
दूध
शोख
पंजाब
की
बेटियां।
टप्पों
के
बन्द
जोड़
अपने
माहियों
को
अपने
दिलगीरों
को।
कौन
जानेगा
कौन
समझेगा
अपने
वतनों
को

छोड़ने
और
उनसे
मुंह
मोड़ने
के
दर्दों
को
पीड़ों
को।
जेहलम
और
चनाब
बहते
रहेंगे
इसी
धरती
पर।
लहराते
रहेंगे
खुली
डुली
हवाओं
के
झोंके
इसी
धरती
पर
इसी
तरह।
हर
रुत
मौसम

इसी
तरह
बिल्कुल
इसी
तरह ।
सिर्फ
हम
यहाँ
नहीं
होंगे।
नहीं
होंगे,
फिर
कभी
नहीं
होंगे,
नहीं ।

शरद पुण्या की रात ।

पिण्ड के कच्चे कोठे चम्मचम्म चमकने लगे। दमकने लगे। चान्दनी ने सजरी लिपाई से खेत-खलियान रुख-बूल सब उजरा-उजला दिये।

कूओं के मिट्ठडे सुर झलमल-झलमल हियरो को हुलसाने लगे।

बैटो-वच्चड़ों के साथ घरों को लौटती बलदों की जोड़ियां जी की तृखा-प्यास जगाने लगी।

चूल्हों से उठती उपलों की कच्ची गन्ध हर कोठे हर चौके को महकाने-लहकाने लगी !

रब्बा, ये सोहणे समय मनुक्खो के साथ लगे रहें। सजे रहें।

चिट्टी दूध चाँदनी में तुरकी बुलबुलों की डार पख फैलाये अपनी लम्बी उडारियों पर।

"लो एक और आया झुण्ड।"

है कि टोपा ?"
ा है।"
ाग्ग है।"
जी, ये कहाँ जा रही हैं उड़कर।"
ी के भाई मेहरबान ने बहन के सिर पर लाड़ से दो धप्पे दिये—"सुन
के लिए आयी थी हमारे पिण्ड। चुग्गा जुटाकर अब जा रही हैं तेरी
।
रे वीरा।"
ों गुंथे सिर पर चौंक-फूल डाले मिट्ठी ने भाई की बाँह पर चूंडी भर
दन्दियाँ भकाकर कहा, "मंगनी मेरी हुई है कि तुम्हारी! बताऊँ
री लाड़ी जी का नाम! ढोडो ··ढोडो—"
मरजानी!"
के कोठे पर कुड़ियों-चिड़ियों के झुण्ड खेनू खेलने में मग्न थे। छलांग
ी उनमें जा मिली—

आल थाल
पहला थाल
माँ मेरी के
लम्बे वाल
कूएँ हेठ पानी
माँ मेरी रानी
काढ़ेगी कसीदड़ा
दूध पाय मधानी।

माउन्टीवाले बनेरे पर बाँहें फैलाये लड़के दरिया की सीध देखने लगे।
देखो अल्लाह रक्खे की बेड़ी—वह किनारे लगी शाहों की।"
बीच भंवर में दरिया पीर ख्वाजा खिजर की बेड़ी झूलती रहती है।"
ी को दिखती नहीं है, पर होती जरूर है!"
से आ चन्नी ने भाई का कुरता खींच लिया—"मुझे भी दिखाओ न
दरिया पीर की वेड़ी क्या कभी नहीं डूबती!"
ा जोड दे चन्निये। ख्वाजा खिजर जिन्दगानी के पीर हैं। आप ही
में भँवर डालते हैं और आप ही बेड़ियों को पार उतारते है।"
ी ने आँखें मूंद दरिया की सीध हाथ जोड़ दिये।
ो, देखो, दरिया में दो चांद है। दो नहीं। एक ऊपर आसमान पर और
पानी मे।"
रवाले का लिशकारा है। जा चन्नी, शाहनी से काँसी का कटोरा लेकर

आ। ऊपरवाला चाँद हाथ में पकड़ा दूँगा।"

खुल्लरों की निक्की और पास ढुक आयी—"कटोरा मुँह को ल[...] को पी जाऊँगी।"

जितने कांसी का कटोरा आये, घोलू ने बन्द मूठ में से पँजीरी[...] मार लिया।

खुशबू आते ही लड़कों ने घेर लिया—"तेरी माँ ने पुण्या का [...] क्या?"

"न, निक्की बेबे बाँट रही है। सबको।"

"चलो भई, चलो निक्की बेबे के वेहड़े।"

चाँद कटोरा भूल-भाल लड़के कोठों पर कुलांचे भरते चले।

मोहरे की बेबे से हांक पड़ गयी—"अरे कख न जाये तुम्हारा, नीचे [...] झड़ती है। कहीं रण जीतने तो नहीं जा रहे।"

मंजी पर चौकड़ी मार लाला वड्डे दूध-परांठा खाकर तृप्त हुए ही [...] बानरों की टोली आ प्रकटी।

"बेबेजी प्रसाद। बेबेजी पँजीरी।"

"आओ मेरे बच्चड़ो, आओ! निक्किये, बालड़ों को बैठने को खीड़े [...] आसन दो।"

बेबे निक्की खुश हो-हो गयी—"सांइया, आज सारा आंगन सुच्चा है[...] सजरी लिपाई की है। इनका जहाँ मन आये बैठें।"

लड़कों के पीछे-पीछे लड़कियाँ भी घिर आयीं।

"बेबेजी, प्रसाद खत्म तो नहीं हो गया?"

"न री न। प्रसाद में बहुत बरकत।"

मुँह मीठा कर बच्चे लालाजी के पीछे पड़ गये।

"लालाजी कहानी। लालाजी बुझारतें। लालाजी कोई किस्सा।"

लाला वड्डे की अँखियों के आगे अपने बचपन की पुण्या उतर आयी। हँस-कर कहा, "पुत्तरजी, बाबा पीरनेवाली बेरियों पर बेर झाड़ने कौन-कौन जाता रहा?"

"लालाजी, वहाँ कैसे जाते वहाँ तो कुत्ता पड़ता है।"

"पुत्तरजी, बेड़ियों पर कुत्ता ज़रूर पड़ेगा, नहीं तो बेरियाँ अब तक खाली न हो जातीं। रखवाले न होते बेरियों के तो तभी खाली हो जातीं जब मैं छोटा था।"

सुनारों के सुथरे की आँखें फैल गयीं—"लालाजी, क्या बाबा पीरना तब भी अपने हाथ में लम्बी डांग लिये बैठा रहता था!"

माँ सदके गयी। "अरे, पीरना नहीं, उसका दादा। मेरे बच्चड़ो, रुख वही रहता है, उसके रखवाले बदलते रहते हैं।"

"बेबेजी, हम तो तूत खाने जाती हैं।"

"सो भला धियो, जब तक इस ग्रां का दाना-पानी है खूब खा लो। फिर तो जा बैठोगी अपने सासरे।"

सिर पर किड़े और मीडियों के जाल बिछाये कँवारियाँ शरमा-शरमा हँसने लगीं।

"पुत्तरो, एक बात तो बताओ, ये सेव-बेरोंवाली बेरियाँ भला किसने लगवायी थी।"

लसूड़ेवालों के चोखे ने मुण्डी हिलायी—' लालाजी, मुझ पता है।"

"चन्नमल्ल के भाईया, यह तो तुम्हारा भी पुरखा जन्म पड़ा। बोलो पुत्तर जी, बोलो।"

"लालाजी, अब वाले बावे पीरने के दादे के दादे ने रोपी थी ये बेरियाँ। इन बेरियों के बूटे पंचनद से आये थे। तभी इनका फल इतना मीठा पुट्ट है।"

बच्चों ने रौला डाल दिया—"लालाजी कहानी। लालाजी आख्यान।"

"चंगा। सुनो मेरे बच्चो, जिसे हाजत हो वह हो आय, जिसे प्यास हो पी आये—बीच मे से उठने की मनाही है।"

भाई को कुच्छड में उठाये शानो चुपके से उठी और कोठे-कोठे जनानियों को बुलावा दे आयी: "निक्की बेबे के घर कथा हो रही है। सबको बुलाया है।"

शानो वापस आयी तो सब चाचियाँ-ताईयाँ एक गोटठ मे जुटी बैठी थी।

"सुनो मेरे बच्चड़ो, हर पुत्र अपने पिता का अवतार होता है।"

लड़के अपने-अपने सिरो को छूने लगे, "जी मैं भी···मैं भी···मैं भी···"

कालू उठ खड़ा हुआ—"बेबेजी, मैं भी तो।"

"बलिहारी जाऊँ पुत्र, तू क्यों नही, तुम भी।

"हर बन्दा अपने पिता का अवतार है। याद रखो। अवतार वह जिसके दो हाथ हैं। अवतार वह जिसके दो पाँव हैं। अवतार वह जिसका मुँह-माथा है। धड़ है। आगा है। पीछा है। मेरे बच्चो, अवतार वह जो धरती हल से जोतकर पानी से सींचता है। तृप्त करता है। बीज बोता है। फसलें उगाता है।

"आगे सुनो।

"सबसे पहला अवतार हुआ आदि पुरुख प्रजापति।

"प्रजापति आप ही नर था। आप ही नारी था।

"उसने आप ही अपने को दो हिस्सों में बाँटा।

"एक हिस्से से पैदा हुए बल्द। दूसरे से उत्पन्न हुई गऊ माता।"

"लालाजी, गाय और बल्द दोनों भाई-बहन हैं न!"

"यही समझ लो।"

पल्ली वण्डवाले जगतार का ध्यान कहीं और जा भटका—"न जी, ··

नेर-मादा है। गाय बल्ले से ही तो ब्याही जाती है।"

दूर बैठी जगतार की बहन दीपो ने उठकर दो-चार कसे हाथ भ
पर दिये, "चुप कर, बीच में नहीं बोलते।"

लालाजी ने हाथ से रोक दिया, "बस जातको। आगे सुनो—
"फिर पैदा हुआ रूख। सृष्टि रूख।"

"जी, बल्द और गाय इसकी छाँव में बैठ सकें—इसीलिए न।"

भोलू क्यों पीछे रहे। आगे होकर बोला, "कौन-सा रूख था वह भला
बोढ़, धरेक कि कीकर ?"

मिट्ठी को सूझ गया—"लालाजी, अपने पीपलवाले गू का पीपल
कितनी बड़ी-बड़ी जटाएँ चढ़ी हुई हैं, इस पीपल पर।"

"बच्चो, यह रूख हमारे सब रूखों से बड़ा था। इतना बड़ा कि गउओ
बल्दों के बड़े-बड़े झुण्ड इसके नीचे आ ढुके। इसी सृष्टि-रूख से भूलोक उप
यह पृथ्वी। धरती हमारी। फिर उपजी चार दिशाएँ और फिर बना आकाश।
यह सब कुछ स्थित हो गया तो फिर जन्मा अदिति को दक्ष।

"पीछे-पीछे इसके देवता जन्मने लगे।"

"लालाजी, इस तरह तो हम ही हुए न देवता! हम ही हुए न अवतार!"

लालाजी ने उँगली हिला दी, 'न पुत्तरजी, देवता अपने मुँह से अपने आपको
कभी देवता नहीं कहते। अपने मुँह अपनी बड़ाई कभी नहीं करनी।

"हाँ तो माता अदिति सारे ब्रह्माण्ड की माता है। अदिति आकाश भी है।
अदिति धरती भी है। इन दोनों के ऊपर, आगे जो कुछ भी है वह भी अदिति
है।"

बड़े बेटे चन्नमल का निक्का दादे का मुकाबला करने लगा।

"लालाजी, क्या ध्रुवतारा भी अदिति है? सात तारों की बहँगी भी अदिति
है? मैं भी अदिति हूँ? आप भी अदिति हैं? नदियाँ भी अदिति है? कूएँ भी
अदिति हैं?"

निक्के के चाचा भागमल्ल ने कान मरोड़ दिया, "बीच में नहीं बोलते।"

"जातको, देवताओं की तीन पाँतें हैं—
पृथ्वी के देवता
आकाश के देवता
बड़े मण्डल के देवता।

मदरसे में पढ़ते बोढ़े को चमकार हो गया—"लालाजी, हर कोई मरकर बड़े
मण्डल में ही जाता है। बड़े-वडहेरे जब पूरे हो जाते हैं न तो ऊपरवाले मण्डल में
जा बैठते हैं। आकाश-गंगा के किनारे मंजियाँ बिछी हैं। उन्हीं पर बैठ सब दादे-
माने हुक्का पीते रहते हैं। नानियाँ-दादियाँ पीढ़ियों पर बैठ चरखे कातती हैं।"

बोहे की माँ ने दूर से हाथ दिखाया, "चुप कर।"

"बच्चो, जुग चार होते है—

सोता हुआ कलजुग
छोड़ता हुआ द्वापर
खड़ा हुआ त्रेता और
चलता हुआ सतजुग।"

घोलू की फिरकी फिर घूम गयी—"सतजुग रेलगड्डी पर चढ़ता है, घोड़े पर कि डाची पर ?"

"पुत्तरजी, जुग समय के चक्कों पर चलते है। गाड़ी में सिर्फ जात्रा होती है। सफ़र होता है। भला किसी ने देखी है गड्डी !"

गीडे ने हाँक मार दी—"लालाजी, मैंने देखी है। मामे के ब्याह में मैं लालामूसा गया था।"

"अच्छा है। वाह भला।

"याद रखो, सूरज सारी दुनिया, लोक-परलोक, ऊपर-थल्ले मे, धरती-आकाश में सबसे बड़ा है। वह सच्ची-मुच्ची का महाराज है। ब्रह्माण्ड का सरताज सम्राट है।

"अब सुनो कथा सूरज की धी-धियानी की।

"सूरज ने अपनी धी सूरजा व्याही आकाश को तो सूरज महाराज ने इतनी बड़ी उजियारी चादर धी-जमाई को दी कि वह सारे मण्डल मे बिछती चली गयी।"

चन्नी बोली, "लालाजी, उस चादर का सूत किसने काता था ? सूरजा की दादी ने कि नानी ने ?"

बेबे निक्की बडे लाड़ से हँसी, "ले री सुन बन्तिये, अपनी धी की बात। पूछती है सूत किसने काता था। फिर पूछेगी उसकी जोड़े की फुलकारी किसने काढी थी।"

"आगे सुनो—

"चादर आगे-आगे और उस पर ठुमक-ठुमक गउओ के झुण्ड-के-झुण्ड। पीछे सुनहले रथ में जुटे थे नीले घोड़े। बारह। एक-से-एक बांका। मण्डल का शृंगार।"

चन्नी की छोटी बहन छन्नी सूरजा पर अटक गयी—"बेबेजी, सूरजा की बाँहों में लाल चूड़े, चांदी के कलीरे, माथे पर दौनी, सिर पर चौक-फूल, ऊपर किनारी के बन्दोंवाली ओढनी झम्म-झम्म करती। किस रंग का जोड़ा था भला उसका लालाजी ! लाल कि गुलाबी ?"

"[illegible]।"

बेबे ने सिर पर प्यार फेरा—"ले देख ले लाजवन्तिये, अभी से तेरी धी का दिल अटका पड़ा है चूड़े-कगन में। इरो मग छोड़ जल्दी से।"

"बारह घोड़ोवाला रथ चलता रहा—चलता रहा। आकाश और सूरज लगाते चले चक्कर पूरे ब्रह्माण्ड के चौतरफा।"

"जी, घोड़ों पर पलाने पड़े थे कि काठी सजी थी?"

"मेरी बच्ची, घोड़ों पर पड़े थे सतरंगी पलाने और उनके पैरों में हवा की झांझरें।"

"फिर क्या हुआ लालाजी?"

"सूरजा को लड़का हो गया अगनकुमार।"

बड़ी-बड़ी आंखोंवाली मिट्ठी की मां को कुछ दिन पहले लड़का जन्मा था। मिट्ठी ने फिकर से पूछा, "अगनकुमार रथ में ही जम्म पड़ा? रथ में कैसे लेटं सूरजा? क्या उसमे मंजी बिछ गयी थी?"

चाची महरी ने पीछे से टनोका लगाया, "चुप री, पहले लालाजी की बात सुन।"

मिट्ठी न मुड़ी। "तो और क्या, कोठडी-पसार न होगा तो कैसे जापा पाया सूरजा ने!"

चाचियां-ताइयां ठुड्डियों पर हाथ रखे मन-ही-मन हंसती चलीं। थनों पर फूल उगने लगे।

"पुत्तरो, ध्यान से सुनो। अगनकुमार सूरज वड्डे का धोत्रा और समुद्रों का पोत्रा।"

"जल का पुत्र अगनकुमार कैसे हुआ लालाजी!"

"अगनकुमार का पिता अन्तरिक्ष और समुद्रों का स्वामी। सो जब ज अगनकुमार तो नद-नदियां वह-वह निकलें। पुत्रजी, यह अगनकुमार सब ताओं का सारथि है। और यही अग्नि और यज्ञ का पिता भी।"

"पर जी, अग्नि कहां से उपजी?"

"पुत्रो, अग्नि की उत्पत्ति सुनहले जल से हुई। सोने जैसे रंगवाले सु पवित्र जल से।"

भाई को कन्धे से लगाये भोली बड़ी सोचों में पड़ गयी—"लालाजी, यह सुनहला जल गागर में था कि घड़े में? घट कांसी का था कि मिट्टी का?"

लालाजी बच्ची को देख-देख सिर हिलाते रहे, फिर बड़े लाड़ से बोले, "बेटी, यह सुनहला जल गागर में नहीं, घड़े में था। आदि पुरुख की सत्या देखो। कलश से बूंदें गिरीं गागर में और हाड़-मांस के मनुक्ख बन-बन खड़े होने लगे।"

"लालाजी, चन्न मामा की भी कहानी सुनाओ न!"

"पुत्रो, चन्द्रमा अकेला है। इसका कोई संगी-साथी नहीं। इसके कोई आगे-

पीछे नहीं। जो मनुक्ख अकेला है वही इसे साथी मान लेता है।

"चन्द्रमा ऊपर से धरती को देखकर दिल में बड़ा सन्ताप पाता है। पर अपना दुःख किसी को नहीं दिखाता। सारे दुःख-दर्द अन्दर-ही-अन्दर पीता रहता है। सो चांद का कालजा शिलाखण्ड बन गया है।"

शाहनी ने ठण्डा हौका भरा तो चाची महरी का दिल भर आया।

"लालाजी, सूरज की गरमी चांद को क्यों नहीं पिघलाती ?"

"पुत्री, सूरज अपने-आप ही इससे परे रहता है। जानता है न कि अगर चांद के दु.ख-सन्ताप पिघल गये तो ब्रह्माण्ड में प्रलय हो जायेगी।"

"लालाजी, चनाब में दो चन्न कैसे दिखते हैं ?"

"पुत्तरजी, चांद तो एक ही है। दूसरा तो उसका लिशकारा है।

"लो, यह और सुनो।

"ऊपरवाला चन्न और अपना दरिया चनाब दोनों जुड़वां भाई हैं।

"सूरजा के ब्याह में जब गगन मण्डल में उजियारी चादर पड़ी तो इन दोनों भाइयों की आंखें चौंधिया गयीं। एक इधर भागा, एक उधर। बस दोनों बिछुड़ गये।"

"बेबेजी, इनकी मां ने क्यों न ढूंढा अपने बच्चों को ! वह कहां थी उस वक्त ?"

"बच्ची मेरी, वह चाटी में दूध-दही डाल चुकी थी। मथानी कैसे छोड़ती ! बेटों के लिए मक्खन भी तो निकालना था न !"

"जब दोनों बच्चे खो गये तो उसने मक्खन का क्या किया ?"

"धिए, उसने घी बना लिया होगा।"

"लालाजी, फिर ?"

"बच्चो, दोनों भाई बिछुड़ गये तो एक जहां ठिठका था वहीं-का-वहीं रह गया। दूसरा हिमवान राजा के आंगन में आ गिरा।

"चुप्पा चांद गुमसुम रहकर ठण्डा हो गया और दूसरा जोरावर चंचल टकरा-टकरा बर्फों को तोड़ने लगा।

"हिमवान ने सोचा इसे पाताल पहुंचा दूंगा, पर यह मनचला लौकड़ा परबतों से कूद भागा और हमारी धरती पर अठखेलियां करने लगा। जोरावरी दिखाने लगा।"

अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर
अल्लाहु अकबर
अश्हदुअल्ला इलाह इल्लल्लाह
अश्हदुअल्ला इलाह इल्लल्लाह
अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह
अश्हदुअन्न मुहम्मदर्रसूलुल्लाह
हय्य अलस्सलाह
हय्य अलस्सलाह
हय्य अलल फ़लाह
हय्य अलल फ़लाह
अस्लातु खैरुम-मिनन्नौम
अस्लातु खैरुम-मिनन्नौम

मसीत में अजान और मुर्गे की बांग एकसाथ। उठो!

घूं घूं घूं बेरियोंवाले कूएं के गिड़ने की आवाज़ फज्र के गले में सड़ियां पिरोने लगी।

शाहनी ने करवट ली और आँखें खोल दीं। वाह गुरु! वाह गुरु! । से पहले का सुच्चा अंधेरा ज्यों धरती की ज़िन्द भर-भर माल खींचती हो जि के कूएं से!

अकाल पुरख मानो बन्दों से कहते हों—लो, और लो, और लो! भ जियो और जी भर-भर अमृत पियो! अन्न-पानी दाते का और कर्म करने मनुक्ख। सच्चे पादशाह आपजी के दरबार में कोई कमी नहीं। ऐसा थान-धना अपने हिस्से आया जहाँ दूध-सा अन्न और अमृत-सा जल। बाबा! तेरी मेह तेरी बरकतें!

शाहनी ने टंगने पर पड़ी सूथन झाड़कर पहन ली। कुरते के बीड़े लगाये बाल महेज पुरसे की 'बुक्कल' मारी, टुक शाहजी की बैठक की ओर देखा औ तृप्ताये चित्त पौड़ियों से नीचे उतर गयी।

ड्योढ़ी का दर ठेला ही था कि हवेली का ऊँचा कपाट खुल गया।

"सलाम शाहनी!"

"सलाम चन्ना। बड़ी-बड़ी उमर हो।"

शाहनी ने नित की तरह तबेले की ओर झाँका। आले में जलते दीवटे की लौ दोनों घोड़े तैयार पर तैयार।

दोनों चिट्टे शाहज़ादा और बादशाह चौकन्ने हो ऐसे हुंकारे ज्यों बादल

शहबाज़। लाक्खा गुलखेर शाहनी को देख हिनहिनाने लगा। जैसे पूछता हो—क्यों शाहनी, दरिया तक जाना है!

न रे, न!

शाहनी पुचकारकर आगे बढ़ी—

"मल्ला, इस लाक्खे का मस्तक तो ऐसा कि कोई डाडा सूरमा हो।"

"शाहनी, इसकी शंसा न करो। बडा खच्चर है। जान ले कि इसकी काठी पर सवार कोई नया है तो फिर उसकी ख़ैर नहीं। पार के साल आलमगढवाले शाह को महीना-भर टकोर करनी पड़ी थी। ले उडा सवार नया समझ के और मोजोकी वाले टिब्बों से नीचे दे पटका।"

शाहनी हँसी—"सो तो ठीक है नवाब खां, पर तुम्हारा तो इससे दिन-रात का साथ है। पहचानता है न तुम्हें!"

नयी ब्याही बीर-कुण्डी भैंस ने शाहनी को देखा तो तिखूंटा छुड़ाने लगी।

शाहनी ने थापड़ा दिया—"बड़ी गुस्सील है री तू! क्यों नवाब, इसका अफ़रावा कम हुआ!"

"कल आम का आचार और आजवायन डाल दिये थे इसके गतावे में!"

शाहनी ने बच्छड़े को सहलाया—"मल्ला इसकी भी मश्क भरी है। आज इसे खट्टी लस्सी मे तेल दो। कोई अड़ होगी तो छुडक जायेगी।"

बेगोवालवाली नयी झोटी ने सिर उठाया।

"इस मलका महारानी की उदासी कम हुई? कल दूध दिया था न!"

"थोड़ा ही। बच्चा चुंघता रहा। ज्यों ही अलग किया, दूध ऊपर चढा बैठी।"

शाहनी ने कोने में जा गाय की खुरली देखी। हाथ फेरकर पुचकारा—"यह है न हमारी कपिला गाय।"

"शाहनी, इस चित्र-मित्री के भुलावे में न आना। बड़ी जालिम तल्ख है। बच्छा ज़रा-सा ओझल हुआ नहीं कि सावी पीली हो जाती है।"

शाहनी ने बच्छडे को सहलाया—"सदके जाऊँ, दो-चार दिन ही मां की लहर-बहर है, फिर तो खैरों से डाली लग जायेगी।"

"रब्ब खैर करे। टपोसियां मारने लगा है। मां से छूटा और बल्द हुआ।"

तबेले के अँगना पीतल के लशलश करते पंजसेरी गड़वों की कतार देख शाहनी ने आंखें झुका ली। दाता तेरी मेहरों से।

शाहनी तबेले से बाहर निकली तो सिर पर अभी भी टिम-टिम तारों की लौ थी।

मियें खां के तबेले के आगे दित्ते पहरुए ने खँखारा।

बोढ के पुराने पेड़ पर पाखियों के झुण्ड-के-झुण्ड। एकाएक शाहनी के पांव ठिठक गये। साक्खयात अम्बड़यालवाली। ब्याह का लाल सुब्बर, गोटेवाला जोड़ा और नाक में सोने का लोगड़ा!

भय की फांस शाहनी के कलेजे आ खुबी। आज इतने बरसों बाद—वाह गुरु···वाह गुरु···

शाहनी ने सिर झुकाया और हाथ जोड़ दिये—"पुरखिन, तुम जीने-मरने से परे शाहों के घर की मालकिन। मैं तो चेरी तुम्हारे हुक्म से।"

शाहनी ने छिन्न-भर बाद आंख खोली तो पहले दीखी पीठ अम्बड़यालवाली की, फिर बिना पैरों की परछाईं वह जा और वह जा!

शाहनी के पांव ऐसे भारी हुए कि किसी ने तन-मन की सत्या खींच ली हो! बेरियोंवाले कूएँ पर पहुंचते ब्राह्म-मुहूर्त्त की उषा सूरज भगवान का तिलक करती थी। हाथ जोड़कर सिर नवाया—"धन्य प्रभु, तुम्हीं ने यह दिन-रात का मेल मिलाया। ब्रह्माण्ड का खेल रचाया।"

गाद्दी पर बैठे लद्दे ने शाहनी को ओलू की ओर बढ़ते देखा तो दोतही से मुंह-सिर लपेट लिया।

कपड़े उतार शाहनी ने वाढ़ पर रखे और ओलू में बैठ मल-मल नहाने लगी। ठीकरी से पांव रगड़े। मुंह पर पानी के छींटे देते-देते फिर आंखों पर अम्बड़यालवाली का परछावां उतर आया।

बाल खोल गीले किये और मन-ही-मन कहा 'बहना री, तेरी नज़र रहे सीधी। इस मुंह-चित्त से तेरा नाम कभी मैला नहीं किया!'

स्नान कर शाहनी ने कुटिया जा माथा टेका। पाठ सुना तो चित्त को चैन मिला।

वाह गुरु, आप जानी जान हो।

हाथि कलम अंगम मसतकि लेखावती।
उरझि रहियो सभ संगि अनूप रूपावती।
उसतति कहनु न जाई मुखहु तुहारिया।
मोही देखि दरसु नानक बलिहारिया।
सत सभा महि बैस कि कीरति मैं कहां।
अरपी समु सीगारु एहु जीउ समु दिवा।
आस पिआसी सेज सु कंति विछाइऐ।
हीरहा मसतकि होवै भागु त साजनु पाइऐ।
सखी काजल हार तम्बोल सभै कुछ साजिया
सोलह कीए सीगार कि अंजनु पाजिया
जे घर आवे कन्तु त समु कुछ पाईए

हीरहा कन्ते वाझु सीगार सभु बिरथा जाइए
जिस घर वसिआ कन्तु सा वड्ड भागणे
तिस वणिया सभु सींगार सोई सुहागने।

सतबचन, सतबचन! चैन पा शाहनी ने गुरु के दरबार में शीश नवाया और देहरी की धूल माथे लगाकर घर की ओर चली!

धर्मशाला के आगे अराइयों की कतार सब्जी-वकसर का ढेर लगाये बैठी थी।

"आओ शाहनी, आओ!"

"इधर आने दे री जवाहरां, बोहनी करने दे। लो शाहनी, यह कनके की मूलियां!"

हुक्म बीबी ने सरसों का साग आगे किया—

"लो शाहनी, रुत का मेवा हरा करो!"

फ़तेह ने काले भट्ट बैंगन आगे किये—

"शाहनी, पराहुनों के लिए ही ले जाओ!"

शाहनी ने साग-सब्ज़ी झोली में डलवा टुक अलिये की धी फतेह को देखा। चिट्टा दूध कश्मीरी रंग। पीडा गदराया बदन। ओढ़नी तले जवानी का थर बँधा हुआ। देखकर जी की भूख उतरे।

"फ़तेह री, ज़रा आना दुपहरी हवेली की ओर।"

"हल्ला शाहनी!"

उत्तरी वण्डवाली नज़ाम बीबी ने टोहका दिया—"हे री, झोली बड़ी कर ले। जा रही हो तो घाटे में क्यों रहो!"

फतेह मिश्री-मिश्री हँसने लगी। फिर हाँक दी—"ले लो री नरम मुलायम टीडे, कनके की सोहली मूलियां!"

नज़ाम बीबी ने छेड़ा—"अरी सहेलड़ी, सब लूणा-मीठा कच्चा-पक्का आज ही न बेच जाना। अभी उम्र पड़ी है री!"

शाहनी जंजघर के सामने पहुंची तो सिर का कपड़ा माथे तक खींच लिया, तावली-तावली लोहारों की गली से हवेली जा निकली।

ड्योढ़ी से ऊपर चढ़ी तो आले में जलता दीवा देखकर पाँव थिड़क गया। सहमकर आवाज़ दी—"मांबीबी, चित्त-चेता तो ठिकाने है! दिन-चढ़े दिवटे लौ जलती छोड़ दी! सूरज उगे पीछे दीपक की निरादरी! बाशाना महाराज! सूरज बिन दिन सजे, न दीपक बिन रात!"

शाहनी चूल्हे-चौके लगी तो करतारो ने कांसी के बरतन नितारकर चौंके पर लगा दिये।

शाहनी ने दूधारने से उपले की आंच ली और दरलाटों पर उपले रख चूल्हा लहका दिया।

दूध की कड़ाही ऊपर रखकर करतारो को चेताया—"ध्यान रखना करतारो, दूध धुआंखा न जाये।"

शाहनी दूध बिलोने बैठी तो मथानी के दूधीले सुर चौके के दर-भित्तियों से लग-लग गूंजने लगे। दूध-कणियां चाटी से बाहर बिखरने लगीं।

चाटी मे हाथ डाला। अभी तो कणी काच्ची है।

"करतारो बल्ली, कोसा पानी देना। ज़रा छींटा दूं।"

मक्खन के पेड़े तोलबाज़ मे रख चाटी पर सुथरा पोना डाला कि शाहजी आन पधारे!

आसन पर बैठे तो शाहनी बोली, "मैंने कहा जी, सयाले-सयाले अपनी कूई पर नहा लिया करें।"

'न शाहनी, अपने स्नान तो अपने पुरखे दरिया मे ही। तुम ऊपरवाले चह्बच्चे पर क्यो नहीं नहाती! बेबे के रहते तो सजी रहती थी यह कूई।"

शाहनी बूझ गयी शाहजी को मां याद आयी है। सुरगों में वास बड़ी सरकार का। नहाती देह की झाल न झेली जाती थी। जितना रूप उतना दक्ख!

"यहीं जहां बैठी हो न शाहनी, सुबह प्रभाती मां का चूड़ा छनकारने लगता। मैं और काशी पड़े-पड़े पसार में पहाड़े याद करते। बस, मथानी के थमते ही मक्खन-मिश्री को पहुंच जाते। बेबे मक्खन पर मिश्री-बादाम बुरकती, ऊपर से लस्सी का कटोरा पी तबेले मे जा घोड़े खोल लेते!"

"जी, कहां गयी वे सुहावनी घड़ियां और कहां गयी वे मीठी परछाइयां! रब्ब खैर करे शाहजी, मैं तो आज बड़ा डर गयी हूं!"

शाहजी देखते-भर रहे।

"आज मुंह-अंधेरे मसीत के मोड़ पर बड़ी को देखा। झलमल करते कपड़े। साक्षयात देह ओढ़कर—"

शाहजी उठ खड़े हुए—"दूध-दही संभाल ज़रा अन्दर आना शाहनी।"

शाहनी ने परात बेसन की भर दी। घी का मोन दिया। चुटकी-भर नमक और आजवायन।

"करतारी, बेसन ढीला न करना। गूंधकर तन्दूर तपा दे। मैं अभी आयी।"

'शाहनी, सोचा तुम भरम करोगी—तुमसे कहा नहीं। पिछले पक्ख गौरजा मुझे भी सपने में आयी।"

शाहनी डर से कांपने लगी।

"शाहजी, सपने में कैसे दीखी—कुछ बोली ?"

शाहजी जाने कैसी अँखियों से शाहनी को देखते रहे जैसे दो-चित्ते हों—कहें न कहें !

"मुझमें बड़ी तृष्णा थी। साथ रही इने-गिने दिन। जब सपने में दीखती है बस यही—शाहजी, मेरा जातक कहां है ! कुल वंश मे कौन आगे, कौन पीछे ! कहकर हँसती है और ओझल हो जाती है !"

शाहनी रोने लगी। बार-बार आंचल से आंखें पोंछने लगी।

"इस घर रब्ब का दिया बहुत-कुछ, पर मैं ही इम्तहान मे खरी नहीं उतरी।"

"शाहनी, प्रालब्ध के आगे किसी का बस नही। मेरी मानो तो उनके कुनबे से किसी लड़की का व्याह अपने हाथों कर छोड।"

छन-भर को तो शाहनी का दिल दहल गया। फिर झटपट सँभलकर कहा, "मेरी मानो शाहजी तो एक लड़का गोद ले लो !"

शाहजी शाहनी की पीड समझे। पुचकारकर कहा, "ये निर्णय-फ़ैसले-तुम्हारे हाथ। जो मन को रुचे वह करो।"

वचन सुन शाहनी का मन परच गया। सिर हिलाकर बोली, "सयानफ आपकी, मैं किस जोग।"

शाहजी कुछ कहने को हुए, फिर ओठो-ही-ओठों में हँसकर रह गये।

शाहनी चौकन्नी हुई—"शाहजी, मुंह तक आयी को क्या रोकना।"

"शाहनी, एक बार आंखें मीट लेने पर कौन अपना और कौन पराया। कुल चलाने को बेटे की लोक-रीत चली आयी है।"

शाहनी का दिल तो ऐसा उमडा कि रो-रो शाहजी के गले जा लगे, पर ठिठकी-सी अपने धनी को देखती चली।

फिर कदम उठाया। दलहीज़ तक जाकर मुड़ी—"बेसन की तन्दूरी खा लोगे न !"

सिर हिला दिया—हां।

शाहजी तकते रहे और शाहनी दलहीज लाँघ गयी। चाल मे संकल्प ऐसा कि विधि से निपटारा करना हो। आलमगढियों की यह धी जितनी ऊपर उतनी अन्दर। मां शाहनी की ऐसी कि निरी नर्म छाल और पिता ऐसा कड़ा कठोर कि पीडा पक्का तना हो पुराने बोढ़ का !

लोहडी से पहले शाहनी ने 'त्रिजन' बिठाया, तो पिण्ड में धूम मच गय
नीचे के तद्दरे लीप-पोत सुथरे किये। दिन-भर शाहों के घर गहम
गहमी मची रही कि घर मे कोई ढंग पज्ज हो।

त्रिकाल वेला शाहनी ने दिवटों मे तेल डाल वाती की। एक-दूजे को लौ
दिखायी, और हाथ जोड सिर नवाया—

दीवा जले
दुश्मन टले
रिजक का छींटा
अन्दर पड़े
दीपक तेल
बिछुड़े मेल

चाची महरी ने लौ को हाथ जोड माथे से छुआ लिया—

सन्ध्या पडी उतारनी
मेरे सगले दोक्ख निवारणी।

"बच्ची, तनिक नीचे चल के देख तो ले। तद्दरों मे लड़कियों के चरखे समा तो जायेंगे। हाँ मांबीबी, रजाइयोंवाली कोठरी से खेस-दोत्तहिया तो निकाल ले। लड़कियाँ पाले ही न ठर जाये।"

मांबीबी दुपहर से चाची के फरमान सुन रही थी। खीझकर कहा, "अपनी अकल-बुद्ध पर तो भरोसा नही चाची, पर तेरी जनर पर जरूर है!"

"हल्ला री हल्ला, तेरा किया-धिया भी देख लेते हैं। आ बच्ची, जरा नजर मार ले!"

तीनों नीचे पहुँची तो हाथ की लौ से लम्बा दालान हल्के-हल्के लिशकारे-सा झिलमिलाया। सर्द-खाने की दीवार पर हरे-गुलाबी रंग फड़फड़ाने लगे।

शाहनी खुश हुई—"यह क्या पूर दिया मांबीबी!"

चाची ने पास ढुक देखा—"वाह री वाह! क्या मोर-मोरनी, यह पछियो का सैयद कबूतर। कबूतरी। ये कूजों की डार!"

"चाची, और देखो। यह मोतिये का बूटा। ये बल्द। यह झोटी। और लो यह चाँद-सूरज की जोडी।"

शाहनी की प्यासी अँखियो मे जोतें जलने लगी। मन के त्रास को लम्बा स्वास ले अन्दर खीच लिया।

चाची महरी ने शाहनी के कन्धे पर हाथ रखा—"बच्ची, कुछ ऐसा भासता है इस पल कि घर मे त्रिजन से पहले ही लाल तेरा तद्दरों मे खेलता हो।"

शाहनी ने दलहीज की ओर मुँह मोड लिया।

मांबीबी चाची से बोली, "सोंह रब्ब की चाची, मैं आंकने से पहले बिचारने

न बैठी थी। ये सोहणी मूरतें आप ही हाथ से पुर गयी है। अल्लाह बेली हमारी भी सुनेगा न !"

"उसी के हजूर में अर्ज कर, इस घर भी बच्चड़े खेलें।"

"चाची, बाबा फ़रीद जिनकी अल के पुरखा हों उन पर क्यों न मेहर होगी ! क्यों न झोली भरेगी !"

शाहनी ने ऊपर बनेरे पर से आवाज दी, "मांबीवी, मेरे चरखे की माल तो देख ले, त्रकला तो नही कहीं विगा पड़ा !"

"हला शाहनी !"

मांबीवी चाची महरी की ओर मुड़ी—"चाची, शाहनी को किसी पीर-सयाने के पास ले जाओ। खबरे क्या बात है। कँई दिन से अन्दर-बाहर जाती शाहनी अँखियां पोछती रहती है। लम्बे-लम्बे स्वास लेती है। चलती है तो ऐसे जिवें कोई ऊँची मुंडेर फलांगनी हो !"

ठुड्डी पर हाथ रखे चाची सिर हिलाती रही।

दोनों ऊपर पहुंची, तो हाथ मे गेंदे का फूल लिये करतारो हँस-हँस इतराती थी !

"क्यों री, सद्दा दे आयी है त्रिजन का ?"

"कहां चाची, अभी तो उत्तरी वण्ड सारी पड़ी है।"

"सिरसड़ी ! अरी कुछ भूख-प्यास हो तो खाकर सद्दा पूरा कर आ !"

"शाहनी दूध मे मखाने डाल दे तो जी हरा हो जाये।"

चाची ने झिड़क दिया "क्यो री, यह तो कह फुल्ल गेंदुवा कहां से ले आयी ?"

"कुटिया से लायी हूं, कुटिया से।"

"मरगयी, वहां किसे बुलाने गयी थी ?"

निशंक हो करतारो ऐसे हँसी कि हाथ से बरतन चमकाती हो—"चाची, मैं कुटिया गयी थी माथा टेकने। भाईजी ने प्रकाश किया, वाक निकाला। धूल माथे लगायी तो झोली में यह फूल आ गिरा। समझ ले चाची, मेरे हक मे कोई अच्छी बात होनेवाली है।"

"नासहोनी, अरी लगाम दे मुंह पर।"

करतारो चाची से मशकरी करने लगी—"मुझे कोसती हो, मेरे साथ की तो क़बीलदारनें होकर बैठी है !"

"चुप री, कौन तू वीस-बाइस के पेटे में पहुंच गयी है। सहारा कर। तेरा भी लाढ़ा किसी दिन आन पहुंचेगा।"

"चाची, मैं तो कब के ड्योढ़े-सवाये पार कर चुकी !"

नवाब और मुहम्मदीन दूध-भरे गड़वे ऊपर ले आये।

"लो शाहनी, खैरो से झोटी ने आज कोई टंटा-बखेड़ा नहीं किया। हां करतारो बहन, बडी लहरो-बहरो में! दूध का कटोरा मुंह से लगाये बैठी हो; क्या पैंडा मारकर आयी हो!"

"वीरा, मैं तुम्हे नही सुहाती पर मेरे कटोरे को नज़र न लगा!"

शाहनी ने पुचकारा, "उठ करतारो, त्रिकालां उतर आयी। दिलबाग को साथ ले जा और बुलावा पूरा कर आ।"

"दिलबाग से माथा कौन खपायेगा शाहनी! दोनों कानो से डोरा है।"

चाची ने झिड़का, "चुप री, डोरा है तो कौन रास्ते मे उसने अर्ज़ी-परचा करना है। जा।"

"चाची, मुहम्मदीन को मेरे साथ कर दो तो हवा-सी परतूंगी।"

"नवाब तेरा वैरी है क्या!"

"चाची, आज है मेरा अच्छा दिहाडा। नवाब के लग्न हैं ठण्डे। इसकी तो हर सयाले मंगनी टूटती है।"

चाची हंसने लगी—"तेरे फेरो से पहले इसने निकाह पढा लिया, तो मुंह छिपाती फिरेगी।"

निकाह के नाम से नवाब की रूह टपकने लगी—"तेरे मुंह घी-शक्कर, चाची!"

"मैंने कहा मांबीबी, कोई साक-रिश्ता दौलतगढ से ही ले आ। चूडी-छल्ला शाहनी घड़वा देगी, और देग-चगेर शाहजी कर देंगे। अरे, पल्ले हो दमड़े तो सोने से पहले सजे ब्याह।"

मांबीबी नवाब की ओर देख-देख हंसी—"जम्मीवाले जुलाहों के घर नवाब का कोड़ी फेरा। कोई है उम्मीद इस जोड़-मेल की!"

नवाब झेंप गया।

"मांबीबी, सैयदा बड़ी टपोनी चंचला है।"

चाची ने घुड़का—"कुछ शरम कर रे। उमर हो गयी घोड़ों को टपोसियां लगवाते और ले-देके एक लड़की तेरे काबू नहीं!"

नवाब ने पैरीपोना बुला दिया—"चाची, तेरी सीस-असीस से ही बेडा पार होगा।"

हुसैना नायन आयी तो खोजों की रेशमा का चरखा साथ ले आयी।

शाहनी बोली, "हुसैना री, ज़रा बावो मिरासन को आवाज़ देना। आकर रौनक लगायेगी। कुड़ियो का दिल खुश करेगी।"

नीचे लम्बे पसार मे चरखों और पीढ़ियो की क़तारें सज गयी। बीच में रुई से भरी पिटारियां।

नाक-कानो से दमकती नयी ब्याहियां। भर-जवानी मे गोता मारने को तैयार

पुलपुली गोरी मुटियारें और उठती उम्रें खिलखिल करती कँवारियाँ।

चाची महरी ने हांकें मार-मार मांबीबी-करतारो को थका दिया—"दानोंवाली चंगेर उठा ला। गुड़ की पिन्नियोंवाली भी। सीलम के मुरण्डे भूल आयी? शीरनी का थाल कहाँ है?"

लड़कियाँ हँस-हँस मांबीबी को छेड़ने लगी—"मांबीबी, अपनी सोहणी मोहनी मूरत भी चंगेर में सजा ला!"

"हाय री, आप ही आ गयी। अपना ढोल भी लेती आती। हम भी देखते।"

"कुड़ियो-चिड़ियो, आज तो खैरों से भोरे बैठी हो। हँसो-खेलो, पर कातना न भूलो।"

लड़कियाँ खिडखिड हंसती रहीं और एक-दूजे को धौल-धप्पे देती रहीं।

शाहनी अपनी पीढ़ी पर बैठी तो रेशमा चहकी, "सूत नहीं, शाहनी पट्ट कातती है।"

"क्यों न हो! जो पट्ट पहने सो पट्ट काते।"

नूरी ने झुमका दिया, "क्यों री रेशमा, तुम्हे भी अराइयों की राबयाँ की लत लग गयी! देखा-देखी बन्द जोड़ने लगी!"

शाहनी ने नजर फिरायी—"क्यों री, राबयाँ और फतेह क्यों न आयी? जा री नियामते, नवाब को आवाज़ दे। बहनों को बुला लायेगा। कहना चरखे लाना न भूलें।"

नियामते उठी ही थी कि दोनों बहनें आन पहुंची।

"बड़ी उम्रें तुम्हारीं! चरखे लायी हो न!"

"जी शाहनी—

रूई बिन पिंजन कैसा
चरखे बिन त्रिंजन कैसा!"

चाची महरी ने खुश होकर बलैयाँ ले ली—"मैं सदके, मैं वारी राबयाँ। कैसे-कैसे बोल जोड़ लेती हो! हां री मांबीबी, छाजों में छ:-छ: पूनियों के छोपे डालो।"

चिड़ों की बिम्बो चहकी, "अरी माँ-बाप जाइयो, अपनी-अपनी पूनी छुओ। दित्ते पहरुए की डांग खड़कने लगी है।"

घूं···घूं···घूं···घूं···एक संग चरखों के हत्थे घूमने लगे और तक़लों से तार निकलने लगे।

"देख री देख, शाहनी की तार देख। महीन ऐसी कि सिर का बाल हो।"

चाची ने घुड़क दिया—"चुप री, अपना-अपना देखो और अपना-अपना कातो।"

लड़कियाँ हँसने लगी—"चाची, हम क्या नज़र लगाती हैं!"

पिटारियों में सूत के मुण्ढे मटकने लगे। 'छोपों' के ढेर हल्के होने लगे। कम्मो बोली, "बहना बाबो, क्यों चुप बैठी हो! शाहनीजी, बाबो से कहो—कुछ सुनाये!"

गुच्छा-भर आवाज़ें चहकीं—"'हीर' बाबो, 'हीर'!"

चाची महरी बोली, "सुना री लड़कियों को, पर ज़रा होली। तेरे गले का टंकार तो, री, छत्त हिला देता है। खैरों से ऊपर मर्द पौढ़ते हैं।"

बाबो बुड़बुड़ाने लगी, "लो सुनो लोको, चाची की शर्तें! गला भींचकर तो सयापे के 'वैण' नहीं उठते, यह तो सुक्खी-सान्दी बारसशाह की 'हीर' है!

"कत्ता क़लाम माफ़—तख्त हज़ारे के राँझे मरद ने सयालों की हीर खिला-रुला डाली—वारसशाह ने हीर गा-गा मुहब्बतें सजा डाली—निगोड़ अपने ही मर्द हीर के सुर नहीं पहचानते। अरी शाहनियो, हीर सुनकर तो ज़िन्द जाग उठती है!"

"हुआ री हुआ, अब नखरे न कर। कवित्त उठा।"

"लो सुनो लड़कियो—

"डोली चढ़दया मारियाँ हीर चीकाँ
मैंनू लै चलो बाबला लै चलो वे
मैंनू रख लै बाबला हीर आखे
डोली छत्त कहार नी लै चलो वे।
साडा बोलना-चालना माफ़ करना
पंज रोज़ तेरे घर रह चले वे।"

शाहनी की अँखियाँ भर आयीं। माँबीबी चुप-चुप हौंके भरती रही। मद-माती चिड़ियों की आँखें बाबो के मुखड़े पर टिकी रहीं।

चाची महरी वैराग से बोली, "रब्ब राक्खा! रब्ब रखया करे तो आशिकी परवान चढ़े।"

अरोड़ों की मिहन्दी हँसने लगी—"लो, और सुनो चाची की! प्रीत-प्यार के किस्सों में रब्ब का क्या जोड़!"

"चुप री, छोटा मुँह बड़ी बात! रब्ब रखवाला न हो आशिकों का तो मुहब्बतें तोड़ नहीं चढ़तीं। चनाव पार करनेवाले घड़े ही गल जाते हैं।"

बाबो ने सुर उठाया—

"अव्वल हमद खुदा दा विरद कीजे
इश्क़ कीता सु जग दा मूल मियाँ
पहलाँ आप ही रब्ब ने इश्क़ कीता
ते माशूक़ है नबी रसूल मियाँ।
इश्क़ पीर फ़क़ीर दा मरतबा ए

मरद इश्क दा भला सजूल मियाँ
इश्क वास्ते रब्ब हबीब उत्ते
कीता आप फुरकान नजूल मियाँ।"

बाबो ने लडकियों को गुमसुम देखा तो टिटकारी ली—"कँवारियो-ब्यानियो, अभी से क्या चिन्ता-फिकर ! जो आँख वक्त से लड़ेगी वह अल्लाह के फजल से तोड़ भी जा चढ़ेगी।"

पूनी की आधी तार थामे हरबंसो टुकर-टुकर बाबो की ओर देखती चली।

"किन सोचों में मेरी लाडो, अभी तो खैरों से बौर ही नही पडा !"

हरबंसो ने हथेलियो में मुँह छिपा लिया।

रसूली ने हँस-हँस मुरकियाँ हिलायी—"बाबो बहनी, हमेश यह छेड़छाड़ अच्छी नही।"

माँबीबी ने चाची महरी के माथे पर तेवर देखे तो हाथ से वर्ज दिया—

"छोड़ दे यह प्रसंग। कुछ और गा।"

बाबो ने सुहाग उठा लिया—

"बीबी चन्नन के ओले ओले क्यों खडी
जी मैं तो खड़ी थी बाबुलजी के पास
बाबुल वर ढूँढियो !"

न किसी की मँगनी, न ब्याह और बाबो मरियम सुहाग गाने चढ़ आयी !

शाहनी उठी और बाबो के लिए दूध का छन्ना भर लायी।

"लो, घूँट भर जरा गला हरा कर लो। इतने लड़कियाँ कुछ गाती-सुनाती हैं।"

किसी ने आवाज लगायी—

"फ़ातमा बहन, नबी रसूलवाली घोड़ी गा दो। बडी मनभानी है।"

"मेरे वीर का सेहरा आया
कोई माली गूँथ ले आया
उत्ते छत्र नबी का सोहने
सालयात शाह अली।"

इतना गाकर फ़ातमा मुकर गयी।

"सहेलियो, कौल रहा। फिर कभी गाऊँगी। भाई मेरा परतेगा न होटी मरदान से, तो पूरे टंकार से गाऊँगी।"

चाची महरी ने बलैया ले डालीं—

"सातों खैरें तेरे भाई की धिया ! शौकत अपना छाती सजाकर आयेगा !"

"और मेरा भी चाची—"

जफ़र की सबसे निकड़ी बहन अकबरी बोली।

शाहनी का जी उमड़ आया। गुड़ उठा अकबरी की झोली
"जियें वीर सब बहनों के री! मुंह मीठा कर मेरी बच्ची!"
"सुनते हैं री, जफर चीना पहुँचा हुआ है!"
"न चाची, उसकी पलटन लण्डीकोतल है। वज़ीरियों से
है।"

"खैर सदके, गज्ज-वज्ज के आयेगा।"
"सुनाओ री, कोई सोहणी-महीवाल गाओ। फ़तेह री, सुनाओ
काले झग्गे पर मटमैली ओढ़नी। मुखड़ा-तस-वीर घड़ी हुई।
हाथ चरखे की हत्थी पर, दूसरा ठुड्डी-तले—

"यार-यार तू पई पुकारनी ऐ जेकर जान कहे महीवाल
मेरा रब्ब रसूल ते खास काबा जे इमान कहे महीवाल
वाली वारस जो जहान अन्दर मेरा खान कहे महीवाल
फज़ल शाह मार तो जान फिदा मेरी, मेरा तान कहे महीवाल

सबकी आँखें शेखों की बहारां की ओर उठ गयीं। तत्ती सैयद
बैठी दिल रँगरेज से!

"अरी राबयां कुछ तू भी सुना न! लोक-जहान धूम है, तू बैत
है।"

शाहनी राबयां की सूरत पर रीझती रही। अराइयों के घर ऐसा
राबयां अनझिपी आंखो शाहनी की ओर देखती रही, ज्यों शाहनी
हो। लौ का बूटा हो।

"लो सुनो—

दीवे की मिट्ठी लौ चरखे रांगले
गोरी चिट्टी मुटियारें जैसे चान्नने
पोह माह के पाले डाडे ठारने
मोरे बैठी शाहनी सूत सँवारने।"

"रखत साईं की राबयां री, तुम्हे रब्ब की देन! कुछ और
बच्ची!"

"शाह कूएँ की माल
भर-भर पानी लाय
शाहनी घर की रानी
मनचाहा बरताय।"

सुनकर शाहनी का अन्दर-बाहर हुलस गया। गले से मुगतियोंवाल
उतार हाथ में थमा दिया।
"ले ले री, ...

हनना।"

कुड़ियाँ ले-ले हाथ में देखने लगी।

"हाय री, किस पटोवे ने पिरोया! बीच में हौदंदली का सुच्चा पत्थर। ाबी री, तेरा सौदागर घोड़े पर चढ़ पहुँचा ही समझो। शाहनी के हाथों तेरा गुण चंगा हुआ!"

एकाएक चाची महरी ने आँख की छड़ घुमा दी—"अरी गुड़ की भेलियो, ुम्हारे चुगने के लिए चोग की चंगेरें भरी हैं। कातोगी नहीं तो खाओगी क्या! ाथ न चला और जबान ही चली, तो सूत की पिटारियाँ खाली भिनभिनायेंगी ौर देख उन्हें तुम्हारी माँएँ बुड़बुड़ायेंगी। तुम्हें कातने को भेजा है त्रिंजन में।"

भाई रे बांके चीरेवाले
दमड़ा तो इक देता जा
माह माई दे के जा
दाड़ी फुल्ल पवा के जा

"बस, जातको! यह लो फल-फूल और खलासी करो।"

"खलासी कैसी!

"हमें तो टके चाहिएँ।"

"न टावरो, झूठी बात।"

"हमें तो पैसे चाहिएँ।
हमें तो धेले चाहिएँ।"

"लो, हाथ करो—"

बच्चों में शोर मच गया—"धेला···पैसा···दमड़ी···"

छोटे-छोटे लड़के-लड़कियाँ टोलियों में घर-घर ढूकने लगे। जिस घर शादी-याह हुआ हो, नयी-नवेली आयी हो, जिस घर झोली लाल पड़े हों, उनके दर पर जाकर—

भरी मिले भई भरी मिले
लाडलो की भरी मिले।

शानो की माँ ने टोली में अपनी धी को देखा तो लड़की की चुटिया खींच एक ौल दिया—"कख न जाये तेरा कोई वक़्त-वेला भी! मार सात दिन से पिण्ड

का चप्पा-चप्पा गाह मारा। न रोटी-टुक्कर की होश। न कामकाज की। चल पसार की लिपाई कर।"

बच्चों ने हेक उठा ली—

"करेगी भई करेगी
शानो लिपाई करेगी
झोलियां पसार लो
शानो की मां भरेगी!"

"दुर्...दुर्...परे हटो!"

शानो की मां ने बच्चों को ऐसे भगाया ज्यों कुत्तों को फटकारती हो। बच्चे हँसने लगे—

"आयेगी भई आयेगी
इस घर लोहड़ी आयेगी
आनेवाली लोहड़ी पर
शानो की मां गोदी में
बच्चड़ा खिलायेगी
अरी तेरा गीगड़ा जीये
शानो का वीरडा जीये!"

शानो की मां के तेवर घुलकर थनों में पसर गये। झूठ-मूठ का गुस्सा दिखाया—"अरे, कुछ शरम करो! लाज करो!"

मूठ-भर मक्का के दाने बांट दिये और शानो को बांह से पकड़कर झुकका दिया—"सिरमुनिया, इन खरदियों के साथ तू भी बकारा करती है।"

फिर लड़की को लाड से धक्का दिया—"जा, मैं आप ही लिपाई कर लूंगी। त्रिकालों से पहले-पहले लौट आना।"

दलहीज पर खड़ी-खड़ी शानो की मां बच्चड़ों का शोर सुनती रही—

"अरी तेरा लाडला जिये
सात खैरों से जिये।"

पसार में जा लकड़ी की पेटी खोली और अपने ब्याह का सुच्चा जोड़ा मंजी पर फैला दिया।

हाय री, तुझे पहले चित्त-चेता न आया। इसे धूप लगा देती। खैर सदके, निगोड़ी यह आंख तो फड़कती है। क्या पता शानो का माईया बरस-बरस के दिन आ पहुंचे पटना साहिब से!

छातियों-तने बेफिक्री से पसरे पेट को छुआ, सिर पर हाथ फेरा। शुक्र है सिर में घी नहीं रचाया। शानो का माईया इस गन्ध पर बड़ा नाक-मुंह चढ़ाता है। वाहगुरु किये जना आन ही पहुंचा तो सिर धोने को हाथ-पैर तो

न पड़ जायेंगे।

त्रिकालाँ उतरते ही गाँव में लोहड़ी की गहमा-गहमी मच गयी। भरियों के ढेर जंजघर में इकट्ठे होने लगे।

खुले आँगन में उपलों के ऊँचे ढेर पर लकड़ियों के अम्बार सजने लगे। पहले मुण्ड, फिर कीकर-बेरी के गट्ठर। ऊपर कपास की सूखी मनछिट्टी।

खुशियोंवाले घरों से चंगेरें आने लगीं। मक्का के फूल। गुड़ की भेलियाँ। रेवड़ियाँ। चावल-तिल की त्रिचौली। कच्ची लस्सी के गड्डवे और मूलियों-भरी पच्छियाँ।

शाहों के घर से उम्दा नायन मेंहदी-घुली परात उठा लायी। साथ आयीं गरमाई की चंगेरें। मसाले का गुड़ और उड़द की दाल की पिन्नियाँ।

जोतें जगते ही जनानियों-बच्चों का शोर जंजघर को गुंजाने लगा।

कोई नवेली पहन आयी सलमे-जड़ा मखमल का लाल जोड़ा। किसी ने पहना हरे रंग की क़ाबुली दरियाई का। किसी ने बाँकड़ी के जालवाली गुलाबी ओढ़नी किसी ने मूँगिया खद्दर पर टँका सुनहरी गोखरू। कोई सास की प्यारी ओढ़ आयी फुलकारी चीरमे फूल की। कोई बबोये और कौडीवाली।

काले कोचछड़ों की गोरी वहूटी पार्वती बन्दोवाली केसरी ओढ़नी ओढ़ इतरा-इतरा जाये।

मोहरसिंह की घरवाली छुहारेवाली बूटी का जोड़ा पहन निक्का-निक्का शरमाये।

सुनहरी भरावे बाग फुलकारियाँ ओढ़े देवरानी के साथ शाहनी पहुँची तो सभा का सिंगार बन-बन फबने लगी।

बड़ी-बुढेरियाँ चिट्टे दुपट्टों मे पकी खेतियों-सी अपने-अपने टब्बर-क़बीलों के संग ऐसे दिखें जैसे कोई भू-दात्रियाँ हों।

जंजघर के दालान मे मंजी-पीढियों पर बैठीं सजरी माँयें ओढनियों-तले बच्चों को दूध चुंगाने लगीं। छोटे-बड़े घूंघटोंवाली दुलहनें क़भी टीका सँवारें, कभी सिंगारपट्टी। कोई पाउँचियों के कुल्फ कसे, कोई नन्द-जिठानियों से घिरी सहेलियों को चुपके-चुपके सैनत मारे।

मोहरे की बेबे बहू को साथ लिवा लायी, और सबको दिखा-सुना पुचकारकर बोली, "बैठ मेरी बच्ची, ज़रा हँस-खेल।"

बचनो ने टुक कपड़ा ऊपर उठाया तो नवेलियाँ मुँह-ही-मुँह में हँसने लगीं।

प्यारे की बहू मुँहफट्टी मे मशहूर। "बेबे, अच्छा किया जो यहाँ ला बिठाया। तुमसे दूर बैठेगी तो कुछ तो जी बहलेगा इसका।"

बेबे ने अनसुना कर अपनी जोड़ीदारों की तरफ़ मुंह मोड़ लिया।

"बधाइयाँ, बधाइयाँ! मोहरे की बेबे, सुखी-सान्दी बहूटी को पहली लोह… आयी है।"

देवे खुल्लर की बहूटी गुलाबी जोड़े में, गहने-गट्टे से लदी-फदी घूंघटा निका… आयी तो बारी-बारी सब सयानियों को पैरीपौना किया।

चाची महरी ने माथा चूम लिया—"मैं बलिहारी जाऊं! है री, रंग ऐसा उजला कि हाथ लगे मैला हो।"

शाहनी ने सिरवारना कर झोली में गरी-छुहारे का सगुण डाल दिया। खुल्लरों की बेबे को आवाज़ दे कहा, "बेबे, बहू क्या है चन्न चढ़ा हुआ है!"

"तेरे पैरों का सदका धिया!"

हाथ में पकड़ी गुत्थी से पनघड़ निकाल शाहनी बच्चों का सिरवारना करती जाये।

छोटी शाहनी बिन्द्रादयी ने मायावन्ती के लड़के को गोद में लेकर पूछा, "क्यों री, इसका मुहान्दरा किस पर!"

"दादी पर है, अपनी दादी पर। इसी से खुश होती है सास मेरी!"

साक्षयात स्वयंभू और सतरूपा-से बड्डा लाला और निक्की बेबे आन विराजे। सब छोटे-बड़े उठ-उठ पैरीपौना करें और आशीषें लें।

क़ाबुलवाले बधावासिंह और बुद्धसिंह। गण्डासिंह, गुरुदित्तसिंह, ताया तुफ़ैलसिंह। अरबी घोड़े-सा लश-लश करता शाहों का चचेरा भाई तारेशाह। तीखे-तराशे नक्श शाहजी के और मुग़ल तातारी रंग!

छोटे भाई काशीराम का चौड़ा मस्तक और चेहरे पर कहीं-कहीं निशान पहाड़ोंवाली के।

कृपाराम की मूंछें ऐसी कि मुंह पर दो पाखी बैठे हों।

पिण्ड-का पिण्ड बड्डे लाला की मंजी के पास आ ढुका।

"लालाजी, नहरों से भागमल्ल, रणमल्ल, विक्रममल्ल, लाब्बामल्ल क्यों न आ गये!"

बेबे निक्की झट दिशी बोल उठी, "पुत्तरा, सारी प्रजा के नाम गिना डालेगा क्या! खैर सदके, बड़ा चन्नमल जो माजूद है। छोटों को अपनी जिवियों पर रंग लाने दो!"

कृपाराम ने आगे झुक निक्की बेबे के घुटने छू लिये—"बेबे, मेरे कहे का भरम न करना। तुम्हारा पुत्र हूँ। पिण्ड-का-पिण्ड तुम्हारा है तो भला भागमल्ल-विक्रम-मल्ल को किसी की नज़रें क्यों लगने लगीं।"

बेबे ने पीठ पर हाथ फेरा—"सच कहता है कृपाराम, सच कहता है। तुम मेरे पास हो और वे दूर। कहते हैं न, अँखियों दूर सो दूरों दूर!"

कृपाराम ने बेबे को बाँह से घेर लिया—"बेबे, न वे दूर न तुम दूर! पूरा पिण्ड जुड़ा है आँखों के आगे, पर तार तुम्हारे दिल की वही बजती है! दूर कैसे हुआ?"

बेबे निक्की ने डाडे लाड़ से धमकाया—"छोड़ रे, तंग न कर मुझे।"

बच्चे बेसवरे भूखी नज़रों से चंगेरों पर टिकटिकी लगाये कभी आपस में धौल-धप्पा करें, कभी माँओं के आँचल खींच खाने को माँगें।

शाहजी ने पान्दे को हाथ से संकेत दिया तो पगड़ संभाल पान्दाजी आसन पर जा विराजे।

कच्ची लस्सीवाली गड़वी को मौली बाँधी। थाली में फूल-खील रखे। मूली। तिल। गुड़। और गहर-गम्भीर स्वर मे कहा, "माँओ-बहनो, लोढ़ी का भागी भरा त्योहार सदा-सदा!"

त्रिचौलीवाला थाल निक्की बेबे के हाथ मे दे 'भरी' के अम्बार को अंगार दिया।

"बधाइयाँ बहनो, बधाइयाँ! लो पान्देजी, पहले अपने महँगे जातकों की भरी डले।

"लो जी, यह नौनिहालसिंह की!

यह चिड़ों के धोत्रे की!

यह खुल्लरों के पोत्र की!

यह सुरजनदान के पुत्र की!"

निक्की बेबे ने सतपुत्री वीरांवाली को आगे कर दिया—"चल धिये, लस्सी डाल प्रक्रिमा कर अग्नि-देवता की। जुग-जुग आता रहे यह कर्मोंवाला दिहाड़ा। झोलियाँ भरती रहें। दुल्हनें देहरी चढ़ती रहें। सतपुत्रियाँ होती रहें।"

लकडियों के ऊँचे ढेर में कपास की सूखी मन्छिटी की लपटें आसमान की ओर कौंधने लगी। तारों की छाँह में बैठे जने-जनानियाँ, बच्चे-बूढ़े ऐसे भासें जैसे लहू के पौधे हों। और अपने-अपने टब्बर-कबीलों के झुरमुट झुण्ड की छाँह में बेफिक्री से बैठे हों।

बच्चो के होठो मे घुलती गुड़ की टुकड़ियाँ। मक्का के दाने फाँकती हुलारों-भरी मस्त कँवारियाँ।

घोलू की माँ ने लड़के को दबादब गुड़ चुगलाते देखा तो सिर पर करारा धौल दिया—"मुढ, रात चमूने लड़ेंगे तो रुढी पर फेंक आऊँगी।"

दादी ने पोते को गोद में खींच लिया—"छोड री, आज तो कर लेने दे खुशी इसको मन की। यह भागी-भरा दिहाड़ा कभी-कभी!"

कद निकाले हुए गबरू लड़कों का जमावड़ा एक तरफ।

घुर्लो और गोण्डा उठा-उठा भरियाँ आग में डालने लगे।

हवा में आग की सुर्ख-सुनहरी लपटें ऐसे हिलोरें लें ज्यों मनमौजन ज़िन्दगी उन्हें हवा के हिण्डोलों में झुलाती-डुलाती हो।

माँओं-दादियों से हटकर कँवारियों की गजबी टोली कभी दाने फाँके। कभी गलबहियाँ दे-दे आपस में दूर खड़े लड़कों को देख-देख इतराये। लजाये।

हरबंसो ने तृप्ता को हाँक दी—"ले आ री, एक मूठ बादाम-किशमिश की मेरे लिए भी।"

शिब्बो ने झुमका दिया—"धम्मान चढ़नेवाली है क्या?"

"देर है री, अभी देर है।"

"फिटे मुँह!" हरबंसो ने चकोटी काट ली।

"हाय री, मैं मर गयी!"

सामने खड़ा सुनारों का गुलज़ारी तिर्छी अँखियों से देखने लगा तो देखता ही रह गया।

किसी सयानी ने झाँका तो झिड़की दी—"अकल कर री, गले का कपड़ा नीचे कर!"

ढोल की थाप पर लड़कों की टोली से ऊँची गहरी-गुंजान आवाज़ निकलकर लोढ़ी की रात को थरथराने लगी—

"सात पुत्र सत्रह पोत्रे
पाँच धियाँ पन्द्रह पोत्रे
नित नित धोवे माँ किच्छी
टब्बरों के पोतड़े।
भरे खट्टी कमाई खायें कर्मावालड़ियाँ
नित-नित ब्याह रचायें कर्मावालड़ियाँ।"

अमृतवेला शाहनी और चाची महरी ने घर की कुंई पर स्नान किया। सूथने भगो पहन ऊपर घुस्से लिये और हवेली के आगे आन खड़ी हुईं।

घोड़ा दे शहबाज को नवाब ने पलाना डाला, 'तंग' कसा और ड्योढ़ी के सामने ला खड़ा किया।

शाहनी ने मन-ही-मन वाहगुरु का नाम लिया और छुटिमारी मुटियार की तरह घोड़े पर चढ़ गयी। हाथ दे चाची को ऊपर खींचा और घोड़े की लगाम थाम ली। ऊपर देख तारों की लो समय सही किया और गाँव से बाहर निकल चली।

संग-संग पैदल आते नवाब की जुत्ती की आवाज़ घोड़े की टाप से रल-मिल अनोखा शोर करने लगी।

रुढ़ी पर कोई मेमना कूदकर आगे-आगे भागने लगा।

"चाची, देख यह बच्छड़ा। चार-छः दिन से ज्यादा नहीं। क्या कुलाँचें भर-भर कूद रहा है!"

"बच्ची, मियें खाँ की झोटी सुई है।"

चाची महरी ने मन-ही-मन दाते के आगे अर्ज़ की—"गरीब-नवाज़, आपके हुक्म की बन्दी आपके दरबार में शीश झुकाने आती है! मेहरांवाले, तेरी नज़रें हों सीधी तो शाहों के घर भी झण्डा फिरे।"

गाँव से नीचे उतर रेत का सूखा ढाड़ा पार किया तो मीठे-महीन सुरों में शाहनी बाबा फ़रीद की वाणी उच्चारने लगी—

"पहले पहिरे फुल्लडा
फलु भी पछा राति
जो जागन्हि लँहिन से
साँई कन्नो दात।
दाती साहिब सन्दिया
किये चले तसु नालि
इकि जागदे न लहन्हि
इकन्हा सुत्तियाँ दे उठाल।"

गाते-गाते शाहनी का कण्ठ भर आया। धन्य-धन्य बाबे की वाणी! धन्य बाबा तेरी सत्या!

घुर कलेजे से बादल उमड़ा और शाहनी की आँखों से फुहार पड़ने लगी।

नवाब ने अल्लाह पा कोक याद किया। शाह की सुच्ची कमाई जिसने शाहनी जैसी घरनी पायी। मलका महारानियों-सा सिदक और रब्ब के नाम से प्रीत।

दोत्ताल पार कर रतीले कण्डों से घोड़ा ऊपर चढ़ा तो सूरज महाराज आसमानी बुरजी से झाँकने लगे थे। सब्ज़े पर बिछी त्रेल मोतियों-सी चमकने लगी। सरसों के पीले खेतों के बनेरे-बनेरे कंगनी, चीना और चलोधरा। सिंगी और मैना की क्यारियाँ धूप में चमक-चमक आँखों को रिझाने लगीं।

सामने के पहाडों से आती बर्फानी हवाएँ जैसे धूप के छाज छाँटने लगी हों।

शाहनी और चाची महरी ने एक साथ शीश नवाये। अदालतगढ की सीध शेख़ सद्दो के मीनारे आँखों में उभरने लगे थे।

नवाब ने सलाम किया तो चाची महरी बोली—"मन्नत माँग—दिल की मुराद पूरी हुई तो शेख़ सद्दो के दरबार चिराग जलाऊँगा।"

शाहनी ने लगाम खींच घोड़ा रोक लिया। नीचे उतर ख़ानकाह की दलहीज़

पर माथा टेका, तेल के लिए पैसे रखे और अदालतगढ़ की ओर चल पड़ी।

"मैंने कहा बच्ची, हाकमा के यहाँ घड़ी-भर ही ठहरेंगे। दुपहरी भी चल दीं तो शाम जलालपुर जा पहुँचेंगे। और कल तड़के बाबा फ़रीद के दरबार।"

धूप में चमकता सुघड़ाई से लिपा-पुता हाकम बीबी का सजरा आँगन दूर से पहचान में आता था।

"हाकमा बड़ी सुच्चजी है री। देख, लिपाई ऐसी कि तख्ती पोती हुई हो।"

खुरली के पास आ खड़ी हुई दोनों।

उपलों में धुआँ निकलता था और दूधारने में दूध की हँडिया पड़ी थी।

चाची ने हाँक मारी—"हाकम बीबी, बाहर तो आके देख। तेरे घर पराहुने आये हैं।"

हाकम बीबी का घरवाला गुलाम रसूल बाहर आ खड़ा हुआ कि कच्चे कोठे सज गये।

ऊँची काठी। गन्धुमी रंग पर सलोनी मूँछें और गर्दन को सजाते बालों के छत्ते।

"सलाम करता हूँ चाची! सलाम शाहनी!"

"जीता रह पुत्तर, जवानियाँ मान।"

चाची ने आशीष दी।

"क्यों जी गुलाम रसूल, मेरी बहन हाकमा कहाँ?"

"अभी हुई हाजर।"

हाकमा बीबी ठसियोड़ी चाल बाहर निकली तो गब्ब कोठरी का जातक दुपट्टे में से चोर-अँखियों झाँके।

"आओ शाहनी, आओ! खैरों से आज तो सजरी धूप बनकर आन पहुँची।"

फिर चाची को सलाम किया।

"साईं जीवे, रब्ब पुत्तर दे!"

"सच मानना शाहनी, तड़के कनाली में आटा डाला तो टुकड़ी-भर बाहर जा गिरा। दिल में आया ज़रूर कोई पराहुना चला हुआ है! सदके तुम्हारी आमद पर।"

शाहनी ने गुलाम रसूल की ओर देखा—"शाहजी सुख-सन्देश पूछते थे। क्यों री हाकमा, मेरे बहनोई को हमारे ग्राँ के राह-रास्ते ही भुला दिये!"

गुलाम रसूल का माथा हँसने लगा। "सच कहती हो शाहनी, यह मुँहबोली बहन तुम्हारी जब तक जच्चयोड़ी बनी रहेगी, मेरा घर से निकलना कोई न!"

चाची महरी की नज़रें हाकमा के लाचे के इर्द-गिर्द टिकी रहीं। फिर हौले से पूछा, "क्यों धिया, आठवाँ कि नौवाँ!"

हाकमा शाहनी से आँख चुराये रही।

शाहनी हँसने लगी—"लाज काहे की। मैं अपने बहनोई से ठट्ठा-ठलोकड़ी करूँगी, तुमसे नहीं। क्यों जी गुलाम रसूल!"

गुलाम रसूल की कलमें धूप में चमकती रहीं।

हाकमा की हमसाई सत्तभ्रावी पराहुनों का सुनकर मिलने आन पहुँची।

"हाकमा, तन्दूर लहकने लगा है। मैं गर्म-गर्म रोटी उतारकर लाती हूँ!"

"न री न मेरी बच्ची, हम खा-पी के चली थीं।"

सत्तभ्रावी अड़ गयी। "अन्न-पानी दाते का। परवान करो। मैं सूखे मुंह न जाने दूंगी!"

चाची ने शाबाशी दी—"जीती रहो। धिये, हम गले-गले तक भरी हैं। पैदल पैंडा मारके आती तो कुछ भूख लगती!"

गुलाम रसूल ने बीच-बचाव किया—"चाची, सत्तभ्रावी भरजाई न मानेगी। रोटी नहीं तो दूध-लस्सी पी लो।"

हाकमा को शाहनी की पसन्द याद हो आयी, "शाहनी को कहवा पिला दो।"

सत्तभ्रावी बड़ी खुश। "अरी मेरे मुँह तक आयी थी। सत्ती के भाइये ने सावी पत्ती भद्रवाह से भेजी है। मैं अभी लायी बनाकर।"

चाची ने हिदायत की—"चुटकी-भर नमक डाल लेना। और हां धिये, मेरे कहवे में मलाई कम डालना।"

हाकमा हँसने लगी—"चाची, वह कहवा क्या जिसमें मलाई न हो।"

गुलाम रसूल ने तपी कांगड़ी पराहुनों के आगे ला रखी।

छोटी-सी कांगड़ी में लाल-सुनहरी अंगारा ऐसा सुर्ख सुहाना जिमि धरती की कोख में कोई छोटा-सा टिकुला सूरज का आन पड़ा हो।

शाहनी हाथ तापते मन-ही-मन सोचने लगी—'देखो खेल कुदरत के और देखो आर बन्दे के! अपने सुख-सुभीते के लिए क्या नहीं बनाया आदम के बेटे ने!'

सतभ्रावी पिटारी मे गुड़ और बाजरे की भुनी खीलें ले आयी—"जितने सोमावर गर्म हो उतने मुँह जूठा करो!"

चाची ने गुड़ की डली मुँह मे डाली—"हैं री, यह तो धम्मान का गुड़ लगता है! अजवाइन सोंठ पड़ी है!"

हाकमा हँसने लगी—"सतभ्रावां भरजाई को गुड़ चुगलाने की रब्बत है। हर सयाले घड़ा भर लेती है!"

"चल, तेरे पुत्तर जन्मने से पहले ही मुँह मीठा कर लेते हैं। हां री, कब विराज रही है?"

हाकमा ने पेट पर ऐसे हाथ फेरा ज्यों बच्चड़े का सिर सहलाती हो। फिर चाची की ओर झुक फुसफुसायी, "रात-भर पीड़ें उठती रहीं। तड़के उठ तावली-तावली काम निपटा दिया।"

"अरी, ठण्डी पीड़ें तो नहीं जो रह-रह उठती हों!"

"न!"

"रसूल, पुत्र! सतभ्रावाँ को आवाज़ दे ज़रा। जो लाना है जल्दी ले आये।"

थाली में दो कटोरे कहवा, मक्का के ढोढे पर मक्खन का पेड़ा लाकर सतभ्रावाँ ने आगे रखे तो दोनों ने अपने-अपने आँचरों पर प्याले टिका मुँह से लगा लिये!

इलायची-बादामवाला कहवा और ऊपर पर्त मलाई की!

"धिये हाकमा, गुलाम रसूल की रोटियाँ तो उतार ली हैं न!"

"हाँ चाची!"

"पुत्तरजी, हाकमा वक़्त से हुई लगती है। दाई को बुला लाओ।"

हाकमा के लिए सतभ्रावाँ मिट्टी के तबाख़ में कहवा ले आयी—"बहना, कहवा घूंट करके पी जा। गऊ का घी डाल लायी हूँ। सहारा रहेगा!"

गुलाम रसूल लौटा तो मुँह उतरा था।

"चाची, कर्मं बीबी तो आज न मिलेगी। नौशहरेवाले शेखों के घर जच्चगी के लिए गयी है!"

चाची उठ खड़ी हुई। शाहनी से कहा, "बच्ची, मैं जितने हाकमा को देखूं, तुम चूल्हा लहका पानी रख दो। कसकर ढक्कन रखना ताम्बिये का, कोई धूल-मिट्टी न जाये!"

"गुलाम पुत्तर, कोई कोरा घड़ा-चाटी हो तो ठीकरी के लिए निकाल दो। चिराग़ में तेल डाल आले में रख दो।"

चाची को चीज़-वस्त सौंप हाकमा बिछौने पर जा लेटी।

"मैं मर गयी चाची, अब नहीं सहा जाता।"

हाथ धो चाची हाकमा पर झुकी। फिर सिर पर हाथ फेरा—"हाकमा धीए, आँखों में बसाये रख बीबी मरियम का पंजा और नाम ले ज़ाहिरा पीर सखी सरवर का!"

शाहनी ने मदद के लिए दीवटे की लौ आगे की तो तड़पती हाकमा को पुचकारकर कहा, "सहेलिये, सहारा कर। तू अकेली ही दर्द-पीड़ों में नहीं। अरी, गुलाम रसूल के घर की नीवें हिल रही हैं। जठेरे उसके बहिश्तों से झाँक रहे हैं।"

चाची ने हाथ से बच्चड़े का सिर छू लिया तो फूँकी की—"ख़ैरें-मेहरें! ले री हाकमा, मुबारकें हों!"

निक्की-निक्की सजरी रुलाई कोठरी में थरथराने लगी।

शाहनी ने अडोल ज़रा-सा पट्ट खोला और बाहर खड़े गुलाम रसूल से कहा, "मुबारकें गुलाम रसूल जी, ख़ैरों से अन्दर शाहज़ादा आन पहुँच

है।"

गुलाम रसूल का गला भर आया—"ख़ैर मुबारक शाहनी !"

गुलाम रसूल के सोहणे मुखड़े पर पुरखों का रत्त झलक मारने लगा।

"शाहनी, तुम्हारा पाँव ही भागों भरा।"

"वाहगुरु, वाहगुरु, सच्चा उस दाते की। नहीं तो मनुक्ख अपना-सा जातक बना दुनिया में क़ायम कर सकता ! रब्बजी, मेहरें तुम्हारी !"

शाहजी और ठानेदार साहिब अभी खेत से न लौटे थे कि गाँव में सेंध लगने का शोर-शराबा मच गया। जुट्ट-के-जुट्ट हवेली के आगे इकट्ठे होने लगे।

नवाब ने पट्ठे काटते-काटते भीड़ देखी तो हँसकर कहा, "बादशाहो, अभी तो ठानेदार जंगल-झाड़े गये हैं। आयेंगे तो अरज़ी-परचा लेंगे।"

मुख्तयार ने अपने तहमद को बल दिये—"लो सुनो लोको, नवाब की बात ! अरे, पराहुने तुम्हारे हगने ही गये हैं न, मंगियों की तोप दागने तो नहीं गये !"

नवाब ने हाथ का टोका परे फेंक दिया और दाँत निकालकर कहा, "हद कर दी बादशाहो, कहाँ छोटा-मोटा सुबह का जलजला, कहाँ सिक्खों की तोप !"

"हाँ जी, खैरों से कौन-सा पेट है जिसमें तड़के मुरमुरी न हो ! सहारा रखो। ठानेदार फ़ारिग होने गये हैं। आ जायेंगे।"

ठानेदार के दबदबे से फ़ज़ल की चौड़ी छाती में तल्ख़ी होने लगी—"लो जी, कोई अनोखी हुई है सलामत अली कि अब उसमें जलजले भी पैदा होने लगे ! सीधी तरह यह क्यों नहीं कहते कि फलवाली ख़ातिर-तवाज़ा से हल्के होने गये हैं।"

"वही समझ लो। आप जानो अनाज के कीड़े को देर-सवेर पैरों के भार बैठ अपने गुरदे तो हौले करने ही पड़ते हैं ! फिर हमने कौन-सी बढ़ा-चढ़ा के बात की। पराहुनाचारी में ज़रा सजा के कह दी। और क्या !"

"ये ठानेदारी कुल्ले की बरक़तें हैं।"

"खैर मेहर है। अफ़सर थानेदार सिपाही को सलामी देनी तो बनती ही है न !"

मुहम्मदीन ने डंगरों की खुरलियों में चारा डाला और हँसकर कहा, "आहो जी, अपने कौन-से जन-ज़मीन के मामले कहीं उलझे पड़े हैं कि थानेदार का तुर्रा देखते ही फतेह बुलाने लगें !"

नवाब को आख्यान सूझ गया—

"किसी ने घोड़े से कहा था—'ओ लुडेया, तुझे चोर ले जायें !'

"गाजी ने सिर हिला दिया—'बेशक ले जायें ! यारों ने तो पट्ठे ही खाने हैं।'

"कहने का मतलब यह कि दुनिया होती रहे मुन्सिफ-अहलकार, हमने तो ढोर-डंगर को चारा ही खिलाना है।"

मौलू को थानेदार बच्चूखाँ की याद आ गयी।

"थानेदार सलामत अली का क़द-बुत रोबीला और सेहत भी तगड़ी है। बच्चू खाँ तो जब दौरे पर आये तो मुशकियारा और मुन्नाली उसके साथ-साथ। बिचारे को पले-पले बैठने की हाजत हो। किसी को कुछ कह सके न ! छोटे शाह ने रोग सही कर लिया कि हो न हो बच्चू खाँ मुमेसिया है। बवासीर की दवा दी, तागे का टोटका किया और रब्ब-तव्वकली ठीक भी हो गया !"

सुल्तान ने खजूरे को कोहनी मारी—"देख ओए, उधर देख !"

शाहजी के साथ-साथ ठानेदार के कदमों की टंकार सुनते ही भीड़ चौकन्नी हो गयी।

पहल कौन करे ?

शाहजी ने पूछा, "यह इकट्ठ कैसा ?"

मियें खाँजी ने ढंग से खेस ओढ़ा और बोले, "सुनने में आता है रात जम्मी मे सेंध लगी है !"

"होश मे तो हो न ! मुकाम हमारा पिण्ड में और हमारी ही माजूदगी में ऐसा हादसा ?"

थानेदार सलामतअली की आवाज़ ऐसी कि तेल में भीगा बेंत हवा में घुमाया हो !

मियें खाँ ने सिर का मन्दाला ठीक किया और जम्मीवालों की ओर नज़र मारकर कहा, "सेंध, चोरी, डाका—जो भी हादसा हुआ हो, बयान कर दो।"

"तौफीकोंवालो, रात का पिछला पहर होगा। लसूड़ेवाला घू गिड़ने लगा था। मैंने हस्बे-मामूल टँगने से उठा दोतही कन्धे पर डाली ही थी—"

थानेदार फुंकारे—"ताज खाँ, चोरों ने रस्सी भी तेरे टँगने से ही बाँध रखी होगी ! ऐसी चमड़ी उधेड़ूँगा कि सारे बदन की टल्लियाँ खड़क उठें !

."हाँ, सेंधवाली दीवार से मिली हुई किसकी दीवार है ?"

इस्माइल दरजी थर-थर काँपने लगा।

आगे बढ़कर सलाम किया—"जनाब !"

"जनाब के कुठाले, जरा सब्र रख। तेरा दम्म-चूल्हा अभी भखवाता हूँ। सेंध लगी तो तेरी दीवार की तरफ से, चोर भागे तो वह भी तेरी पौड़ियों से ! कपड़े-

सत्ते फैला गये तो वह भी तेरी छत्त पर! खुद ही फूट दे! मैं अभी मौका पर नही पहुँचा!"

इस्माइल की घिग्गी बँध गयी—"जनाब, बन्दा बेक़सूर है!"

सिपाही को हुक्म हुआ—"मद्दीखाँ, तिरछी काट कर दे इसकी खोपड़ी की! ओ टुंडे, तू भी उठ! पहचानता है न मुझे!"

"मोतियोंवालो, आप जैसे समर्थों को कौन नही जानता भला!"

"झटापट उगल दे!"

"जनाब, हाज़िर हूँ।"

"यह चण्डाल चौकड़ी कल चोरांवाली में क्या रस्से बुन रही थी!"

"न जनाब। कहाँ चोरांवाली, कहाँ जम्मी!"

"ओए, तू अभी तम्बा नही, तम्बी है; वह भी आधे पाट की। मद्दी खाँ, हूरें दिखा दे टुंडे को।"

इकलौती कलाई मरोड़ टुंडे की, मद्दी खाँ ने हम्माम दस्तेवाली ज़ियाफत एक ही दौर में खत्म कर दी!

थानेदार ने टुंडे को ज़मीन पर चित्त देखा तो आँख से इशारा कर दिया—बस!

और पूरे मजमे से बेखबर हो शाह साहिब से बातें करने लगे।

टुंडे ने चोर अँखियों से दोनों को गुफ़्तगू करते देखा तो खजूरे को आवाज़ दी, "ओए वहनू के यार, मेरे दायें पैर की जुत्ती कहाँ गयी। जरा लाना तो ढूँढ के!"

मद्दी खाँ ने भभकी दी, "जूती नही, तेरी टाँग कंजरी अब बेवा होने की तैयारी में है!"

शाहजी मंजी पर बैठे-बैठे अपने दोस्त सलामत अली के करतबों का आनन्द उठाते रहे!

फोकट की सेंध-चोरी; मुफ्त का माल-मत्ता और बिना चोरी के पकड़ा गया चोर-बच्चा! अब फ़ेहरिस्त बनेगी उस माल की जिसका वाली-वारस सुरजनसिंह वल्द अर्जुनसिंह सैकड़ों मील दूर पटना साहिब मे कपड़े की फेरी लगा रहा है।

रात रोटी-टुक्कर के बाद चाची मंजी पर लेटी तो बड़े दर्द-भरे सुर में गाने लगी—

"अरी पुत्र न मिलते माँग में
न वे हाट विकें

जो वे मिलते माँग में
मैं लेती दम्मी तोल !"

हाथ में दोहर लिये पसार की ओर जाते-जाते माँबीबी ने सुना तो कालजे हूक आ पड़ी।

"हाय री चाची ! जिसने शाहों के घर आ अपना जिन्द-जहान घोल-घाल दिया, आज भूले-बिसरे सपनों को क्यों चितारने लगी !"

माँबीबी ने कुँई के आले में से दिवटा उठा चाची के पसार में झाँका।

लोई में मुँह-सिर लपेटे चाची दीवार की ओर मुँह किये लेटी थी।

माँबीबी ने दिउड़ी पर दीया रखा और चाची के पैताने बैठ पाँव दबाने लगी।

चाची ने नये सुर छू लिये—

"का की माई का को बाप
नामधारीक झूठे सभि साक
काहे कउ मूरख भखलाइया
मिलि संजोगि हुकमि तू आइया।
एका माटी एका जोति
एको पवनु कहा कउनु रोति।"

माँबीबी बैठी-बैठी सोचती रही। जिन्द अभागी रात बराबर। आँखों के आगे कंजरी के रूप पर शौदाई हुआ घरवाला आ ठिठका तो रुलाई ने आ घेरा।

चाची महरी ने मुँह उघाड़ा और माँबीबी को पुचकारकर कहा, "न धियें, ऐसे बगलोल मरद को न रो। भाड़े के दर-दर से छित्तर खाकर लौटेगा यहीं—तुम्हारे पास। मेरी बात पल्ले बाँध ले।"

"चाची, अब के ठानेदार सलामत अली आयें अपने ग्राँ तो मेरी ओर से शाहजी को कहना बात करें। क्या पता उसके धमकाये-समझाये जना राह पर आये।"

"माँबीबी, ये मामले मर्द की मूँछों से नहीं, रब्बी जूतों से निबड़ते हैं। मेरी बात पल्ले बाँध ले। शौदाई तेरा या तो सयाले तक लौट आयेगा अपने ठिये पर, नहीं तो दल्ला बन वेसवा के गली-कूचों में भटकेगा।"

"चाची, सुनते हैं कंजरी भड़वी हिन्दुस्तान की है। जो ले गयी जने को पाँच दरियाओं पार तो इस चोले में मुझ तक नहीं पहुँचता।"

"चुप री, शुभ-शुभ बोल। लीड़ों की झलकों पर आशिक़ नहीं मरते। कंजरी का प्यार टकों में। दर-दर ठोकरें खाकर आयेगा तेरे ही ढिब !"

"तेरा मुँह मुबारक चाची ! इन्हीं वचनों की टेक उसे बाँधे रहे ! चाची, एक बात तो बताओ। मुझे तुम उदास जापती हो। इतने वैरागी सुर क्यों छो लिये !"

दिवटे की लौ चाची के नक्श-नैन किसी बाती-से लहराने लगे और बरसों पीछेवाली शाह गनपत की जवान महरी आ विराजी।

ठुड्डी पर का तन्दोला चमकने लगा।

"अरी, माया-मोह और क्या ! मांबीबी, मरे हुओं की रूहें कहीं जाती थोड़े ही हैं ! जितना सफर जिन्दगानी में करती हैं उतना ही मरे पीछे।"

"चाची, ऐसे भरम न कर।"

"सुन मांबीबी, मुजारों की पांत बैठी न अंगना, तो बनेरे से झांक नीचे देखने लगी। ऐसा झोला पड़ा कि कोई पुरानी रुत हो ! पुराने दिन। देखती क्या हूँ मेरा बांका शाह अपना लड़का बना ड्योढ़ी पर आन खड़ा है ! अरी, वही उसकी सोहणी पोशाक, वही घुंघराले बाल। मुख ऐसा ज्यों मेरा पुत्र हो।"

"चाची, भला यह क्या बुझारत !"

"मांबीबी, चित्त अपना माया-दर्पण। अरी, जिस पुत्र को कभी मेरी कोख न पड़ना था वह साक्खयात मेरी आंखों के आगे आ खड़ा हुआ। उस एक पल-छिन्न में ज्यों बाप-बेटे दोनों से मिलन हो गया। आंख झपकी और वह कहां और मैं कहां !"

"फिर ?"

"अरी, फिर क्या ? दुबारा ढूंढने-बुलाने लगी अपने महरम को तो सामने खड़ा था माच्छियों का सुल्तान।"

"चाची, सुनते हैं शाह अपना बड़ा मलूक नाजुक—"

"हां री, शाहों-सा चिट्टा दूधरंग, तीखे नक्श-नयन, पहनना-ओढ़ना ऐसा ज्यों हाकम हो।"

"चाची, बेबे कहा करती थी कि महरी-गणपत शाह के क़िस्से घर-घर गाये जाते थे।"

चाची महरी ऐसे हँसी कि समय की त्रिकालां पलटकर सुबह हो गयी।

'मांबीबी, वक़्त बादशाहों का भी पातशाह। कभी शिखर चढ़े थे प्रीति-प्यार हमारे। भरी कचहरी मुझे जा खड़ा किया मेरे शाह ने। सारे का सारा परवाना क़बीला गुजरात अदालत टूट पड़ा—जित देखें तित झलकतें !"

"चाची, ऐसे भीड़-भड़क्के मे तुम खुले मुँह पहुँची !"

"और क्या ! अरी, खुल गयी पोटली इश्क की तो परदे कैसे ! इजलास पेशी हो गयी। वकील ने पूछा—'मुसम्मात महरी, बेधड़क होकर कहो तुम्हारे खाविन्द के कुटुम्ब-क़बीले से खत्री शाह ने तुम्हे किन तरकीबों से अगवाह किया और कैसे बरगलाकर तुम्हें सत्त-संयम से डिगाया !' "

"फिर क्या कहा चाची तुमने !"

"मांबीबी, महरी ने नजर उठा भरी कचहरी पर डाली। मुझे दीखे सिर्फ़

बन्दे। एक दीखा अपना शाह और दूजा हाकम आला अदालत। मेरे भाने बाक़ी सब पगड़ियाँ-ही-पगड़ियाँ।

"मैं बेख़ौफ़ी से बोली, 'साहब जी, मुझे बेवा हुए तीन साल हुए। अदालत समझे कि न मैं खेलूँ गुड्डियाँ और न मैं सोहलवें साल। मैं बालिग हूँ। मेरे अक़्ल-होश ठिकाने हैं। अपना भला-बुरा समझती हूँ। अपनी मरज़ी से सरदारों की दलहीज लाँघ आयी हूँ!"

"खप्पी वकील सासरे का फिर भी बाज़ न आया। पूछा—'क्या यह सच है कि शाह गणपत ने लालच दे तुम्हें सब्ज़ बाग दिखाये और बदमाशों की मदद से तुम्हें दरिया पार पठाया!'

"माँबीबिये, मैंने गर्दन उठा अपने शाह की सीध कर ली। जाने उन अँखियों में क्या भासा कि तन-बदन मीठी आँच में भखने लगा।

"सासरा टब्बर डाडा मचा था। वकील को हुस्थल दें—और बोलो! और बोलो!

" 'पूरा कुटुम्ब-क़बीला तुम्हारे मर्हूम मालिक का, ज़िवि-ज़मीन, गहना-गट्टा, बर्तन-भाण्डा, भरे-भराये घर की बहूटी हो—अपना दिल न भरमा।'

"शाहों के वकील ने जिरह की तो मुझे कुछ पल्ले न पड़ा। मेरी नज़र तो अपने शाह के मुँह पर टिकी थी

"हाकम ने पूछा, 'मुसम्मात महरी, तुम्हें कुछ कहना है?'

"मैं बोली, 'सरकार, यह सवाल-जवाब मेरे किस काम के! मैं तन-मन से शाहों की हो चुकी। अब मेरा जीना-मरना-रहना सब उनके संग।'

"बस जी, हाकम ने फ़ैसला दे दिया अपने हक में।

"शाहों को वधाइयाँ मिलने लगीं।

"मैंने हाकम के आगे सिर झुकाया, 'आला इन्साफ़ साहब बहादुर! यह ऊपरवाले रब्ब का फ़ैसला है जो आपके मुँह से निकला है।'

"शाहों के हमदादियों ने हम दोनों को घेर लिया। सुरगों में वासा हो इन शाह भाइयों के पिता का। पुज्ज के मोहतबिरी। पास आ मेरे सिर पर हाथ रखा और घोड़ों के लिए आवाज़ दे दी।

"इतने देखती क्या हूँ मेरा सबसे छोटा देवर भीड़ को चीरकर आगे बढ़ आया।

"मुझे पैरीपौना कर भर्राये गले से बोला, 'इज्ज़त-पत्त की बात जानें बड़े-बड़ेरे, पर भरजाई री, तेरे बिना घर घर न रहेगा। मेरे जाने तो तुम्हीं घर की महारानी।'

"सच कहती हूँ माँबीबी, उस बालक के छूते ही मैं थर-थर काँपने लगी।

"शाह ने मुझे मझधार में देखा तो निक्के साहिबसिंह को थापी दे अलग कर

दिया—'छोड़, छोड़ दे बच्चा ! हमें देर होती है।'

"मुझसे न देखा गया। बांह बढ़ा साहिबसिंह को पास खींच लिया और माथा सूंघकर बोली, 'साहबसिंहा, तू छोटा है, अभी न समझेगा ! ये पिछले जन्मों के फेरे-गेड़े किसी के बस के नहीं। कोई पिछले कर्मों का दे और कोई ले !'

"साहिबसिंह ने मेरी चादर का पल्ला पकड़ लिया—'न जा, छोड़कर न जा भरजाई ! तेरे हाथ की चूरी बिना मेरे गले से निवाला न उतरेगा।'

"अगले पल देखती क्या हूं वड़े जेठ मलकीयतसिंह ने—नाम लेती हूं, रब्ब दोष की माफ़ी दें—साहिबसिंह की बांह मरोड़ धक्का दिया—'बदीदा, घर से बाहर पैर निकालनेवाली लुण्डी जनानी को वास्ते देने से पहले मर तो नहीं जाता !'

"राह में औंधा पड़ा साहिबसिंह तब तक न उठा जब तक अपने घोड़े चल न निकले !"

चाची महरी ने लम्बा स्वास लिया—"अरी मांबीबी, मेरे उस पिछले घर सुख हो। जाने क्यों आज वह टब्बर याद हो आया। झूठ क्यों कहूं, किसी चीज़ की कमी न थी वहां। जिवियां। भरे-पूरे कोठे। गायें-भैंसें। घोड़े-घोड़ियां और थम्म जितने तगड़े मेरे सिंह देवर-जेठ ! प्रालब्धों के खेल, और क्या ! शाह से ऐसी बंधी कि न छूटी !"

"चाची, कभी जी में पछोतावा हुआ !"

"न री। शाहों के घर जिन्दगानी घने सुखों मे बीती। वह डाडा कामल मर्द—दिन में मैं उसे सरकार समझूं और रात को वह मुझे। इन-बहारों के मेवे भागों से ! मांबीबी, वह जवानी की लटबौरियां पीगें नहीं थीं री, वे संजोग थे संजोग, जिन्होंने नानोवाल के मेले मे हम दोनों को घेर लिया।"

"चाची, यह तो बता शाह ने तुम्हारी कैसी मनभावनी की !"

"तक़दीरों के खेल ! पहली दीठ-चितवन शाह की मुझ तक पहुंचे कि पहुंचे, इस तन-बदन और कुटुम्ब-क़बीले में जलजला उठ आया ! ऐसी घड़ी कि नसीबों के कुल्फ पड़ गये हम दोनों के पैरों !"

मांबीबी का ध्यान कहीं और जा भटका—"चाची, शाह एक निशानी छोड़ जाता तुम्हारे लिए तो क्या कमी थी !"

चाची महरी अँखियां पोंछने लगी—"अरी शाह का पीछा सुनता है। इस जान के लिए कोई कमी न रखी। पर री, जब बिछुड़ती घड़ी पहुंची शाह के सिर पर तो एकटक चुपचाप पसार के दर पर आंखें। उठ-उठकर देखूं—कहीं जमदूत तो नहीं दीख रहे मेरे धनी को !

"रो-रोकर मिन्नतें कीं—कुछ तो कह मेरे साथिया ! तुम्हारे बिना कैसे जिन्दा रहेगी महरी !

"मांबीबी, मेरी आवाज सुन शाह के होश-सुरत परते ! ऐसी नजर फिरायी

ज्यों किसी मुकद्दमे का फैसला देना हो—'महरी, तुमने मेरा लोक-जहान संवार दिया। पर आगे की सुध न रखी। अंखियां मीटते ही पित्तर-पुरखों की पांत मुक जायेगी!'

"सुनकर बड़ा रोयी। कलपी। पर री, अब क्या होता! शाह जा पहुंचे अगली दरगाह और मैं रह गयी अपना हिसाब पूरा करने को!"

चाची आंचर से नाक-मुंह पोंछने लगी—"मांबीबी, इस तन-मन को लगी हुई है तभी बच्ची के लिए बड़ा सन्ताप पाती हूं। बाबा फरीद मेहर करे और इसकी झोली भरे। मेरे जाने तो उस दिन बाबे के दरबार में बच्ची के लिए खुशियों के कौल थे!

"चाची, कैसे सही किया! मेरा सबब लगे तो एक बार तो उसके आगे झोली फैलाऊं!"

"सुन मांबीबिये, हम दोनों वहां पहुंची तो थान पर बडी भीड़! कूजा-भराई होते ही प्रसाद बंटा तो सबसे पहले बच्ची की हथेली भरी! बाबा फ़रीद बड़ी झाला सत्यावाला! चमत्कारी!"

"चाची, अब कभी जाओ गुजरात घोड़ी लेकर तो मैं भी बड़े दरबार के दरस पा आऊं!"

"अरी बडे दरबार पहुंचना है तो पाकपत्तन पहुंचेंगे।"

चाची कुछ सोचने लगी—"मांबीबी, मिहो के घर सुख हो। खबरें क्यों दिल में चिन्ता जापती है। वह छोटा साहिबसिंह घडी-भर मेरी आंखों से ओझल न होता था। सोहणा मुंह-माथा और बल्लौरी अंखियां। वाहगुरु रखया करे! हाय! री, मैंने भी कैसा कालजा सख्त कर लिया! कभी उनकी खबर-सुरत ही न ली। साईं सच्चे दर्शन-मेले जीते-जागतों के। मरे पीछे किससे करने मुंह-मुलाहज़े और किससे मान-उलाहने!"

शाहों का चिट्टा घोडा बादशाह दिन ढले बजुर्गवालवाले जोटासिंह के तबेले जा रुका।

चिरागे ने हाथ दिया। चाची ने रकाबों से पांव निकाले और कूदकर नीचे उतर आयी।

तन पर सूफ का जोड़ा और ऊपर चादर पशम की।

"चिराग पुत्तर, अन्दर जा हवेली में खबर कर आ। कहना, शाहों के यहाँ से लड्डिक्की आयी है।"

चाची को थडे पर बिठा चिरागा ड्योढ़ी जा पहुँचा। पूरे गले आवाज़ दी—"शाहों के घर से पराहुने आये हैं!"

बनेरे पर से किसी ने झांका—"क्यों बीरा, किसको पूछते हो!"

"सलाम जी! चाची महरी को लेकर आया हूँ!"

चाची ने टोका—"कह, लड्डिक्की आयी है!"

मल्कीयतसिंह की घरवाली कुदरत कौर पहले बिटर-बिटर तकती रही, फिर हैरानी से पूछा, "क्या पीरोशाहियों के यहाँ से!"

"न जी। सरदार साहिबसिंह को मिलने उनकी भरजाई आयी है!"

"हला हला। बन्तासिंह के यहाँ रुक्का पहुँच गया था क्या!"

"सरदारनीजी, नीचे उतर आओ। पराहुनी आपजी की थककर चूर है।"

नरमे के सूथन-झग्गे में कुदरत कौर नीचे उतरी तो चिट्टे रंग पर दबदबेवाली काठी और बड़े-बड़े बूबे। गलमें के बीड़े खुले हुए और धड़ खैरों से इतना जबरजंग कि दस-बारह व्यम पा चुकी हो!

"कौन! कौन आया है रे!"

चाची महरी थडे से उठ बैठी। भेंटने को बाँहें फैलायी कि कुदरत कौर ने पहचानकर अपने माथे पर हाथ दे मारा।

"फिटे मुँह री! लड्डिक्किये, तू यहाँ! अक्लें! अरी, चिट्टा चूँडा लेकर तू करने क्या चली आयी! अब इस घर-ग्राँ कौन तेरे चाव-मल्हार करने बैठा है!"

चाची महरी पास हो आयी—"कुदरते, मैं निज आती इस घर। बरसों नहीं आयी। कल रात सुखमनी साहिब का पाठ करते-करते वाहगुरु ने चित्त को दर्पण दिखला दिया कि महरिये, साहिबसिंह तेरी राह तकता है। अगली-पिछलियाँ बिसराकर उसे देख आ!"

कुदरत कौर ने घूर के नज़र मारी तो आँखें भीज गयीं।

"लड्डिक्किये री, साहिबसिंह की हालत कुछ चंगी नहीं।"

ड्योढ़ी लाँघ चाची चबारे चढ़ी।

"किस बैठके पौढ़ता है मेरा साहिब?"

"इधर री, इधर। शीशोंवाली बैठक मे!"

दिये की लौ साहिबसिंह आँखें मूँदे पड़े थे! पास बैठी घरवाली सन्तो और लाल चूड़े पहने बेटी बसन्तो।

चाची ने झुक हाथ साहिबसिंह के माथे पर रखा—"मैं सदके जाऊँ। साहिबसिंहा, देख तो कौन आया है!"

साहिबसिंह ने आँखें खोल दीं "कौन! किसकी आवाज़ आयी?"

"पहचाना नहीं साहिबा रे ! मैं हूँ लछुिबको, तेरी भाभी ।"

चाची ने डबडबाई अँखियों साहिबसिंह का माथा चूम लिया ।

सिर पर धौले केशों की छोटी-सी जूडी ।

हाथ लगाकर ताप देखा । क्या रोग है ! क्या दवा-दारू !

पुरानी संगहणी । दवा आलमगढ़िये हकीम की ।

"साहिब को हस्पताल क्यों न ले गयी !"

कुदरत कौर कुनमुन-कुनमुन रोने लगी—"मैं अकेली क्या करूँ ! छोटे-बड़े भाई लाहौर मुकद्दमे की पेशियों में और निक्का दिसावर करने क़ाबुल । ले-दे के वन्दा घर में साहिबसिंह । कल चित्त बड़ा डोला तो बसन्तो को घोड़ी भेज दी। आज ही आयी है । आ री बसन्तो, ताई से मिल ।"

लाल चूड़े पहने बसन्तो ताई के गले आ लगी ।

महरी ने सिर पर हाथ फेरा । गुंथे फूल-सा मुखड़ा देखा और मुन्दरियोंवाला हाथ पकड़ हथेली पर थूक दिया ।

"रक्खे साईं की । रब्ब बड़े-बड़े भाग लगाये ।"

सन्तो जिठानी के गले लग सिसकारियाँ भरने लगी ।

"कौन है सन्तो, कौन है ! किससे आसीसें ले रही हो ! आसीसों की पण्ड भी बांध लो तो भी मैं अब बचता नहीं ।"

चाची महरी की आवाज़ खड़की—"बहन कुदरते, दो-चार बताशे ला और कूईं का सजरा पानी भर ला । मैं अभी साहिबसिंह को चंगा करती हूँ ।"

चाची ने कटोरी में बताशे घोल साहिबसिंह के मुंह लगाया तो कमज़ोर काया में जान पड गयी ।

साहिबसिंह ने सिरहाने से सिर उठा भरजाई का हाथ पकड़ लिया—"इसी घड़ी को जीता था मैं । नहीं तो कब का पार था ।"

"अरे साहिबसिहा, शुभ-शुभ बोल । दाता मेहर करेगा । उठकर चलने-फिरने लगेगा ।"

दिवड़े के आलोक में साहिब भरजाई के मुखड़े को तकता रहा । फिर घर-वाली को आवाज़ देकर कहा, "सन्तो, पूछ भरजाई से—कभी उठकर चल-फिर भी सकूंगा !"

चाची ने कड़ी निगाह से घूरा और खुल्ला आवाज़ में कहा—"सुन रे, कान खोल के सुन ! जो तेरी तबीयत न परती तो इसी बैठके मंजो बिछा लूंगी । सन्त कौरे, ज़रा गऊ का घी और फिरंगी-दारू तो ले आ ।"

चाची ने हौलम-हौल ऐसी मालिश की कि साहिबसिंह के हाथ-पांव गरमाने लगे ।

कपड़ा ओढ़ाकर कहा "नीद न आती हो तो सिर में घी रचा दूं !"

"न, अब इतनी हो!"

"[illegible] , कैसी हैं?"

[illegible]

"[illegible] !"

"हाँ [illegible] ।"

"[illegible] है री?"

"[illegible] ।"

"[illegible] ?"

"[illegible] !"

[illegible] ।

"[illegible] । [illegible] ।"

[illegible] ।

[illegible] ।

"हे री बहन सुबरते, [illegible] बैठे बच्चे कोई [illegible] । [illegible] । [illegible] है।"

मन्नो ने भिड़ली की हथेली पर टिकी नन्ही बौनड़ी देखी तो हाथ से सिर पर धरी।

"सदकाई, हाय ठक्कर-पोखियार एक तरफ और यह तुम्हारा देवर एक तरफ। माही आनी थी भी वह-वह तुम्हारी ही बातें। न कभी दिल से तुम्हारी ममता छूटी, न किसी बात बिसरानी।"

चाची महरी रोने लगी—"कलकौर, मेरा रब जानी है री। जब-जब रोटी पर नजर-भी रखती, मेरा माहियाँ-मह पीछे से आ बैठे मेरा पल्ला पकड़ लेता—सदकाई, थोड़ा और। थोड़ा और। और दे न।"

"शाह ने सुन-छिन सोची रहती। लो झगड़े-फिसाद आयत थे, पर री ऐसी भी क्या रंजिश कि जीते-जी मनुक्ख दर्शन-मेलों को तरस जावें।"

"मैंने कहा जब तुम्हारे शाह के पूरे होने की खबर आयी तो दिल-ही-दिल तुम्हारे लिए बड़ा झूरती रही। पर री, मरदों के आगे कुछ जोर न चला। बहुतेरे तरले-मिन्नतें किये भाइयों के। जोरावर के आगे पल-पल हाथ जोड़ूँ, पर एक न चली। फिर भी तौह खिला सारे रस्ते ही बन्द कर दिये।"

"हूँ री, किदे-जाने भाइयों की जोड़ियाँ। मुनक्ख के मन को किसने बाँधा है। जिधर वह गया, बहने लगा। मैं ही चली आती पहले, पर री दर्शन-मेले भी लिखियों के।"

जनानी बाद लड़िकयों रांगली खिड़कियोंवाले पसार में बैठी तो शाह

हाथ से परे ठेल दीदारसिंह महरी के पास आन खड़े हुए।

लाडी को गुदगुदाकर कहा, "सुनते है इस महरी मुटियार के बड़े चरचे हैं!"

दुल्हन महरी हँस-हँस खिलखिलाती रही। फिर आँखें झपका-मटका कहा, "हाँ जी, मदीनेवाले बग्गे सरदारों की धी बजुर्गवालवाले कक्के सरदारों के घर ब्याही है—इसके तो ढोल गज्ज-वज्ज गये इलाके में!"

दीदारसिंह लाडी की इन मशकरियों पर जी भर-भर निहाल होते रहे।

पास जा हाथ लगाया तो पुराना तजुरबा खून से निथरकर अलग हो गया—फ़ासले उम्रों के!

चाची ने करवट ली—कर्त्ता तेरे रंग! कभी चित्त-चेत्ते में भी था कि मुड़ इस बैठके सोऊँगी। कहाँ दार जी, कहाँ शाह जी! सपने की न्याईं ओझल हो गये! चल री महरिये, जब तक स्वास है, पिछलियाँ याद करती रह!

क़ुदरते-खुदाबन्दी का यक़ीन दिलाने के लिए मूसा ने बड़े-बड़े मोजज़े दिखाये। आसमानों को कैसा बुलन्द और बाआब बनाया। सूरज के ज़रिये रात और दिन की तारीकी और रोशनी का इन्तज़ाम किया। सतह ज़मीन को बिछाकर इस पर पहाड़ कायम किये। आसमान से पानी बरसाया और ज़मीन में सब्ज़ा उगाया। सतह ज़मीन की अगर एक वसीह फ़र्श से मिसाल दी जाये तो इस पर पहाड़ों को ऐसा समझा जायेगा कि गोया फ़र्श को अपनी जगह रखने के लिए मेखें गाड़ दी हों। आसमानों की हकीकत ख्वा कुछ भी समझी जाये, मगर उनके वजूद और उनकी मज़बूती में किसी को शक नहीं। आसमानों की हर-एक चीज़ अपनी मुकर्रा जगह के अन्दर निहायत मज़बूती से कायम है।

"नाम लो परवरदिगार का!"

मौलवीजी की आवाज़ पर हौल की मुनैनी-सी बुलबुली कौंध गयी।

नाम लो परवरदिगार का।
लशकर आन पहुँचा है थानेदार का।

चौधरी फतेहअलीजी ने चौकन्नी नज़रों से देखा और इशारा किया—"खुदा-बन्दा की शान में रोक-टोक कैसी! बेखौफ़ जारी रहे!

मौलवीजी ताज़े जोश से बोलते चले।

मसीत से बाहर निकलते ही थानेदार के रुक्के की तरह आगे सिपाही लालसों

नज़र आ गये।

सबने साहब-सलामत बुलायी।

"लालखांजी, रब्ब सबका भला करे! आज कैसे पैंडा भूले अपने पिण्ड का?"

लालखां थाने की इमारत को सिर पर उठाये-उठाये घूमने के आदी थे। मूंछो को मरोड दी और तड़ी से सिर हिला दिया—"पुलिस का काम रास्ता भूलना नही, रास्ता ढूंढना है।"

लालखां का तुर्रा देख सिकन्दर बड़ैच का दिल भभक उठा। मसखरी से कहा, "पुलिस का मुस्समार पटाखा भी गोला! उधर नज़र आया तुर्रा, इधर धमाका! क्यों जी लालखांजी!"

वज़ीरे ने कोहनी से भुभका मारा—"चुप ओए। हां लालखांजी, आज कोई जिन्सी-ज़ाब्ती का टण्टा तो नही उठ खड़ा हुआ! अपने जाने तो गांव अपने का लाज़िमा दरोगाना सब भुगत चुके!"

लालखां की मेहदी-लगी सिपाहिया मूंछें भभकने लगी।

"ओए रानी खां के, यह गिजिशकी उडाना अपने बाप की बारात मे! अभी साफ हुई जाती है सरकारी अहलकार पैंडा खां के कत्ल की साजिश!"

वज़ीरा और सिकन्दर दोनों ने कान पकड़ लिये—"तौबा, तौबा! आपकी नज़र रहे सीधी मोतियोंवालो, यह वारदात तो हट्टर इलाके के बदमाशों की लगती है।"

"नेग-दस्तूरी मिलते ही हट्टर और जट्टर दोनो इलाके तम्बों पर फूल की तरह खिल जायेंगे।"

चौधरी मौलादादजी ने पग्गडवाला सिर हिलाया—"लालखां पुत्तरजी, गांव तो आपका ताबेदार। खुदा तरसी इन लडकों को कोई अक्ल की सीख दो।"

"रब्ब सबका भला करे। साहबजी लालखां, बरानी और सैलाब का जायजा लेने नायब तहसीलदार पहले ही दौरा कर चुके है। यह अलल-बखेड़ा अब क्या उठ आया!"

लालखां के खाकी तुर्रे के साथ-साथ ताजीरात हिन्द की खौफनाक दफा फड़फडाने लगी—"ओए खच्चरो, छोड दो भोली बदमाशियां। पटवारी के धन्धो में थानेदार का क्या काम! कुर्ते उठाकर फूंक मारो छाती के बालों को। उस पर दफा लगनेवाली है तीन सौ सात।"

"लाहौल-विला कूवत लालखांजी! अपना पिण्ड तो बेकसूर है।"

"बदमाशो की मिस्लें लाने हमें काबुल-कन्धार नही जाना पड़ता। जमा-खातिर रखो, हमें यही मिल जायेंगी!"

नबिये ने खंखारकर बलग़म परे दे फेंकी—"मोतियोवालो, आपके लिए यह

भी क्या मुश्किल! मौके पर बैठे बैठे ही दरिया अटक पार कर आओ।"

"न जी, न!" गफ्फू ने संजीदगी से टोका—"बादशाहो, गलतबयानी में फंस जाओगे। पूछ के देख लो लालखांजी से, यह इलाक़ा इनकी हद के बाहर है! वहाँ तो किसी और ख़ाँ साहिब की अमलदारी है।"

लालखां घूरते रहे और दिल-ही-दिल पेचोताब खाते रहे! अपनी लपेटनियों में न लपेटा तो लालखां नाम नहीं।

पगड़, खेस और दोतहियों का जलूस द्वारे आन पहुँचा तो थानेदार सलामत अली की टस्सा देखनेवाली थी। घेरदार चिट्टी सलवार और अहलकारी पगड़ी को सजाता पेशावरी कुल्ला। मंजी पर बैठे तो हकूमती वजूद ऐसा सजा कि देखनेवाले अश-अश कर उठे।

"सलाम बादशाहो! सलाम मोतियोंवालो! सलाम साहिबजी!"

थानेदारजी ने एक माशा-भर सिर हिलाया और मजमे को खामोशी से घूरते रहे!

अखिये ने अपने जोड़ीदारों की आँखों पर तीतर उड़ते देखे तो हलीमी से पोता-पाती की—"कब तक ठानेदारजी की मुँह की रौनकें देखते रहोगे! गर्म-गर्म दूध लाओ, ज़रा थकान उतरे साहब बहादुर की। सरकारें जाने कब से दौरे पर हैं।"

थानेदारजी ने मरोड़दार आँख से गफ्फू की टांड दबोच ली और अखिये को धमका दिया—"ओए बहनू के यार, लच्छेदार हण्डे सजाना छोड़ दे। खड़ा हो जा। जो पूछता हूँ, सीधा-सीधा जवाब दे!"

अखिये की नाक चौड़ी, जबड़े ऊँचे। आगे के दो दांत काले चूहे के कुतरे हुए।

आवाज धतूरिये का-सी धुंधली बना ली—"सरकार का हुक्म सिरमाथे।"

"हूँ। पिछले जुम्मे जलालपुरवाले जहाँगीरे के यहाँ क्या जश्न-जल्वे थे!"

"जी मोतियोंवालो, मैं शादीवालवाली फूफी के यहाँ से परता तो जलालपुर रात हो गयी। जहाँगीरे के यहाँ रुक गया—"

"हूँ। चण्डाल-चौकड़ी के गोशे और हरामज़दगियां ज़रा दोहरा लो। फग्गू लंगा और भूरा स्यालकोटिया कौड़ियों की मूठ खेल रहे थे। और तुम तीनों बदमाश—"

"जनाब, अव्वल तो मेरे सिवाय वहाँ कोई दूसरा माजूद नहीं था। दोयम अगर हो भी तो मुझे नज़र नहीं आया। रात अंधेरी थी। बादल छाये हुए थे। हाथ को हाथ न सूझता था—"

सलामत अली की आवाज कड़की—"बिना पूछे ही इबारत उगलने लगा सच-सच बोल, कितनी झूठी गवाहियां दे चुका है?"

अखिये ने बड़ी सादगी से हाँ-में-हाँ मिलायी—"जनाब ठीक फरमाते हैं। हम भड़्वों का तो आये-दिन का यह काम ही हुआ।"

"लालखाँ, लंडूरों को कुछ गर्मी ज्यादा हो गयी लगती है! निकाल बाहर करो इनके लोयडे।"

लालखाँ ने पीठ पर जो बेंत मारने शुरू किये तो हर बेंत के साथ बस एक ही आवाज उठती रही—"वाह-वाह! वाह ओ वाह ही वाह! खुदा, तेरे रहम-क़रम से पुलिसवालों का सितारा और बुलन्द हो।"

चौधरी मौलादादजी ने इस अनोखी गुस्ताखी का हश्र सोचकर शाहजी की ओर देखा, तो शाहजी ने सिर हिला सलामत अलीजी की नज़र पकड़ने की कोशिश की।

"थानेदारजी, ढूंढेशाह की ढूंढ मची तो यह रहा ढूंढेशाह। इस नालायक के क़सूरवार होने में तो कोई शक-शुबह है ही नहीं! बाकी अर्ज इतनी है कि इसका क़सूर बताने की मेहरबानी हो ताकि इसके जोड़ीदारों को भी सबक मिले।"

इधर सलामत अली की लाल तन्नवाली आँख झपकी, उधर लालखाँ ने हाथ रोक लिया।

"याद रहे शाह साहिब, पुलिस के सिर पर बरतानियाँ के इन्साफ़ की पगड़ी है। वह हर हालत में इन्साफ करके ही रहेगी।"

पिण्ड के सयाने चेहरों पर आँखें खुल-मिच करने लगीं।

मियेखाँ जी ने मुलायम गले से कहा, "पुत्तर सलामत अलीजी, आप खुद सयाने हो। इन बदमाश वेलगों के लिए जरा खोलकर कहो तो बात बिचारी साफ हो।"

सलामत अली ने कर्मदीनजी की ओर देखा और मजबूत हत्थ दो-तीन धौल अखिये की कनपटी पर जड़ दिये! फिर बड़ी शायस्तगी से कहा, "चाचा कर्म-दीन, पोत्रे को मार पड़ती न देखी जाये तो इस वेलंगी पौद को समझा दो कि पुलिस के सामने झूठ दरोग-गोई नहीं चलते! अगर बरखुरदार उस रात अपने गाँव में ही माजूद था तो पुलिस के धमकाने से जलालपुर कैसे पहुँच गया!"

ठानेदार ने बड़ी मोतबारी से तुर्रा घुमाया और बदमाशों पर नज़र फेंककर कहा, "कान खोल के सुन लें बदमाश, गलतबयानी का हश्र यही होगा!"

अखिये ने अपनी कोहनी से आँख पर आये बाल परे किये और दूसरे हाथ से पीठ छू ली। हाथ लौटाया तो उँगलियाँ खून से सनी थीं। ऐसी जालिम कुट्ट!

ठानेदार साहिब से नजर मिलते ही अखिया वल्द सफिया ठट्ठाकर हँस दिया, "बल्ले बल्ले, सरकार बढ़िया। अहलकार बढ़िया। बेंत की मार बढ़िया।"

चौधरी फतेह अलीजी ने कड़कड़ी आवाज नबिये को बुलाया, "जा ओए,

तत्ते-तत्ते दूध में डली-भर घी डलवा ला अखिये के लिए !"

अखिये ने द्वारे के पीछे से दुल्ले को आते देखा तो बेख़ौफ़ी से गला फाड़कर कहा, "आ यारा, मोतियोंवालों के आगे तू भी शौक़ पूरा कर ले।"

दुल्ले ने एक निगाह पूरे मजमे पर डाली। लम्बा टूंगकर अदा से दो-चार छलांगें भरी और अखिये की लहू-लुहान पीठ देखकर थूका और ललकारकर कहा, "वर्दीवालो, यहाँ के गब्बरोटों को तुमने मिट्टी का माधो समझ लिया! कान खोल के सुन लो, इस पिण्ड मे थाल के उठाईगीर डंगर-चोर नहीं रहते। यहाँ रहते है निडर और बहादुर, जिन्हें पुलिस ख़ुद डर के मारे बदमाश बुलाती है।"

सलामत अली ने इस शोहदी दाड़ी-फूट भभकी को हवा में उड़ा दिया। शाहजी की ओर देखा और दबदबे से झुंझलाकर कहा, "लालजी, फ़िलहाल इन्हें धूप सेंकने दो। दिन-ढले शाहजी की हवेली मे हाज़िर करो।"

पोते की मार से कर्मदीन की आन्द्रें घुसने लगी थीं। दूसरे दौर का सुना तो साफ़ हो गया कि जातकड़े की आज ख़ैर नहीं।

उठे और ठानेदार के पास जाकर कहा, "माशल्ला, क्या रौबीला मिज़ाज पाया है। ठानेदारजी, मेरा सलाम क़बूल हो।"

सलामत अली ने दिलचस्पी से देखा और सिर हिलाकर कहा, "एक-आध अच्छी आदत अभी तुममे बाक़ी है कर्मदीन चाचा, हम ख़ुश हुए।"

फिर भारा-गोहरा वज़न सँभाल हवेली की ओर चल दिये।

दोनों को साथ-साथ कदम उठाते देख मौलवी क़ुरबान अली को फ़ारसी रोशन हो गयी। सिर हिलाकर कहा—

"कुनंद हम जिन्स बा हमजिन्स परवाज़
कबूतर बा कबूतर बाज़ बा बाज़!"

त्रिकालां पड़ते ही उत्तरी बण्ड मे ढोल खड़कने लगे।

अंगारों की धूनी के आसपास ढोलों के कंजक और कुण्डल चमचम चमकने लगे। किसी के हाथ में ढफ्फ, किसी मे टण्डी और किसी के आगे तुतरी।

मामू कसाई ने दोत्तही मे से मुँह निकाला—"अरे लफ्फाडियो, आज क्या जलसा है! न होली, न दिवाली और ले बैठे तुतरी और शारना!"

"चाचा, मन की मौजें आज नहीं रुकती। रंग-रस को दिल न हो तो कानों

में उँगलियाँ डाल सो जाओ। चाची ताम्बा का जो करेगा तो कर जायेगी इन सिरों का सिरवारना !"

सांसी मिरासियों के टब्बर आग के इर्द-गिर्द आ बैठे।

"गाओ जी गाओ, कोई जस्स गाओ।"

"ओए, जस्स किसका ? पुरोहने पुलसियों का !"

"उल्टी बुद्ध यारो, क्या जस्स गायें ठानेदार के बाप-दादे-पड़दादे-लकड़दादों का, जिन्होंने बीबीपुर में टुकड़ियोंवाले खेस बुने थे !"

"होश कर, अभी तो थानेदार का पेशकारा ही चढा है।"

"फिकर नही बादशाहो, हमने भी कई तुर्रे और तुर्रेबाज देख डाले !"

हीरा सांसी का चचेरा भाई करतारा माच्छी सुलतान के साथ आ धमका। मुरकी के कान में कुछ कहा तो खुशिये ने तरंग मे आ बोल उठा लिये—

"पोस्ता दिल दोस्ता तेरा सोने मंढावा बूटा
सौ रुपये की पिनक पिलायी हजार रुपये का झूटा।
पोस्ता दिल दोस्ता तेरा जड़ से उखाड़ूँ बूटा
वसते घर उजाड़ के तू हाथ में दे दे ठूठा।"

मिरासियों-कंजरों के जुट्ट मिलकर भंगियों के गाने गाने लगे।

इलाची कंजर ने शुतरों पर थाप दी तो गाँव की रात हर बन्द पर थर्राने लगी।

"गंग भंग दो बहनें साहबो
परबत में अस्थान
एक नहाये उतरे मैल
दूजे पीये पाप तरान।"

गुल्लू ने टोका—"ओ ठठोलियो-मिरासियो, लानत तुम पर। भूखे पेट गाने लगें शोभा और वह भी भुस्सी भंग की !"

लखी मिरासी के तम्बे से बोल फूट-फूट पड़ते थे। गुल्लू को थापड़ा दिया "गुल्लू बादशाह, अकेली तेरी ही जवानी ऊपर चढ़ने को नही तड़प रही। जरा गाने की महक तो फैलने दे। शाहों के यहाँ विराजे ठानेदार सलामत अली के कान तक न पहुँचे ढोल-टँडीरे तो हमने बेफायद ही महफ़िल सजायी।"

करतारे ने हँस-हँस खुशिये की टांड पर टोहका दिया—"ओए, पुलसियों से गुद्दी गुडुच्च करवानी है क्या ! बात कहती है तू मुझे मुँह से निकाल, मैं तुझे पिण्ड से निकालूँगी।"

"लो जी, अपनी तो मौज मन की। टप्पा नही तो ठुमरी। दोहा नही तो कवित्त।"

सुल्तान माच्छी ने चढ़ा रखी थी।

"उस्ताद, आज गा-गा के मुख़ालफ़ीनों के थम्बे बन्द कर दो !"

"लो जी बादशाहो, जो हुक्म करो !"

फग्गू ने अपनी बूथी उठायी और लक्खी को आगाह किया—"वह अपापी पुलसिये !"

लक्खी ने तुरत कवित्त छू लिया—

"गुणियों के सागर हैं
जात क उजागर हैं
भिखारी बादशाहों के
प्रभो के मिरासी हैं
सिहों के रब्बाबी हैं
क़व्वाल पीरज़ादों के
हम डूम मालज़ादों के।"

"बस-बस !" लालख़ाँ ने कड़ककर कहा, "उठा लो महफ़िल अपनी। हुज़ूर ने याद फ़रमाया है।"

"हुक्म कुल्लेवालों का ! क्यों जी पुलिस बहादुर, क्या सारा साज़-सामान लेकर हों हाज़िर ठानेदार के सामने !"

"ओए, सँभलकर मिरासिया, जिन-जिन शोहदों का नाम लेता हूँ, शाहों की बैठक पहुँचते बनें। भग्गू, लक्खी, गोगलू, करतारा, सुल्तान !"

कंजरों की गोट्ठ का सरमाहा खैरू सिपाही लालख़ाँ के पास आ ढुका और पूछा, "सिपाहीजी, क्या अखिये की फिर पेशी होगी ?"

"अभी ज़रा ज़ख्मों की टकोर कर ले ! उसकी माँ की···"

दुल्ला मिरासी उठकर भँभीरी की तरह घूम गया। तालियाँ बजा-बजाकर कहा—

"याद आ गयी जी
भडवी याद आ गयी
हाय हाय याद आ गयी।"

लालख़ाँ की आँखों में गुस्से का सुरमा देख दुल्ला भोला बन गया—

"लो जी, चले थे यार मजलिस जमाने।
पड़ गये हिस्से कोड़े खाने।"

गुल्लू ने हाथ जोड़ अर्ज़ की—"बहादुर जी लालख़ाँ, ज़रा मुँह तो गीला करते जाओ रसूखवालो।"

लालख़ाँ हेकड़ी से डटे रहे। न हिले। न कदम उठाया।

"ला, ओ ला, प्याला भर ला आफ़ताबे में से !"

लालख़ाँ आने तक इन्तज़ार करते रहे। प्याला एक ही घूंट में गटक गये और

हवा में बेंत हिलाकर कहा, "मांयाव्हो, गैर-कानूनी हरकतों से बाज नहीं आते। आफतावों में कच्ची शराब रखते हो! सरकारे खबर पहुँच गयी तो मुचल्के हो जायेंगे।"

"खैर मेहर है जी! अपने सिर पर जब खासुलखास सितारे-हिन्द साहबजी लालखां माजूद हों तो भड़वी ताज़ीरात हिन्द की किसे परवाह!"

लक्खी मिरासी ने शारना छूकर यारों को दिलासा दिया—'पुलिस से भी क्या डरना यारो। उससे तो तुम्हारा गण्ड-चित्रावा हो चुका। हँसी-खुशी जाओ हाजरी पर! भली करेगा साईं!"

चौकडी थानेदार की पेशी के लिए उठ खड़ी हुई तो लक्खी ने हाथ ऊपर उठा अल्लाह को याद किया—

"अल्लाह सच नवी बार हक
दीदार अल्लाह का शफात हज़रत की।"

खेसों-दोत्तहियों की 'बुक्कलें' मार जवान-अवाटड़े ऐसी मस्त शोहदी चाल चले कि लालखां का अपना दिल मचलने लगा!

'काश इन वेवरदी कंजरो की टश्श-टंकार अपने पुलसिया पैरों में भी होती!'

फिर अपनी पेटी और तुर्रे का ख्याल कर इस हसरत को थूक दिया—'बदकार मां के यार खुद अपनी करनियों का फल भुगतेंगे!'

पता लगा थाना तीसरे दिन भी पिण्ड में टिका रहेगा तो हाका-हाकी मच गयी।

छोटे-बड़े टाबर दौड़-दौड़ मांओं-भाभियों को बताने लगे कि मोटे-ताज़े मुच्छड़ थानेदार का मुक़ाम आज भी यहीं पडा रहेगा।

सुनकर घरवालियों ने झटपट आटे गूँथ तन्दूर तपा दिये। सौ ऊँच-नीच है। खा-पी जायें मरद तो संझा तक आधार बना रहेगा।

शाहनी के चूल्हे पर पिछली रात से उड़द पकते थे। मक्का के दोढे बना घी रचाया और मिट्टी की बाटियों में लस्सी-मक्खन डाल पुलसियों को वड़ी वेला जा पठायी।

चाची महरी माथा टेक कुटिया से लौटी थी। भुनती भूजी की खुशबू लेकर बोली, "बच्ची, ठानेदार सलामत अली को तो फिरनी से डाडा प्यार। कहे तो

तावली-तावली चावल पीस देती हूँ !"

छोटी शाहनी हँसने लगी—"चाची, ठानेदार को किस चीज़ की कमी। उ
तो नित-नित पकवान। फिरनी न भी मिली उसे आज तो सूख तो न जायेगा।"

"छोड़ री, मैं तो चाव से कहती हूँ। एक तो ठानेदार, दूसरे शाहों का दोस्त
यार, उसकी जितनी ख़ातिर हो थोड़ी।"

"इस हिसाब से तो कुक्कड़ कड़ाहियाँ चढ़ा दो। मुर्ग़ बने, मुरग़ाबी बने
यख़्नी पुलाव बने···"

चाची अनसुना कर चावल घोटने लगी। कूंडी-सोटे से ऐसा सम किया कि
मीठ में रहे ही नाम सिर्फ़ फिरनी बीबी का।

मांबीबी ने शाहनी को छाछ का गड़वा भरते फिर देखा तो कहा,"शाहनी, दं
चाटियाँ नीचे जा चुकीं। इतनी लस्सी! पीनेवालों के पेट तो न अफरा जायेंगे!"

"न री मांबीबी, इन धौमियों की भली पूछी। रात जिगर में भट्टियाँ तपार
और दिने लस्सी-पानी से तपन बुझायें। अरी, वह पुलसिया क्या जो अपनी हस्त
मे पीने-पिलाने के खूँटे न बाँध रखे।"

दिन-भर चोरी-चकारी के पीहने-पिट्टने पड़े रहे। न पता लगे पुलिस क़त्ल क
वारदात की कसो लेने को रुकी है न लट्टूरों की ख़ारबाजी की वजह से।

शाम पड़े बाग्गे ने जा हवेली में अर्ज़ की—"शाहजी, शाहनीजी ने ठानेदारजं
को याद किया है। घडी-भर को ऊपर झलकें दे आयें!"

सलामत अलीजी शाहजी को देख मुस्कराये। ऊँचे शमलेवाला सिर ऐसे
हिला ज्यों किसी डिप्टी के आगे हाज़री हो।

हँसकर कहा, "थोड़ी देर को माफ़ी शाह साहिब। शाहनीजी को हमशीर
समझूँ या साली साहबा, दोनों रिश्तों से बुलावे का टालना सलामत अली के हव
में अच्छा नहीं! अपनी हाज़री ज़रूरी है!"

"मालिक हो बादशाहो, जो चाहो सो करो।"

सलामत अलीजी ने मुँह पर हाथ फेरा! साफ़ा ठीक किया—"शाह साहिब
रिश्ते से तो आप और हम दोनों हमज़ुल्फ़ ही हुए। दोनों बेटियाँ एक ही पिण्ड की
हैं। बड़े कड़े दाने हैं इन आलमगढियों के!"

ठस्सेदार चाल से पौड़ियाँ चढते-चढ़ते सलामत अली दो अंगुल और ऊँचे उठ
गये।

आवाज़ दी—"ख़ैर सुख है न शाहनीजी!"

ठानेदार को देख जनानियों का हाथ-पैर पड़ गये।

माँबीबी ने मंजी खींच ऊपर चारख़ाना खेस बिछा दिया।

हुआ खैर, जेल की मेहनत-मशक्कत से फ़ारिग हो बरखुरदारखां घर लौटा तो दादी करमबीबी ने गांव-भर में खजूरों की चंगेर घुमा दी।

जो मुंह लगाये, बेबे को मुबारकें दे।

"मुबारकें बेबे, खैर सदके, पुत्तर घरों को लौटा है।"

"रब्ब की नज़र हुई सवल्ली बेबे, अब देख मुरादें पोत्रों की।"

"हां री। अल्लाह के फज़ल से जातकड़ा अपनी जिवियों को लौटा है। मेहर ऊपरवाले की!"

"बेबे, तेरे हाथ की रोटी खायेगा तो पुत्तर आप ही पल्तार जायेगा।"

पिण्ड की मुटियारों को बरखुरदार की छेड़छाड़ न भूली थी।

शीरी ने राह चलते बेबे से पूछ ही डाला—"बेबे, सुनते हैं जेलवाले गर्कजाने जेल में डाडी मेहनत करवाते हैं।"

"न मेरी बच्चड़ी, बरखुरदार अपना जेल में हौलदार लगा हुआ था।"

चन्नी ने शीरी को कोहनी मारी—"हला बेबे। यह तो सज़ा न हुई, अहल-कारी हो गयी।"

बेबे अपनी रौ में बोलती रही—"धियो, जेलवाले बड़े खुश थे मेरे बरखुरे से। रिहाई का हुक्म निकला तो दरोग़े ने घर से सेंवइयां-हलवा भेजा बरखुरदार के लिए।"

चन्नी मुंह में चुन्नी दबा हंसी रोकने लगी।

बेबे ने देख लिया—"क्यों री कुड़े, यह क्या सैनत मारी शीरी को! सोचती होगी दागी होकर छूटा है! फिटे मुंह री। मेरे बच्चड़े पर ज़िना-जबर का इल्ज़ाम नहीं था! उसने अपनी जिवियां बचाने का दण्ड भुगता है। जो अपनी जन-जिवियां न बचा सके, उसे हलाल का नहीं, हराम का समझो।"

शीरी की आंखें चमकने लगीं—"बेबे, यह तो हुई न बात गुरदेवालों की। चन्नी तो मूढमती है, इसके कहे का ख्याल न कर।"

शाहनी धर्मशाला से माथा टेककर लौटी थी। राह में बेबे को देख मुबारकें दीं—"मुबारकें बेबे, मुबारकें। खैरों से घर में चिराग परता है।"

"खैर मुबारक शाहनी। बरखुरदार मेरा आप आयेगा सलाम करने शाहनी को।"

"कर्मोंवाला बरखुरदार जिये-जागे। रब्बा भाग लगाये। बेबे, अब घर-दर बना दे पोत्रे का। सुखी-सान्दी तुम्हारे बेहड़े भी रौनकें लगें।"

"तुम्हारा ही मुंह मुबारक मेरी बच्ची। सरफ़राज़ मेरे को तो उम्र-क़ैद। तब तक इसी का मुंह देखूंगी।"

बेबे करमो घर की ओर मुड़ी तो शीरी से बोली—"धिये, मूठ-भर सेंवइयां तो मां से मांग ला। बरखुरा बड़ा रीझता है मीठी-सेंवइयों पर। बना दूंगी तो खुशी

री खायेगा।"

झोली में सेंवइयों की मूठ डाले शीरी आयी तो वेवे बड़ी खुश हुई। लड़की दुआएँ दीं—"बलिहारी जाऊँ री। अल्लाह सोहणे भाग लगाये।"

शीरी ने चूल्हा ठण्डा देखा तो पूछा, "कोई काम हो तो बता दे वेवे, करत जाऊँ। कहे तो चूल्हा लहका दूँ।"

"मैं सदके जाऊँ धिये, चूल्हा जला हँडिया ऊपर धर दे। पक जायेंगी सेंवइय तो ऊपर से घी-शक्कर डाल दूँगी।"

शीरी ने हँडिया चढ़ा आटे की कनाली खींच ली—"वेवे, आटा भी गूँध जाती हूँ।"

वेवे बैठी-बैठी चोखी नजर से देखती रही। खबरें कैसे दिल के चोर-दरवाज़े से शीरी को घर के अन्दर खींच लिया।

कोहनी टिकाये मंजी पर पड़े-पड़े पूछा, 'कुड़े शीरी, तेरी माँ ने अब तक तेरा व्याह क्यों न किया।'

शीरी ने अँखियाँ उठायीं—"वेवे, सेंवइयाँ दूधवाली कि घी-शक्कर की!"

"बरखुरदार दूधवाली ही खुश होकर खाता है।"

"वेवे, कोई लौंग-इलायची निकल आयेगी घर से!"

"न री। मैं बूढ़ी-ठेरी अकेली। न खिचड़ी-पुलाव, न फिरनी-सेंवइयाँ! रमज़ान में जो रोजे रखे तो दूध का घूँट भर लिया। बहुत हुआ तो साथ पंजीरी फाँक ली।"

शीरी ने चूल्हे में से लकड़ी खींच ली।

"ज़रा ध्यान रखना वेवे हँडिया का, कुत्ता न मुँह मार जाये। मैं अभी आयी।"

वेवे करमो पड़ी-पड़ी सोचती रही—सुघड़ सयानी घड़ी-दो-घड़ी भी आन खड़ी हो घर में तो आँगन-चूल्हा चम्म-चम्म करने लगे। रब्बा, मैं क्या इस कवार को बुलाने गयी थी! आप ही ढुकी आयी।

शीरी की आहट पर वेवे ने पूछा—"क्यों री धीया, क्या ले आयी!"

"वेवे, यही दो-चार इलायचियाँ और कौडी-भर बादाम। इलायची पड़ी थी घर पर, बादाम माँग लायी शाहों के यहाँ से।"

वेवे उठ बैठी। चूल्हे की अँगियारी में दमदम दमकता शीरी का मुखड़ा देख आँखों मे ऐसी सोहनी झलक पड़ी ज्यों लड़की न हो वत्तर लगी खेती हो।

"वाह री धिया, तू तो बड़ी फय्याज है, मेहमाननवाज़ है। इतना तो बता, ाम-धन्धे को इधर चली कैसे आयी?"

"वेवे, एक-दूजे का हाथ बँटाना कोई गुनाह है भला!"

"न री! चन्न वह जो चान्नना करे।"

शीरी ने हिम्मत कर पूछ लिया—

"बेबे, बरखू अब टिककर रहेगा न पिण्ड में !"

बेबे ने माथे पर त्योड़ियाँ चढ़ा लीं। पहले लड़की को घूरती रही, फिर हँसकर कहा, "हैं री, मैं कौन अचरज-दादी हूँ जो मेरे पोपले मुँह के ज़ोर से मेरा पोत्तरा यहाँ टिका रहेगा ! चलेगा ज़ोर तो तेरे जैसी मटक्कनी मुटियार का ही !"

शीरीं हल्की फुल्ल हो उठ खड़ी हुई। भाड़कर सिर पर दोहर की और क़दम उठा लिये।

"चंगा बेबे, मैं तो अब चली। चाचा खू से आता होगा। जाकर तन्दूर तपाऊँ। कहे तो रोटियाँ उतारकर दे जाऊँ।"

"जीती रह। बड़ी-बड़ी उमर हो। ले री, रुक जा। यह आन पहुँचा है बरखुरदार।"

"न बेबे। अब क्या रुकने का काम। हँडिया उतार सेंवइयों को बूरा बुरक देना।"

"सदके। देख पुत्तरा, तेरे लिए दौड़-दौड़कर आप तो लायी सेंवइयाँ और आप ही बादाम इलायची।"

बरखुरदार ने शीरीं का राह रोक लिया—"क्यों जी, जो जना हवालात में रह [illegible] ... था चढ़ा आँखों से तरेरा [illegible] ... न जानते हों कि हवालातों में गीदड़ नहीं बघियाड़ जाते हैं !"

[illegible] कहती है शीरीं—

[illegible]

कौन उठाय यारा का बाहृयाँ।"

"हवालातें बेबे, हवालातें !"

"हल्ला जी।"

बरखुरदार की छाती पर निक्की-निक्की फुलवाड़ी खिल आयी। हाथ बढ़ा शीरीं का परांदा पकड़ लिया और सिर पर लाड़ से धप्पा मारकर कहा, "शीरीं, तुम्हें मिली पीरी। कल फजर तुम बेबे के पास इसी जगह इसी घाँ नजर न आयी तो तेरे चाचे-चाचे समेत घर-दर यहीं उठा लाऊँगा।"

"मुड़ रे, मुड़। न छेड़ मेरी धी को। जा पुत्तर, घर राह तकते होंगे।"

नटखट शीरीं आँखों से एक मिट्ठी भभकी देकर, वह जा और वह जा !

बरखुरदार ने भग्गा उतार टँगने पर टाँग दिया।

"क्यों रे, तेरे भाने महीना जेठ-हाड़ है जो गले से कपड़ा उतार डाला !"

बरखुरदार के गले का तामा चम्म-चम्म चमकने लगा। दीवार पर टँगी चारपाई बिछायी। पल-भर बैठा। फिर उठ खड़ा हुआ।

"क्यों रे क्यों, ज़रा दीदा लगा के बैठ। अब किन सोचों में !"

बरखुरदार ने चूल्हे की ओर देखा—"बेबे, शीरी हँडिया उतारने को कह गयी है। उतार दूं न ?"

"हां रे !"

बरखुरदार ने हँडिया उतार नीचे रखी और चूल्हे के पास बैठ हाथ तापने लगा।

करम बीबी ने देखा तो ऊँचा-ऊँचा बोलने लगी—"कख न जाये तेरा। अरे, कभी बदन से कप्पड़ उतारता है। कभी आग सेंकता है। बरखुरदार, सौंह है तुम्हें मेरे सिर की। घर लौटा है तो दिल लगाने की कर। दिल न भरमा। जा, कुछ देर यारों, मित्र-प्यारों में बैठ आ।"

बरखुरदार उठ खड़ा हुआ।

"बेबे, सैकड़ा दो शाहों से मिल जाये तो वाही कर ज़मीन को, तम्बाकू लगा दूं। कन्धारी बीज न भी मिले, देसी ही लगा दूं।"

सुनकर बेबे करमो के कलेजे ठण्ड पड गयी। रब्बा, जट्ट पुत्तर अपनी जिवियों पर नज़र टिका ताकने-सोचने लगे तो खैरों से फिर आयी रुत वहारां।

"पुत्तरा, इरादा किया है तो अल्लाह के फ़ज़ल से बरकतें ही बरकतें।"

बरखुरदार ने पांव उठा घर के बाहर रखा तो पोत्तरे की पीठ देख करमो को अपना बेटा सरफराज याद हो आया। हाय री, मुहान्दरा तो बच्चड़े का एक तरफ रहा, कद-काठी भी बरखुरदार की हूबहू बाप जैसी।

करम बीबी के दिल-मन ऐसा उबाल उठा कि बेसब्री में सरफ़राज़ को ऐसे हांक दे मारी ज्यों पुत्तर झोटी के लिए खुरली मे पट्ठे डाल रहा हो—

'सरफराज पुत्तरा, देनेवाले खप्पियों ने तुझे उम्र-कैद तो दे दी, पर रे तेरी माँ ने भी कम जिगरा नहीं रखा। आ रे, आ। अब घर लौटनेवाला बन। तेरी बेबे बूढ़ी और कितना जियेगी ! बरस-छमाही ही न ! आ जा। छूट भी आ !'

पहले नौरात्रे घर-घर जौं और कनक की खेती बोयी गयी।

नहा-धो स्नान कर दरिया पर, घरवालियों ने छोटे-बड़े आलों में मिट्टी बिछा बीज डाल दिये।

किसी ने आले के आगे सुच्चे पट्ट का पटोला टूंग दिया। किसी ने मिट्टी के

कूजे में, किसी ने कोरे घड़े के बब्बरों में ।

जय भुवनोवाली देवी, तेरी जय ! जय सांचे दरबारवाली, तेरी सदा ही जय !

ईद और दशहरे की तिथियां अगाड़-पिछाड़ निकलीं तो छोटे-बड़े हियरों में हुलास उमड़ने लगा ।

कोरे कपड़े दरजी-दरजनों के हाथों में खड़कने लगे ।

लट्ठे के लाचे तहबन्द, खादी के कुरते-भग्गे, दरेस और पटपटी की सूथन-सलवारें, छोटी लुंगियां-तहबन्दियां — पिण्ड-का-पिण्ड दर्शनसिंह की हट्टी पर टूट पड़ा ।

"छींट निकाल ओ वीरा, छोटी बूंद की !"

"कोई छपीला खद्दर दिखा दे चाचा !"

"काली सूफ दे मेरी सूथन के लिए !"

"बहन वजीरो, बहूटी के लिए बुखारा क्यों नहीं लेती !"

"लो ताई, धी को दिवाली पर जोड़ा भेजना है तो दरियाई ले क़ाबुली !"

"न, मुझे तो स्याही दिखा धूप-छांहवाली ! दुपट्टा हो जायेगा डोरिये का !"

"वीरा, लाचे दे दो । एक लाल । एक हरा । नीचे लगाने को बन्नियां दे दे धारीदार ।"

"ले जना बीबी, दुपट्टा भी ले लो । ओढ़न ताज़ा न होगा तो दूजे कपड़ों की भी क्या फब्बन ।"

दर्शनसिंह ने जैना बीबी के कानों में झूलते झुम्मनों पर एक चमकीली नज़र डाली और हँसकर कहा—"इस बार भी जिन्स हो कि"

"वीरा, गठके घी की पक्की दो-सेरी । पहनने को कोई ढंग का कपड़ा दे !"

गज्जनसिंह ने सत्तो खत्राणी के आगे चमकी का थान फैला दिया—"लो, फब्बीली भी और सजीली भी !"

"न रे, कोई मजबूत हण्डौना कपड़ा दिखा ! इसकी न तन्द न तानी !"

"दर्शनसिंह, मुलतानी छींट फेंक । निरा लोहा है, भरजाई ! आदमी हँड जाये पर कपड़ा न छीजे ।"

कर्मबीवी ने दूर से हांक दी—"ले रे वीरा, ये सूत की अट्टियां ! तेरे भानजे पीछे पड़े हैं, नये भग्गे पहनेंगे ! बता, कोई जफ्फर चारखानी ही बता ।"

रसूली गबरून मांगने लगी तो गज्जसिंह ने पूछा, "धिये, बता तो सही न, बनाना क्या है !"

"गोहर के पजामे के लिए !"

"मेरी बच्ची, यह न ले । यह ले फान्टादार बड़े अर्ज का ।"

चिड़ों की कुन्ती छोटा-सा घूंघटा निकालकर बोली, "वीरजी, पोंकि-भाण्ड

की मलमल के दो दुपट्टे !"

"भरजाई, मेरी बात का बुरा न मानना। कपड़ा-लीड़ा किसी ने अगली दरगाह नहीं ले जाना। अपने ऊपर यह किड़सकारी चगी नहीं। ला दर्शनसिंह, छब्बी की मलमल के दो दुपट्टे फाड़ दे !"

दुपहरीं खुले कोठों पर मुटियारें रँगरेजनें बन गयीं। कूण्डों मे रंग घोल-घोल ओढ़नियाँ रँगी जाने लगीं।

"अरी, चुन्नी डाल प्याज़ी के कूण्डे में और अबरक डाल क़लफ के कूण्डे में !"

"है री, काली मित्री के लिए इतना गूढ़ा रंग ! उसे नहीं फबना !"

मोहरे की बेबे अपनी बहूटी का दुपट्टा उठा लायी—"गूढ़ा गुलाबी घोला हो तो वचनो की ओढनी भी निकाल दो।"

"बेबे, बहू को हवा लगने दिया कर। भरजाई को ऊपर भेज दे। आप रँग लेगी।"

शिब्बो ने चुन्नी निकाल क़लफ के कूण्डे से कौओं को उडाया और हँसकर कहा, "वचनो भरजाई कुढ़-कुढ़कर रोग लगा बैठी तो पछोताओगी !"

बेबे पी गयी। निक्की-सी मुस्कान बिखेर दुपट्टा मंजी पर डाल दिया और जाते-जाते कहा, "लो री चिड़ियो-कुड़ियो, तुम करो वार्तालाप ! मैं वचनो को भेजती हूँ।"

शिब्बो हँस-हँस दोहरी हुई—"हाय री, मैं मर गयी। आज तो बेबे को सीधे गिट्टि लगी !"

बेरीवालों की रेशमा आ गयी। चिट्टी मलमल को सुतली से गाँठें दे दे पोटली बना डाली।

"क्यों री रेशमा, क्या लहरिया रँगने लगी है ?"

"न, लहरिया नहीं, टिमका है।"

"किस रंग का !"

"फिरोज़ी।"

सहेलियाँ हँसने लगीं—"वाह री गुल डोडो, फिरोजी के बिना कोई रंग ही पसन्द नहीं !"

रेशमा ने कूण्ड में चूँडी-भर फटकरी डाली और दुपट्टे को रंग में भिगो दिया।

छोटी-बड़ी कुड़ियाँ आसपास आ जुटीं। गोदियों में नाक बहते भाई-बहन। रंग की पुड़ियाँ ऐसे देखें-परखें ज्यों रंगरेजी ही सीखनी हो।

हाथ में मलमल की ओढ़नी लिये मांबीबी आन पहुंची।

"क्यों री रेशमी, दोरंगी लहरिया भी जानती है क्या!"

"क्यो नही! आ रँग दूं। जना ईद पर आयेगा तो ऐसा लिपटेगा ज्यों किसी टूने-तावीज का बँधा हो।"

रेशमा को बन्देज़ी भरते देख मांबीबी ने पूछा, "भला कहाँ से सीखी यह कला!"

"मांबीबी, पार के साल अपनी खाला के पास गयी मुल्तान। हमसाये उसके कक्कोजायी पठान। सवानी उनकी ऐसे-ऐसे बेल-बूटे चितारे कि रहे नाम रब्ब का।

"गुलाबी में डालो लाल तो बने आत्ती गुलाबी।

"पीले मे हरा तो बने अंगूरी।

"लाल को काले में डोबा दे दो बने उनाबी।

"जंगाली में डाला हरा तो बने फिरोजी।

"सालू रँगना हो तो पहले मजीठ उबाल लो, फिर कपड़ों को डोबा दे आँवलों मे, थोड़ी-सी फटकरी बुरक दो।"

"बड़ी गुणिया है री! सासरे जायेगी तो लोक-जहान पूछेगा।"

इधर रंग-बिरंगी ओढनियां हवा मे सूखने लगीं, उधर लडकियों को हाँकें पड़ने लगी—"अरी आओ री, दूजे कामो मे भी हाथ बँटाओ। रांगली चूनरें खाने-पीने के काम न आयेंगी!"

उत्तरी वण्ड ईद की सेंवइयां बँटने लगी। माच्छियों के तन्दूर पर सेंवइयां निकालने की जल्दी लग गयी।

ऊपर से गुंधा मैदा डाल जन्द्री की सख्त हत्थी दबायें और नीचे ढीगरियों के जाल पर पतली-महीन सेंवइयां बन-बन फैलती जायें।

अपने तन्दूर पर भीड़ देख सुलेमान की बाच्छें खिल गयीं।

सुलेमान ने छोटे शरीफू को घुड़क दिया—"इधर-उधर अँखियां न मटका-फिरा। काम कर। ला बेबे अकबरी, मुझे दो आटा। हत्थों-हत्थ निकालता हूँ।"

"जियो-जागो पुत्तरा, मेरी तो सेंवइयां नही, जौ का चून है। भट्ठी में ही भुनेगा।"

मीरल ने टोपा-भर मैदा आगे किया तो सुलेमान ने आंख मार दी—"तुम्हारे टोपे रहें सलामत!"

"तुम्हारे भी तन्दूर तपते रहे सुलेमान! और मच्छियां भुनती-तलती रहें!"

हाजीजी की हुज्जन ने अपना तबाख आगे कर दिया—"जवानियां मान

पूरा पसार सुनहली धूप में झिलमिल-झिलमिल करने लगा।

शाहनी को पहले तो दीखे दो मिनारे। जगमग-जगमग। फिर दीखा लौ से लिपा हुआ एक सुच्चा आँगन। अँगना में घुटनों चलता एक लहुड़ा बालक। उसके कानों में काली सीलम की फुम्मनियाँ। कमर में काली तड़ागी। ऋषिकुमार उतर आया हो कहीं से! ठुमक-ठुमक। यह क्या? कृष्ण कन्हाई के पैरों में जैसे कोई घुंघरू बजते हों। पीछे-पीछे गउओं का झुण्ड। काली गाय आँखों के आगे आयी ही थी कि शाहनी की नींद खुल गयी।

"श्रीराम! श्रीराम! सपने में यह क्या मोहनी सूरत दिखा दी! चारों ओर लौ ही लौ! खैर साईं की!"

शाहनी बिछाई छोड़ उठ खड़ी हुई। लोई ओढ़ी और पसार से बाहर निकल आयी।

चौके की कुण्डी खोलने को क़दम उठाया ही था कि पाँव डगमगाने लगे।

शाहनी सँभली, फिर सिर घूमा और चक्कर खाकर थम्म से जा लगी।

"चाची, ज़रा आना। मेरे देह-चित्त ठीक नहीं लगते।"

हड़बड़ाई-सी चाची बाहर निकल आयी—"किसने पुकारा! अरी किसने आवाज़ दी!"

बच्ची को थम्म के पास बैठे देखा तो हवास उड़ गये—"यह क्या मेरी बच्ची! सुबह-सवेरे यहाँ क्या बैठी है!"

"चाची, घूंट-भर पानी तो देना!"

"क्यों री जेठी—" छोटी शाहनी बाहर निकल आयी।

शाहनी कुछ कहने को हुई कि गले से खाया-पीया बाहर निकल आया।

माँबीबी फिकर से बोली, "अजवायन का पानी उबाल लो चाची!"

दूधारने से अंगार उठा चाची ने चूल्हा लहकाया और आप-ही-आप बुड़बुड़ाने लगी—"कोई पूछे चित्त-मन ठीक न हो तो···"

छोटी शाहनी पास झुक चाची के कान में बोली, "रख अजवायन काहे को! समझ भी जा न चाची! मैं चली माथा टेकने।"

"चाची, भली-चंगी थी मैं रात को तो। खबरे अब क्या···"

"हुआ-हुआ री! भरम छोड़। नहा-धो चौके-चूल्हे लग!"

शाहनी उठ खड़ी हुई। हाथ में उबटन लिया और करतारो को आवाज़ दे कहा, "बल्ली, बर्तन-भाण्डे धो आटा गूंध। मैं नहा के आयी।"

चाची की आँखों में शिरोमणी जलने लगी। लाड़ से झिड़ककर कहा, "आ री उत्तमगन्धो, तावली-तावली आ। मुझे देर होती है।"

दोनों नीचे उतर गयीं तो माँबीबी ऊपर से देखती रही। फिर हाथ ऊपर उठाकर कहा, "फ़ज़ल मौला, मेहर अल्लाह!"

जम्मीवाला कूँआ गिड़ने लगा था। खेतों पर मजरी धूप रह-रह उजास क
थी। हवा के हलकोरों में नरमा कपास की डोडियाँ इतरा-इतरा जाती थीं। स
नीले आसमान की सीध दरिया की चमचमाती नीली लीक धरती पर ऐसे दीख
थी ज्यों धरती और आकाश के बीच की मुंडेर हो।

दोनों ने रेती पर कपड़े उतारे और पानी में उतर गयीं।

अँजुरी भर सूर्यदेव को नमस्कार किया—"सब लोक-ब्रह्माण्डों में बड़ा ते
तप-तेज महाराज…!"

चाची ने भर-भर पानी में तारियाँ मारीं।

शाहनी ने सामने पहाड़ों की सीध सिर नवाँ जयकारा बुलाया—"गौरा भव-
भामिनी, तेरी सदा ही जय!"

फिर छींटे दे-दे मुखड़े पर डुबकी लगायी तो क्वारी धूप में बदन प्रजात का
टुकड़ा बन जल में हिल-हिल हिलोरें लेने लगा।

"बस हुआ बच्ची! सिर नवा पीर-फकीरों से खैर माँग!"

शाहनी ने समझ लिया कि चाची जान गयी।

आँखें मीट बाबा फरीद का ध्यान किया—"तेरे ही रहम-करम से बाबा, नहीं
तो यह ऊसर धरती हरियाती! मेहर रखना। इस दिन को धुर चढ़ाना।"

दरिया के कण्डे-कण्डे चलती दोनों गाँव की ओर मुड़ी, तो शाहनी ने बुल्लेशाह
का बारहमासा छू लिया—

"फागुन फूले खेत ज्यों वन तन फूल शृंगार
होर डाली फुल्ल पत्तियाँ गल फूलन के हार
होरी खेलन सँइयाँ फागुन मेरे नैन
झलारो वग्गन
औखे जीवँदिया दिन तग्गन सीने बान
प्रेम के लग्गन
चेत चमन में कोयलिया नित कूके
करे पुकार
मैं सुन-सुन झुर-झुर मर रही
कब आवे घर यार!"

बराइयों के खेत से उठ दो मुटियार मूरतें चहकीं—

"सलाम शाहनी!"

"सलाम चाची!"

मुड़कर देखा—राबयाँ, फतेह और शीरीं।

"क्यों री चिड़ियो-कुड़ियो, साग-वक्खर बीनने आयी हो!"

"जी शाहनी!"

"अरी, तेरे छन्द-कवित्त कैसे !"

राबयाँ का मक्खन मुखड़ा धूप में दम्म-दम्म दमकने लगा—"एक सुना दूं चाची !"

"हाँ री हाँ, सुना ! शाहनी का जी हिरखेगा ।"

"लो सुनो—

रंग रस जीनेवालों के
रे साजन प्रीत प्यारों के
जिनके हृदय सूरज
उनकी मुट्ठी धूप
मस्तक उनके चन्द्रमा
जिनके घर मे पूत ।"

शाहनी ने राबयाँ को ऐसी आँख भर देखा कि लड़की जैसे कोई साध-सन्तनी हो । जानी जान हो । सपने में निरखी लो याद हो आयी ।

"जीती रहो । रब्ब बड़े-बड़े भाग लगाये । हाँ री राबयाँ कुड़े, काम-धन्धे से निबट घड़ी-दो-घड़ी मेरे पास आ बैठा कर !"

"जी शाहनी !"

चाची और शाहनी आगे बढ़ आयीं तो चाची बोली, "अराइयों की धियों को रूप ऐसा कि देख-देख तिरस मिटे जी की !"

"सच कहती हो चाची ! छोटी राबयाँ की बुद्धि तो ऐसी कि चान्नन ही चान्नन हो । नज़र न लगे लड़की को, मुखड़ा निरा फुल्ल गुलाब !"

"धन्य है जन्मनेवाली माँ । हस्सा अराइयो की ने ज्यों धुर पहाड़ों के सुथरे हवा-पानी से लड़कियों के वजूद बना डाले ! हस्सा क्या कम सोहणी थी ! किस्म । कहते हैं न कि जान-प्राण बन्दे को रब्ब देता है और रंग-रूप माँ और बब्ब देता है ।"

"चाची, जानती हो राबयाँ के लिए शाहजी क्या कहा करते हैं ?"

"क्या री !"

"कहते हैं लड़की को देख लें एक नज़र तो चित्त करता है देखते ही जाओ हरणाखी को !"

"यह तो शंसा न हुई, स्तुति हो गयी ।"

"जो भी कहो, शाह अपने की आँख बड़ी पारखी ।"

कचहरियों के अहातों में जट्ट शाहूकारों के ठट्ठ-के-ठट्ठ ऐसे ताने-बाने बुनें कि मुकद्दमों में कोई मार जाय। कोई मर जाय। कोई थान से जाय। कोई सर जाय।

पौर-कौड़ी के खेल की तरह कभी अन्दरी टोली मात दे डाले बाहरी को। कभी बाहरी दाँव में दे टँगड़ी।

इलाक़े के जट्ट शाहूकार सब रल-मिल करें मुकद्दमे और खट्टी कमाई करें वक़ील-अहलमद। गवाह भड़वे किराये के टट्टू!

क़त्ल-डाका, उधारवन्दी, असल-ब्याज और सूदख़ोरी में जिवियाँ हड़प्प। क़र्ज़ लिया, भू गहने रखी। न टोम्बू न काग़द। हुई लिखत शाह के हाथ की तो जो जट्ट कहे सो झूठ, जो शाह कहे सो सच्च। पगड़ियों के ज़ोर-ज़बर बड़े-बड़े रौब-दाबवाले मुकदमे भुगत गये।

गुजरात कचहरी के अहाते में बैठे-बैठे धूलांवाले चौधरी फतेह अली ने मदीनेवाले खुशी मुहम्मदजी को पहचानकर आवाज़ मारी—"खुशी मुहम्मदजी, राजी-बाजी हो न! आज ख़ैरों से कौन से मुक़द्दमे की तारीख भुगता आये! ख़ैर-सल्लाह, दो-चार मिस्लें तो लगी रहती हैं न कचहरी में!"

"हाँ जी, चूकनावाली ज़मीन की तारीख थी। अगली पड़ गयी। सुनने में आया है आज अदालत-आला शहर से बाहर है।"

"किसकी कचहरी की बात है?"

"वह जो अपने दरिया कलानवाले शेख अहमद के छोटे फ़रजन्द गुलाम मुस्तफ़ा!"

कचहरी का पुराना धुस्सर गौरालीवाला पहलवान खाँ सुनकर बोला, "कोई और वजह होगी तारीख लगने की। अदालत आला बराबर शहर में मौजूद है।"

"आपको यह कैसे ख़बर!"

"बादशाहो, अदालत आला सवेरे-सवेरे मण्डी में भिण्डी ख़रीद रही थी!"

बड़ा हास्सा पड़ा।

"देखो न जी, जज-मुन्सिफ कचहरी के बाहर घूमते नज़र आ जायें तो समझो दबदबा-ख़ौफ आधे रह गये। और जो आ जायें नज़र अदालत भिण्डी थोम ख़रीदती, तो इजलास का गुम्बद ग़ायब!"

ऊँचे कड़ियल जवान ने पास आ सलाम किया—"सलाम कहता हूँ चाचा साहिब!"

"जीते रहो। बरख़ुरदार, बड़ी-बड़ी उमर हो। भला आपजी की पेशी किसके यहाँ थी?"

"शेख अजमत उल्लाह साहिब के यहाँ!"

"भुगत गयी?"

"न जी, अगली तारीख मिल गयी।"

फ़तेहदीनजी ने सिर हिलाया—"यह तो कचहरियों के चाव-मल्हार हुए न! हां, घर में सब सुख-सान्द है न!"

"जी, अल्लाह की मेहर है।"

"पुत्तरजी, जो दिवानी मामला शरीक़ों के साथ चल रहा था, क्या पहुंचा किसी नक्के पर?"

"न जी! मुकद्दमे के दौरान साफ़ हुआ कि पट्टीवाली रत्तारिया जमीन बाबा नबी मुहम्मदजी ने गहने डाल रखी है।"

"यह तो वही बात हो गयी। लड़ाई पड़ी शरीकां और माज़िक बने गवाह!"

नानोवालवाले जल्ले और सम्मू की जोड़ी अहाते के अन्दर दाखिल हुई तो देखनेवालों की अँखियां चौंधिया गयीं। कसरती जवान काठी। चेहरे पर लून और खून। तीन डकैतियों में से साफ़-शफाफ निकल भागनेवाले शेरों को कौन न सराहेगा!

पास आ दुआ-सलाम की और चौधरी फ़तेहअलीजी से पूछा, "चौधरी साहिब, आपके पिण्ड का सांसी बाशा किन हालों में! उड़ती-उड़ती कान में पड़ी थी कि इलाक़ा जेहलम में बड़ा गदर मचाये हुए है।"

"सांसी पुत्तर का क्या! आज यहां कल वहां!"

जल्ले ने संजीदगी से सिर हिलाया, "बादशाहो, सांसियों के पैरों तले फिरकियां। आज सन्दलबार, कल नीलीबार, परसों छच्छ खुशाब।"

खुशी मुहम्मदजी ने गहरी दिलचस्पी से जवानों को देखा और भोले भाव कहा, "क्यों जी, क्या डाचियां हमारी रेल-गड्डियों से भी तेज चलती हैं? सुनने में आता है कि घोड़े हों खालस अरबी तो इंजनवाली गड्डी को पछाड़ दें।"

चोर-सफ़रों के माहिर जल्ला और सम्मू ओठों पर ज़बान फेरने लगे। खच्चर बनकर कहा, "बादशाहो, अपना छोटा-मोटा सफर तो इन्हीं पैरों पर। झूठ क्यों कहें, आप्पा ने तो वजीराबादवाला पुल ही नहीं लांघ के देखा।"

चौधरीजी इनके पोतड़ों से वाक़िफ़। हँसकर कहा, "पुत्तरजी, आप तो फ़कत नींद में ही शेखूपुरा, पटियाला, करनाल पहुँच जाते हैं।"

जल्ले और सम्मे ने दांत निकाल दिये—"सच फ़रमाते हैं चौधरीजी, सिर्फ ख्वाबों में ही।"

पेशी भुगता शाहजी भी आन पहुँचे।

ऊंचा क़द। गुलाबी चेहरे पर चिट्टी पाग। साथ-साथ हाथ का अँगोछा बने भागोवालिये दो गवाह।

"आओ जी, आओ शाह साहिब! आपके बिना मजलिस अधूरी थी।"

भागोवालिये सौदागरसिंह और उजागरसिंह ने जल्लू और सम्मू पर ऐसे

नजर दी ज्यों एक ही जिन्स की गठरियाँ हों।

"आज तो गवाहियाँ पूरी हो गयी न शाहजी ! अगली दो-एक पेशियों में मुकद्दमा निबड़ जायेगा !"

सौदागरसिंह ने उँगलियों के कड़ाके निकालने शुरू किये तो शाहजी झट समझ गये। टके निकाल आगे किये—"जाओ बरखुरदारो, मूले हलवाई के यहाँ जा लस्सी-पानी पी आओ !"

लड़कों की गवाही खरी हुई। सतवचन कहकर पाँव उठा लिये।

"शाहजी, यह भागोवालिये बड़े पहुँचे हुए छटीरे मालूम देते हैं।"

"चौधरीजी, इनका कुछ न पूछिए। इनका हिसाब अशमभर और तुशमभर-वाला है। अच्छी तरह पहचानता हूँ, पर आप जानो मुकद्दमे मे रंग भरने को यही भजनिये काम आते हैं।"

"वाह-वाह शाहजी ! क्या फरमाया है ! इन्हें खड़ा किया कचहरियाँ और गाने लगे भजन !"

शाहजी हँसे—"चौधरी साहिब, हुआ यह कि पिछली सरदियों नौशहरेवाली जमीन की मिस्ल लगी हुई थी खाँ साहिब अल्लाह-यार की कचहरी में। पेशी के दिन आकर देखता हूँ तो दोनों गवाह नदारद। देखा-पूछा। पता लगा दोनों किराये के टट्टू दूध-जलेबी के ठूट्ठे लिये खड़े है। मुझे देखा तो हँस दिये, 'माफी शाहजी, आपको दिखानेवाला मुँह बाक़ी नहीं। आपके मुखालफ़ीनो ने हमे पटा लिया है। फ़कत मौयाल्हे इन जलेबी के ठूट्ठों पर !'

"मैंने दोनों को थापड़ा दिया पीठ पर और कहा, 'बरखुरदार, अपना कुछ नही बिगड़ा। ईमान गया सो तुम्हारा और अपने पक्के गवाहों की फ़हरिस्त से तुम्हारे नाम काट दिये मैंने सो अलग।'"

वजनी गलों की हँसी और खाँसियाँ अहाते में गूँजने लगीं।

"शाह साहिब, फिर ?"

"फिर क्या ! बस पाँव पड़ गये। मैंने दूध-जलेबी के पैसे हाथ पकड़ाये और साल-भर पक्का कचहरी में बुला-बुला इजलास में खड़ा न किया। आखिर नसीहतें निकालीं तो आज इन्हें कचहरी में हुंगड़ी पड़ी।"

जलालपुर जट्टावाले चौधरी वसावाखान आन पहुँचे। साहब-सलामत हुई।

"खैर सुख है न शाहजी। सुनाओ !"

"शुक्र है मालिक का।"

"अड्डे पर खबर थी बादशाहो कि सरकार चोरी-डाके बारे जबर कदम उठा रही है ! अहलकारों को अगर जानी नुकसान पहुँचा तो हकूमत पिण्डों पर जुरमाना करेगी !"

कुंजावाले झुग्गा खान अपनी अनोखी कसरती चाल में सरामा-सरामा

पहुंचे तो मुंह-माथा देख सब पहचान गये कि चौधरीजी फ़ौजदारी जीत के आये हैं।

सबने हाथ पकड़-पकड़ मुबारकें दीं।

"रब्ब रसूल की नजर रहे सीधी बादशाहो, सांच को आंच नहीं।"

शाहजी ने आगे बढ़ हाथ मिलाया—"फ़ुग्गा खानजी, खैरों से फ़ौजदारी जीतने की खुशियां रोज-रोज मयस्सर नहीं होतीं। जीतने का रुआब ही साफ़े को अंगुल-भर ऊंचा कर देता है!"

जेब से पनघड़ निकाल रखे को दिया—"ऐसे सोहणे मौक़े पर मुंह तो मीठा हो चौधरीजी का! गुजरांवालिये की दुकान का बदाना ले आओ।"

फ़ुग्गा खांजी सज गये।

"शाहजी, कुछ पता तो लगे किसी डिप्टी मुख्तार से, जुरमानेवाली बात कहां तक ठीक है!"

"चौधरीजी, खुफिया गारदवाली वारदात में चार-छ: गांवों को हरजाना तो भरना ही पड़ेगा।"

चोरों की वाले हाजी शाह ने चोह-म-चोह लेनी चाही—"शाह साहिब, इस क़त्ल के बारे तो अपने ख्याल में एक ही बात आती है कि या तो साज़िश है किसी एक पूरे पिण्ड की या फिर दिलावर खां से तआल्लुक़ रखनेवाली किसी इगो छिनाल औरत की।"

वसावा खांजी ने तीखी नजर से देखा—"यह तबादलाये ख्यालात तो नहीं जान पड़ता। यह तो बाक़ायदा पुलिस की तरफ से गुनहगारी की पेशकश लगती है।"

शाहजी हंसे—"बादशाहो, क़दर-अन्दाज होने के लिए कजफ़हमी छोड़नी पड़ती है। आप मालिक हो, बाक़ी सांपों के आगे दिये जलाने को तो पुलिस भी हमारी कम नहीं।"

फ़ुग्गा खांजी को बात पसन्द आयी—"बहुत खूब। शाह साहिब, दिलावर खां तो सिधार गये बिचारे। अब तो सरकारी झाड़ा-फूंकी ही बाक़ी है। देखें गुनाह किस पिण्ड-ग्रां के मत्थे मढ़ा जाता है!"

घर-घर गेहूं की बालियां थम्मों पर सज गयीं। मौली के लाल डोरे से बंधे अन्न महाराज के सिट्टे ऐसे सजे कि देख-देख मन-आंखों की भूख मिटे।

शाहों के घर हलवे-पूरी की कड़ाही चढ़ी और सुगन्ध जा पहुँची ब्राह्मण पान्दों के घर।

पहला न्योन्दरा। शाहनी ने लीप-पोत चौंका सुच्चा किया। आसन बिछा चौंकियाँ रखीं। हल्की आंच पर खीर का देगबरा चढ़ाया। कड़ाही में सूजी भुनने लगी।

चाची ने मूठ-भर बादाम और किशमिश डाले कि देख-देख करतारो की जीभ रसाने लगी।

"शाहनी, जरा मीठा तो चखा दो!"

चाची ने टोका—"सब्र कर री करतारो! अभी कड़ाही सुच्ची-सुच्ची है। पहले ब्राह्मण पान्दे को तो जीम लेने दे!"

शाहनी हँसने लगी—"बरस-बरस के दिन कोई मन्त्र-सलोक उच्चार। थोड़ी देर हौंसला रख री। पान्दे के आने तक तेरी तृष्णा न सूख जायेगी।"

करतारो मरगयी निशंक हो खिड़खिड़ करने लगी—"शाहनीजी, रब्ब के घर मे भी बाम्हनों का रसूख। यहाँ भी भरे भाण्डे दूध-घी के पान्दों के लिए ही। करतारो विचारी के दिल का थान सुंजा सूना।"

शाहनी ने कड़ाही उतार नीचे रखी और चाची को हौले से कहा, "चाची, टँगने पर से मेरा सूथन-कुरता दो करतारो को। नहा-धो पहने, दिल में ठण्ड तो पड़े।"

चाची पसार से जोड़ा ले आयी। करतारो की बांह पर डालकर कहा, "जा री, कुंई पर नहा-धो आ। फिर आकर पूरी बेल! भगवान पान्दा आता ही होगा।"

काशनी छीट में पीली टिमकीवाला जोड़ा पहन करतारो ऊपर आयी तो अपनी फब्बन पर हँस-हँस इतराये।

पान्दों की कतार जीमने बैठी तो बनेरे पर हथेली टिकाये करतारो जातकों से हँसी-ठट्ठा करने लगी।

"खाओ रे खाओ! न खाओगे तो वेद कैसे पढ़ोगे! वेद न पढ़ोगे तो सुखी-सान्दी लोगों के ब्याह कैसे पढ़ाओगे!"

भगवान पान्दे का लड़का श्रीनाथ टिकटिकी लगाये करतारो को देखने लगा। फिर अपने चाचे की ओर मुँह करके कहा, "चाचाजी, कुल्लूवालवाले साहिब दित्ते के साथ क्यों न बहन करतारो का साक-सम्बन्ध करवा दें!"

"हाय री मैं मर गयी!"

करतारो ने हाथों से आँखें छिपा लीं और दौड़कर छोटी बैठके जा लुकी।

शाहनी ने हँस-हँस श्रीनाथ की थाली में हलवा डाला—"मैं सदके जाऊँ। पान्देजी, इस छोटे से मस्तक में इतनी अकलें! क्यों न हो, जातक ठहरा काशी-

वालों का !"

पान्देजी ने थाली पर से सिर उठाया और गहर-गम्भीर आवाज़ में कहा, "शाहनी, इस लडके के मुंह से संजोग बोले हैं खुदो-खुद। साहिब दित्ता दहेजू है तो क्या ! दरवाजे उसके लवेरा बँधा है। करियाने की हट्टी है। और क्या चाहिए बन्दे को—कुल्ली, जुल्ली और गुल्ली !"

शाहनी ने खीर का कटोरा भर आगे किया और हुलसाये कण्ठ पूछा, "पान्देजी, जने जजमान की उम्र कितनी होगी ?"

चाची महरी ने बीच मे ही टोक दिया, "खैरों से उम्र दहेजू की जितनी भी हो, हमें मन्जूर। आज दिन-वार अच्छा है। भगवानेया, संझा तक हमारा गरी-छुहारा पहुँचा दे उनके घर।"

खिला-पिला वेद-पुत्रों को शाहनी ने दक्खना दी और गरी-छुहारेवाली सगुणों की लाल पोटली पान्देजी के हाथ मे थमा चांदी के पांच टके हथेली पर रख दिये—"पान्दाजी, बिन मां-बाप की इस लडकी का पुण्य-कारज आपके हाथों हो जाये तो अपनी वेफिक्री हो। हमारी ओर से जो जुड़-बन आयेगा, कोर-कसर न रखेंगे।"

पान्देजी ने पगड़ी छू चाची से पूछा, "कुल्लूवालवाले लड़की की उम्र पूछें तो क्या कहूँ ?"

तेवर चढ़ा चाची ने पान्दे को घूरा—"मैंने कहा भगवानेया, हम जो पूछें उम्र दुहाजू की तो तुम भी पूछ लो लड़की की। बतायेंगे बराबर। बस नाम ले नौ ग्रहों का इस सिरमुनिया का सगुण चढा आ।"

पान्दे का ध्यान न परता—"शाहनी, याद तो करो कितनी उम्र होगी अपनी कन्या की !"

चाची ने मन-ही-मन कोई गिनती की—"होगी कोई सोलह-अठारह !"

शाहनी ने कौड़ियां लांघना मुनासिब न समझा। पोले मुँह कहा, "चाची, करतारो कुछ बडी होगी।"

भगवान पान्दे ने निस्तारा किया—"इसके मां-बाप पूरे हुए महामारी में !"

चाची महरी ने घबराकर विच्च-विचौली की—"भगवानेया, हो गयी न बात साफ़ ! उँगलियों पर वरस गिन डाल और कुल्लूवाल की वाट पकड़ने की कर !"

शाहनी की हांक पर करतारो अन्दर आयी तो आते ही बर्तन-भाण्डे मांजने लगी। शाहनी को लड़की पर लाड़ आने लगा—"हैं री, बर्तन-भाण्डो मे जोबन गुज़रा जाता था ! रब्ब करे इसके भी जूड़ी-संजोग खुलें !"

हुलसी करतारो उपलों की राख से कांसी के कटोरे चमकाने लगी।

चाची ने घुड़का, "कुछ ढंग से री ! इतना न हिला कर ! अन्दर अब अंगिया

ी-धा सिर दिखाना। कहीं जूं-लीखों का लश्कर तो नहीं

आन पहुंचे।

ाशे निकाल शाहनी के हाथ में रखे—"बधाइयां शाहनी, रो की बात पक्की हुई।"

ी आवाज़ दी—"देवरानी, बिन्द्रादयी को···"

इयां! करतारो की मंगनी हुई है कुल्लूवालवालों के घर। दना लड़की को!"

भड़ोला उठाये करतारो ऊपर आयी तो भगवान पान्दे को में खलबली मच गयी।

सुरखरू हो इधर तो आ! पान्दाजी तुम्हें आशीष देने

-ढका करतारो पास आ ऐसे खड़ी हुई कि सब की चेरुली

कर री पान्दाजी को! तेरा सगुण लाये हैं!"

ारो पहले बिटर-बिटर तकती रही। शाहनी की बात अकल- ककर शाहनी के गले आ लगी, और ऊँची-ऊँची घुमाइयां जी, मैं न जाती पराये घर! हाथ जोड़ती हूं मुझे न

हँसने लगी, फिर ऊपर से फटकारकर कहा, "चुप री, तू हो डावरी, सभी साजें अपने कन्त प्यारों से!"

ा हुलास-भरा उमड़-उमड़ आया। चित्त न चेत्ता और बैठे- दन आन पहुंचा!

छपा करतारो चाची के साथ जा लगी।

ुझे न भेजना पराये घर।"

. "चुप री, अकल कर। ऐसी सुल्लक्खी घड़ी अवा-तवा शुक्र कर। भोले भाव बालक के मुंह से तेरे जूड़ी-संजोग

कटोरा पान्दाजी के आगे किया—"मुंह जूठा करो महा- ें ने कुछ पूछा-ताछा!"

लपेड नहीं रखता। बात सब खोल दी। लड़की भली है "

।ा खाली कर पान्दाजी ने न परने से मुंह पोंछा, न हाथ

चाची महरी समझ गयी। शाहनी से कहा, "बच्ची, गऊ का घी डाल दूध और ले आ। भगवान पुत्तर जरा थकान तो उतारे !"

पान्दाजी ने बड़ी ठण्डी निस्संग आवाज़ में कहा, "शाहनी, जरा गिरी-छुहारा डाल धीमी-धीमी आंच तत्ता होने दो दूध। इतने कुछ सुना दूं !

श्री गणेशाय नमः
पीताम्बरधरं विष्णुं कृष्णवर्णं चतुर्भुजम्
प्रसन्नवदनं ध्यायेत्सर्वविघ्नोपशान्तये।
नारायणं नमस्कृत्य नर चैव नरोत्तमम्
देवी सरस्वती चैव ततो जयमुदीरयेत।
व्यासं वशिष्टनप्तारं शक्तेः पौत्रमकल्मषम्।
पराशरात्मजं वन्दे शुकतातं तपोनिधिम्।
व्यासाय विष्णुरूपाय व्यासरूपाय विष्णवे।
नमो वै ब्रह्मविधये वासिष्ठाय नमो नमः।
अचतुर्वदनो ब्रह्मा द्विबाहुरपरो हरिः।
अभाललोचनः शम्भुर्भगवान बादरायणः।"

दीपक की लौ भगवान पान्दे के गले से विष्णु सहस्रनाम का उच्चारण सुन कुछ ऐसा सुन पड़ा कि कोई अबूझे दैवी वचन दोनों लोकों को बांधे हुए हों। जय-जय संस्कृत महारानी, अपने जैसे मूर्ख जन चाहे कुछ ना समझे-बूझें, फिर भी सुन-कर मन के अन्दर-बाहर चान्नन ही चान्नन।

सबने हाथ जोड़ सिर नवाया तो करतारो ने भी माथा टेक लिया।

"जियो बेटी, जियो ! अगले घर जा फलो-फूलो ! याद रखना—

नाग शोभे मदकर नीर शोभे इंदीवर
रैन शोभे हिमकर नारी शील रति ते।
शोभत तुरग जव धाम शोभे उत्सव
शोभे व्याकरण वाणी नदी हंस गति ते।"

दिलों में जीने की रीझें जगा वैसाखी के ढोल ऐसे गूंजने लगे ज्यों हाथ-पैरों में ताज़े ख़ून लहराने लगे हों।

पीपल, बोढ़, कीकर, फलाँ और नीम के सजरे सोहले पात धूप में यूँ चमकें-दमकें ज्यों दूध-पीते बच्चों के मुखड़े टहनियो पर जा लगे हों। अलग-अलग कसारों-वाली पकी फ़सलें बहुरंगी झलक मारें ऐसी कि हल्के-गूढ़े रंग की ओढ़नियाँ धूप में सूखने फैली हों।

घोनी का लाल कसार। डागर का कलिवखन लिये हरा। बिना कसार की मोनी। किसी पर रुत की पीलाई। किसी पर पकने की ललाई।

माढोवाली खेतियों में वाडी करनेवाले जट्ट जने चलते-फिरते पेड़ों से दीखते।

कट-कट दूधिया कनकों के ढेर लगने लगे।

दुपहरीं शाहों के यहाँ से सिरों पर चाटियाँ-चंगेरे उठाये माँबीबी, करतारो और बाग्गा दूर से आते दिखायी दिये तो भत्ते वेला के लिए मुँह-हाथों के पसीने पुंछने लगे।

अल्लाह रक्खे ने दूर से हुंकारा दिया—"आओ कर्मावालियो, जरा त्रिखा पैर उठाओ। बाग्गेया, तेरे घड़े में जरूर घी है, पर इसकी बारी पीछे। पहले तो पीने दो न लस्सी!"

सफ्फू ने माथे का पसीना तहबन्द के लड़ से पोंछा और मिट्टी का कटोरा माँबीबी के आगे बढ़ा दिया—"ला फूफी! अपने लिए तो तेरा ही हाथ मुबा-रक!"

माँबीबी ने त्यौरी चढ़ा ली—"क्यों रे भतीजड़े, फूफियाँ क्या सिर्फ़ लस्सी पिलाने को!"

कटोरा खाली कर सफ्फू ने फिर आगे बढ़ाया और हँसकर कहा, "फूफियों का एक और भी काम होता है। कहो तो बता दूँ!"

"बता छोड़ भतीजड़े, कहीं मेरे ही मन अरमान न रह जाये!"

"कान इधर कर फूफी! कटोरा भर छाछ का भतीजे के लिए, डली भर मक्खन भी डालती हैं फूफियाँ!"

"लो बिसर गयीं बातें! आख्यान क्या और आख्यान की लुम्बी क्या! भतीजे, तूने इसके लिए इतनी लम्बी बात सजायी!"

वजीरे ने पास आ करतारो से छेड़छाड़ की—"बहन करतारो, आज तो मेल घी-शक्कर का है न!"

"वीरा, सोलह आने सच्च! आज तुम्हारे लिए आयी हैं दो-दुप्पड़ी रोटियाँ और घी-शक्कर!"

कमंदीन ने हाथ से गेहूँ की भरी उठा ढेर पर फेंक दी और तम्बे से पसीना पोंछ पास आ बैठा।

"बीबी रानी, जट्ट-जटुंगरों को जरदे-पुलाव नहीं चाहिए। उन्हें तो चाहिए मोटी-तगड़ी रोटियाँ और गला हरा करने को घी-शक्कर!"

करतारो रोटियों पर घी-शक्कर रखने लगी।

जविन्दे ने ओठों को छाछ से तर किया और करतारो से पूछा, "बहन करतारो, लहरें-बहरें दरिया में कि जिवियों में!"

फत्ता हँसने लगा—"लहरें दरिया में और बहरें जिवियों में। क्यों बहन करतारो!"

करतारो ने पहले माथे पर त्रिउड़ी चढ़ायी, फिर सिर घुमा बुड़बुड़ाने लगी—"जाने मेरी जुत्ती!"

अल्लाह दित्ते ने हँसकर कहा, "करतारो भोलिये, रुत-बहारें फुदकनहार! इन पर गुस्से-गिले नहीं करते!"

मांबीबी ने करतारो को खीजते देखा तो हुज्जतियों को डोवा दे दिया—"सुखी-सान्दी वीरो, करतारो की झोली में आसीसें डालो। बीबी की मँगनी हुई है कुल्लूवाल।"

करतारो ने लाज के मारे चुन्नी में मुँह छिपा लिया।

मांबीबी नटखटियां करने लगी—"पहले बधाई, पीछे शीरनी। करतारो लम्बी इन्तज़ारों के बाद सासरे चली है। दिल से आसीसें दो। तुम्हें हर वाडी पर खिलाती-पिलाती रही है।"

अल्लाहरक्खे के मुँह का लुकमा गले में फँस गया। लस्सी का प्याला नीचे रखा, तहबन्द से हाथ पोंछे और करतारो के सिर पर हाथ रख कहा, "अपने घर वसो-रसो। रब्ब भाग लगाये।"

करतारो सचमुच में सिसकारियाँ भरने लगी।

वज़ीरा, फत्ता, गुल्लू, जुम्मन—सब घेरकर खड़े हो गये।

मांबीबी आधी रोये, आधी हँसे।

"हैं रे बेअक्लो, पहले किस्सा तो बनने दो। अभी तो मँगनी हुई है, जब खैरों से डोली चढ़ेगी तब रोना!"

करतारो ने आँखें पोंछ लीं और चंगेर से निकाल रोटियाँ बरताने लगी।

मेहरअली को आते देखा तो मांबीबी बोली, "हैं रे मेहरअली, तेरी खाला लगती हूँ। कभी दुआ-सलाम तो किया कर!"

"सलाम करता हूँ खाला!"

गबरू जवान मेहरअली धूप में भख-भख पड़ता था। गन्धमी रंग पर अनोखी चमक जवानी और मेहनत की।

रोटी पर शक्कर-घी रखा मांबीबी ने तो मेहर ने ठठोली की—"किस-किसको खिलाओगी खाला! सारे पिण्ड की ही खाला और फूफी बनी बैठी हो!"

"सुन भांजे, आज मैं लाड़-प्यार का नहीं, मेहनत-मुशक्कत का खिलाती हूँ! रब्ब राखा तुम्हारी मेहनतों का। भर-भर काटो फ़सलें और ढेर लगाओ ऊँचे।"

"हला खाला ! तुम तो ऐसे उच्चरती हो ज्यों हम आप ही अपनी जिवियों के मालिक हों। गाह पड़ें, जोगें चलें, त्रिंगल फिरें, दानों के ढेर लगें—खेत तो शाहों के ही न ! अपने हिस्से तो यही मेहनताना—वाडी की कुछ भरियां !"

मांबीबी के कान खड़े हो गये।

"क्यों रे गजेबी गोले, तू अनोखी वाडी करने चढा है ! जिसके पास जिवियो की मालकी हो वह फ़सलें न ले तो और क्या मुजारे लें। काम्मी मुजारों को तो बांट मुताबिक़ मेहनताना लगा ही हुआ है।"

मेहरअली ने छाती पर हाथ फेर बगलों में दबा लिये, फिर अड़ियल घोड़ों की तरह शुंकारकर कहा, "शाहों की देनदारी में तो हम घुटनों-घुटनो खुबे हैं। कस्सो की वाली ज़मीन शाहों के खूंटे से छूट जाये तो डटकर करें मेहनत और कुछ खायें और कुछ बचायें।"

"मुड़ रे मेहरा, समझ कर कुछ ! शाह पैसे-धेले से तेरी मदद करते है, औकड़ समय ढकते हैं और तू इन बदगुमानियों मे !"

मेहरअली ढिठाई से सिर हिलाने लगा—"खाला, तुम आप शाहों की खिजमत में—यह लेखे-जोखे न समझोगी !"

फ़रमान अली को पुत्तर की बातों पर लाड़ हो आया। पर झिडककर कहा, "कहते है न, जट्ट यमला और खुदा को ले गये चोर। मुजारे असामियों के लिए हिम्मत बरकत शाहों से। जिसकी मालकी उसकी जोरावरी। पुत्तरजी, जिसका दित्ता खाइए तिस कहिए शाबाश !"

मेहरअली ने ज़मीन पर फैले सत्थर की ओर देखा—"जी, जिवियो की मेहनत-मजूरी जट्ट किसान के ज़िम्मे और घुडचढ़ी-निगरानी शाहों के ! घोड़े पर चढ़ इधर-उधर खेतों पर नज़र मारी, मशीरी की और हर फसल के दाने अपने कोठो मे भर लिये ! पसीना बहाया सो काम्मियों ने !"

"बस ओए मेहरा, अफलातूनी न झाड़ ! रोटी-टुक्कड़ जो सिदक से मिल रहा है उससे भी जायेगा।"

मेहरअली शुंकारने लगा—"चार आना सूद एक रुपये पर और एक पण्ड दानों की बीघा ज़मीन पर। बाक़ी जो बचा-खुचा उसमें कम्मी-कमीनों की उम्रें पार।"

फ़रमान अली ने लस्सी का कटोरा खाली कर नीचे रखा और डपटकर कहा, "पुत्तरा, वित्त में रह। कांटोवाले झड़ी-बूटी के बेर उगाने चला है क्या ! ओ भोलेया, शाहों की मल्कीयतें लाल बहियों मे और हमारी अपने वजूदों में ! शाह जितना हाथ फैलाये सो उसका। जट्ट जितना पसीना बहाये सो उसका।"

मांबीबी ने भी घुड़की दी—"मेहरअली, जट्ट पुत्तर होकर तेरी ऐसी हकूमती अदा ! अभी तो खैर-सल्लाह मसीते दो-चार सपारे ही याद किये हैं। अरे, शाहों

की मालकी चोरी-चकारी और दानेजनी में नहीं जो उन पर गुस्से-गिले कर रहा है!"

मेहरअली ने घी-लगी दुप्पड़ के चार टुकड़े किये और निवाला मुंह में डालकर कहा, "दूध-मलाई धनाड शाहों की और छाछ-लस्सी हमारी! लानत हमारी मेहनतों पर!"

"बस ओए खोखीखोरे, चिड़ियां के दूध पर नज़र रखो तो हाथों से खाली तोते उड़ायेगा।"

मेहरअली ने ऐसा मोहतबिर मुंह बनाया कि चाचे का पुत्त लगने लगा। आंखों पर हाथ की ओट करके ऊपर देखा—"चाचा, दुपहरीं जिसे खुली आंखों से देखा नहीं जाता वही सूरज-सूरज पेशी वेला आप ही ढल जाता है।"

सुनते ही फ़रमान अली की सांस खौफ़ में बंद हो गयी।

इतनी ज़ोरावरी और जोम जवानी का! बरखुरदार अपना क्या शाहों से लिये नये-पुराने कर्ज़ उतारेगा? नालायक़। अंगुल दिखा दो वह भी सूरज को कि ढल जायेगा! साथ ही बाप को धोखा कि तू भी!

झुंझलाकर कहा, "पुत्तरा, जट्ट की पोटली में कर्ज़-उधार न हो तो वह किस शाहंशाह से कम! खुदावन्दा करीम भी सब्ज़े उगा-लहरा फ़सलें दूसरों को सौंप देता है। याद रख मेरा कहना, बेशक अपने को जाट समझ, खिज़मतगार समझ, पर शाह नहीं। खुदा नहीं। तू मेहनतों का मालिक है।"

सफ़्फू के कलेजे में खुब्ब गयी—"यारा, मुझे तो रब्ब भी इन चिट्टी पग-ड़ियोंवालों का जोड़ीदार लगता है।"

अल्लाह रक्खे ने धमकाया—"अरे भड़वो, की न फिर कम्मी-कमीनोंवाली बात। घी, खांड और अनाज शाहों का और उन्हीं की बदसोई हमारे मुंह! सुना हुआ है न कि कटोचों के यहां कम्मियों को आटा और खुदामदियों को चावल! पर अपने शाह ऐसी दुजैगी नहीं करते। हर बरस वाढी पर खाये हुए घी-चावल अगली वाढी तक रूह को परचाये रहते हैं। बुरी बरत है जो हम शाहों का लूण-मीठा खाकर उनकी निन्दा-चुगली करें। सच्च बात तो यह कि शाह शाह हैं अपने मुकद्दर से! जट्ट जट्ट हैं अपनी तकदीर से!"

मेहरअली ने जैसे अपनी गुत्थी से आखीरी मोहर निकाल दी—"ठीक है, पर जो तदबीर कहां गयी!"

मेहनत मस्तानड़े जट्टों के जुट्ट-के-जुट्ट शाहों के घर आन पहुँचे तो सजरी लिपाईवाला आँगन लशलश करने लगा। हाथ-पाँववाले मर्द जनों के वजूद ऐसे चमकें-लिशकें ज्यों कुम्हार के तपे बर्तन।

मोटे-गाढ़े तम्बे और गलो के नीचे फैली बालो की क्यारियां। गन्धमी चेहरों पर कलमें और मूँछें ऐसी सोहवें जैसे कड़ियल ज़ेवर।

तन्दूर के पास मीठी गन्ध फैलाते चावलों के देगवरे, खांड-शक्कर के घड़े और घी के कुज्जे-कुप्पे। आँगन में फैली मिट्टी की कनालियाँ ऐसी दीखें ज्यों धड़कती ज़िन्दगानियाँ साध-सद्धरों की आस लगाये बैठी हों।

बास्मती की मुशकें हवा मे लहराने लगी।

जविन्दे हलवाई ने पोनी से चावलों की कणी देखी तो शाहजी बोले, "खुला घी डालना जविन्दे चाचा! पैन्दे तक चावलों में रच्च जाये।"

"लो जी, कहो तो घी-चावल की खीर बना डालें। अपने किये तो बड़े प्रेम से पकाये हैं।"

"चाहिए भी ऐसे ही। जने जवानों ने वाडी में पसीने बहाये हैं। उनके दिल-देह की तृप्ति तो दरकार है न! रसद हो पूरी चोखी तो फिर कमी काहे की!"

ऊपर बनेरे पर बच्चो-जनानियो की भीड़ आ ढुकी।

जने जट्टों की पांतें आंगन में फैलने लगीं और वजूदों के आगे कनालियां सजने लगीं।

जविन्दा हलवाई भर-भर कड़छे निकाले चावलों के और शाहजी उँडेलें घी और छोटे शाह मूठ भर-भर खांड-बूरा बुरकने पर।

"जी-भर खाओ जवानो, कोई कसरवन्दा न रहे। हाँ वजीरेया, कटोरे जितनी तेरी हथेली और एक तूत जितनी तेरी बुरकी। यह तो कोई बात न बनी!"

साथ बैठा सफ्फू हंसने लगा तो चिट्टे मज़बूत दांत चावलों को तड़पाने लगे।

रहमत लम्बी-लम्बी उँगलियों मे चोखी मूठ समेटे और मुँह में डाल ले!

मिये खां ने देखा तो हँसकर कहा, "शाहजी, रहमत पहलवान नशाइयों के मेले मे मलंग पहलवान को पछाड़ चुका है!"

शाहजी ने दो-चार बाटियाँ भर चावलों की और डाल दी और ऊपर से तर किया घी और बूरे से!

"बरखुरदार खां, जीत गये की जीत और निभाये गये की प्रीत! खाने मे हारना मत!"

"तौबा करो शाहजी! खांड-चावल से भी भला कोई हार माने!"

जलाल की बन आयी—"शाहजी, सिकन्दरे का पेट तो खैरों से खेत है। जो खाये समा जाये।"

शाहजी ने खुश होकर थापड़ा दिया—"बल्ले, बल्ले! ओ खूबसूरत जवाना,

मशहूरी गाँव के माथे !"

चौधरी फतेह अली खिलखिला हँसने लगे—"शाहजी, बात तो सोंणी तब जब जलाल अपना भी कुछ घर-घर के जलालुद्दीन हो जावे !"

चूरेवाला थाल हाथ में लिये-लिये काशीशाह इधर मुड़े और बोले, "जो लाल वही जलालुद्दीन। फर्क सिरफ पुकारने में !"

बड़े शाह ने सिर हिलाया—"नहीं काशीराम, फर्क नाम में नहीं, काम-कार में। सुनो, पेशा डाकेजनी तो नाम जलालू। तासीर में फिराखदिली तो नाम जलालुद्दीन। हाथ में तसबीह और जबान पर नाम मालिक का तो नाम सैयद जलालशाह !"

काशीशाह मालिक को याद करनेवाले सूफ़ियाना लहजे में बोले, "तारीफ़ रब्ब की जिसने जहाँ बनाया !"

शाहजी ने छोटे भाई की ओर सुहानी नजर मारी और मान से कहा, "काशी ! कुल, धर्म और घर की मर्यादा तुम्हारे जैसों के हाथों में ! तुम्हें देखकर मैं दो अंगुल ऊँचा हो जाता हूँ।"

काशी शाह ने बड़े भाई के आगे हाथ जोड़ दिये—"भाजी, जो कुछ भी हूँ की छत्रछाया में ! नहीं तो मैं किस जोग !"

दोनों भाइयों की मीठी बातें सुन ऊपर बनेरों पर बैठी जनानियाँ अँखियाँ भर।

शाहनी ने आँचल से खुशी के आँसू पोंछ डाले और देवरानी के कन्धे पर हाथ बोली, "सुना है री, देवर मेरा कैसे-कैसे मिट्ठड़े बोल बोलता है ! जिये-जागे राम-लखन की जोड़ी।"

दोनों देवरानी-जिठानी ऊपर से निहारती रहीं। पाँतों में बैठे धरती-पुत्र और टी पागों में फबते दोनों भाई। धन्य-धन्य री पृथ्वी महतारी, नित-नित गाती तेरी गोद ! आगे-पीछे बरकतें और सोहणी फ़सलों के संजोग !

"मैंने कहा बच्ची, गये बरस तो इस अँगना ठट्ठ-के-ठट्ठ थे ! इस बार को क्यों पतली !"

"चाची, यह सँगे से अभी आधा पूर है। पढ़ेनरी पटरानियाँ कनकें तो अभी में खड़ी है। आधे जवान गबरू तो उन्हीं की टहल-सेवा में।"

चाची महरी ने नीचे नज़र मारी—"है रे, आज अपना मेहर नहीं ता !"

मेहर के चाचे ने चाची की आवाज़ सुन ली। नीचे से ही हाँक दी—"जातक सलामतगढ भेजा है चाची ! कल परतेगा।"

"लो, कचहरी-अदालत में तारीख तो न थी कि यज्ञ-उत्सव में न शामिल !"

फरमान अली ने और भी ऊँची हांक दी—"चाची, मेहर के मामू के पुत्तर ने आना था खऊड़े में। हर साल कटासराज से सुच्चे गुलाबों की पांखुड़ियां लाता है। एक पण्ड यह भी ले आयेगा तो गुलकन्द डालनेवाले बनेंगे।"

शाहजी ने ताया मैयासिह से पूछा, "अपना काबुल क्यों गैरहाज़र!"

"न पुत्रजी, गैरहाज़र कोई नहीं। कूएँ तक गया था। अभी आया खड़ा!"

कावले का जोडीदार महरम हँसा—"शाहजी, घी-चावल की मुश्क पर कौन है जो धाम न खाने आये।"

ताया तुर्फैलसिंह ने तीती नज़र इस लटबौरे पर डाली और डपटकर कहा, "ओए, पल्लू कस तम्बे के! आदमियों में बैठना सीख!"

उत्तरी वण्ड का सुल्तान आ पहुंचा तो देखनेवाले अश-अश कर उठे। डाडी दरशनी काठी। कनाली में हाथ डाला तो गांव-भर की अँखियां सराहने लगीं।

"है री खैर सदके, फब्बन देखो। नौशा लगता है नौशा। हां री, चढतल देख। उजले पक्ख ज्यों लहरें चढ़ आयी हों जवानी की! नाक तलवार से घड़ा हुआ!"

धारियोंदार तहबन्द बांधे लवाणों का विरसा पहुंचा तो आमने-सामने दो मुर्ग अपनी-अपनी कलगियों पर इतराने लगे।

शाहजी ने भांप झट माथों की सिलवटें निकाल दीं—"खाओ-पियो! जी हरे करो!"

दूर से ढोल बजाता नबिया मिरासी आन पहुंचा तो छोटे-बड़े बच्चों का लाम-लश्कर ठुमक-ठुमक पांव और हाथ मारने लगा।

हवा से नोच ढोल की थाप को मर्दों ने अपने पैरों की ताल पर सजा लिया।

कौड़े ने कान पर हाथ रखा और गूढ़ी-गहरी आवाज में बोल थरथराने लगे—

"चढ गया चेत पड़ी फुहार
यारों बड़ी बहुत सरकार
धमके काबुल और कन्धार
डेरे लग गये अटकों पार
आखिर मरना
फिर क्यों डरना!"

मुरजाई चकरयाला मुकद्दमा जीतने की गहमा-गहमी में शाहों ने वहियाँ खोल डालीं और हिसाबों में तक़दीरों के वारे-न्यारे करने लगे।

पीतल की दवात में किलक की कलम डोबकर काशीशाह बड़े भाई की ओर मुड़े—"बूढ़े आलवाले मौलवीजी का रुक्का है। मुरादशाह ऊँटोंवालों के हाथ भेजा है। कहता है मसीत के लिए मदद हो जाये तो गाँव में मिनारे उठ जायेंगे।"

"सूफ़ीजी, अपनी राय बताओ। इन मामलों में तो मरज़ी आप ही की चलेगी।"

"भ्राजी, ऐसे पुण्न काम में सोच कैसी! मन्दिर-मस्जिद मालिक के ही थान हैं!"

"मुन्नव्वर तवीवाली ज़मीन का टोम्बू होना बाक़ी है।"

"तारीख़ लगी हुई है! अगली दो-चार पेशियों में निबट जायेगी।"

"चौचियोंवाली छाहो जमीन से सिर्फ़ पचास मानी दाने आये हैं। इलदू का हाथ तंग है…"

बड़े शाह ने सिर हिला दिया—"कमी ब्याज में जमा कर छोड़ो। रुपये पीछे चार सेर तो देना ही बनता है उसका।"

"हांडूवाली मिस्सी जमीन—"

"काशीराम, कादिर बख़्श और फत्ता इसकी मालकी पर नज़र रखे हुए हैं। पुरानी वही निकाल लेना। चाचा साहिब के वक़्तों के वारे-न्यारे हैं।"

"क़िलचपुर का मामला ज़रा पेचीदा है। सुल्तान ने अरज़ी-परचा कर दिया है।"

"कितनी ज़मीन है?"

काशीशाह स्यालकोटी कागज़ को पलटने लगे—"पचास-पचपन घुमाँ के क़रीब है।"

"कितना सिरे चढ़ा हुआ है?"

छोटे शाह ने एक गहरी नज़र बड़े भाई पर डाली—"मूल रकम एक सैंकड़ा, कुल आन पहुँची है हज़ार पर।"

शाहजी लाड़ से सुडौल सिर पर हाथ फेरने लगे—"किसी ने सच कहा है, शाह का रुपया दूसरे की हथेली पर पहुँचकर चौगुना हो जाता है।"

"विचारे ग़रीब जट्ट किसान को इतना दोहना कहाँ तक वाजिब है भ्राजी!"

शाहजी छोटे भाई के मुँह पर आँखें गड़ाये रहे, फिर बड़ी दाना आवाज़ में कहा, 'दिल से यह भरम निकाल दो काशीराम। साहूकारा पेशा है। किसी ने दिलजोई के लिए नहीं बनाया-चलाया।"

छोटे शाह चुपचाप लिखत को देखते रहे।

"मंगतू ने बिना पूछे दो टालियाँ कटवा डाली हैं।"

"लम्बड़दार को इत्तला कर डालो। आप समझ लेगा।"

"जम्मीवाला खैरू दस-बीसी के पीछे पड़ा है। कहता है ढग्गे खरीदेगा। रोज़ तड़के आ घेरता है।"

"पहले का असल कुछ हीला किया?"

"कुछ-न-कुछ देता ही रहा है!"

"काशीराम, नरमदिली से चल निकला शाहूकारा! अगली फ़सल तक न चुकाया तो इसकी जमीन बन्धे रखनी पड़ जायेगी!"

"बन्दा मुसीबत मे हो तो क़ानून भी ढिलाई करता है!"

शाहजी ने अपना चौड़ा सुडौल सिर हिलाया—"क़ानून के मुताबिक काश्तकारी जिवियाँ हिन्दू नही खरीद सकते। सिक्ख, लवाणो और मुहालों को छोड़ ग़ैर-मुसलमान नयी मालकी क़ायम नही कर सकता। सरकारी लिखत के मुताबिक काश्तकार हैं अराई, अवान, बलोच, गुज्जर, जट्ट, कुरेशी, लबागे, मुहाल, मुगल, पठान और राजपूत सैयद!

"अपना तो पूर्णा ही न पडा फेहरिस्त! में सरकार की मंशा है कि जमीन उनकी जो उसकी वाही करें। बताओ, रुपये-धेले की ताकत के बिना जट्ट किसान कहाँ से देगा मामला और कहाँ से करेगा ढक-साल!"

'भ्राजी, गहने बन्धे पड़ी जमीनें वापस जायेंगी, तो आप ही इन वाहियों से छूट जायेंगी!"

"ऐसे हालातों मे कोई दूसरा राह-रास्ता है हम लोगों के सामने?"

"थल्ली वण्डवाला बख्तावर पिछले पोह सैकड़ा उठा गया था। इस बार दस मानी दाने डाल गया था। आप कहे तो उसके आधे पर लकीर मार दें। भार हल्का हो जायेगा गरीब का!"

शाहजी सिर हिलाते रहे और हँसते रहे—"भगतजी, तुम्हारे हाथों खुल रही हो किस्मत किसी की, तो बताओ मैं क्यों रोकूँ! तुम्हारा दिल दरिया है पर हिसाब-हिसों को कोने पुगायेगा! इन जट्ट मुजारों के औकड़ थेले कौन टपायेगा!"

"हम तो निमित्त हैं, करणहार-कर्त्ता तो ऊपरवाला है!"

"काशीराम, बन्दों के सिरो पर एक नही दो की जोरावरी है। एक मालकी ऊपरवाले रब्ब की और दूसरी हकूमत नीचेवाली सरकार की!"

"ऊपरवाला ही बड़ा है। उसकी नजर रहे सीधी तो दुनिया का जर्रा-जर्रा फूलता। जो बढ जाये जुल्मत तो घड़ी-पल में बडी-से-बड़ी सल्तनतें नेस्तनाबूद।"

"काशीराम, तुम निर्लेप फक़ीर हो। मैं दुनियादार। तुम्हारी दया-रहमवाली वृत्ति को क्यों बदलूँ! सौ-पचास पर लकीर मार भी दोगे तो उसके भण्डारे में कमी न आयेगी। फिर शास्त्र मर्यादा कहती है—दान से आता है, जाता नही।"

काशीशाह गम्भीर हो गये—"भ्राजी, दिन मे एक बार सुखमनी का पाठ

ज़रूर कर लिया करें। इस छन-भंगुर जगत में नाम ही कमाई है। माया-दम्मड़े नहीं!"

शाहजी कहीं और विचरने लगे—"बड़े चाचाजी का कहना याद करता हूँ तो समझ-बूझ दिमाग की निथर जाती है। कहा करते थे—सिर्फ इकोतर सौ लेकर इस ग्राँ में आन बसे थे हमारे पुरखे। जो छुआ सोना बनता गया! अब दुनिया आख्यान करती है—लोगों का तेल नहीं जलता, शाहों का मूत्र जलता है।"

"बरक़त उस मेहरोंवाले की!"

काशीशाह ने हाथवाली वही की डोरी बाँधी और भाई को याद दिलाया—"महरम खाँ वाले पराच्छे के घर जाना है आपको अगले जुम्मे। लड़के की सुन्नतें हैं।"

बड़े शाह ने ध्यान-ही-ध्यान में कई असामियों-मुजारों के कुल जोड़ दोहरा डाले। गहरी तृप्ति से आँखें मूँद लीं और धीरे-धीरे गुनगुनाने लगे—

"चिड़ी चोंच भर ले गयी
नदी न घटयो नीर
दान दिये धन ना घटे
कह गये भगत कबीर!"

छोटे शाह मन-ही-मन मुस्कराये। दौलत-माया में इतनी आसक्ति!

बड़े भाई को याद दिलाया—'पराच्छों के घर से पाँच रुपये तम्बोल अपनी लिखत में दर्ज है।"

बड़े शाह पर बड़प्पन छा गया—"काशीराम, सगुण-भाजी सगुण-भाजी के साथ। एक मानी बासमती और एक मानी खांड भिजवा देना नवाब के हाथ। बड़ी सहक-इन्तजारों के बाद उनके घर पुत्तर की शीरनी बँटी है।"

हवेली में बैठे छोटे शाह कागज के पुड़ों से दवा, जड़ी-बूटियाँ, काढ़े निकाल-निकाल लोगों को देने चले।

"लो पीरांदित्ता, यह ब्रह्मडण्डी पानी में उबाल निरने पेट सात दिन पी डालो। खारिश-फोड़े-फिन्सी सब दूर हो जायेंगे।"

"हला शाहजी। पार के साल आपने चित्त पापड़ा दिया था, पर लड़ाई-झगड़े में पड़ा ही रह गया।"

काशीशाह हँसे—"इलाज तो तुम्हारा खून सफा करनेवाला था। तुमने दवा-दारू छोड उल्टे खून खरावा कर लिया !"

पीरांदित्ते का चौड़ा जवडा कई पल छोटे शाह की आँखों मे अटका रहा।

"शाह साहिव, फौजदारी होते-होते ही वची।"

"शुक्र रव्व का। लो बशीर वादशाह, सौंचल की पत्ती है। खाँसी में आराम देगी।"

फकीरे लोहार ने पांव आगे किया—"जी, कोई ज़हरीला कीडा-मकोड़ा काट गया लगता है। उँगलियाँ नीली पड़ गयी हैं।"

"फकीरेया, अक्क के पत्तों से धोकर ऊपर लोहा घिस्स दे। कोई ज़हरीला डंक लगता है। डाकदार को दिखा आ जतालपुर। प्रभाती नवाब घोडी ले के जायेगा। उसके पीछे वैठ जाना।"

"मैंने कहा जी, कही टुण्डा डाकदार टाँग ही न काटकर खलासी कर दे!"

"फ़कीरे, टेलर डाकदार जट्ट बूट नही जो पैर काट रुढी पर फेंक देगा! सोच-समझ के इलाज करेगा। सोने से पहले अक्क के पत्ते दो खा छोड। कोई ज़हर होगा तो खीच डालेगा।"

गण्डासिंह ने हवेली की दलहीज लांघ ज्यों ही क़दम अन्दर रखा, एक करारा डकार दे मारा।

फ़कीरा हंसने लगा—"चाचा गण्डासिंहा, मुँह चुगलाते-चुगलाते ही उठ बैठे! क्या कोई फैसला था कि डकार मारेंगे तो शाहजी की हवेली ही में…"

"रोटी मुकाई ही थी कि काके हरफूले ने आ खबर दी कि गाय ने बच्छा दिया है। वाहगुरु की मेहर, बच्छा बल्ला है।"

"मुबारकें जी, वड़ी-वडी मुबारकें।"

"काशीरामा, गुड़ के घोल में साबुन देना है। पुराना गुड़ तो निकल आया कोठरी से, पर साबुन नही। लेने आया हूँ।"

"यह लो साबुन को टिक्की। छटाँक-दो से ज्यादा न डालना। साबुन ज़रा तेज है।"

गण्डासिंह के जाते ही खेस में मुँह-सिर लपेटे नाथा आन पहुँचा—"पैरी पौना जी!

"नाथेया, सुख तो है! रुत खुल गयी, इतना भारी कपडा काहे को!"

"गठिये से जुडा पडा हूँ। कोई चंगी औषध दो तो उठने-वैठने से तो न जाऊँ।"

"गऊ के घी में थोम का सेवन सात दिन और सित्या सोंठ की मालिश। बराबर आराम आयेगा।"

नाथे ने जाने को कदम उठाया—

"पिछली सर्दियों तुमने बाहूफली खायी थी, अब तो उस रोग से छुट्टी है न!"

"ठीक हूँ, पर ऐसी बीमारी कि बन्दे की सारी आब मारी जाये! शरीर किसी काम का नहीं रहा।"

"नाथेया, नाम लिया कर रब्ब का! सब रोगों का एक ही दारू!"

"जी!"

दोहरी ओढनी में मुँह-सिर समेटे बधावासिंह की वड्डी घरवाली सामने आन खडी हुई तो छोटे शाह बड़े परेशान हुए "भरजाई, इस वेला यहां! सुख तो है!"

शोदैन बनी नच्छत्र कौर ने सिर का कपड़ा उघाड दिया और दोहत्थड़ मार छाती पर, पीटने लगी—"मुझे मोहरा दे दे देवरा, सौतन मुझसे नहीं देखी जाती! लाख समझाती हूँ, पर कालजे में भम्भड़ मचे रहते हैं। मेरा दोख इतना ही न कि अभागी कोख न खुली।"

काशीशाह कई पल चिन्ता में खोये रहे, फिर समझाकर कहा, "भरजाई, कुटिया जा सेवा ले ले। पाठ किया कर। यह दुनिया-माया सब झूठी है।"

नच्छत्र कौर की अँखियाँ तड़पने लगी। बालों की लटें नोच-खसोट करलाने लगी—"देवरा, तू साधु पुरख है। तेरे मुँह से निकला वचन वृथा न जायेगा। या ऐसा मन्त्र दे घरवाला सौतन से बेमुख हो जाये या मेरे कालजे चैन पड़े।"

"भरजाई, मुँह पर लगाम दे और सिर पर कपडा कर!"

नच्छत्र कौर ने सिर ढाँप झोली फैला दी—"देवरा, जो चाहता है मैं परत घर को लौटूँ और कूएँ में न डूब मरूँ तो कोई ऐसा मन्त्र दे कि मेरे अन्दर चैन पड़े। सौतन के साढ़े ने मेरी अकल-बुद्ध मार दी है।"

काशीशाह ने आँखें मूँद शीश झुकाया और गरीबनवाज़ के आगे विनती की—"इस बेगुनाह के तड़पते दिल को सब्र दे दो ग़रीबपरवर!"

"आँखें खोली, जतनों से बंधी पुड़िया सन्दूकची से निकाली। गुलाब की सूखी पाँखुडी सिर से छुआ नच्छत्र कौर की हथेली पर रख दी—"भरजाई, अब तुम ज़ाहिरा पीर की छत्रछाया में! तुम्हें अब न कोई दोखख, न चिन्ता, न ग़म। बग्गेया, जा भरजाई को घर तक छोड़ आ।"

नच्छत्र कौर ने हाथ जोड़े—"देवरा, आज से तुम मेरे गुरु पीर। मछली-सी तड़पती आयी थी। ज़ाहिरा पाँखुड़ी गुलाब की, जलती छाती हल्की फुल्ल हो गयी है। उसका भाना मुझे मंजूर।"

काशीशाह ने हाथ जोड दिये—"साहबे-कमाल, परवरदिगार, यह जल्वा तेरा है। तेरे नाम में सवाब ही सवाब।"

बाहर घोड़ की टाप सुनी। बड़े शाह कचहरी तारीख भुगता लौटे थे।

काशीशाह उठकर बाहर आया। बड़े भाई को पैरीपौना बुलाया। मुश्की को थाप्पडा दिया।

दोनों भाई पौड़ियाँ चढ़ गये तो नवाब ने घोड़े का तंग ढीला किया। सह-लाया और चारे-भरी खुरली के आगे ले जा खड़ा किया।

मुहम्मदीन ने शाहजी के तख्त पर खेस बिछाया, आले मे चौमुखा दीया रखा और नवाब से कहा, "यारा, शाह अपना सचमुच में पहुँचा हुआ सन्त-फ़कीर है। कैसे रोती-तड़पती आयी थी वधावासिंह की घरवाली और कैसे सन्तोख-सिदक से परत गयी।"

"छोटे शाह मे तो सत्या है पीर-फ़कीरोंवाली, पर एक बात बता—-खसम-तरीमत का साक-रिश्ता भी क्या हुआ! जिन्न-भूतवाला ही न। जो डाडा बनके बोलने लगे! रूप-रंग देखा है नच्छत्र कौर का—जगमग-जगमग और वधावासिंह औलाद के लिए दूसरी कर लाया!"

"छोड़ परे। आप दोनों छड़े-छांड ही चंगे भले। न जनानी अंग लगी, न मति भ्रष्ट हुई!"

नवाब को फातिमा याद आ गयी—"जो भी कहो मुहम्मदीना, इन्साफ तो न हुआ। किसी को मिलें मौज-मजा लेने को चार-चार बीवियाँ और हम जैसों की जिन्द अकेली! चुप-चुप रोये पेट!"

"मरदो के कभी पेट भी रोते है! भोले बादशाह, मरदों के हिलते हैं जिगरे। रब्ब ने भी कुछ सोच-समझ के ही यह खेल रचाया। जेकर बच्चे पड़ते मरदों के हिस्से तो छातियाँ मरदों की रोज़ दो-टूक होती। बाप खुद औलाद को तोड-तोड़ खाता। यह तो माँ के ढिढ का पेटा है। एक बार थन से दूध पिलाती है तो उम्र-भर सींचती है टब्बर को।"

नवाब ने लम्बा कश खीचा—"बराबर शाहों की नकल करने लगा है। इतनी सयानफ कब से!"

मुहम्मदीन हँसा—"इक्की-दुक्की कान में पडती रहती है। कोई याद रह गयी तो मुँह पर आ गयी।"

"यारा, मौजें शाहों की। टका दें और सैकडा लें। रब्ब-रसूल कभी अपने को भी शाह-जिमिदार बना छोडता तो लहरें-बहरें थी!"

"होतीं कैसे! पैगम्बर साहब की तरफ से सूद की क़सम हर मुसलमान को! शरह के खिलाफ़ है।"

"भरम छोड़ो। हम छड़े, न घर-घाट, न बीवी-हण्डियाँ। जो शाहों के यहाँ मिला है, वही वाह-वाह! और क्या, कौन हमने बाल-बच्चों के ब्याह सुधाने हैं!"

"ज़बान की तो छोड़। दिल भी तो कुछ कहता होगा किन्ही! अल्लाह

शाह ने सब लोगों की अमीरों की सोच डाली !"

"छोड़ चाचा, तकदीर में लिखी हों शाहनी के हाथों की रोटियाँ, तो बता कौन-सी फातमा-हुसैना अपनी हथेलियाँ पकाने आवेगी !"

"इतना ही अरमान लगा रखा है दिल में तो कुछ कर डाल ! उधार उठा ले शाह से और निकाह पढ़ा डाल। सुना हुआ है न—दमड़े हों पल्ले तो गोरे से पहले सजे ब्याह !"

"नहीं चाचा, अब नहीं बदलनी तकदीरें अपनी। चार साल बिना वाही के पड़ी रहे खेती तो बंजर जदीद और आठ हो जायें बरसों में तो बंजर कदीम। बता, अब मेरे-तेरे जैसे ठूँठों में क्या उगेगा, न धन दौलत की लहरें-बहरें, न आल-औलाद की खुशियाँ। कहीं रब की तरफ से अपनी किस्मत और तकदीरें धुल-पुँछ जायें तो और बात है। नहीं तो डंगरों को नहलाया-धुलाया, चारा डाला, खूँटे से बाँधा-खोला और सो गये।"

ख़बरों में ख़बर शाहदाद के क़त्ल की। अचानक पिण्डों में ऐसी तरथल्ली मची कि रहे नाम रब्ब का !

फाँसटे के जलजले में भी ऐसे भूम्भल-भू न मचे थे जैसे लम्ब-लम्ब मचे पोठी-वाले शाहदाद खाँ के क़त्ल पर !

अन्धेर साईं का लोको, शाहदाद शुफ़नार की नमाज़ को मसीत में सिजदे में बैठा ही था कि क़त्ल हो गया।

शाहदाद भतीजे ज़फ़र के साथ पहली क़तार में खड़ा था। दस-बारह नमाज़ी पिछली क़तार में थे। आले में चिराग जल रहा था।

सबसे आगे थे इमाम साहिब। सिजदे में घुटने टेके ही थे कि शाहदाद की गर्दन पर पीछे से टोका पड़ा और वह चीख़ मारकर गिर पड़ा—हाय, ओ मार दिया वैरियों ने…"

"पकड़ो…पकड़ो…दौड़ो…" मसीत में भगदड़ मच गयी।

इमाम साहिब चिराग हाथ में ले शाहदाद पर झुके। ख़ून में लथपथ शाहदाद की आँखों में ज़िन्दा रूह उतर आयी थी, रुक-रुककर कहा, "मुझे मेरे घर ले चलो !"

"क्यों नहीं चाचा !"

शाहदाद खाँ की लाश को चारपाई समेत उठाकर डाक्टरी के लिए रवाना कर दिया गया।

क़त्ल का हादसा। पुलिस मुश्कें लेती मौक़ा पर पहुँची। कच्चे-पक्के बयान लिये और इस सारी कारवाही में इमाम साहिब सजे रहे।

शाहदाद की दोनों बीवियाँ अपनी ड्योढ़ी में बैठी-बैठी करलाने लगीं—"अरे, मौत न छोडेगी तुम्हें भी! सिजदे में क़त्ल कर दिया बादशाह सुल्तान को! अरे दुश्मन-वैरियो, तख्ते पर फन्दे पड़ेंगे तुम्हारे गलो में! कट-कट गिरेंगी गरदनें!"

शाहदाद की छोटी बीवी हलीमा वैण करने लगी—"ओ रे मेरे बादशाह-दूल्हो, वैरियों ने मेरी बादशाहत उजाड डाली। एक लाल खेलता गोदी में तो इस सूनी दिन सिदक न कर लेती!"

बड़ी मरियम ने घुड़क दिया—"चुप री, हौंसला रख। तू तो खैरों से पेट से है। शाहजादा खुद वैरियों की मुँडिया उतारेगा। बाप का बदला ले के रहेगा।"

हलीमा हिचकियाँ ले-ले विलाप करने लगी—"ओ रे मेरे बच्च, नबी रसूल तुम्हें हाथ दे। असल का होगा तो वैरियों का बीज मार के दम लेगा!"

रात को मरियम ने सौतन को समझाया—"अरी, कब हुई थी तू कपड़ों से! हो गये न खैरों से महीने चार!"

"हाँ खाला, तीन से ऊपर।"

"सुन री कान खोल के हलीमा! मरनेवाले का बच्च हमारे पास। जिसने उसकी जिवियों की ओर नजर उठायी, पकड़ उनकी आँखें निकाल डालूँगी!"

फिर आवाज़ हौली कर कहा—"लड़ने-भिड़ने दे दोनों शरीकों को। न जफर मालिक इस घर-जिवियों का, न मालिक है बोस्ताँ।"

गाँव-गाँव जिक्र पड़ गये क़त्ल के। पुलिस भद्दवी लाख तशखीश-तहकीक करे, मुकद्दमा तो शाहदाद के क़त्ल का बन्ने तोड़ गया।

इधर जफर पढ़ाये गवाह, कि शाहदाद ने बयान में मुत्तबन्ने का नाम लिया। उधर बोस्ताँ के लिए शादी खाँ उलझाये-सुझलाये।

"उसको क़त्ल की ज़रूरत ही क्या थी! पार के साल सरकारी कागद पर शाहदाद ने बोस्ताँ को लड़का कबूल कर लिया था।"

पूछनेवाले पूछते—"परचे की नकल या असल तो होगी आपके पास!"

शादी खाँ हुक्का गुड़गुड़ाते इत्मीनान से 'हूँ' करते। कभी बीच-बीच में बोल-कर हामी भरते—"बराबर। बेशक।"

इस बीच मरियम बी सैयद सरमस्त से हलीमा के लिए तावीज़ लिखवा लायी।

जफर की माँ बड़ा बहनापा दिखा मरियम को दिलासा देती—"हौंसला रख। फ़िकर न कर। मेरा अपना ढिड हवालात में बन्द है। शरीक़ शादी खाँ ने मूठ रुपयों

की चढ़ायी है पुलिस थानेदार को, तभी मेरे पुत्तर को शुबह में अन्दर कर लिया अन्धेर पड़ा है क्या ! हाकम आप निस्तारा करेंगे। इन्साफ करेंगे। मेरा पुत्तर चारपाई पर डाल चाचे को घर लाया वह कातिल हो गया और जो नंगे पांव मौ से दौड भागा वह खूनी बेगुनाह हो गया।"

मरियम हलीमा को दूध में आण्डा डालकर देती—"पी री, डीक लगाकर जा। तेरे संग-सग अपना जवांमर्द भी सांस लेता है।"

जिनके जूते जफर ने उठाये थे उनके नाम पुलिस ने दर्ज किये—शाह वल सैयद अली, शेर जमान और खलील। दिलचस्प बात एक और भी थी। बोस्तां एक जूती इमाम साहिब के कब्जे मे थी और दूसरी गायब थी।

थानेदार यार खां ने इमारत के तीनों मीनारे सूंघकर चौथे पर हाथ र दिया।

पिछली कतार में बायीं ओर खडे अफजल ने जब बोस्तां के दोस्त मुहम्म सादिक का नाम ले दिया तो तीनों खाने चित्त हो गये।

पहचान होते ही यकायक मामले को नांवे का तगडा वत्तर लग गया।

इमाम साहिब ने सुना तो खुदखुदी लग गयी। बिन बुलाये थानेदार के पा जा पहुंचे और कहा—"जनाब, मैं मौका पर खुद माजूद था। शाहदाद खां आखीरी अल्फ़ाज़ थे—'मेरा मुत्तवन्न जफर है बोस्तां नहीं'।"

थानेदार बडी हरामजादी हंसी हंसे—"इमाम साहब, आप कत्ल के मुकद में आखीरी बयान की कीमत जानते हैं न !"

"जी। ज्यादा तो नही पर इतना ज़रूर जानता हूं थानेदार साहिब, कि हो वाला मुत्तबन्ना भी ऐसी साजिश के बाहर होने का दावा नही कर सकता।"

थानेदार यार खां ने फणियर नाग की तरह फण उठाया—"जफर औ बोस्तां के पत्तो में उन्नीस-इक्कीस का ही फ़रक है। इमाम साहिब, जो पत्ता क पड़ता है वह आपके पास नही। अब आप जाकर आराम कीजिए और वक्त अजान दीजिए। रखिए अपने को गांव में ही। आपको कभी भी याद किया ज सकता है।"

इमाम साहिब डांवाडोल हो शादी खां की बैठक जा पहुंचे और सारा किस्स बयान कर दिया।

शादी खां हुक्के से लम्बे-लम्बे कश खीचने लगे।

सलाह सूत्र करने के बजाय मौलवीजी से इतना ही कहा, "खैर मेहर है लुग्गों को करने दो जो करते है।"

शादी खां दूसरे पहर उठ खड़े हुए। तबले से घोड़ा निकाला और दिन चढ़ने

पहले-पहले गोरालीवाले दमोदर शाह को लेव

मुकदमे के टाँके-वखिये देख-सुन शाहजी

हज़ार गिनकर हाथ पकड़ाया—लेनदेन साफ़,

छोटे शाह ने टोम्बू लिखवा लिया—"शा

शाहों के पास बन्धे और सिर्फ़ दो आना ब्याज

रुपयों की खनकन जा पहुँची ठाने और

मुँह जफ़र की ओर मोड़ लिया।

मरियम बी के दरवाज़े थानेदार की घोड़ी

झपकी। थानेदार यार खाँ से आँखें मिलाये रह

बोली—"ठानेदारा, कत्ल के मुकद्दमे में चाहे स

ही। हमारे भाने अलिफ हो या वे। अपने श

चला गया। नाम रहे रब्ब रसूल का, वजूद उस

वह ज़िन्दा ही ज़िन्दा।"

थानेदार ने ऐसी-तैसी फेर दी—"मरिय

है! है भी कि नही! इन खेलो को देखनेवा

नहीं।"

"थानेदार, अपने कुल्ले के ज़ोर तेरा मिज

ज़रा, जिस ज़िमि-जायदाद की खातिर अप

वारिस आप मुँह से बोलेगा। आप दुश्मनों की

थानेदार को मज़ा आने लगा। मरियम

और ओठो पर हँसी फिरा दी—"रब्ब से भी स

तो लड़का ही होगा!"

"क्यो न होगा ठानेदारा! ज़रूर होगा!

गरदन गयी वह अल्लाह पाक उसके खानदान प

थानेदार ने सजरी बेवा की ओर दोस्ती

मामला पेचीदा है। याद तो करो कभी पिछले

मुत्तबन्ना बनाने को कोई लिखत-परचा किया थ

"कभी नहीं। ठानेदारा, जना अपना ऐसा

फ़ौज खड़ी करने का दम था। यह तो मैं लथड़ी स

होने लगी, हमारी ज़िवियाँ देख गर्कजानों के मुँह

ब्याह लायी उसके लिए। रब्ब की नज़र सीधी,

आसपास लोग आ जुटे थे।

मरियम बी लस्सी का कटोरा ले आयी और

"शरीकों ने वैर कमाया ज़िवियों के लालच में।

ने मदद की हामी भर दी। नक़द

मुहब्बत पाक।

दी खाँ की जामके नक्केवाली ज़मीन

रुपये पर!"

लसियों ने दोस्ती की ओर पीठ कर

आ रुकी तो मरियम ने पलक न

और मजी पर बैठी-बैठी सिदक से

-सी तारियाँ मार, पर कातिल एक

शाह ने जाना था सो हमें छोड़कर

का इस अँगना गेनेगा। हमारे लिए

म बी, यह किसे पता बूँद किसकी

ले तुम्हारे ससुर-खसम तो माजूद

ज लट्टू-लट्टू जलता है। सहारा कर

ा सरदार कत्ल हो गया उसका

छाती पर मूँग दलेगा।"

को घूरकर देखा, फिर हलीमा को,

ाँठ-गाँठ कर रखी है क्या, कि होगा

जिसके सिजदे में अपने सरदार की

र क्यो न इनायत करेगा!"

का हाथ बढ़ाया—"मरियम बी,

बरसो मे शाहदाद खाँ ने अपना

ा?"

रता भी क्यों? खैरों से हड्डी मे

ाथ लगी रही। शरीकों मे खुसपुस

मे पानी आने लगा तो मैं भाजी

हलीमा अपनी अब दोहर में है!"

थानेदार को पकड़ाकर कहा—

ठानेदार, सुनने मे आया है पुलिस

माथासड़ी ने अपने जने का आखीरी बयान दर्ज नहीं किया। 'थानेदारा, हमारी तरफ़ से जुर्म की चाटी में दस बार हाथ डाल और हर बार मक्खनों के पेड़े निकाल। पर हाकमा, क़ातिल को फांसी के तख़्ते पर पहुंचाना तेरे ज़िम्मे।"

"जमा ख़ातिर रहे मरियम बी! मुजरिम को पकड़ के रहेंगे।"

"पीछे न रहना हड्डेदारा। इतना जान रख, तेरे पुलसियों ने कोई दूसरा मत्ता पकाया तो दोज़ख की आग में पलसेटियां मारेगी पुलिस पंजाब की।"

तम्बाकू की मुश्कें और हुक्कों की गुड़-गुड़।

"हर कश के साथ महक अन्दर और धुआं बाहर। या इलाही, सिफ़तें आपकी। क्या-क्या शै बनायी है आदम के बेटों के लिए!"

"बेशक मौलादादजी, ख़ुदावन्द करीम ने पैदा किया कहीं तम्बाकू, कहीं मुंजी, कहीं गन्ना, कहीं कपास, और जी रब्ब आपका भला करे, कहीं दूध, कहीं शराब।"

चाचा कर्मइलाही ने हुक्के की नड़ी मुंह से निकाल दी और दीन मुहम्मद पर तीती त्योड़ी फेंकी—"मेरी मुण्डी धड़ से अलग कर देना जो किसी मुकद्दस किताब में यह लिखा बता दो कि शराब भी अल्लाह ताला ने ही बनायी है!"

शाहजी आंखों में मीठी-मीठी फटकार भरकर सिर हिलाते रहे। फिर हंसकर कहा, "किस दुनिया में हो कर्मइलाहीजी! अपने दीन मुहम्मद ख़ैरों से लाहौर होकर आये हैं। अब इन्हें किसी की शागिर्दी की जरूरत नहीं। लाहौरी फरिश्तों ने सारा इल्म ही इनकी दिल की किताब पर लिख डाला है!"

दीन मुहम्मद की मूंछें भोले गुमान से फुरकने लगीं—"यह तो आपकी मशकरी हुई शाहजी, पर क्या बतायें आपको! शहरों में शहर लाहौर। बहिश्त है जी बहिश्त!"

"दीन मुहम्मद, तो सही यह हुआ कि बहिश्त हो आये हो। हूरें भी देखने को मिली ही होंगी। कोई पड़ी टूटी-भज्जी हूर आपकी झोली में भी!"

"रहे रब्ब का नाम! बादशाहो, लाहौर में टूटी-फूटी हूरों का क्या काम! अपनी पिण्ड की बुड्ढी-बुढ़ेरियां थोड़ी हैं हूरें कि किसी का झाटा चिट्टा, किसी की आंखें चुन्धी। किसी पर गठिये की मार, किसी पर फाजिल···"

मैयासिंह हंस-हंस दोहरे हुए—"यह तो हुई न हमारी बेबों-बूढ़ियों की

बात। आप बात करो लाहौर की जवान हूरों की! क्यों दीन मुहम्मद, क्या सड़को-सड़की नजर आती हैं ये परियाँ!"

दीन मुहम्मद चढ़ गये—"बराबर बादशाहो। इधर देखो तो गुलाबी। उधर देखो तो उनाबी। यह आयी पीली तो वह आयी नीली! रंग-बिरंगे परान्दे डुलाती ऐसी-ऐसी झलकें अनारकली में कि हम जैसा जट्ट-बूट तो क्या, चंगा-चंगा गश खाकर गिर पड़े। खुले मुंह, खुले सिर। आगे-आगे बांक डोरियाँ और पीछे-पीछे इनके मुरीद लट्ठुम्मन!"

मजलिस में बड़ा हास्सा पड़ा!

चौधरी फतेह अलीजी भी निक्का-निक्का हँसते रहे। फिर बड़ी सयानफ से पूछा, "दीन मुहम्मद, यह बताओ कि देखने-सुनने में कैसी हैं लाहौरनें!"

"कुछ न पूछो। गाल गुलानार और रंग महा गोरे..."

हमीद ने जुमला पूरा कर दिया—"रंग गोरे और ज़ायके जनानियों के खण्ड बोरे!"

सयानों के खाँसियाँ छिड़ गयीं और जवान खुल के कहक़हे लगाने लगे।

किसी बुजुर्ग ने झूठ-मूठ टोक दिया—"ओए हमीदेया, चाचे-तायों के सामने ऐसी बेशरमी!"

"क़सूर की माफी चाचा साहिब! अनजाने में ही भूल-चूक हो गयी।"

कृपाराम हाजीजी के गिर्द हो गये—"आप भी कुछ बतायें हाजीजी! आप भी खैर सदके बसरे हो आये हैं! क्या-क्या न देखा होगा वहाँ—हूरें, परियाँ..."

हाजीजी ने आलिमाना सिर हिलाया और सजीदगी से बोले, "हमने भी देखीं। अकसर सामने पड़-पड़ा जायें तो बन्दा आँखें तो नहीं मीट सकता!"

बख्तावर ने शरारत से झटापट उठकर तहमद ढीला किया, फिर दुबारा कस-कर अपनी जगह पसर गया—"हाजीजी, टोह-टाह के भी देखीं कि सिर्फ दीदः-बाजी में ही रहे!"

मिये खाँ ने खबरदार किया—"बरखुरदार, हाजीजी से बात करने का यह शऊर!"

बख्तावर ने कान पकड़ नसीहत निकाल ली।

"बसरे की हूरें सारी ही चिट्टी-गोरी हैं कि पक्के रंगवाली हब्शनें भी हैं!"

हाजीजी अपनी रौ में—"रब्ब जाने। चलते-फिरते देख लो नकाबों को।"

"कुछ तो नजर आया होगा!"

"इतना ही कि सब हट्टी-कट्टी वाह-वाह जवान! कूचे-बाजारों में कोई थुल्ल कुमारी नजर नहीं आयी।"

"थुल्ल कुमारी क्या शह है बादशाहो!"

"वही जी, जनानी जो मंस बराबर मोटी हो, वही थुल्ल कुमारी हुई!"

फिर हुक्के की गुड़-गुड़ और खुश्क गलों की खाँसियाँ मंजियों पर फुदकने लगीं।

गुरुदित्तसिंह उकता गये। हाथ फैलाकर कहा, "ओ छोड़ो परे थुल्ल कुमारियों के जिक्र! प्यारियों-दिलदारियों की बात करो।"

मुराद अली नौशहरेवाले पराच्छों के साथ हर साल मेवा खरीदने काबुल जाते थे।

मौका मिलते ही अपनी बारी सँभाल ली—"बादशाहो, काबुल की क्या पूछते हो! वहाँ तो कौन बेगम है, कौन खानम है, यही पता नहीं लगता। पहन-पहनावा एक-सा!"

काबुल की ये सिफ़्तें मुराद अलीजी से दर्जनों बार सुनी जा चुकी थीं। फिर भी दोस्त को गरमाने के लिए चौधरी फतेह अली बोले, "कुछ काबिले यकीन नहीं लगती यह बात। आखीर को बेगम और खानम में कुछ तो फर्क होगा ही न!"

"सौंह अल्लाह पाक की, सबके तन पर लकदक सुच्चे कपड़े। न कोई मालिक दिखे, न दिखे गुलाम।"

नत्थासिंह ऊँघ गये थे। ज्यों ही आँखें खोलीं, सुनी-सुनायी छेड़ दी—"सुनते हैं क़ाबुल में भी पंजाब अपना गज्ज-वज्ज के बैठा हुआ है। छोटा-मोटा शहर तो नहीं, दिसावर हुआ। रेशम दरियाई, पट्टू-गलीचे, फल-मेवे सारे हिन्दोस्तान को वहीं से। अपने पराच्छे, खोजे और खालसे बड़ी तगडी हट्टियाँ डाले हुए हैं।"

कृपाराम बोले, "सुनते हैं काबुल में पहले हिन्दूशाही थी। अनंगपाल और जयपाल दो मशहूर राजे हो गुजरे हैं।"

मौलवी इल्मदीन का इल्म उभर आया—"कहने में तो यह आता है कि काबुल पहले टक्कों के पास था। फिर गया वड़ैचों के पास। फिर जोरावरी हो गयी गक्खड़ों की। फिर जांजुओं की चढ़-बन आयी। यह लुढ़क-पुढ़क तो चलती रही न! तातार, मुगल, पठान…"

शाहजी ने अपनी स्यालकोटी मदरसे की तालीम का सवाया लगा दिया—"मौलवीजी, नाम दो-दस नहीं, दर्जनों हैं। तवारीख भरी हुई है। अपने मुल्क की ड्योढी तो रहे न काबुल-कन्धार। आगे दरियाये-सिन्ध की 'सिंह की बाब', फिर अपना देश पंजाब—लशकर बढ़ते रहे यहाँ से हिन्दोस्तान की तरफ। हमलावरों के ताँते लगे रहे…"

"हाँ शाह साहिब, बेशुमार कौमें तख्त-ओ-ताज सजा गयी इस मुल्क पर!"

शाहजी ने बड़ी अक़्लमन्दी से तवारीख का मुँह ही दूसरी ओर मोड़ दिया—"बात तो असल यह है कि इस धरती पर हज़ारों हमलावर आये और गये पर आखिर को लाहौर लाहौरवालों के पास और काबुल क़ाबुलवालों के पास! कहने का मतलब यह कि शहंशाह-सुल्तान बदले, बादशाहतें बदलीं, हकूमतें बदलीं, पर

मुण्डां, न बदली मुल्कों की खलकतें ! क्यों चौधरीजी !"

"वाह-वाह शाहजी, बात हुई न कोई !"

मौलादादजी ने दाद दी !

फ़तेह अलीजी भी पीछे न रहे—"बराबर जी। खलकतें तो मुल्कों की शहंशाहों के कोहेनूरी ताजों से भी बड़ी हुई न ! सोचने की बात है। शहंशाह ताज पहन के तख्त पर बैठ जाय हकूमत करने को और सामने रिआया-खलकत न हो तो निरा स्वांग ही हो गया न मिरासी का !"

गण्डासिंह बोले, "शाहजी, बात तो ले-दे के यही हुई न कि जट्ट के पास जिवियां न हों तो जट्ट होने का गुमान भी क्या हुआ ! चाहने को जिवि-जिमीन हो तो जट्ट जट्ट है।"

मौलादादाजी ने खुशनुमाई की—"बात दो-टूक है आपकी। सरताज पेशे ही दुनिया में दो हुए। खेती-बाड़ी करनेवाली जट्ट-किसानी और दूसरी इन्साफ़ी हकूमत।"

"बात सोलह आने सच है। सरकार चाहे मुल्ला हो चाहे फ़ुकरी, किसानों से जिवियों के मामले उठाती रहे तो मुल्क चलता रहेगा !"

ताया तुफ़लसिंह ने साफ़े को टाहा और आँखें खोल लीं—"ओ, मैं ज़रा ऊँघ गया और आपने मिल-मिला के अपनी ही कतर-ब्योंत कर डाली ! तुम्हारे भाने या जट्ट किसान और या सरकार। हम हटवानियों का चादर-आदर कुछ नहीं ! चलो हम तो हुए अरोड़े कराड़, इस हिसाब से इन धन्नीशाहों का क्या होगा ! इन्होंने तो कभी जिवियां वाह के नहीं देखीं !"

मैयासिंह हँसने लगे—"मैंने कहा खेती शाहों की भी होती है, पर दूसरी तरह की। इस खेती में दमड़ों के बीज और दौलत की फ़सलें !"

कर्मइलाहीजी ने मुंह से हुक्के की नड़ी निकाल ली—"लालसाजी, शाह तो पैसे-धेले की मदद से सबका ढक-साल करते हैं ! यह क्या बोली-ठोली मार दी !"

कवकूलों का कोई पुराना हिसाब-किताब बाक़ी था। कहा, "शाहों को तो छोड़ो, इस हिसाब से तो अंग्रेज भी हटवानिये अरोड़े ही हुए न !"

शाहजी ने मज़मून बदल दिया—"मौलादादजी, इस बार लायलपुर के डंगर-मेले में अच्छी रौनकें लगीं। थाल-बार और छज्ज से खलकतें पुज्ज के पहुंचीं। होगा कोई लाख-अधलाख आदम।"

"इब्राहीमा, सोहावा ऊँट कितने का बैठा !"

"जी, हैदर मल्कान का खच्चर ब्लोच खट्ट गया मुझसे। दो सौ मांगता था। तीसी छुड़वायी। एक सौ सत्तर गिने खरे और ऊपर से डट्ट लगाया एक कुप्पे का ! बीस-पच्चीस की थूक फिर भी लगा ही गया।"

"भरम न करो इब्राहीम, सौदा कसरवन्दा नहीं रहा !"

कर्मइलाहीजी बड़े सिदक से बोले, "शाहजी, अपनी फेरवान गाय भी चंगी ही मिल गयी। सवानी बड़ी खुश है। निक्के नयानो के लिए दूध हो गया। पीते रहें रज्ज के। हाँ, फब्बन घोड़ा आपका भी वाह-वाह रहा। शाह साहिब, आपने पंजकल्याण पर क्यों न हाथ डाला!"

मौलादादजी हँसने लगे—"बंगाल रसाले का वह पदम घोड़ा ··माथे पर तारा···शाहजी ने आँख-भर ताका नहीं! क्यों जी, आप कर बैठे सौदा करनैल-कोल की बुढड़ी मेम से!"

"मौलादादजी, घोड़े दूसरे भी माड़े नहीं थे, पर यह रोहालवाली—हाथ में पानी-भर कटोरा ले बैठो और तेज दौड़ाओ, मजाल है बूंद भी गिर जाये! फिर लेने की एक वजह और भी थी। सामने जा खड़ा हुआ मैं घोड़े के, हल्की-सी थापड़ी दी—गाजी न चौंका, न हिला, न हिनहिनाया। बस हो गया अपना!"

"घोड़ा एक और भी बड़ा अव्वल था, पर था मुश्की। मुश्की को तो हाथ वही डाले न, जो शनि का धनी हो। नहीं तो मुश्की आर और सवार पार।"

नजीबा नवाब मुहम्मदीन के पास बैठ आया था। सुनी-सुनायी अपनी बना ली—"करनैलनी कोल का बाढा बड़े रंगो में। कहते हैं करनैलनी की लड़की घुड़सवारी कमाल की करती है। लायलपुर का नौजवान डिप्टी फ़िदा है इस लड़की पर।"

शाहजी हँसने लगे—"नजीबेया, यह तो वक़्त ही बतायेगा कि दोनों की रास मिलती है कि नहीं!"

बख्तावर कुछ कहने को हुआ ही कि ऐन मौके पर काल़ू ने अनोखी आवाज़-वाली हवा छोड़ दी।

हमदे ने टीप दे दी—"काल़ू बादशाह, तुम्हें हगास की शिकायत हो गयी लगती है।"

बख्तावर ने दन्दियाँ निकाल दीं—"खेत जाने का आलस किया होगा। वह सुना हुआ है न भँभीरी का तुक्कड़ा—हगने पर है—

यारो तीनों हगन मन्दे
पोह माह की अधड़ी राती
जेठ हाड़ की शिखर दुपहरी
सावन मीह वसन्दे
यारो तीनो हग्गन मन्दे!"

बुजुर्ग-सयाने जोर-जोर से सूटे मारने लगे और छोटे हँस-हँस दोहरे हुए।

कृपाराम ने दाद दी—"बादशाहो, झूठ क्यों बोलें! कवित्त तो आला बांधा है शायर ने। पोह माह की आधी रात बन्दे को जो हाजत हो जाये तो···"

बख्तावर पैरों के भार बैठ गया और चहककर बोला—"हो जाये, तो

हो जाये ! कवित्त पढ़ो और खेत तक हो आओ। इसके लिए कोई सवारी तो नहीं चाहिए न !"

ताया तुर्फैलसिंह किसी और ही ख्याल में अटके थे—"देखना तो अब यह है कि मेम पछाड़े डिप्टी को कि डिप्टी पछाड़े मेम को।"

हाजीजी खीज गये—"कौन-सा वह अपने ज़िला-तहसील का डिप्टी है ! और [illegible] ...निल-वतन लायलपुर के [illegible]

[illegible] र जी खुश कर लिया कर ! बड़े फ़रमा गये हैं सड़ना-कुढ़ना सेहत के लिए चंगा नहीं। क्यों हकीमजी !"

हर बिमारी-रोग पर चरायते का पुड़ा देनेवाले एतबारसिंह अपना साफ़ा टटोलने लगे—"मुझसे कुछ पूछा ?"

"न जी, मस्त रहो। अभी अगले जहान जाने को कोई पिण्डवाला तैयार नहीं।"

नजीबे की खोज में पहलवानी पल्लू लटकाता गामा आन पहुँचा तो कड़ाके से सबको साहब-सलामत बुलायी।

गामे ने इस बार गुजरातियों से दंगल जीता था !

कर्मइलाहीजी ने शाबाशी दी—"पुत्तरजी, इस बार धाकड़ गुजरातियों को चित्त करके आये हो। पिण्ड अपने का तो तुर्रा घूम गया !"

शाहजी ने सराहना की—"शहरिये भी आये थे बड़ी आकड़ों में पर गामे उस्ताद, जिस पल पीठ लगायी है तुमने लुण्डपुरवालों की, मैं और अपना जम्मीवाला कादिर हाथ-हाथ ऊँचे उठ गये !"

"क्यों नहीं शाहजी, शोहरत तो खैरों से अपने ग्राँ की हुई !"

काशीशाह ऊपरवाली चोर-सीढ़ियों से उतर बैठक में आ शामिल हुए।

शाहजी बोले, "काशीरामा, गामा पहलवान अब अपने पिण्ड का निशान है। घी का कुप्पा और बादामों की पण्ड लगा दो इसे। ज़रा जिस्म बने !"

"जी !"

फ़तेहअली ने पगड़ हिलाया—"यह हुई न हौंसला-अफज़ाई। पुत्तर गामेया, सलाम कर शाहजी को !"

"बरखुरदार, बस हो जायें तैयारियाँ शाहपुर के मेले की !"

"शाहजी, इस बार शाहपुरियों की पीठ लगा ली तो पीर डण्डाशाह के दरबार में ज़रूर हाज़िर होऊँगा !"

सावन की जल-बिम्बियाँ यह आ और वह जा ! फणकारे मारते पनीले मीह ऐसे घिर-घिर आये ज्यों गाज़ी मरदों के लश्कर। बादल गरजें-कड़कें कडाकों से मानो फौजों की टुकड़ियाँ ! बिजली लप्प-लप्प चमके ज्यों तलवारें ! चमा-चम्म ! झमा-झम्म !

मदरसे में बैठे बच्चों ने हाथी-जैसा मँडराता बादल जुम्मेवाले खू पर देखा तो दबादब बस्ते सँभालने लगे।

"निकलो भई निकलो, फौजें आ गयी।"

मौलवीजी ने भगदड देखी तो देखते ही धौसा दिया—"ओए रानी खाँ के, खबरदार ! कोई मदरसा न छोड़े। चलो, चलकर अन्दर बैठो।"

मौलवीजी की आवाज मे ऐसा टंकार कि अभी दिन उमड़ा हो। कड़ककर कहा, "गोहर शनास, लड़कों को दो टोलियों मे बाँट दो !"

"जी जनाब !"

"हाँ, काले कोच्छडों का बोद्दा किधर है ?"

"जी, यह रहा मैं हाज़िर !"

"है न तेरा दिमाग इस वक्त रोशन !"

"जनाब, कुछ लगता तो है !"

"तो चलो, कच्ची-पक्की को बड़ों से अलहदा कर दो।"

गोहर शनास और बोद्दे ने भारी हत्थी सिरों पर मार चपेड़े झटापट टैनों को गुट्ठे लगा दिया।

छोटे बच्चे मच गये—

लायक से बढिया फायक
अगड़म से बढिया बगड़म
हाजी से बडी हज्जन
मूत्र से बड़ा हगन।

मौलवीजी की आवाज़ कड़की—"चुप्प !"

बोद्दे का छोटा भाई रोडा न डरा। न चुप हुआ—

शमाल मे कोह हिमाला
जनूब में तेरा लाला
मशरिक मे मुल्क ब्रह्मा
मगरिब में तेरी अम्मा।

गोहर शनास ने पकड़कर तख्ती उसके हाथ से, पीठ पर दे मारी—"ओए, अब भी चुप्प कि नही ?"

मौलवीजी ने आवाज दी—"नहीं मानता तो बना दे मुर्गा !"

छोटी-सी आवाज़ आयी—"मैं मान गया हूँ न मौलवीजी ! कान खींच लिये

हैं अपने। बस।"

"अच्छा ! बोधराज, इन कमचोरों को भी धार पर चढ़ा दे !"

"जी जनाब !"

बोद्दा अपने और मौलवीजी के मिले-जुले रौब में सवाल दागने लगा—

पंछियों में सैयद—	कबूतर
पेड़ों में सरदार—	सीरस
पहला हल जोतना—	न सोमवार न शनिवार !
गाय-भैंस बेचनी—	न शनीचर न इतवार !
दूध की पहली पांच धारें—	धरती को !
नूरपुर शहान का मेला—	बैसाख की तीसरी जुम्मेरात को !
चिर-पहाड़—	रावलपिण्डी से पांच कोस दूर !
जो चमके बिजली बैसाख की पहली सुदी—	तो भर-भर दाने कोठों में !

कोने में बैठे हौलू ने तुक मिलायी—"पल्ले दाने तो कमले भी सयाने !"

जोगे ने गौहर को सैनत मारी—"अंधेरे में एक-दूसरे का मुँह नहीं दीखता उस्तादजी, तो जवाब कहां से ढूंढ के लायेंगे !"

मौलवीजी हंसे—"अहमक। ओए, जिसके दिमाग में रोशनी हो वहां बराबर गुल जलती रहती है। चल गौहर पुत्तर, जला दे चिराग़।"

लड़कों में खुसपुस होने लगी।

शेरे से न रहा गया—"मौलवीजी, मेंह के तो परनाले बह रहे हैं ! पल्ली वण्ड के खोब्बे में से कैसे निकलेंगे ?"

मौलवीजी ने हुक्के की गुड़-गुड़ जारी रखी।

रखे ने शेरे की गुद्दी पर टोहका दिया—"ओए देख बाहर !"

पूरा जमघट हल्ला करने लगा—

"ओले पड़ गये टप्प-टप्प
फ़ौजें चढ़ आयीं दब्ब-दब्ब !
दौड़ो यारो दौड़ो
चलो मदरसा छोड़ो !"

मौलवीजी ने अंधेरे में ही दो-चार सिर गरमा दिये।

"बैठ जाओ सीधी तरह भूतनो, ऐसा मारूंगा कि मलोले खाओगे !"

बड़े लड़के हिनहिन करने लगे और छोटे झूठ-मूठ सिसकारियां भरने लगे !

मौलवीजी कड़के, "चोप्प ओए चुप्प !"

गौहर ने चिराग़ जला मौलवीजी के पास घड़े की चप्पनी पर रख दिया तो तुलबाओं की भीड़ में खुद मौलवीजी चिराग़ की तरह चमकने लगे।

"गुलजारीलाल, मरगल्ला पहाडियाँ कहाँ हैं ?"

"रावलपिण्डी के पास, जनाब !"

"भला जरनैल निकलसन बहादुर की यादगार कहाँ है ?"

"जी, वहीं, मरगल्ला दर्रे के पास !"

"शाबाश !"

"गौहर शनास, सिंह की बाव कहाँ है ?"

"जनाब, दरिया काबुल और सिन्ध जहाँ मिलकर नीलाभ बन जाते है वही है सिंह की बाव !"

"रोडेया, काला चिट्टा पहाड कहाँ है ?"

"अटक के पास !"

"अटक के पास !" मौलवीजी ने कान पकडकर उठा दिया—"पहले कहते हैं जनाब या जी ! क्या समझे !"

रोडे ने कनपटी पर हाथ रखा और मुस्तैदी से कहा—"जी जनाब !"

ताकी के पीछे से आवाज आयी—

"आलू अलूचा फालसा
काबुल मे पहुँचा खालसा !"

"गौहर शनास, शुर्ली है यह ! पकड़ के ले आ मेरे पास इसे !"

चटाक-पटाक मौलवीजी ने दो लगाये—"आज के अलूचे तो दो खरे हो गये ?"

"जनाब !"

बड़े लड़के गुलों के नाम लें—

गुले-लाला
गुले-यासमन
गुले-पलाश
गुले-शब्र अफोज
गुले-सूरी
गुले-हजारा
गुले-जाफ़री !

कच्ची जमात के वस्सो दाई के लड़के होलू ने महीन-सी हेक निकाली—"जी, मैं भी एक बताऊँ !"

गौहर ने एक रसीद की पुड़पुड़ी पर—"अलिफ-बे आता नहीं और शायरी करने चला है ! बैठ जा !"

मौलवीजी ने बड़े प्यार से बुलाया—"होलू पुत्तर, इधर आ ! मेरे पास !"

होलू ने नाक से बहते सीड को बाजू से पोंछा और डरते-डरते पास आ खड़ा

हुआ !

"बोलो, क्या कहना चाहते थे ?"

"जी, एक गुल का नाम बताऊँ ?"

मौलवीजी ने सिर हिलाकर इजाज़त दी।

"गुले-खुदरो !"

मौलवीजी खुश हुए—"पुत्तरजी, कहाँ से सुना !"

"जनाब, आपसे !"

[illegible]

गोहर [illegible]

कुतरने लगा।

बादलों की गड़गड़ाहट में बिजली यकायक इतने ज़ोर से कड़की ज्यों मदरसे के बाहर ही गिरी हो।

कच्ची-पक्की के बच्चे-बेटड़े डुसकने लगे—"हाय ओ बेबे !"

"जी, मेरी माँ ढूँढ़ती फिरेगी !"

"जी, मेरा चाचा फ़िकर करेगा !"

"मेरा लाला—"

मौलवीजी हुक्के की नड़ी मुँह से निकाल हँसने लगे—"ओए खोत्ते के पुत्रो, डर से तुम्हारी पजामियाँ तो नहीं गीली हो गयी ! बैठे रहो आराम से जब तक मींह न थमे। दमोदरा, उठकर बताओ गुजरात का किला किसने बनवाया था ?"

दामोदर ठिगने ने ताबड़तोड़ इबारत शुरू कर दी—"गुजरात का क़िला हिन्दोस्तान के मुगल शहंशाह अकबर ने बनवाया था।

"मुगल सल्तनत के दिनों में चलन यह था कि जहाँ हकूमत किला बनवाने का फ़ैसला करे, उस पर होनेवाला आधा खर्चा वहाँ की रियाया दे और आधा दिल्ली की हकूमत।

"बादशाह सलामत ने शहर की सलामती के लिए क़िला बनवाने का ऐलान किया तो इलाके के जट्ट बिगड़ गये। उन्होंने खर्चा उठाने से साफ़ इनकार कर दिया।

"अकबर बादशाह ने गुज्जरों के सरदारों को समझाया-बुझाया तो वे मान गये।

"वड़ैच पिण्ड डिगा के चौधरी फ़तेह मुहम्मद ने रुपया-पैसा इकट्ठा करने का सारा ज़िम्मा अपने सिर पर ले लिया।

"दीनगाह के अमीर गुज्जर आदम ने बोरियाँ भर-भरकर दौलत दी।

"क़िला जब बनकर तैयार हुआ तो बादशाह सलामत ने खुश होकर शहर

का नाम गुजरात अकबराबाद कर दिया।

"जट्ट बडे नाराज हुए।

"दिल्ली शिकायत लिख भेजी कि मुल्क के पादशाह को किसी भी एक फ़िरके को दूसरे के खिलाफ ऊपर चढ़ाना मुनासिब नही। महल जितना गूजरों का है उतना ही जट्टों का भी है।

"जवाब आया—जो नाम रखा जा चुका, बदला नही जा सकता। हां, जट्ट अपनी तरफ के इलाके का जो भी नाम रखना चाहे, हम उन्हें मंजूरी देंगे!

"जट्टों के मूरिस क्योंकि 'हेरात' से आये थे, उन्होंने अपने इलाके का नाम रख लिया हेरात।

"एक बार बादशाह कुंजा के आसपास हीरा-हिरण का शिकार खेलने गया। जंगल की खूबसूरती देखकर फरमाया—'असली हेरात मे बढिया-से-बढिया घोड़े और गुजरात हेरात मे बढिया-से-बढिया काले हिरण।' दरबारियों से पूछा, 'किस हेरात को बढ़िया माना जाये ? इसको या उसको ?'

" 'बादशाह सलामत, दोनों ही एक-दूसरे से बढ़-चढ़कर है।' "

मौलवीजी ने फत्ते को बाहर झांकते देखा तो आवाज़ दे दी—"फत्तेया, दर्रों के नाम गिना !"

"खैबर, खुर्रम, टोची, गोमल और जी रब्ब अपका भला करे, ईरान !"

" ईरान कि 'बोलान' ?"

फत्ते को जाने की जल्दी थी सो लापरवाही से कहा, "अहो जी, कुछ भी हो हमारी तरफ से। अब छुट्टी कर दो। घर पहुँचते बनें। आसमान देखो। अन्धेर घप्प घेर !"

मौलवीजी गरजे, "ओ जट्टा, ईरान और बोलान में तेरे भाने कोई फर्क ही नही ! कर हाथ—"

उठा के मौलवीजी ने ऐसी छड मारी कि लडकों के तालू सूख गये।

"बन्तेया, नाम गिना अपने इलाके के जंगल-बेलो के !"

"चक गाजी, लंगा रुक्ख, धूल रुक्ख, मारी खीखरन, पिण्डी तातार, भक्ख पब्बी, सादुल्लापुर···"

मौलवीजी ने उठकर एक कनपटी पर चपेड मारी—"ओए सुअरा, यह क्या टैंश और टश्श है तेरी ! बिना रुके बोलता चला जाता है ज्यों खुद ही उस्ताद हो ! पेट से ही पढकर निकला हो।"

बन्ते को आग लग गयी। कान पर हाथ रखे घूरता रहा !

"मोटी बुद्धवाले, अगर जवाब तुम्हे याद है तो उगलने की क्या जल्दी है ! नाम ऐसे दोहराये जाते हैं, जैसे रपता-रपता याद आते चले जा रहे हैं ! फिर कभी ग़लती न हो।"

हबीब को आवाज पड़ गयी—"हबीबेया !"

"जी, आज हबीब ग़ैर-हाज़िर है। उसकी भैंस सूई है।"

निक्के को सूझ गया—"मौलवीजी, अब तो आपके लिए दही-लस्सी आया करेगी !"

"केशोलाल, समुद्र के नाम ताज़ा कर !"

"बहरुल काहिल
बह्रे-सीन
बह्रे-अख़्जर
बह्रे-असवद
बह्रे-दक्कियानूस···"

"कुन्दज़हन ! औकियानूस को दक्कियानूस ! इधर आ !"

केशोलाल ने कान पकड़ लिये—"भुलेखा पड़ गया मौलवीजी ! आज माफ़ी दे दो ! गिनकर सौ बार याद करूँगा !"

"ओए, तेरी यह अटक बहुत पुरानी है। फिर भूला तो ?"

"न जनाब, याद कर लूँगा !"

फत्ता उठकर पास आ गया—"मौलवीजी, आपाँ चले ! मेरी तो आज छुट्टी कर छोड़ो !"

"मूर्खा, खुदखुदी काहे की ! छुट्टी तेरे कहने से होगी कि मेरे कहने से ?"

फत्ता जट्ट अड़ गया—"आज तो, जी, ये बातें बेफायद ही हैं न ! इस बरसात में हमारे ढोर-डंगर कौन देखेगा !"

उत्तरी वण्डवाले मुद्दरे ने भी मौका ताड़ा। टपोसी मार उठ खड़ा हुआ—"मौलवीजी, फिटे मुँह मेरा—मेरे बल्द जुते थे खेतों में। लो जी, मैं गया···"

देखा-देखी छोटे टोडे-मीडे भी मच गये। हाथापाई शुरू हो गयी।

मौलवीजी ने गोहर को पुचकारकर कहा, "पुत्तरजी, इन्हें जाने दो ! ओ टिड्डो जायो, जाकर माँओं से तत्ते-तत्ते पूड़े खाओ !"

छोटे लड़कों ने दो-दो की जोड़ियाँ बना लीं। पजामियाँ टूँग सिरों पर तख्तियाँ रख घरों को दौड़ चले।

झोटे नून गाह
बुड्ढे नून राह
मर्द नून चक्की
घोड़ा नून चट्टी
चरे राह कुराह
ओ झोटे नून गाह।

मौलवीजी बड़े प्यार सिदक से अपने कच्चे शागिर्दों को जाते देखते रहे। फिर

पक्कों को आवाज़ दी—"गोहर पुत्तरजी, ज़रा चिलम तो ताजा करो ! दूधारने में अंगियारी जरूर होगी। हां, सयाने लड़के 'पण्डनामा' खोलकर पढ़ें और बाद में पढ़ें गुलिस्तां बामानी।"

रागियों के जगतार ने बहाना बनाया—"आपके लिए मेरी बेबे ने खीर चढा रखी थी। मैं लेने न पहुंचा तो मार-मार मुझे फट्टड़ कर देगी।"

"नालायको, सोचता होगा खीर के नाम से तेरी छुट्टी कर दूंगा ! ऐसे फ़तेह पेंच डाले मुझ पर तो सूअरवाली थूथनी गोंध दूंगा !"

एकाएक शुर्ली ने हांक मार दी, "दौड़ो, दौड़ो, मौलवीजी की हंडिया में बिल्ली मुंह मार गयी !"

गोहर ने हंडिया पर झुके-झुके शुर्ली को चूंडी काट दी और मौलवीजी को सुनाकर कहा, "बिल्ली ने हंडिया की छूनी ही कवासी है, मुंह नहीं मारा ! देख लो, मलाई का थर वैसा का वैसा बंधा है !"

सुनकर मौलवीजी की भूख जाग पडी।

"पुत्तरो, ज़रा सखी सरवर लक्खनदाता को ताज़ा करो। फिर तुम्हें छुट्टी देते हैं !"

गोहर और बोद्दे ने एकसाथ ऊंची आवाज में बोल उठाया तो बाकी लड़के भी तर्ज़ पर आ गये—

पंज सदी के अव्वल या की चार सदी के आख़ीर
मुल्क अरब से फ़ित्ना उठकर कायम हो गया आख़ीर
जैनब दीन बाप सैय्यद अहमद तरक वतन तब किया
अरब छोड़ पंजाब मे शाह कोट सान सा लिया
सैय्यद होने इन साहिब में शुबह न शक्क है मूल
सैय्यद हुसैनी इनको जानो मानो अल रसूल।

शाहनी की चिर-सूखी कोख की महत्ता प्रकटी तो पहनने के कुरते-झगे सब छोटे पड़ गये।

चाची महरी इस्माइल दर्ज़ी से काली सूफ के दो खुले झबले सिलवा लायी।

"मांबीबी, अरी ज़रा कोरे कपड़े पानी में नितारकर डाल दे। संझा तक सूख जायेंगे।"

शाहनी के लिए काला कप्पड़ मांबीबी के दिल-मन न भाया।

कुईं की ओर जाते-जाते कहा, "चाची, तुम्हारी तुम्ही जानो। खत्राणियों को काली सूथने पहनते तो देखा है, पर काले कुरते कभी नहीं। खैर रहे रब्ब की चाची, पर मुझसे पूछो तो सोगवारी रंग है।"

चाची महरी पहले मांबीबी को घूरती रही, फिर होले से कहा, "काली अँधियारी रात के बाद चमके दिन का सूरज! आयी समझ!"

"सच्ची-मुच्ची चाची, तुम्हारी अकलों की भी क्या रीस!"

शाहनी अपनी बाँह पर सिर रखे मंजी पर पसरी थी। टुक दोनों की ओर देखा और हँसकर कहा, "चाची! देखो मुझे, दुपहर लेटे-लेटे ही गँवा डाली। मांबीबी, मेरी पिटारी तो दो। बैठे-बैठे सूत ही अटेर डालूं।"

चाची ने वर्ज दिया—"काम-धन्धे भागे नही जाते मेरी बच्ची! कोई पोथी-गुटका पढ तो खैरों से गब्ब कोठरी मे भी चान्नन हो।"

शाहनी ने पूछा, "मांबीबी, आज राबयाँ न आयी। बुल्लेशाह ही सुनाती। कल तो लडकी ने आनन्द कर दिया। ऐसे मीठे बोल उठाती है बारहमासे के कि तन-मन जी-जी जाये!"

"सच्च कहती हो बच्ची, अराइयों की को रब्ब की देन! गला ऐसा सुरीला कि हिरख मोद-मोद-भोग पुर-पुर आये सुरों में! कानों मे मिट्ठड़े बोल पड़ते ही रूह हरिया उठे मनुक्ख की।"

पौडियों की ओर किसी की आहट हुई।

"आ री राबयाँ, बडी लम्बी उम्र है तुम्हारी!"

मुल्तानी छींट के सूथन-कुरते पर अधमैली दुपट्टी। रूप दूधिया ऐसा कि हाथ लगे मैला हो।

सिर पर से दोहर उतार राबयाँ ने माथे पर आते सुनहरी बाल समेटे और शाहनी से पूछा, "सिर झस्स दूं न! घी की कटोरी ताकी मे रख गयी थी।"

"हस्सा नाइन आती ही होगी। बल्ली राबयाँ, तुम गाती भली!"

चाची ने टोक दिया—"लडकी को हाथ-पाँव हिलाने दिया करो। काम करने की रब्बत पडेगी। धीए, करतारो की बड़ाई सुनती हो न! बड़ी तारीफें है उसकी अपने पिण्ड में। घरवाला बड़ा खुश। सुबज्जी ने ऐसा सुघड़ घर सँभाला है!"

राबयाँ छोटा-छोटा मुस्काती रही। खडी हो पीछे शाहनी का चुटला खोलने लगी।

सिर में घी डाल उँगलियों की पोरों से बालों की जड़ो में रचाती थी कि शाहजी आन पौडे।

शाहनी ने सिर पर कपडा कर लिया।

राबयाँ मंजी की पाट्टी पर पाँव टिकाये मूरत बनी खड़ी रही।

शाहजी लड़की को देख-देख बडप्पन से हँसे—"राबयाँ, सुरों में मोती पिरोना छोड़कर किन कामों में आ लगी ! शाहनी, ऐसी गुणी लड़की से ऐसे काम न करवाया कर।"

शाहजी राबयाँ को निरखते रहे—"रब्ब की बक्शश इसके माथे। जीती रहो। जीती रहो। शाहनी, रावी बड़ी उत्तमा है। इस पर सरस्ती का विरद हत्थ !"

शाहनी चाव-चाव लड़की को देखने लगी।

सिर के आँचर से बाहर आते कक्के-कक्के सुनहरी बाल और कचे रंग पर नयी नवेली रुत की गुलाबी झलक !

चाची ने पुचकारकर कहा, "सुना धिये, सुना कुछ शाहजी को ! दिल से तेरी सराहना करते हैं !"

राबयाँ शाहनी की ओर देखने लगी।

"बोल बल्ली, कोई मिट्ठी बाणी इन कानों में भी पड़े !"

राबयाँ ने कँवारी चितवन शाहनी की ओर ताका, फिर ओढ़नी ढंग से ओढ़कर बुल्लेशाह की काफी छू ली—

मैं सूरज अगन जलाऊँगी
मैं प्यारा यार मनाऊँगी।
सात समुन्दर दिल के अन्दर
मैं दिल से लहर उठाऊँगी
मैं प्यारा यार मनाऊँगी।
मैं बादल हो-हो जाऊँगी।
मैं भर-भर मेंह बरसाऊँगी।
न मैं ब्याही न मैं क्वाँरी
पर बेटा गोद खिलाऊँगी
इक दूणा अचरज गाऊँगी
मैं प्यारा यार मनाऊँगी।

श्रीराम ! श्रीराम ! जिये जागे री राबयाँ ! क्या सुर, क्या गला और क्या बाबा बुल्लेशाह !

शाहनी ने जल-भीनी अँखियाँ पोंछी तो देखा शाहजी की आँखों में कोई सूरज दमकता-चमकता हो ! माथे पर हरियावल उग आयी। सिर हिलाकर बोले, "राबयाँ मिट्ठ-बोलनी, अल्लिये ने बताया तूने सी-हरफी लिख डाली है। इस बार स्यालकोट फेरा लगा तो उस्ताद इनायतशाहजी को दिखायेंगे।"

राबयाँ के मुखड़े पर कोई फुहार पड़ने लगी। चुन्नी का छोर पकड़ दांत दबा लिया और अँखियाँ नीची कर शरमा दी।

शाहजी ने सिर हिलाया—"शाहनी, लड़की के गाने का सत्कार कर। इसे कुछ दे।"

पेट पर बिछे रसीले मिश्री बोझ को सँभाल शाहनी चारपाई से उठी तो संग-संग दिल में हुलासी और उदासी घिर आयी।

पसार में जा लकड़ी की पेटी खोली तो लड़की के लिए शाहजी की तारीफ सुन अपने जियरे को घुड़क दिया—'मुड़ री, इस छोटी-सी कंजक से द्वैत कैसा !'

शाहनी ने मलमल के भोछन में लिपटी मिरची के बूटेवाली फुलकारी निकाली और लाकर राबयाँ की झोली मे डाल दी—"राबयाँ री, इस बार सयाले मे ओढ़ना।"

राबयाँ की आँखें चमकने लगी—"मैं मर जाऊँ शाहनीजी ! कैसे ओढूँगी ! यह तो शादी-ब्याहवाली है !"

चाची महरी ने लाड़ से झिड़की दी—"बस री, तू शादी-ब्याह से परे ! तू इन सबसे अनोखी !"

शाहजी को बैठक की ओर कदम उठाते देख शाहनी को जाने क्या सूझा। रोककर कहा, "रावी से सावन सुन जाओ ! गा री गा, वह दोहरा गा !"

"सावन माह सुहावना जो धरती बूँद पई
अनहद वरसे मेघला जो मन की तृप्त गई
मल्हारां सोहन सारे सावन, दूती दूत लगे उठ जावन
नी घर खेलन कुडियाँ गावन, मैं घर रंग-रंगीले आवन।
मेरीयाँ आसाँ रब्ब पुजाइयाँ,
ताँ मैं उन संग अँखीयाँ लाइयाँ
सँइया देन मुबारिक आइयाँ
शाह इनायत अंग लगाइयाँ।
भादो भावे तब सखी, जो पल होए मिलाप
जो घट देखूँ खोल के, घटि-घटि के विच आप।"

गाते-गाते राबयाँ का स्वर थर्राने लगा। आँखें भर आयीं।

माँबीबी का अपना दिल उमड़ आया। पास आ लड़की का माथा चूमा—"सदके जाऊँ। सुच्चे बोल तेरे ओंठों पर फूल बन जाते हैं री !"

शाहजी की ओर देख शाहनी बोली, "यह शहद-घोलनी तो हमारे पीरों के माथे पर दौनी हुई न दौनी !"

चाची ने भोले भाव टोका—"बस बच्ची, हमारी लड़की का सिर न फिरा। तारीफें नहीं, इसे असीसें चाहिएँ ! जा मेरी रावी, सलाम कर बड़ों को !"

राबयाँ पहले शाहनी के आगे रुकी, फिर हाथ उठा शाहनी को सलाम

किया।

मुखडे पर दो मणियाँ अनोखी दिप्प-दिप्प करती रहीं। कई देर।

चाची ने देखा—"बच्ची, सलाम पहुंच गया शाहजी को ! हाथ नीचे कर ले !"

राबयाँ ने शरमाकर मुंह दोनों हाथों में छिपा लिया।

शाहजी चुपचाप अपनी बैठक की ओर बढ़ गये।

शाहनी ने देखा तो मंजी पर बैठी-बैठी हूंफने लगी। किसी से कुछ कहे-सुने कि गुम-सुम हो गयी। आँखें मिच गयी और सिर निढाल पाटी पर जा लगा।

माँबीबी दौडी—"चाची, झटापट आ ! कोई पानी लाओ री, छोटी दो ! शाहनी का दिल छिप गया है !"

•

मेघ पनीले बरस-बरसा सुरखरू हुए। चढ़े नद-नाले भँवरों से खेल-खाल उफ़ानों से नीचे उतर आये।

सजद बीबी ने लकड़ी की सीढ़ी से कोठे पर जा पानी की मार टोही। नजर उठा आसमान का सुथरा नीला रंग देखा और अपनी भतीज-देवरानी बेगम बीबी को हांक मारी—"बेगमा री, गल्ले-पीहन से जल्दी निबड़ ले। आज कोठे-भित्तियों पर लिपाई होगी।"

चक्की पर बैठी बेगमा ने पहले हाथ तेज़ कर लिया, फिर आवाज दे जिठानी से पूछा, "घानी तो अभी कल पड़ी, आज ही लीपा-पोती कैसी ! मिट्टी को भीगने तो दो।"

फूफी खीज गयी, "क्यों री, अभी से कतराने लगी ! रात-भर दोनों भाई घानी में खड़े रहे। हाथ लगा के तो देख। जनों ने पैरों से गूंथ मिट्टी को मलाई कर डाला है।"

"तूड़ी भोह भी तो मिट्टी में रल-मिल जाने दो। जल्दी क्या ! आज नहीं तो कल सही।"

"आयी री बड़ी आयी अकलोंवाली। भाइयों ने पैरों से कूट-कूट मिट्टी को रेशम कर दिया है। अब कहीं बहाने से ताप न चढ़ा लेना।"

बेगमा ने खीजकर पीहन उसार दिया और टूटी हुई चाटी का वब्बर ले दुधारना लीपने लगी।

सजद बीबी ने टोका—"अरी भतीजड़ी, यह छोटी-मोटी चुम्मा-चाटी बाद में करना। चल, उठा डब्बा और मिट्टी ऊपर डाल।"

बेगमा मचल मारे रही। लीप-पोत दूधारना धूप में रखा और पुराने भड़ोलों की लिपाई करने लगी।

सजद बीबी ताड़ गयी, आज काम से ढवाल नहीं देवरानी।

सिर पर दुपट्टी डाली और घर से बाहर जाते-जाते कहा, "रोटियाँ उतार भत्ता पहुँचा आना खेत में। मैं शाहों के यहाँ से लाल मिट्टी ले आती हूँ।"

पीठ मुड़ते ही जिठानी की बेगमा बुड़बुड़ाने लगी—'मौला, फूफियों के घर कोई न ब्याह के आये। मर गयी फूफियाँ जहर की ठूठियाँ।'

रसूली ने झाँका—"बेगमा भरजाई, मैं तो चली कपाह बीनने शाहों के खेत। यह मुट्ठ-मुट्ठ गुटी तिल्लर कपाह खिड़ी है। हफ्ता-आठ दिन लगा लूँगी चोन पर। तुम भी चलो—पण्ड-दो पण्ड कपाह तो मिल जायेगी न चुनने पर!"

"न रेशमा, फूफी सरकार का फरमान निकल गया है। कोठे की लिपाई, फिर गोती, फिर पोचा। गयी है शाहों के यहाँ से रत्ती मिट्टी लेने।"

रसूली ने खाला सास को काबू किया था। समझाकर कहा, "मुझसे सीख। मुझसे सबक ले। कर यह कि एक बार फूफी को आँखें उठा घूरती चल। तेरी अपनी नजर की हया जो निकल गयी तो आधा रण साफ।"

"रेशमा, उसके बाद?"

"उसके बाद क्या! बुड़बुड़ाने की जगह निशंक हो ऊँचा-ऊँचा बोलना शुरू कर दे। बस रण जीत लेगी! चलने लगेगा हुक्म!"

"छोड़ री, तू क्या जाने! जना मेरा फूफी पर जान देता है।"

"दे, सौ र सदके दे, पर जब मुँह मारने आये तेरे ढिग तो दूर कर दे। परे··· परे···"

बेगमा हँस-हँस दोहरी हुई—"बड़ा हत्थ-छुट है री! एक धप्पा मार दे, चार दिन उँगलियाँ चमकती हैं।"

"रहे चमकती! बस, हाथ न लगाने दे! सुन मैंने कैसे सँभाला। इधर तो मेरी खाला से लड़ाई, उधर मैं रोज सो जाऊँ उसी की कोठरी में। जना मेरा कभी बर्तन-भाण्डे खड़काये, कभी कुत्तों को दुत्कारे। मैं मचल मारकर पड़ी रहूँ। एक दिन भत्ता देने गयी तो जने ने उठकर मेरी गुत्तड़ी पकड़ ली—'ऐ बीबी, सीधे राह पर आ जा, नहीं तो खता खायेगी!'

"मैं झुमका मार पीछे हट गयी—'देख ओ जनेया, माँ तेरी और खाला मेरी। अगर वह बने जुल्मी सास मेरी तो लड़ाई न मेरी, न तेरी। उससे निपटने दे मुझे और सौरों से मंजी अपनी घर से उठा ले। बाबे के साथ सो खू पर और मैं सोऊँगी घोड़े-बेचनी अपनी सासड़ी के संग!'

"भरजाई बेगमा, यह सुनते ही घरवाले का तो हलक कूद गया। घसीट मुझे नीचे दे मारा। मैं न रोयी, न करलायी। कपड़े झाड़ उठ खड़ी हुई और सहजे से बोली, 'माँ-पुत्तर दोनों मिलकर कर लो बूटेमारी। खुदावन्दा तुम्हारे कूँओं का पानी सुखा देगा। जिवियो के बीज गला देगा। खड़ी फसलों मे कीड़े लगा देगा।'"

रसूली मानो बेगमा से नहीं, अपने गबरू से बातें करती हो। एकाएक हँसने लगी—"बेगमा भरजाई, वह दिन था और आज का दिन है। जने पर जैसे कोई टूना-टोटका हो गया। पास खींच पुचकारने लगा—'न-न रसूलिये, खेती को बद्दुआ न दे! मैंने कौल-क़रार किया तुमसे। बेबे ऊँची-नीची करे, तेरा खाविन्द तेरे साथ हमेश!'"

बेगमा की आँखें फड़कने-मटकने लगी—"फिर री, फिर क्या हुआ? जल्दी बता!"

"सुन! शामी वेले तन्दूर तपा मैं आटे की कनाली लायी तो सासड़ी मेरी रोज की तरह बोलने लगी—'सूरखानिये री रसूलिये, गीली मन्छट्टी क्यों डाली तन्दूर मे! मार धुआँ ही धुआँ! कोई अकल-समझ कर!'

"इसके पहले कि मैं पलट के कुछ कहूँ, मेरा जना माँ के पास आ खड़ा हुआ और जोर-जोर से खड़कने लगा—'कान खोल के सुन ले बेबे, रसूली से कोई ऊँच-नीच की तो समझ रख, इस घर मे अकेली करलाती रह जायेगी!'

"खाला बिफरी—'क्यों रे क्यों!'

"बेबे, वह यूँ कि आज से घर-हँडिया की लम्बड़दारी मैंने रसूली को दे दी है। बहूटी तेरी जो भी राँधे-पकाये, खा-पी आराम किया कर। काम की रव्वत न छूटे तो पीहन कर। चर्खा कात। नमाजें पढ़। रोजे रख। बेबे, हुक्म-हासिल तेरा बहुतेरा चल गया। अब सब्र कर ले।'

"भरजाई बेगमा, मेरी सासड़ी को तो ज्यों पाला मार गया। मंजी पर पड़े-पड़े रोती रही।

"फजर उठकर मुझसे घी-गुँधी आवाज मे बोली, 'धिये, बड़ी-बड़ी हकूमतें न रहीं, मेरी सूबेदारी किन गिनतियों में! आप पका और खा हँडा। मुझे जो कहेगी करने को, मैं हाजिर हूँ। हाँ, इतना बता दे करमावलिये, किस मलवाने से जादू लिखवाकर लायी थी!'

"बेगमा भरजाई, मैं क्या कहती कि जादू मुँह-बोला मेरा अपना और लिखने-वाला जट्ट पुत्तर भी तेरा अपना।"

रसूली के गये पीछे बेगम बीबी सुखल्ली हो मिट्टी के खिलौने घड़ने लगी। बारह-

सिगा बनाया, शेर बब्बर घड़ डाला। ऊँट की थुथनी निकाली ही थी कि सजद बीबी मिट्टी का पुड़ा उठाये आन पहुंची—"है री बद की नस्ल, न तन्दूर न बालन! क्यों री कम्मचोरनी, यह टेढ-मेढ़ किसलिए? चल, उठकर तन्दूर तपा।"

बेगमा के सिर रसूली चढ बोलने लगी—"कान खोल के सुन ले फूफी! अब नही चलनी तेरी नादरशाही! आज नहीं मैने करनी लिपाई-पुताई!"

सजद बीबी ने घूरा—"क्यो री क्यो, जिन्न-भूत तो नही चढ़ गये तेरे सिर!"

"न फूफी! न जिन्न-भूत, न पानी-परछांवा! हुज्जत हिकमत अब तेरी खात्मे पर! चल गयी जितनी चलनी थी!"

"मुड री, जबान पर फन्द दे। कुत्ते-खानियो की तरह भौंकती जाती है!"

"फूफी सरकार, अब तक तो न बोलती थी, अब बोलूंगी! किसी की गुलाम-बान्दी नही। डट्टकर काम करती हूँ। माल डंगर को गत्तावा डालती हूं। गोबर पाथती हूँ। भोटी को छप्पड ले जाती हूँ..."

"बस री, अपने वजीफ़े गाने छोड़ दे। जट्ट किसान की जातकड़ी न हुई कि मुगलों की शाहजादड़ी हो गयी! चल, भोच्छनी उतार और लिपाई पर लग।"

"कान खोल के सुन ले फूफी, मैं आजाद हुई। अब तुम्हारी लानत-मलामत न सुनूंगी!"

सजद बीबी हाथ मलने लगी—"फिटे मुँह री! इतना कुफ़ न तोल। तू मेरे भाई की औलाद, तुम्हे मैंने सौ-सौ लाड़ लड़ाये। अरी भतीजड़ी, तूने मेरा यह कद्र पाया!"

बेगमा उठ खड़ी हुई, गठीली छाती को छिपाये काला झग्गा ऐसे लहराया ज्यो जवानी पर रात! गुस्ताख आवाज़ में टनोका लगाया—"खा-खा तेरी फटकारें पेट मे गम का गोला बन गया! सुन ले फूफी, जो तुमने अपनी टेव न छोडी तो मैं भी असल की नही अगर अपनी झुग्गी अलग न कर लूं। आख्यान करती हो न कि गंजी नहायेगी क्या और निचोड़ेगी क्या! वही होकर रहेगा।"

सजद बीबी सकते में आ गयी। चुपचाप तन्दूर तपा पेड़े घड़े और बैठी-बैठी सोचने लगी—'हाय-हाय री, वक़्तों के पैंतरे! जिसका जना मर्द हो चढ़ता सूरज, खैरों से उसी का हुक्म-हासिल चलेगा! मेरा बन्दा ढलने पर पहुंच गया। बाकी क्या रहा! यही स्वाद बकबकौना! सब्र कर ले री सजदो! रब्ब का शुक्र मना। रहने को कुल्ली, ओढ़ने को जुल्ली और खाने को गुल्ली। पुत्तर की तरह देवर पाला, पर मौला तेरे रंग! कल तक मैं इसे उँगली से लगाये रही, आज बेगमा उसके कन्धे चढ बैठी। चल री सजदो, दिल को न लगा। कन्धे चढ़ी सवानी मर्द से जरूर कुछ-न-कुछ लेकर रहती है। चल, जितना निभ गया सो ही बहुत!'

लाहौर जंजीर का मालिया शैतान को मार दे।
आशक परी शाह छेर परी को बांध दे।
एक स्याह मोर स्याह सीतल परी को बांध दे।
रेवा को बांध दे जमुना को बांध दे सरस्वती को बांध दे
किशना नरबदा गोमती को बांध दे
नरसिंह को बांध दे
जैन खान साधू दरयासिंह को बांध दे—

हीरा सांसी ने गरजते बादल और चमकती बिजली तले खड़े-खड़े सारे जिन्न-भूतों को अपनी जंजीर में बांध पुरखे शान्समल का ध्यान किया और करारी चाल पैड़ियां उतर सीधे चौके में जा बैठा।

सिर पर लाल दुपट्टी डाले जीवां ने थाली परोस दी। घी गुड़ुच्च रोटियां, आम का चूपा और दही की कटोरी।

हीरे ने आखीरी बुरकी मुंह में डाली। दीवे की रोशनी में लप-लप करती जीवां की लाल ओढ़नी देखी। जीवां की आंखों में दो मणियां।

हीरा सांसी ने फुरकती मूंछों से जीवां का पहले नाक भेंटा, माथा, फिर गले में झूलती चांदी की जंजीरी को चूमकर कहा, "जय लोछिव्व मां, जय हाजी हयात!"

नंगा बदन। तन पर सिर्फ़ लंगोटी। जीवां हीरा के चारों धाम देख उसकी आदि-दात पर रुक गयी।

हीरा सांसी खुश होकर हंसा। जीवां की सूथन पर थापड़ा देकर कहा, "अरी ओ मेरी किस्मती, यही लौटूंगा दिन फूटने से पहले।"

"साहब नबेड़ू, तुम्हारा कैफ़दान इस मुतनी कन्ने···यहां···यहां···"

हीरा सांसी ने फुदकते पांव ड्योढ़ी लांघी और बाहर से कुण्डी चढ़ा दी।

जीवां अन्दर खड़े-खड़े भूत परास्त करने को दोहराती चली—

"नदी को बांध दे औले को
दरिया की लहरें बांध दे
उतने से बांध दे टोटका
जब उसे घेर बांध दे।
बिच्छू का दाग पकड़ के बांध दे
दन्दन जहर बांध दे।"

कड़कती बिजली और घोर घग्घर बरसात में हीरा सांसी गांव से ऐसे बेखटके बाहर निकल गया ज्यों चिड़िया इस पेड़ से उस पेड़ तक उड़ी हो। खेतों से होता हुआ अडोल पानी में उतर गया।

ऊपर बरसते मेह का पानी, नीचे तल चनाव का। सीधी-उल्टी तारियां। लहरों में हाथ-पाँव की हरकत ऐसी ज्यों मछलियों के जाल।

पार पहुँच नज़र दौड़ायी—सामने वेगोवाल।

घुप्प अँधेरा। आसमान की काली-कजरारी चादरें धरती की मुंडेरों पर झुक आयी थीं।

बिजली की झम्म-झम्माती तड़क में दूर से आती डाची को हीरा सांसी ने अपनी नज़र में कैद कर लिया। कुल्लूवाल से इधर आती डाची पर माल-मत्ता! हाथों की तलियाँ फड़कने लगीं।

अकमे खलीफा ने इस हवामार डाची को राह पर क्यों डाला? कौन न खसोट लेगा राह में!

हीरा सांसी ने जाने-पहचाने कण्डे से वेरियों की ओर कदम बढ़ाया।

चुड़ैलवाले कूएँ के पास धट्टाले का ऊँचा ढेर देखकर हीरा के पाँव रुके। लम्बा साँस खींचा। मनुक्ख की गन्ध। कान लगाया। गीले चारे की पण्ड में हल्की-सी सरसराहट। कदम उठा सांसी ने ढेर में से हाड़-मांस की पिण्डली ऐसे पकड़ ली ज्यों कोड़-किरली उठायी हो।

"ओए कौन! माँ का यार, किस पर आँख रखने को यह धन्ध-फन्द!"

"ब-निगाहे करम जी, मैं रला खोजी!"

हीरा सांसी ने पिण्डली खींच देह-की-देह बाहर निकाल ली।

"ओए, दरिया सामने और मूत्र में से मछलियाँ! दौड़ने की कोशिश की तो टोटे करके भँवर में डाल दूँगा।"

"मुझे ज़िन्दा रहना है हीरा उस्ताद! तुम्हारा हाथ-बँधा गुलाम हूँ।"

"ओ रलेया बता तेरे माँ के खसम पुलसिये आज किस पिण्ड में अटके हैं?"

"दादू खोजी की खबर से कोटली लोहारां!"

"ओए, सच्चो-सच्च! जो बोला झूठ तो…"

"सौंह अल्लाह की! पुलसियों को खबर ऐसी कि आपका रुख भागोवाल!"

हीरे ने गर्दन पकड़ ली—"पुत्तरा, गिच्ची घुट्ट छोड़ूँगा। किसी पापी पुलसिये ने कल तक मेरे आसपास अपना बोथड़ा निकाला तो तू गया!"

"बराबर बादशाहो!"

हीरे ने रले को कसकर बाँह से लपेटा कि एकाएक बिजली की चमकार से रले खोजी की पोशाक उजागर हो गयी। मुहान्दरा पुलिस के सजावल खाँ का, नाम रले खोजी का, काम चोरों की गारद का।

साँप की-सी तेज़ी से हीरा सांसी ने सजावल खाँ की गर्दन हाथों से दबायी और पुलसिया सँभले कि सँभले, पाँव उखड़ गये और काठी भुस्स बनकर नीचे ढह गयी।

"लो जी सजावलखाँ जी, हमने तो अपनी मेहनत कार-कमाई कर डाली। व आप दरियाओं के सन्नाटों मे मौज मारो।"

पत्तन से उतर हीरा साँसी शरीहवाले कूँए पर पहुँचा तो अपनी आँखों के गुगनू कानो मे आ लगे। दूर कही कुत्ता भौकता था। हीरा झट पाँव समेट कोंक-णयों के पीछे हो गया। एक कौड़ी ही गिनी थी कि विना सवार के डाची पास से नेकल गयी। कही सजावलखाँ की तोपनी तो नही!

त्रिखे कदम उठा डाची को जा पकड़ा। माल से भरी-लदी। नकेल पकड़ सवारी ले ली और डाची का मुँह पत्तन की ओर मोड दिया।

किल्लर के बीचोबीच गहनटठान मे घुस हीरा साँसी ने डाची के गले की टल्ली बजायी। कुण्डी खुलने का खड़का हुआ। किसी ने बाहर झाँक तगड़ी आवाज़ में कहा, "कौन है पोरसवान इस अन्धड-पानी मे!"

"अलिया, उस्ताद शांसमल का सेवक!"

खेस से मुँह-सिर लपेट अलिया पास आया। आँखो की सुरमई जोत से हीरा साँसी को पहचाना और 'हला' कर बेडी की ओर बढ़ गया।

भार तोलकर एक भारी क़दम ठहरा तो साँसी की समझ-बूझ ने मुण्डी उठायी।

डाची से कूद ठण्डे गले से ललकारा—"किन सोचों मे हो अलिया उस्ताद! सवार और सवारी दोनों पार उतरेंगे। घाटे का सौदा नही। रब्ब के फ़जल से गपफें है गपफें!"

अलिये ने जोखिम की भिनक पड़ते ही गले को थूक अन्दर निगल ली और सहजे से कहा, "अँधेरों के सरदार हो, जो कहो मानेंगे!"

डाची के क़दम रखते ही नाव एक ओर डोल गयी। अलिये ने माल से भरी छट्ट उतारी। नीचे रख वजन सही किया तो हीरा साँसी मल्लाह के सामने बैठ गया।

"लो जी, दरियाओ पर जिन्दगानी के पीर ख्वाजा खिजर की हकूमतें। नाम लो दरिया पीर का और बेडी को भँवरो से पार उतार लो। ख्वाजा खिजर सब भली करेंगे!"

ऐन धार के बीच पहुँच अलिये ने मुँह खोला—"ऐसे कामो में भी ऊपरवाले की ही बरकतें। साँसी उस्ताद, पहले पहर मिह मोलाधार बरसा। अब छोटी-मोटी कन-मन। पार पहुँचते वह भी थम जायेगी।"

हीरा साँसी दरिया को नही, मल्लाह को नापता रहा। फिर पूछा, "अलिये, माल कि पत्ते?"

"उस्ताद, आपां माल का क्या करेंगे!"

"चलो, तुम्हे जो चाहिए वही पहुँच जायेगा।"

"क्यों नहीं, वैरों से हिसाब-किताब साफ़ करने का अक़ीदा तो क़दीम से चला ही आ रहा है!"

नाव किनारे जा लगी। डाची उतरी। सामान लदा और हीरा सांसी उछल-कर डाची पर जा बैठा।

लगे रहें खोजी और करते रहें शनाख़्त।

अलिया ज़ालिम सांसी की गुप्त भभकी समझ गया।

"सांसी उस्ताद, आपां ने तो न देखी डाची, न डाची-सवार।"

अलिये ने खेस की ताज़ी बुक्कल मार किश्ती मोड़ ली और अंधेरे में ओझल होते हीरा सांसी को देख सिर हिलाया और जी हल्का करने को बुड़बुड़ाया—'ये बदकारियां या फट्टे या सट्टे या भट्टे!'

बरसती-गरजती रात में कुल्लूवालवाले सावन शाह के यहां सन्न लगी कि डाका पड़ा—यह जाने पुलिस या जाने खोजी! हीरा सांसी तो जिन पैरों घर से निकला था, उन्हीं पैरों परत आया।

बाहर से कुण्डी खोली और आंगन में पहुंच अन्दर से चढ़ा ली।

अंधेरे-ही-अंधेरे में घर-भर को सूंघा और कोठरी में जा जीवां को भींच लिया।

"छोड़ दे, छोड़ दे रे पर्वता!"

हीरा ने छातियों को छुआ—"ये कांगरेर!"

जीवां ने बांहों का गुजल मार लिया—"हट रे, हट जा लुटेरू!"

हीरा ने हथेलियां छाती तले दाब दीं—"तेरी बरेती!"

"दुर्रे···दुर्रे···!" जीवां ने जैसे कुत्ते को फटकारा-दुत्कारा हो।

हीरा ने ढांप लिया—"यह चोह मेरी! चल री बुढ़नी, सिम जा। सिम-सिम···"

जीवां ने बांहों पर सिर टेक दिया—"ओ भरतार, नीचे खोब्बा है खोब्बा!"

हीरा ने छेड़ा—"चल री चल, उतार मेरा ऋण!"

जीवां खिड़-खिड हंसने लगी—"रोकड़ में कि जिन्सी में!"

"जो तू चाहे।"

रतियारी वाहिनी में गोते मार हीरा सांसी थमा तो जीवां ने पूछा, "क्यों रे,

जैसे चढ़ गया !"

"हाँ, काल करिच्छा उड़ गया।

फिस्सी मार बीच सरोवर।

खैर होनम दूर वलाई।"

एकाएक जीवाँ ने कान दिया और हीरा को ठेलकर कहा, "फुट जा पापिया !"

दोनों साँस रोके ऐसे पड़े रहे जैसे अधमोये हों।

कोई कोठे की मुंडेर से लमककर नीचे आया। कोठरी की खुली कपाटी से झाँका और वह जा और वह जा···

हीरा साँसी और जीवाँ मंजी पर पसरे रहे।

धूपें घर-गाँव-खेत-खलियान में चमकने लगीं तो हीरा साँसी उठ आँगन में आया। दरवाज़े पर लटकती कुण्डी देखी तो सब समझ गया।

जादूमन !

कुण्डी उतार साँसी जादूमन कह गया कि पुलिस ताक मे है। बेखटके न रह।

हीरा साँसी दिल-ही-दिल हँसा। कपडा-लीड़ा तवी पार। गहना-छल्ला गुजरात सर्राफे। बर्तन-भाण्डे सन्दलवार। डाची जा बँधी वद्दों की। रहे सजावल खाँ, वह सो गये गहरे।

हीरा ने जीवाँ के कान में कुछ बुड़बुड़ाया तो जीवाँ ने चारपाई की नंगी चौखट उठा घर के सामने पटक दी और आसपास के पडोसियों को सुनाकर कहा, "अरे बेपैन्दे के बर्तना, इस बरखा-मेंह मे मैं भुजे सोती-मरती हूँ। एक मंजी तो बना दे नकरमे।"

हीरा का हमसाया बाहर निकल आया—"कुत्ती सुबह-सवेरे भौंकने लगी। अरे चारपाई को सडागा बाँध, पिड़ियाँ डाल तो रात तक निबड जायेगी।"

जीवाँ फिटकें भेजने लगी—"अरे लोगो, यह चिचड़ा भरतार मुझे नोच-नोच खाये कि कोई काम करके दिखाये !"

हीरा ने धमकाया—"चुप। उल्लू के दीदोंवाली। गोबर में भूसी डाल और लिपाई कर ले अपने बोथड़े की !"

"जा रे जा ओ जांगलू !"

पड़ोस से जात्री और मुन्दरा साँसी बाहर निकल आये और धमकाकर कहा, "ओ जीवाँ, सपियादी लगाम दे ज़बान को। गबरुये ने कुट्ट-मार की तो हमे न कहना !"

जीवाँ चिल्लाने-करलाने लगी—"चुप ओए मेरे जांगलू के यारो। मेरा लम-तीर न कुछ कमाये, न लाये। सौ बार लानत-मलामत भेजूंगी।"

हीरा ने पास आ जीवाँ की गुत्तड़ी खींच दी—"अरी मेंड़कुट्टन, मेरी मूंछ

पर हाथ डालती है ! ऐसा दण्ड दूंगा—"

"जा ओ लवडघोधी रोगटिया, धो आ मुंह माँ के मूत मे !

हीरा ने ऐसे घुसुन्न मारे कि आन-की-आन मे पिण्ड इकट्

आसपास के सगोती आ ढुके।

"चुप री औतरी, मुंह कन्ने लगाम दे !"

"काहे रे ! मेरे दीदों ने देखे उच्ची नक्कावाले टुल्ले !"

सुनते ही साँसियों की गोठ को साँप सूंघ गया।

हीरा ने झट चेतावनी ली और जीवाँ के बाल पकड़ घर

लगा—"कुत्तेखानी, मुंह पर लगा दूंगा माफरा !"

जीवाँ ने झुझका दिया—"वैरिया माधो, फुट्ट जा !"

हीरा ने कोठे की पैड़ियों की ओर दलाँग मारी ही कि पुलि

लिया।

जीवाँ ने हार न मानी। हाथ हिला-हिला चिल्लाने लगी-

रे ! कौन मेरे अँगना तेरा जातमड़ा खेलता है बेऔलादिये !"

जाम्री ने मुंह पर हाथ रखा—"चुप !"

"पल्ले बाँध ले रे खसमा मेरे ! फत्ते शहीद की माड़ी बैठ

न बुलाऊँ तो मेरा नाम जीवाँ नहीं !"

हीरा साँसी ने सिपाही के सिर पर से थूक दिया—"काम

की सौंह लट्टबौरिये, जो मैं लौट के तेरी झज्झरी सूंघूं !"

"शाह साहिब, अगर मलवाने को रसूलवाही ही देनी है

मलवाने से जादू लिखवा ले और क्यों न फिर कानो पर

शाहजी हँसे—"बात तो तुम्हारी गलत नहीं नजीवेया, पर

दस्तूरी तो दुनिया में कायम-सलामत है ही न !"

"शाहजी, माहतड-साथ बन्दे की तो बात यह कि सिराहन्दी

सोये तो, पीठ-कण्ड बीच में ही टिकेगी। पर उच्चतवालो की

सलामती है।"

"नहीं नजीवे, बात ऐसी नहीं। नेक असल और बद असल व

हर किसी को रहना चाहिए। अगर रहें तो धरम-घड़ी बराबर

सही करती जाती है।"

'काशीशाह, आप तो हुए सुच्चे सच्चियार और बातें आपकी आलिमाना! बाक़ी खलकत तो कभी हेठ कभी ऊपर।"

बड़े शाहजी ने गहरी नजर से नजीबे को देखा और सिर हिलाकर कहा, "नजीबे, कुएँ खोदनेवाले टोब्बे देखे हैं न! पहचान है उनकी काही और कस्सी!"

नजीबे का मुँह तो मुँह दांत भी हँसने लगे—"शाहजी, तारीफें आपकी। कहनेवाले मुबालगा नहीं करते कि शाह फ़लक से पाताल पहुँचता है।"

"नजीबेया, मुज की माल देखी है न! वही लाती है खींच-खींच पानी झल्लर का।"

"सदके बादशाहो, सदके। मुँह पर बात अभी आयी नहीं और आपने सही कर ली। शाहजी, बात यह है कि चक्क पड़ना अभी बाकी है और पैसों का टोटा हो गया है। हो जाये कुछ मेहरबानी आपकी तो कुएँ का रूप-रंग बने।"

"नजीबेया, क्या कुएँ की संभाली चलेगी हबीबे के साथ!"

"शाहजी, हबीबे के साथ तो चल भी निकले एक दफा, पर साझीदार तो खैरों से तीन हो गये!"

पांव के भार बैठा नजीबा जमीन पर लकीरें निकालने लगा—"चूतड़गढ-वाली बिमारी ही समझो। एक की तौफ़ीक न जुड़ती थी, दूजे की रह न आती थी। तीनो ने समेटा-समेटी कर नांवा जमा किया और कुएँ पर लगाने की सोची।"

काशीशाह चौकन्ने हो इस लम्बी-बढ़ी आसामी को देखते रहे।

शाहजी ने बात आगे ठेली—"नजीब बादशाह, तुम्हारा पैंतरा समझ नहीं आया। नांवा पल्ले न हो और बन्दा रह-रह तहमद ढीला करता फिरे!"

नजीबे ने कानों को हाथ लगा लिया—"तौबा करो शाह साहिब, अपना वसीला ऐसा कहाँ! हाँ, यह कहो कि जट्ट बूट की बुद्ध मोटी तो इन्कार नहीं। मुण्ड खू का कुछ ऐसा बँधा कि आये दिन पानी पर तकरार हो कक्कू खाँ से। एक दिन हम दोनों भाइयों ने सोचा क्यों न रोज-रोज की खलासी मुका छोड़ें!

"मुँह-अँधेरे कक्कू खाँ खड़ा था वत्तर लगाने अपने खेत की मुँडेर पर। गँडासा ले मैंने उधर कदम भी उठाया, पर रब्ब जाने कैसे हुआ, क्या हुआ, मैं इरादे से थिड़क गया।

"हबीबे के पास पहुँचा तो पूछा, 'क्यों, कर दिया चलता?'

"'न! कदम ही रुक गया तो बता भ्रावा, हाथ कैसे उठता!'

"सुनते ही हबीबा उठ खड़ा हुआ। सिर पर मन्दासा बांधा और हाथ बढ़ा-कर कहा, "ला, इधर कर टोका।'

"हबीबे ने दो-चार कदम ही उठाये होंगे कि उल्टे पैर परत आया। दुचित्ता-सा बोला, 'नजीबे, कक्कू खां की बड़ी हुई लगती है। कदम मैंने भी उठाये, पर दूध की अटक सामने आ खड़ी हुई। मां से सुना करते थे कि इसे महीने का छोड़ खाला खुदा को प्यारी हो गयी थी। बारी-बारी हम दोनों को मां ही दूध पिलाये। नजीबे, हाथ उठता भी तो कैसे! क़ुदरत का फ़ैसला समझो। दूध ज़ोर मार गया लहू पर!'

"शाहजी, हम भाइयों ने उसी दिन सोच लिया कि मिल-जुलकर कोई सूरत-वसीला निकाल लें।"

काशीशाह ने शाबाशी दी—"बहुत चंगा नजीबेया। रब्ब ने सुझायी और तुमने पकड़ी। अमीरू अपना पहले ही कालेपानियों पहुंचा हुआ है!"

"कोई खबर अत्तर अमीरे की! पांच-छ: साल तो निकल गये!"

"हां जी। वहां भी उसकी पहलवानी लम्बड़दारी।"

"चलो बना रहे! नजीबे, कालेपानियों के हवा-पानी नाकस। जहरीले मच्छर ऐसे कि बन्दे का रत्त-रस चूस डालें। सज़ा पूरी होने तक बन्दा बक़्त टपा जाये तो बस ढांचा-ही-ढांचा रह जाता है।"

"शाहजी, सुनने में आया है कि छम्बवालों और डेरा जट्टकी की अच्छी चौकड़ी जमी हुई है।"

"अपनी फूफी का जंवाई, वही जी कोटली लोहारोंवाला वजीरा, उसी ने किसी के हाथ रुक्का भेजा था। लिखा था कि अल्लाह के फ़ज़ल से वहां भी खड़े का ही खालसा है। मनाही है पर करनेवालों ने वहां भी गिन्नियां जमा कर रखी हैं। देखें अमीरा किन रंगों में!"

"नजीबेया, तुम सब भाइयों में वह बहादुर और जवांमर्द!"

"सच्च है शाहजी, छाती यह उसकी पीढ़ा पहाड़ और गुर्दा मोजवार! जो आ गयी दिल में करने की तो फिर क्या! यह आर और वह पार!"

शाहजी ने ऐसे बहादुर का इस्तिक़बाल करना ज़रूरी समझा—"बेशक अमीरा, अपना दिलदार और बहादुर बिरादरी का फ़रजन्द है। सज़ा भुगता घरों को लौटे!"

"आपका मुंह मुबारक शाहजी! सुनने में आया है सरकार ने कालेपानीवालों के लिए नया क़ानून निकाला है। अगर बारह-तेरह सौ नम्बर गलाना जमा कर ले तो संगीन जुर्मवालों को बाक़ायदा रियायत दी जायेगी।"

काशीशाह हिसाब लगाने लगे—"रोज़ के दो-तीन नम्बर भी हों तो खैर सल्लाह लौटने का दिन यह रहा!"

नजीबा अपनी गुम्भार काठी के बावजूद छोटा-सा बलूंगड़ा लगने लगा—"शाहजी, यह तो निलंदड़ी ही बात हुई। बन्दा मदरसे न बैठा तो कालेपानियों

जा पहुँचा। जी, वह खारियाँ के कालेपानीवालों का पोत्तरा बड़ी टंकारों से घरों को लौटा है। सीधा पिण्ड नहीं आया। राह में अमृतसर रुक गया। सेहत बना पिण्ड पहुँचा तो देखनेवाले अश-अश कर उठे !"

शाहजी सिर हिलाते रहे—"इस भोले जट्ट से क्या कहे कि उम्र को लगा कालेपानियों का दाहा निरा घुन है।"

काशीशाह ने बड़े भाई से पूछा—"खारियावालों का टब्बर कालेपानीवाला कब से कहलाने लगा ?"

"यह मशहूर किस्सा हो गुजरा है। इन लड़कों का पड़दादा नजर-मुहम्मद वल्द दिल मुहम्मद महाराजा के वक्तों धुर कोट कमालिया से लहन्दे उतरा था। बड़ा धूमी-धाकड़ बन्दा। बस जी, इलाके में तूती बोल गयी। रणजीतसिंह महाराजा ने कारनामे देखे-सुने तो टुकड़ी का सरदार बना दिया। फौजों में इसने बड़े-बड़े टाकरे किये। फिरंगी हकूमत जब पंजाब में जमी तो चुन-चुन हमारे बहादुर दबोचे। नज़र मुहम्मद को भी डाकाज़नी और कत्ल में फँसाकर काले पानी भेज दिया। उसी का टब्बर है यह कालेपानीवाला।"

नजीबा दिप्प-दिप्प करने लगा—"वाह, कोई बात हुई न !"

"नजर मुहम्मद और नूरपुरवाले सरवरशाह ने अण्डमान जेल में पंजाबी कैदियों की मदद से अंग्रेज दारोगा को मारने की साजिश कर डाली। बस मशहूरी हो गयी।"

नजीबा हँसने लगा—"शाहजी, यह भी अपने गुल्ली-डण्डे के टुल्लवाला हिसाब है। या मार लो या मरवा दो। पिद जाओ, नहीं तो पिदवा लो अपने को। सीधा रस्ता तो एक है ही कि सरकार के जँवाई बने रहो और रोटियाँ तोड़ते रहो। बाकी तो जी, ज़ोर-जबर हो तो वहाँ भी कुछ-न-कुछ चोज चुगता ही रहता है बन्दा !"

"नजीबे, घुटनों-घुटनों दिन चढ गया ! ऊपर जाकर लस्सी-पानी पी आ !"

नजीबा उठ खड़ा हुआ—"असल काम तो बातों में ही रह गया। शाहजी, जो चल जाये कलम आपकी तो खू वाला काम सर जाये।"

छोटे शाह ने दिलासा दिया—"हबीबे को ले आना साथ, त्रिकालाँ पड़े !"

बड़े शाह बोले—"ध्यान से सुन मेरी बात नजीबे ! एक खू में तीन संभालियाँ अच्छी नहीं। कर भी लो तो पुगेंगी नहीं।"

"शाहजी, यह झमेला निबड़े कैसे ! हाथ में धेला-अधेला कुछ नहीं ! जो था वह लग गया।"

"नजीबे, जहाँ सौ वहाँ सवा सौ। कल तड़के आ के ले जाना !"

"हाजर तौफ़ीक हो शाह साहिब, रब्ब बहुत दे !"

सुनकर नजीबे के पाँव न पड़ते थे जमीन पर।

हबीबे को जाकर बताया तो उसने सवानी को आवाज़ दे मारी—"घी लगा के दुप्पड़ पका चंगी-सी और लस्सी में शक्कर बुरक ला।"

"भ्राजी, हमारे हक में तो तीन भाईवाल ही अच्छे थे। लौटानेवाले तो बनते।"

शाहजी के चेहरे पर मुस्कराहट फैल गयी। बड़े भाईवाली सयानफ बरकरार रखी—"काशीराम, यह रक़म कभी लौटेगी?"

उँगलियों की पोरों पर शाहजी कुछ हिसाब-किताब लगाते रहे और हँसकर कहा, "ऐसे टब्बर से ज़मीन-ज़िवि लौट सकती है, कर्ज नहीं!"

"भ्राजी, जट्ट किसान अब ज़मीन काहे को छोड़ने लगे! फिर कानून अब इनके साथ!"

"नहीं छोड़ते। छोड़ सकते ही नहीं। पर भगतजी, छुड़वाने-हथियाने के लिए तरकीबें लड़ानी पड़ती हैं।"

काशीशाह की पेशानी पर एक हल्का-सा तेवर उभर आया—"नजीबे-हबीबे का तो काम बन गया, पर कक्कूख़ाँ क्या करेगा! क्या इन भाइयों की दीदा-बोसी ही करता रहेगा!"

"नहीं। वह हाथ-पैर मारेगा तो उसे भी देख लेंगे!"

•

"फ़ौजियो मुबारकें। मुबारकें हों, घर आने की मुबारकें। बादशाहो, पूरे तीन साल बाद दरस दे रहे हो। अपने लश्करों में दिलजोइयाँ! धन्य हो, धन्य हो प्यारेयो!"

"जहाँदादजी, अँखियाँ थक गयी राहें देखते। गोरों के साथ इतनी रास्ती हो गयी कि घरों को लौटने को मन ही न करे!"

"अब क्या क़ैफ़ियत दें आपको चाचा मुहम्मदीन! इतना समझ लो कि जिस दिन छुट्टी मंजूर हुई उसी दिन टपोसी मार ली।"

जहाँदादजी ने अपने साथी को मजलिस में पेश किया—

"बादशाहो, यह हैं अपने अजीज दोस्त साहिब खाँ। अपने ४० पंजाबी पल्टन के ही हैं। यह समझ लो कि हम सालों-साल इकट्ठे रहे हैं। हमारी भरती भी एक ही दिन एक ही जगह की। अर्ज यह है कि दोस्ती-यारी निभानी कोई सीधे

इन शाहपुरियों से !"

कर्मइलाही मज़बूत कद-काठी देखकर खुश हुए—

"बादशाहो, दोस्ती-यारियों की बरक़तें बड़ी, पर पुत्तरजो ! शाहपुरी पग आपकी ज़रा आँखों में खटकती है !"

साहिब खाँ ने झट झुककर सलाम किया—

"जनाब हुक्म करें तो उतारकर क़दमों मे न रख दें !"

शाहजी हँसने लगे—

"बस जी, नज़र उतर गयी। चाचा कर्मइलाही, आपकी सयानफ के क्या कहने। जोड़ी भी तो यारों की खैरों से ऐसी कि देख-देख भूख उतरे।"

मौलादादजी छोटे भाई और उसके दोस्त की तारीफें सुन-सुन खुश हुए !

"जी सदके, जी सदके !"

गण्डासिंह ने मशकरी की—

"क्यो जी बन्दूकोंवालेयो, खैरों से इतनी देरों बाद आये हो, अपना घर-पिण्ड तो पहचान लिया है न !"

जहाँदादजी बड़ी गर्मजोशी से हँसे—

"सज्जनो, आप ३३ पंजाब और हम ४० ! ज्यादा फ़रक तो न हुआ ! आप तो जानते हैं, फौजी बन्दे दुनिया-जहान घूमने निकल जायें पर दिल अपना पोटली में बाँधकर अपने पिण्ड के पुराने रूख पर लटका जाते हैं !"

"सुभान अल्लाह ! वाह-वाह अत्य, क्या बात की है ! दिल खुश कर डाला है !"

शाहजी ने भी जहाँदाद खाँ पर शंसा बरसा दी—

"जो कोई ग्राँ का प्यारा अपना चित्त-मन लटका जाये पेड की डाल पर तो सरदी-गरमी पिण्डवाले भी अपने गैर-हाज़िर सज्जन-प्यारों को याद करते रहते है। क्यों फतेह अलीजी, झूठ तो नहीं न !"

"बराबरी सही। जिस तरह अपने सुच्चे कपड़ों को धूप-हवा लगवायी जाती है न, बस वैसी ही समझ लो अपने मित्र-प्यारो की यादें !"

ताया मैंयासिंह को सोहणी सूझ गयी—

"ज़रा मेरी भी सुन लो। इस धरती का अन्न-पानी मुँह लगानेवाला दिल सुच्चे सोने से आला और वढ़िया ! धूप-हवाएँ लगवाओ न लगवाओ, यहाँ किसी दिल को जंग-जगाल लगने का काम नहीं। खुला खुलासा।"

दोनों दोस्त सुनकर ऐसे खुश हुए कि उठकर मैंयासिंह को फ़ौजी सलाम मार दी।

ताया मैंयासिंह का दिल नरमा कपाह हो गया।

"सौ फ़सलों की खट्टी कमाई खाओ। मैंयासिंह रोज़ अरदासा करेगा वाहगुरु

के दरबार में !"

शाहपुरिया साहिब खाँ बड़ा नटखौना बना छोटा-छोटा हँसता रहा।

कृपाराम आये तो अपने साथ कोकला मिरासी ले आये।

"शाहजी, अपने फौजी सूरमाओं की आमद में पहले तो हो जाये गाना…"

गण्डासिंह धड़ापी मार मंजी से उठे और कृपाराम को गर्दन से पकड़ लिया—

"ओये मेरे वैरिया, मैं पिण्ड परता तो क्यों न हाज़र किया तूने मिराशी मेरा जस गाने को ! बोल, जल्दी बोल !"

मंजियों पर बड़ा हास्सा पड़ा।

कृपाराम को कुछ सूझ गया। हाथ जोड़कर अर्ज़ की—

"फ़ौज बहादुर, आपकी आमद पर कोठे से हवा मे गोलियाँ दागी गयी थी जो सारे पिण्ड ने सुनी थी।"

"सुन लो लोको, सुन लो इस खच्चरे की बातें। बन्दूक मेरी, गोली मेरी और यारा, मण्डल मे चलनेवाली हवा ही खाली तेरी थी न !"

कृपाराम ने गुनहगारी मे हाथ जोड़ दिये—

"माफी खता की, माफी ! झूठ क्यों बोलूं सिंह बहादुर, उस दिन तो निरी दिल की खुशी ही मेरी थी।"

"बस ओ बस, अब इससे बडा सच्च न बोलना।"

शाहजी ने साहिब खाँ की ओर देखा—

"बादशाहो, कोकले को इजाजत दें तो गाना शुरू करें !"

साहिब खाँ ने भाड़ा-सा सिर हिलाया—

"जी !"

कृपाराम ने कोकले को आवाज़ दी—

"चल ओ कोकले, शुरू हो जा ! कोई फडकता-खड़कता सुना वरदीवालो को !"

"जो हुक्म बादशाहो !

"पिण्ड झुके चौकीदार अग्गे
चौकीदार झुके लम्बडदार अग्गे
लम्बडदार झुके अहलकार अग्गे
अहलकार झुके सरकार अग्गे
सरकार झुके तलवार अग्गे
तलवार झुके सिपहसालार अग्गे
सिपहसालार झुके फ़तेह तेग अग्गे
फतेह तेग झुके बादशाह अग्गे

वादशाह् भुके सच्चे पातशाह् अग्गे !"

बैठक भूम उठी—

"वाह् ओ वाह् पुत्तर कोकले ! यह् बन्द कब जोडा !"

"शहंशाहो, आज ही। सोचा, गोरा फौजों के सिपह्सालार घरों को आये है, तैयारी जरा तगडी ही करें।"

कोकले ने सलाम किया, भोली फैलायी। बाग्गे ने शाह्जी के इशारे पर गुड़ की भेली दी। जहाँदादखाँ जी और साहिबखाँ जी ने एक-एक टका डाल दिया।

"शाह् सलामत। विलायती फौजों के मालिक! रब्ब-रसूल की मेह्रों से बाजों-गाजों के साथ घरों को लौटते रहें अपने सूरमें!"

जहाँदादखाँ जी ने तारीफ़ की—

"वडा रौबदाबवाला तुक्कड़ था। मिरास अपने पिण्ड की अच्छी हुशियार हो गयी है।"

गुरुदित्तसिंह हँसे—

"मैंने कहा छावनी साहिब, नेग-दस्तूरी तो कोकले की बनती ही थी, बाकी यह् कवित्त मैंने पार के साल ननकाना साहिब गुरुद्वारे में सुना था।"

काशीशाह् ने ढीला किया—

"बोल जरूर सुने होगे। मुझसे पूछो तो कोकले ने चंगा सोज से गाया है। जो सुर-ही-सुर में पातशाह् और बादशाह् की तौफीक अलग़-अलहदा कर दे, उसमे कुछ तालीम तो है न!"

मौलादादजी को बात बड़ी पसन्द आयी—

"वाह्-वाह्, क्यों नही!"

गुरुदित्तसिंह और मौलादाद भी भरती दफ्तर का मुँह्-माथा देख आये थे, पर डाक्टरी तक पहुँचते-पहुँचते फौज के ख्वाब भू-भस्स!

अरमान से कहा—

"जहाँदादजी, आप ही कोई गर्मागर्म सुनाओ। आप्पाँ भी पुलिस-फौज में भरती हो जाते तो इसी आबरू-इज्जत से घरो को आते।"

कृपाराम ने समझाया—

"खालसाजी, इतना अरमान और भरम इस उम्र में शोभा नहीं देता। खैरों से काका पृथीसिंह् को पेटी-पग्ग मिली हुई है।"

जहाँदादजी ने पूछा—

"काका अपना किस कम्पनी पलटन में है!"

"वही जी ३२ पंजाब की लवाणा आजकल जेहलम छावनी में पड़ी है। जहाँदादजी, आपका भी डेरा जट्ट रसाला ही है न!"

"न जी! अपनी रजमन्ट ४० पंजाबी। ४० पंजाबी मशहूर मुल्की पलटन है।

कोई जात-जिरगा नहीं जो इसमें न हो। इसमें जट्ट, राजपूत, बुनेरवाल, स्वाती, गिलजई, दुर्रानी, वजीरी, भट्टानी, यहाँ तक कि इसमें गोरखे तक शामिल हैं।"

काशीशाह ने पूछा—

"अखबार कहता है कि हकूमत कबाइलियों को काबू करने की जी-तोड़ कोशिश कर रही है।"

"जी। सड़कें-छावनियाँ कई बिछायी-सजायी गयीं पर जो, ब्लोच कबाइली बाज नहीं आते। बड़े जालिम। साहिब खाँ, याद है न जब महसूदियों ने जोब गारद पर गोली चला दी थी!"

"गालिबन यह उसी साल की बात है जब मियाँ पविन्दों का काफिला गोमल से होकर खुरासान की ओर बढ़ रहा था। वैसाख का महीना था। कारवाँ सुस्ताने को रुका। ऊँट खोल दिये गये। आग जलाकर देगें चढ़ाने की तैयारी हो रही थी कि जल्ली खेल वजीरियों ने हल्ला बोल दिया। वजीरी ७० तो ऊँट ले गये और जो मुकाबले को बढ़ा फिस्स-चित्त।"

काशीशाह को पैसा अखबारवाली खबर याद आ गयी—

"यह तभी की बात तो नहीं जब महसूदों को एक लाख जुरमाना लगाया था सरकार ने!"

"जी तभी।"

गुरुदित्तसिंह को कुछ ख्याल आ गया—

"बादशाहो, फौज में आपस की दुश्मनियों के वारे-न्यारे भी होते रहते होंगे?"

"बराबर। आप जानो यह रोग तो बन्दे के साथ लगा ही हुआ है न। गये साल गुजराँवाले के भट्टी नायक को विरक लैन्सनायक ने गोली मार दी थी।"

"विरको और भट्टियों की पुरानी दुश्मनी! दोनों के मुण्ड बीकानेर और भाटनेर के ही हैं।"

"शाहजी, विरकों की सुनी हुई है न आपने! रेलगड्डी उन दिनों नयी-नयी चली थी। घरवाली ने देखा खसम की पगड़ियाँ फट-फटा गयी हैं। बन्दा रोटी खाने बैठा तो कहा—

"'साफों का जोड़-जुगत कर डालो। दोनों फट गये हैं।'

"विरक बच्चा थाली छोड़कर उठ बैठा—

"'ठहर मैं अभी आया।' उधर कोई गड्डी टेशन पर खड़ी थी। हाथ में खुट्टीवाला बाँस लेकर विरक दूर से ही अन्दर डाले और मुसाफिरों की पगड़ियाँ उतार अगले डिब्बे की ओर बढ़ता जाये। जितने में नंगे सिरोंवाले मुड़कर देखें, बाँस पर छ-आठ पगड़ियाँ हो गयी थीं। उधर शोर पड़ा, इधर विरक परत के घर वाली के आगे जा बैठा।

"घरवाली भुरने लगी—'ओ जनेया, रोटी छोड़कर उठ बैठा। कौन-सा घड़ी-महूर्त टला जाता था!'

"विरक खीझ गया—'ओ चुप। अकल तेरी गुत्त के पीछे। गड्डी खड़ी थी टेशन पर, बन्दा काम करके सुरख़रू हुआ। दूसरी गड्डी लँघेगी शाम को, तब तक आँखों के डेले घुमाता रहूँगा कि अब आयी—वह आयी—लो आ गयी!'"

बैठक में बड़ा हास्सा पड़ा।

"बादशाहो, साफ़े-पग्ग लाने की तरकीब देखो ज़रा।"

"क्यों नहीं जी, विरक बच्चे बड़े कलाबाज़। इन्हीं पर कहावत है—पुत्तरजी, चोरी न करसो तो खासो क्या!"

मुंशी इल्मदीन पूछ बैठे—"क्यों जी, क्या पलटनों में भी चोरी-चकारी होती रहती है?"

"होती है। डेरा इस्माइलख़ाँ, गाज़ीखाँ, कोयटा चमन की तरफ़ पिस्तौल की चोरी काफ़ी। जी में आ जाये तो उठा ली। ४० पंजाब जब कोयटा चमन तैनात थी तो हर रोज़ एक हादसा।"

साहिब खाँ बोले—"इन कामों में ब्लोच का दिमाग बड़ा तेज़। जब तक बदला न ले ले, कण्डे की तरह धुखता-सुलगता रहता है।"

जहाँदाद खाँ ने याद दिलाया—

"ताबूतवाला किस्सा हो जाये साहिब खाँ।"

"बादशाहो, उन दिनों ४० पंजाब डटी हुई थी चमन। एक ब्लोच जवान ने अरज़ी दी कि रिश्तेदारी में मौत हो गयी है। लाश दफनाने के लिए उसे तरीह जाना होगा।

"दरख्वास्त मंजूर हो गयी। होनी भी थी। गोरे अफसर अपने जवानों से अच्छी सलूकदारी रखते हैं। इत्तफ़ाक ऐसा हुआ कि ब्लोच जब ऊँट पर ताबूत रखवा ही रहा था, कमान-कप्तान उधर से निकल पड़ा। उसे कुछ शक हुआ। हुक्म दिया—'खोलना मांगता ताबूत, देखना मांगता?'

"ब्लोच नज़दीक आया। हौली मगर सख्त आवाज़ में कहा—'हुक्म वापिस कर लो साहिब। ताबूत की इज्ज़त में हम जान दे देगा या ले लेगा।'

"कप्तान ने ब्लोच को गेट-पास देने का हुक्म कर दिया। शाम को बन्दूकों की गिनती हुई। एक कम।

"ब्लोच छुट्टी से आया। बन्दूक कन्धे पर थी।

"कप्तान के आगे पेशी हुई तो ब्लोच मुकरा नहीं। कहा—'साहब, पुराना दुश्मनी था। हमारे वालिद के क़ातिल को मारना जरूरी था। अब साहब बहादुर जो सज़ा देगा वह मंजूर।'"

सुनकर गुरुदित्तसिंह का जीव उबलने लगा। काका पृथीसिंह इस बार छुट्टी

पर आये तो कुछ बात बने। टाँडेवाले कायासिंह की सलामी लाज़मी है। भरी बिरादरी में अपने टब्बर की जई-सई फेरकर बैठा है।

गण्डासिंह बड़ी गहरी निगाह से गुरुदित्तसिंह के फूलते नथुने देखते रहे। फिर तरकीब से उसे चौकस किया—"बदला लेना तो राह-रस्म हुआ उनके लिए। ब्लोचों की खुन्दक बड़ी डाढी। सुनो। एक किसी नवीशाह को बन्नू के अत्तरसिंह ने गुस्से में ज़ख्मी कर दिया। बस ज़ख़्म के साथ-साथ ब्लोच का कलेजा धुखता रहा। ठीक हुआ तो पहला काम यह किया कि अत्तरसिंह और उसके पूरे ख़ानदान का ख़ातमा कर दिया। फिर सरे-बाज़ार ऐलान किया 'ख़ून का बदला ख़ून।' "

जहाँदादजी शाहजी की ओर मुड़े—"शाह साहिब, फौजों के अपने ही ख़तरे और अपनी ही ख़ातिरें।"

"जहाँदादजी, खैरों से सवारियाँ पिण्ड ही उतरी हैं सीधे कि कहीं रास्ते में चहल-टहल भी हुई!"

"रब्ब की दुआ-खैर, लखनदाता सखी-सरवर के दरबार में अपनी हाज़री हो गयी।"

"वाह-वाह, सखी-सरवर के हज़ूर में पहुँच जाये बन्दा तो और क्या चाहिए!"

"सबब लग गया। साहिबख़ाँजी ने मन्नत माँगी हुई थी। इनके साथ अपनी तक़दीर भी खुल गयी।"

छोटे शाह बड़े खुश हुए—"भला कम्म। रोटी-रिज़क तो बन्दे के चलते ही रहते हैं। बाकी नज़र-नयाज़-मन्नत सब उस रहमतवाले की बन्दगी की ही शक्लें है।"

"शाह शाहिब, लखनदाता के हज़ूर में सवाब ही सवाब। जी ज़ाहिरा दरबार सखी-सरवर का।"

"बहुत बड़ी ज़ियारतगाह है! एक तरफ गरीबनवाज़ सरवरशाह का थान। दूसरी तरफ बाबा नानक का। बादशाहो, सखी-सरवर साहिबजी की वालिदा माई आयशा का चरखा-पीढ़ी देखकर आँखों को ठण्ड पड़ जाती है। लो और सुनो। पास ही एक ठाकुरद्वारा है। एक तरफ अपने भैरों का मन्दिर है।"

काशीशाह ने सिर हिलाया—"अपनी आँखों से न देखा हो तो बन्दा यकीन करे। साबित यह हुआ कि ये तक़सीमे-फिरकेदारियाँ तो बाद की बातें हैं। मनुक्ख ने खुद बनायी है। रब्ब-रसूल और कर्त्ता-कारणहार सब एक ही है।"

कर्मइलाहीजी को कुछ सूझ गया—"बादशाहो! इधर पंजपीर, उधर पंज पाण्डव! इधर पंज औलिया, उधर पंज प्यारे!"

मैयासिंह पाजे पर चौकस हो गये—"बरखुरदारो, इस अपने पंजाब मुल्क का भी रब्ब के साथ कुछ मेल-ठेल ज़रूर होगा। पूछो भला क्यों! वह यूँ कि रब्ब

ने भी उठा के मुल्क पंजाब को पंजदरिया लगा डाले। उस धरती का क्या कहना सज्जनो, जहाँ कुदरत से ही पाजा पड़ा हो!"

काशीशाह ताया मैयासिंह पर बड़े खुश हुए। उठकर घुटनों को हाथ लगा दिया—"तायाजी, बात वह जो वक्त पर सजे!"

मौलादादजी ने भी खुशनुमाई की—"शाहजी, वतन तो अपना बड़े नक्ख-दक्खवाला हुआ न! ज़मानों से बहादुर कौमों की आवाजावी लगी रही। बड़े-बड़े पीर, औलिया, मुरीद और शहीद हो गये।"

"शाह साहब, एक और अनोखी दास्ताँ है वहाँ की। सखी-सरवर के तीन मुजावर—कुलांग, काहीन और शेख। इन तीनों की अल-औलाद की हाज़री है दरबार में। कहते हैं सखी साहब के मुँह से निकला वचन है कि इन तीन शाखाओं में कुल मुजावर एक वक़्त पर सोलह सौ पचास ही रहेंगे। न एक कम, न एक ज्यादा।"

"बादशाहो, रब्बी पुरुख को रब्बी रौशनाई।"

जहाँदादजी ने लखनदाता के दरबार से आयी चूरमे-भरी कुज्जी नवाब के हाथ घर से मँगवा ली और छोटे शाह को सौंपकर कहा, "आप वरताओ, सबके मुँह लगवाओ। रब्ब करे यहाँ मजलिस में बैठा सब कोई गरीबनवाज के दरबार में हाजिर हो।"

सबने चूरमा मुँह लगाया—"लखनदाता, तेरी रहमतां के सदके!"

गण्डासिंह ने जहाँदादजी को इशारा किया—"फौजियो, आपने अभी कुछ खुशखबरी भी देनी है पिण्डवालों को। आज ही दे डालो। यह न हो मेरी तरह हफ़्ता लग जाये। मैं पेंशन-परची ले के आया तो खबर देने को मुँह न खुले। रोज रात कोठे पर चढ़कर बन्दूक से फायर कर दूँ। पिण्डवाले सोचें मुझे पल्टनी आदत पड़ी हुई है। लगातार पांच-छ: दिन चलता रहा यह क़िस्सा। एक सुबह अपने शरीक झण्डासिंह ने आवाज़ दे दी—'ओए गण्डासिंह, जरा जिगरा रख। सब फ़ौजियों की पेंशन-परची निकलती है। तू अनोखा ही पेंशन लेकर नहीं आया। हवा को किसने रोका जो रोज रात को गोली दाग देता है!'

"फिर लोगों को सुनाकर ऊँची आवाज़ दी—'सुन लो लोको, नायक गण्डासिंह ३३ पंजाब पेंशन पाके आया है। आज इसके घर मुबारकें-वधाइयाँ दे आना।'

"सो जहाँदाद, कोई भरम न करो। खैरों से प्रभात तड़के ने भी पहुँचना ही हुआ शिखर पर।"

"बराबर। बादशाहो, अल्लाह के फ़ज़ल से पूरी इज्जत-आबरू के साथ हम दोनों फौज से पेंशन पा आये हैं।"

बैठक एक पल को तो हक्की-बक्की रह गयी।

मौलादादजी ने छोटे भाई को हाथ दिया—"रहने को क्या, अभी पांच-सात बरस और भी रह ही सकते थे। लगा है अपने घरों को परते हैं, रौनकें लगेंगी।"

शाहजी ने समय सहेज लिया—"मूल बात तो यह हुई बादशाहो कि अपने बरखुरदारों के लिए जगह भी खाली करनी पड़ती है मनुक्ख को। दूसरे घरों में छोड़ी हुई घरवालियां और जिवियां पले-पले मालिकों को पुकारती रहती हैं। एक-न-एक दिन उनकी सुननी भी जरूरी है। जहांदादखां जी, गलत तो नहीं!"

"शाह साहिब, बिल्कुल सही और सच्च!"

चौधरी फतेहअली ने पूर्णा डाल दिया—"पुत्तरजी, मौज-मजे और बिश्मा-जोती बहुतेरी हो गयी। अब अपनी जिवियों में लश्कर बिछाओ। मजलिसों में सजो और पिण्ड को सजाओ।"

बाबा फ़रीद की बरकतें
बधाइयां जी बधाइयां
अल्लाह बेली करम लाय
चढ़त सिंह भागसिंह के पोतरों को
सोहणी रात आय
बेल बढ़े
दीदार बढ़े
लाखों पर क़लम
गुत्थियों के मालिक
साहिबसिंह की शाख बढ़े

गुड़ और बताशों की चंगेरें उठाये शाहजी की भारी गौहरी बहनें नन्दकौरां और चन्दकौरां आंगन में आ खड़ी हुईं।

"मुबारकें जी मुबारकें, खैर मुबारकें।"

मौलू मिरासी की आवाज ड्योढ़ी पर से गूंजी—

"नवाब धियान की बेल
बीबी धियान की बेल
जातकड़े की चाची सौ-सौ सगुण मनाये!
जातक की फूफियां सौ-सौ बरस जीयें!

सात खैरें भतीजड़े के मुंह धोयें !"

नन्दकौरां और चन्दकौरां ने बारी-बारी चांदी के टके मोलू और फत्तू की हथेलियों पर रखे। दोनों बहनें खुशी से भर आयी अँखियों से हँस-हँस गुड़ और बताशे बाँटने लगीं।

बाबो ने ऊँची आवाज़ हवेली सिर पर उठा ली—

हरिया री माये हरिया री बहनो
हरिया ओ भागी भरया
जिस दिहाड़े मेरा लाडल जम्मया
सो ही दिहाडा भागी भरया।

घोड़ियों के सुहाने सुर सुन छोटे-बड़े, बच्चे-बालक बताशे लेने आ जुटे।

छोटी शाहनी बिन्द्रादयी भर-भर मूठें बाँटने लगी—"लो रे लो, तुम्हारा जोड़ीदार आया है। मुंह मीठा करो। खेलो-कूदो। खुशियां मनाओ।"

शाहनी के पसार से निक्की-निक्की सजरी रुलाई की आवाज़ बाहर आयी तो नन्दकौरां और चन्दकौरां एक-दूजे को देख मुस्करायीं।

"सुन री, अभी तक चुप नहीं हुआ। जिद्दड होगा जिद्दी।"

"मेहरें रब्ब की जिस यह सुलक्खी घडी दिखायी।"

शाहजी ऊपर आये तो बहनों ने मुंह मीठा करवाया।

"बधाइयां वीरजी, बधाइयां !"

शाहजी ने दोनों बहनों को घेर लिया और हँसकर कहा, "अब हमारी पूछ कहां होगी। भाई-भाभी से मिट्ठड़े फूफियों को भतीजड़े !"

बाबो मिरासन ने झोली पसारी—"बड़े दरबार, शाहों के वांछित फल मुट्ठी। शाहजी, बाबो के कंगन खरे !"

शाहजी ने जैसे आँख से ही हामी भरी और नीचे जाते-जाते कहा, "नन्दकौरां, सबका जी खुश करो।"

बाबो और जैनब दोनों अँगना मे पत्थला मारकर बैठ गयीं और बन्दिश में घोड़ी छू ली—

सुनी री सहेलड़ियो
अरी बहनेलड़ियो
इक जुलाहे का बेटड़ा
मेरे लाडले का यार वह
मां का बरखुरदार वह
सौदागरी आया।

अराइयों के जुट्ट ने ड्योढी पर आवाज़ दी—

शाहों के बाग सावे

मीरी पीरी के मालिक
वड़े-वड़े इकबाल वाले।

बूढ़े रहमते ने खुशी में हाथ ऊपर किये—"शुक्र है। शुक्र है खुदावन्दा तेरा! शाहों के बाग आबाद।"

नन्दकौरां ने गुड़ की भेली पर चांदी का टका रख रहमत के आगे किया—"खैर सदके चाचा रहमते, मुबारकें तुम्हें!"

अन्दर से चाची महरी निकली और चौके से भखती अँगियारी दूधारले में लगा हरमल और हींग धुखाकर फिर पसार जा घुसी।

नीचे घोड़ों की टाप सुन पड़ी।

मांबीबी ने छज्जे पर से झुककर देखा—शाहजी की बड़ी बहनें वज़ीरदयी और पार्वती घोड़ों से उतरीं।

बाबो ने ऊपर से आवाज़ दी—"अरी बधाइयां री शाहों की धियो-बहनो, सुखी-सान्दी तुम्हारी रीझों की घडी आयी। गज्ज के मांगो जो-जो भाई से मांगना है। पहले कौल-क़रार कर लो, पीछे पौड़ियों पर क़दम रखना। पीछे भाई-भरजाई मुकर गये तो सासरे क्या मुंह दिखलाओगी!"

बसरा दाई पसार से बाहर निकली तो फूली न समाती थी।

लड़के की फूफियों ने बादामोंवाले दूध का कटोरा थमाया तो बसरा बीवी भारों पर पड़ गई—"मुरादों की इस सोहणी घड़ी खाली बादामों की दस गिरियों से न चलेगा। सहक-सहककर भतीजड़ा मिला है। धूम-धड़क्के से लो और टंकारों से दो। मैंने कहा री फूफियो, कोटिप्पकोटि जूनियों बाद कुल-पूत घरों में उतरते हैं। हां!"

बहनों ने नाल मोलने के अलग-अलग लाग दिये। सिरवारने किये तो बसरा बोली-ठोली से बाज न आयी—"अरी ऊँची-लम्बियो बहनो, तुम खैरों से ऊपर-थल्ले की पांच। जब-जब शाहनी को देखती, मेरे दिल धड़की लग जाती। शाहों की हड्डी में कुड़ियों की पौद-पनीरी। जियें-जागें काशीशाह के जातकडे, उनकी ओर देखकर आस बँधती। अल्लाह, और नहीं तो काशीशाह के पुत्तरों से लड़ने-झगड़ने के लिए एक शरीक तो भेज ही देना! सो धियो-धियानियो, ऊपरवाले ने सुन ली मेरी। भरजाई से मेरी सिफ़ारिश करना, बसरो को लच्छियां घडवा दे।"

"क्यों नहीं मां बसरी, तुमने लुकी-छिपी जिन्द को हाथ लगा शाहनी की गोदी में डाल दिया। तुम्हें जो न मिले थोड़ा।"

"लच्छियां तो मेरा जच्चगी का लाग। लाल की खुशी में मांगूंगी मैं दस-सेरी मेंस। रोज दोहूँगी और पी-पी दूध दिल हरा करूँगी।"

बसरी ने जाते-जाते चाची को आवाज़ दी—"चाची, जच्चा रानी के सिरहाने लोहा हथियार रखना न भूलना।"

चाची महरी डुल-डुल पड़ती थी। सिर हिलाकर कहा, "जो हुक्म। आज तो तेरा कहा हुक्म फ़रमान है।"

बसरी ने झूठमूठ का गुस्सा दिखाया—"रहने दे चाची, रहने दे। खाली बातों से ही दिल न खुश कर छोडना। लाग-इनाम ढंग से लेने दे। बड़ी इन्तजारों के बाद निक्का तेरे घर रोया है।"

चाची ने जैनब और बाबो को घुड़की दी—"क्यों री करमावन्तियो, गहमा-गहमी मे सब-कुछ भूल-भाल गयी हो क्या! कोई सोहणा-सुहावना सुर उठाओ!"

"हुक्म हो गया न दादी सरकार का। अब नही रुकती। कहे तो नौबत की तरह बजती रहें—

नौरंग चूडेवालियो
मेरी जच्चा रानियाँ
सूहे जोड़े पहन सुहागनाँ
मोतियाँ माँग सजावनी
बैठ अँगना गोद भरावनी
मेरे लाल जियो
लख साल जियो!"

सुखनाहन!

खैर मेहर, शाहनी ने पांव-तले हल रख स्नान किया और नहा-धो चौके चढ़ी।

शाहों के घर गहमा-गहमी मे मानो एक संग कई नच्छत्रों का आगमन हो गया।

असाहरवाला तारा मस्जिद के मिनारों के पीछे लुकन-छिपन करता ही था कि पूरब से उत्तरादी हवाएँ सूरज महाराज के सुच्चे-उजले लिशकारे लिये हवेली पर उतर आयीं।

शाहनी को बाग फुलकारी की दोहर ओढा चाची महरी ने पहले शाहनी की हथेली में थू कर नजर उतार दी, फिर निक्के के माथे पर काजल का काला टिमका दिया और पसार के पट्ट खोल दिये।

"बधाइयाँ शाहनी, बधाइयाँ!"

शाहनी ने गोद में लाल उठाया और हौली-हौली ममताली चाल चौके की ओर बढ गयी।

पीले ऊनी आसनों पर मां-बेटे ऐसे विराजे ज्यों धरती ने अपनी गोद में गगन का चांद लिटा लिया हो।

भगवान पान्दे ने सजरे लिपे-पुते सुच्चे चौके में अगनदेव को साक्खयात किया और आहुति दे शुभ मन्त्र उच्चारने लगे।

शाहजी आये तो सिर नवां मन-ही-मन दाते का ध्यान किया—"जो मांगा था सो आपके दरबार से पाया!"

शाहनी ने पुत्र की मां होनेवाली गर्वीली दीठ से साईं को निहारा—"रब्बजी, आपने इस गरीबनी की लाज रख ली!"

गोद मे अडोल सोये पड़े लाल के सिर पर हाथ फेरा तो छातियां दुधारने लगीं।

पान्देजी ने कटोरे में दूध, दही, शहद, गंगाजल, तुलसी मिला पांच रत्नों का अमृत मुंह लगवाया तो सगे-सम्बन्धियों की भीड़ ऊपर आ जुटी। शाहनी के आगे सगुणों के ढेर लग गये।

पान्देजी ने मन्त्र उच्चार शाहजी के माथे पर केसर-टीका लगाया तो चिट्टा-गोरा मुहान्दरा सज-सज उठा।

शाहनी ने देखकर आंखें चुरा ली। मन-ही-मन वाहगुरु से ओट मांगी। तू जानी जान मेरे साहिबा, तूने मेरा समय सजा दिया!

सिरवारने होने लगे। नन्दकौरां ने गुलाबी पाग पर दस टके रखे—"पान्देजी, मन में बड़ी साध थी, बड़ी भरजाई को जातक जन्मे तो कानों से आपके श्लोक-मन्त्र सुनूं।"

चन्दकौरां ने हरी कोरवाले घुस्से पर रुपये रखे—"घुस्सा जरूर ओढ़ लेना। लाली की बुआ का जी खुश होगा।"

भगवान पान्दे ने इधर-उधर नजर मारी—"जातक के चाचा-चाची और काकों को बुलाओ। उनका भी सगुण हो।"

चाची महरी ने हांक मारी—"जाओ री, खैरों से बिन्द्रादयी को बुलाओ! आकर सिरवारना करे! कहीं भगवान पान्दे को कसर न लग जाये!"

गुलाबी दुपट्टे में छोटा-सा घूंघट निकाले, गले में बुगतियों की माला डाले बिन्द्रादयी छोटे शाह के पीछे-पीछे आयी तो चाची महरी को बिन्द्रादयी पर बड़ा लाड़ आया—"हैं री, अपनी छोटी ऐसी सुचज्जी नार लगती है ज्यों इसके घर आये दिन ढंग-पज्ज होते हों!"

"तुम्हें दोहरी मुबारकें बिन्द्रादयी! अगली पांत शरीक़-बिरादरों की जुड़ी है! गुरुदास, केशोलाल—आओ रे, इधर आओ! पान्देजी, बच्चड़ों को टीका

करो !"

दोनों बच्चों के माथे पर केसर-चावल शोभने लगे तो चाची ने सिरवारना कर अट्ठनी पान्देजी के आगे डाल दी।

काशीशाह को चरणामृत देते-देते भगवान पान्दा फिर संस्कृत के सुच्चे सुरों पर आ गया।

बिन्द्रादयी शाह्नी के कन्धे से लग फुसफुसायी—"जिठानी, देखती चल पान्दे को ! अभी चाँदी का कटोरा माँगेगा !"

भगवान पान्दे ने संस्कृत उच्चार-उच्चार सामग्री की आहुतियाँ डालीं और बड़ी सधी आवाज में कहा, "दूध-भरा चाँदी का कटोरा देने की रीति चली आयी है शाहों के घर। तत्ता-तत्ता दूध भर लाओ कटोरे में !"

छोटे शाह ने चाँदी का कटोरा घरवाली की ओर बढ़ा दिया तो बिन्द्रादयी उठकर दूध भर लायी। पहले शाहजी का हाथ छुआया, फिर शाह्नी का, और भगवान पान्दे के आगे कर दिया।

घूँघटवाली आँख से पान्देजी की ओर ओट कर छोटी शाह्नी ने मशकरी की—"अब कोई और लाग-लोट तो बाकी नहीं रह गया !"

शाहजी मन-ही-मन छोटी भरजाई पर खुश हुए। कुछ भी कहो, जलालपुर की बेटियाँ बड़ी पारख !

माँ-पुत्र की कलाइयों पर मौलियाँ बँध गयीं तो पान्देजी के आशीष-वचन कहते-कहते शाहजी आसन से उठ खड़े हुए।

शाहजी ने सीढ़ियों से उतरते-उतरते साफे के लड़ से आँखें पोंछ लीं।

ड्योढ़ी में पहुँचे कि सामने भित्त से अन्दर आती राबयाँ दीखी—'देवपुत्री-सा यह सोहना मुखड़ा !'

"सलाम शाहजी !"

"राबयाँ बल्ली, ऊपर जाओ ! रौनक लगी है !"

"जी शाहजी !"

राबयाँ की फाँकड़ी आँखें शाहजी के मस्तक पर जुड़ गयीं। पलकें न हिलीं, न डुलीं, न झपकीं।

शाहजी ठिठके-से गैब चक्खु से इस कंजक कँवार को देखने लगे। छोटी है पर छोटी नहीं !

लम्बी-चोखी दीठ के बाद राबयाँ ने पौड़ियों की ओर कदम बढ़ाया तो शाहजी को भासा कोई महालाली उड़ती-उड़ती सगुण चितार गयी है।

शुभ हो ! शुभ हो !

नाई रमज़ान लाहौर से पिण्ड पहुँचे तो छोटे-बड़ों ने ऐसी गर्ज के साहब-सलामत बुलायी ज्यों सूबा लाहौर के सूबेदार सरबुलन्दखाँ यही हों।

हरा तहबन्द, धारियोदार कमीज़ और ऊपर चिट्टा साफा। यह नाइयोंवाली पोशाक तो न हुई!

"आओ जी राजा रमज़ान! कप्पड-वेस तो खालिस लाहोरियोंवाला आपका! हो भी क्यों न! खैरों से रिहायश जो हुई शहर लाहौर की!"

रमज़ान खुश हो-हो अपने पर हँसने लगा—"देखो जी, वहाँ रहते तीन-चार साल हो गये पर बादशाहो, लाहोरिये कंजर देखते ही पूछते हैं—'क्योंजी, ज़िला शाहपुर गुजरात कि जेहलम! किस पिण्ड के रहनेवाले हो!'

"कोई पूछे हमारे मुँह-मात्थे ऐसी क्या बनौत बनी है कि दूर से अपने पिण्ड का नाम प्रकट हो जाये—बन्दा जलालपुरिया है, आलमगढ़िया या भागोवालिया।"

शाहजी ने सिर हिलाया—"बराबर रमज़ानेया, आँखें देखते ही सही कर लेती हैं कि जना अपना लहन्दे का है, पोठोहार का, मुल्तान या मांझे का। मतलब यह कि मिट्टी-पानी आप उठ-उठ बोलते हैं। फिर क़द-बुत और आदमी की वजह-कतह भी।"

चौधरी मौलादाद ने मुँह से हुक्के की नड़ी निकाली—"रब्ब आपका भला करे, अपने इलाके का तुर्रा और तम्बा कोस-दो-कोस से नज़र आने लगता है। डेरा जट्ट का पानी ही ऐसा—काठी जबर और पहनना-ओढ़ना मोटा।

"चौधरीजी, खैरो से अपने दरिया पार के स्यालकोटियों के बारे आपकी क्या राय!"

"स्यालकोटिये चाल-ढाल में शौक़ीन-ज़हीन और गुफ़्तगू में बारीक।"

मौलवी इल्मदीनजी ने सिर हिलाया—

"माशा अल्लाह जी, स्यालकोटियों के तुल कौन! झूठ क्यों कहे, स्यालकोट में तो बड़े-बड़े आलम-फाज़ल, फ़ुकरा शेख सैयद, वैद-हकीम, शायर-क़ातब हो गुज़रे हैं। शाह साहिब, आपने तो वहीं मदरसे में तालीम पायी, मैं कुछ ग़लत तो नहीं कह रहा!"

"न इल्मदीनजी, स्यालकोट तो सेहरा हुआ न पंजाब का!"

मीराबख्श नौशहरेवाले सैं सलामत की [illegible] बैठा करते थे। उन्हें किस्सा याद आ गया—"[illegible] बड़ा भा गया। बार-बार स्यालकोट आ[illegible] पड़[illegible]। जब दिल्ली-लाहौर को इरा[illegible] कर ले।

इधर गुजरातियों को तो इशारा करें कि फौजों के लिए रसद जुटाओ और उधर स्यालकोटिये शायरों से शायरी सुने। उनको इनाम और ख़िल्लतें बाँटे।

मौलवी इलमदीन की पुटपुटी फड़कने लगी। लो हौसला देखो मीरांबख़्श का ! तवारीख़ी ख़ज़ाने उनके पास और पहल कर ली मीरांबख़्श ने।

झटापट मैदान में कूद पड़े—"बिल्कुल दुरुस्त। स्यालकोटिया शायर इशरत दुर्रानीशाह के जलाल पर ऐसा रीझा कि उसके लश्कर के साथ काबुल जा पहुँचा। इशरत साहिब पहले शाह नादिर की तारीफ़ में 'नादिरनामा' भी लिख चुके थे। काबुल पहुँचे तो लिख मारा शाहनामा-ए-अहमदिया।"

चौधरी फ़तेह अली हँसे—"और जी शायरों से जुड़-बन भी क्या आना है। बन्द जोड़े, तुक्के और तुक्कियाँ मिलाये और कवित्त और काफ़िय: घड़ लिये !"

नजीबे ने मुण्डी हिला दी—"इन सुरमचुओं के पास कौन-सा दम-घड़क्का या जोर-जिगरा कि उठा के फसलें खड़ी कर लें या तख़्ते उलट-फेर होने पर हाथों में शमशीरें उठा लें ! इनका तो, बादशाहो, काम ही दूसरा हुआ न ! तुक मिला टप्पा जोड़ा और अगले की आँखों में सुरमा लगा दिया। सुरमा-सलाई मिली सो गाँठ बाँध ली और मुड़-मुड़ सलामें करने लगे—इरशाद···इरशाद···!"

हँसी-हँसी में बड़ी मजियाँ हिलीं और बड़ी खाँसियाँ छिड़ीं।

शाहजी बोले, "नजीबे, बात तो तुम्हारी चंगी जमी, पर है जट्टोंवाली। शेरो-शायरी इतनी निखिद्द चीज़ नहीं।"

मौलवी इलमदीन फिर पुराने मजमून पर जा अड़े—"बादशाहो, स्यालकोटियों को तो सरोपे दे डाले आपने, कुछ गुजरातियों की भी चंगी-बुरी ! शाहजी, आपके साक-सम्बन्ध तो ख़ैरों से गुजरात में ही हुए। फिर अपने पिण्ड की तहसील भी वहीं !"

"फ़तेहअलीजी, गुजराती बन्दे बड़े ऐबची और बदगुमानी मशहूर हैं। मिजाज़ से बातूनी और दूसरों के बख़िये उधेड़ने में माहिर। छठी पातशाही गुरु हरगोबिन्दजी घोड़े पर सवार हो गुजरात सर्राफ़े से निकले तो हुज्जती गुजरातियों ने अपनी आदत से मजबूर हो शहर की तमीज-तहजीब पर ऐसी-तैसी फेर दी। अपनी हट्टियों पर बैठे हुए हटवानिये कभी गुरु साहिब के घोड़े का बखान करें, कभी उसकी काठी की तारीफ़, कभी घोड़े की चाल और साज़-बाज की !

"यह चबलपन गुरु साहिब को क्योंकर पसन्द आता। उनके माथे पर तेवर उभर आये।

"इधर गुजरात शहर के वाली हजरत शाहदौला ने खानकाह में बैठे-बैठे पूरा तमाशा देख लिया। उठे और गुरु साहिब के घोड़े के आगे जा खड़े हुए। शहरियों की तरफ़ से माफ़ी माँगी—'गुरु साहिब, इन नालायक गुजरातियों को इस बार

बख्श दीजिए !'

"गुरु साहिब भी रब्बी पुरुख। घोड़े से उतर हज़रत शाहदौला पीर के हाथ पकड़ लिये, 'आपने कहा कि मैंने—पीर साहिब, एक ही बात है !' "

"वाह···वाह···क्या कहने हैं ! ऐसी इलाही ताकत कि बन्दा खुदाई शान को देखता रह जाये ! जो रब्बी जलाल से एक उम्र में तीन-तीन बादशाहतें बदलते देख ले, वह कोई छोटी-मोटी हस्ती तो नहीं हो सकती !"

काशीशाह ने सूत्र पकड़ लिया—"शहंशाह अकबर, जहांगीर और शाहजहान —तीनों हकूमतें देखनेवाले जिस धरती पर प्रतक्ख मौजूद हों, ऐसे वलीयुल्लाह के क्या कहने !"

अगड़-पिछड़ गण्डासिंह और जहांदादखां आन पहुंचे।

"बादशाहो, गल्त-बात खैरों से कहां पहुंची है !"

"आओ जी आओ, बैठो ! अपने राजा रमज़ान आये हैं लाहौर से।"

कृपाराम ने लशाया—"रमज़ानेया, कुछ ताज़ी-सजरी सुनाओ लाहौर की। कहते हैं न, जो लाहौर नहीं गया वह जम्मया ही नहीं ! उस हिसाब से तो हम सतमाहे ही हुए !"

राजा रमजान चढ़ गये—"जी, शहर लाहौर हुआ सूबे का दारुखलाफा। कुछ-न-कुछ शोर-शराबा पड़ा ही रहता है, पर आजकल एक क़त्ल के बारे बड़ी सनसनी है।"

सारी मजलिस के कान खड़े हो गये।

'एक धनी खालसे ने पक्की उम्रे शादी कर ली। आप खालसा पचास के पेटे में और लड़की सतरह-अट्ठारह की। हुआ वही जो होना था ! आशिक से मिल लड़की ने खाविन्द को कत्ल करवा दिया ! टोटे करवा लाश रावी में फिकवा दी।"

"बल्ले बल्ले ! यह सोलह और पचास की जमा-तफरीक अच्छी साबित तो न हुई !"

हुक्कों की गुड़गुड़ में यकायक ज़ोर पैदा हो गया।

"क्यों जी, सुभान कौर क्या इस फन्दे से बच निकलेगी !"

"दोनों आशिक और माशूक हिरासत में हैं। सुनने में आया है बड़े तगड़े वकील खड़े किये गये हैं। सरदारनी की पैरवी करनेवाला वकील लाजपतराय बड़ा नामी है। कहते हैं जिरह में बड़ा पक्का।"

शाहजी बोले, "फतेहअलीजी, कत्ल के मुकद्दमे में अगर काफ़ी बड़ा सुराग नहीं तो सिर्फ वकीली दबदबे से ही मुकद्दमे का पैंतरा नहीं बैठता। अच्छे वकील के हाथ में फकत इतना ही कि तख्ते से उतार मुवक्किल को कालेपानियों भिजवा दे।"

दीन मुहम्मद गुजरात आते-जाते अखबारी खबरें सुनते-सुनाते थे—"शाह साहिब, आपको याद होगा कांगड़े के भूचाल के बाद इन्ही वकील साहिब को सरकार ने रायबहादुरी देने की पेशकश की थी। लाला लाजपतराय ने यह कह-कर इन्कार कर दिया कि बख्शी सोहनलाल का हक बनता है इस सनद पर।"

कृपाराम ने पगड़ ठीक किया—"ऐसे काम के लिए गुरदा चाहिए। आखीर को बादशाहो, खिल्लत-खिताब किसे बुरे लगते हैं!"

मौलवी इल्मदीनजी ने हँडिया मे हीग डाल दी—"इसकी वजह कुछ और थी। लालाजी काग्रेसी हल्को के सरगना हैं। सोचा होगा खिताब-खिल्लत पगड़ी पर बँध गया तो खैरख्वाही के रिश्ते से बँध गये हकूमत के साथ।"

लड़कों का ताजा पूर रमज़ान से गुफ्तगू करने का मौका ढूंढ रहा था।

दित्ते ने मौलू को थापी दी—"पूछ ले ओ, पूछ ले। कही धुकधुकी ही न लगी रहे!"

फज्जे ने बेशरमी कर डाली—"सुनते हैं शहर लाहौर मे बड़ा याराना चलता है!"

रमजान ने ओठ तर किये पर बुजुर्गों का ख्याल कर बड़ी लापरवाही से कहा, "दूसरे ज़रूरी कामों के साथ अक्सर यह भी चलता ही रहता है। आखीर को तो जी, आदम की ज़ात ठहरी। जिन्दा रहेगी तो बादशाहो, इश्क करने से भी पीछे क्यो रहेगी!"

सुनकर बड़े-बड़ेरो ने जल्दी-जल्दी कश लगाने शुरू कर दिये।

जवान गबरू रमज़ान को शाबाशी देने लगे—"वाह ओ वाह अपने पिण्ड के राजा रमज़ान, खूब फरमाया है!"

मौलादादजी ने लड़कों की यह उछल-पुछल देखी तो नाई को उसकी जगह पर टिका दिया—"रमजानेया, लाहोरियो की हजामतें बना-बना अपने पिण्डवालों के भी कान कुतरने लगा है! लड़कों को निकम्मी-फोश बातें न बता।"

रमज़ान घुड़की खाते ही असली नाई बन गया—"गुनाह की माफ़ी बाद-शाहो! मेरी ऐसी हिम्मत! न जी न, तौबा करो!"

कर्मइलाहीजी ने पूछा—"क्या बड़ा नामी मदरसा है जहाँ लड़कों की हजामतें करते हो?"

"जी, बहुत बड़ा। जापता ऐसे है ज्यों सूबे के सारे खानदान-कबीले पढ़ने पर ही लग गये हैं। और तो और, अफगान शाहजादे भी वही पहुँचे हुए है। क्या सोहणी मेहर्ते, क्या काठी और चढ़तलें। शाह साहिब, खाला अपने साथ लाहौर ले गयी, नहीं तो मिशन कालेज कहाँ और हम माहत्तड़-साथ कहाँ।"

गोसाईं-पान्दों ने जजमानों के लिए दुसहरा-दिवाली के तिथि-वार उच्चारे, लडके गबरुओं ने कौडियां निकाल ली।

मिये खां के तवेले के सामने मण्डलियां जम गयीं। गंजोफे और ताश पत्तों की जगह कौडियों और ठीकरों के दांव लगने लगे।

टुंडे ने बायें हाथ से पांसा फेंका—"ओए, लश्कर चढ़ आये!"

"ओए, दम्म न तोड़ो"—निक्के ने सिर की जूड़ी खुजाते-खुजाते पासा फेंका—"जो बोले सो निहाल!"

गौहर ने पीर-पैगम्बरों का नाम ले मूठ माथे से लगायी और खोल दी—"या अली!"

"लो जी, छिक्कड़ी आ गयी गौहरशनास की!"

कौड़ियोंवाले खेलने लगे पैंसा पूर। यह आया सत्ता!

"लो सात कौड़ियां, कौड़ा उठा लो और यह घोके भी।"

"यह लो दाईया"—कौड़े खां ने कौड़ी खेली—"कौडा आया!"

बोधे को मूठ आ गयी! फत्ते ने पीठ पर थापड़ा दिया—"ओए यारा, किसको दिल मे धारा था!"

बोधे ने मूठ अपनी ओर सरका ली और हंसकर कहा—"देवी लच्छमी को।"

रोडे के मुंह में पानी आ गया—"क्या करें, लच्छमी मां हिन्दुओं के ही काम आती है!"

लडके हंसने लगे—"यारा, बात तो ठीक कही है तूने।"

बोधे ने अपने पूर मे से एक कौडा निकाल रोडे को दिया—"रोडेया, मूठ में रख और ध्यान कर लच्छमी मां का। चार हाथोंवाली देवी कमल पर बैठी है!"

बारी-बारी गण्डे और सत्ते पडे। रोडे ने मूठ उठा अडोल नीचे खोल दी—

"लो जी, पूर आ गया रोडे को!"

पिण्डीदास ने देखा और इतराकर देवी का जयकारा बुला दिया—"जय देवी लच्छमी! बरकतोंवाली!"

फत्ते से न रहा गया—"ओए बोधेया, देवी हिन्दुओं के हाथ मे काबू है, तभी तुम्हारे घरों में माया-ही-माया!"

"बोल, रोडे पर कृपा नही की देवी ने!"

"की तो सही, पर गलती हो गयी।"

"यह पकड कौडा, तू भी देख ले! बस जयकारा बुलाना पड़ेगा!"

"जय देवी लच्छमी!"

फत्ते की आंखें फैल गयीं—उसकी मूठ आ गयी थी।

फत्ते ने पैसे उठा तहमद की गांठ मे रखे और उठकर कहा, "यारो, मेरी छुट्टी! मैं न अब खेलूंगा! एक बार जीता हूं तो हारूंगा नही!"

बोधे की बांह झँझोड़कर कहा, "मेरा सलाम कहना करामाती माई लच्छमी को !"

टोली बुड़बुड़ाने लगी—"जीत-जीतकर उठते जाओगे तो लोको, खेलेगा कौन !"

मद्दी ने हौले से कहा, "जाने दो, बेबे इसकी मान्दी है। कस्स से पड़ी है। घर में न पैसा, न धेला, न दाने !"

"कहीं से उठा क्यों नहीं लेता ! जरूरत वेले क्या शरम ! फत्ते से कहो शाहो से उठा ले।"

मद्दी से न रहा गया। खुन्दक से कहा, "बस ओए, यह सूदवाली शह हमें न बता। ढोर-डंगर तो कभी-कभार बच्छी-बच्छा देते हैं। उधार का सूद दिन-राती जन्मता-बढ़ता रहता है।"

पिण्डीदास को जोश आ गया—"ओए जट्टा, तुम्हारे फ़ायदे की बतायें तो भी हमी पर लानत-मलामत ! एक तो पल्ले से देते हैं, तुम्हारा समय रखते हैं, ऊपर से हमी को कोसते हो ! हद मुका दी !"

"खैरात बाँटते हो क्या ! बाबे से पोते तक पहुँचते-पहुँचते असल का सूद और सूद का असल कर डालते हो !"

पिण्डीदास ने मद्दी की आँखों में ताप देखा तो बड़ी मस्कीनी से कहा, "अहसान-फ़रामोशी की भी हद हो गयी यारो। शाह न हुए कि कसाई हो गये !"

उधर शाहों की हवेली में मंजियाँ सजने लगीं।

कृपाराम आये, सबको पैरीपौना बुलाया और टंकारों से कहा, "शाहजी, लाली पुत्तर की पहली दिवाली है। खैरों में कुछ बंगी मिठाई की धूम-धाम हो जाये।"

सुनते ही गण्डासिंह का दिल हरा हो गया—"बादशाहो, अगर बने लूफ्फे के लड्डू और खाँड गलेफे मट्ठे, फिर तो मौज और मज़ा !"

मौलादादजी को बालूशाहियों से प्रेम था—"शाह साहिब, गुरुदास की जम्मनी पर खाये थे मक्खन-बड़े। रब्ब झूठ न बुलवाये, आज तक स्वाद-ज़ायका मुँह में है।"

चौधरी फ़तेहअली हँसने लगे—"बालूशाहियाँ की अच्छी याद आयी मौलादादजी, पर अपनी पसन्द कुछ और ही। शाहजी, मूले हलवाई ने अदरख्से की गोलियाँ निकाली थीं। क्या कहना उनका !"

मुंशी इल्मदीन शहर कसूर होकर आये थे। झटपट शीरनी का ज़ायका मुँह में आ गया—"बादशाहो, कोई कुछ भी कहता रहे पर जो शीरनी है वह दूजी शह

नही !"
जहांदादखां हंसे—"इलमदीनजी, बुरा तो मानना न कहे का—मिठाइयों का
शहंशाह लड्डू जब तक थाल-चगेर मे कायम है, बिचारी शीरनी बेगम की बिसात
क्या ! वह तो सूखी-सख्त मजबूत दांतो की ही मोहताज है।"
शाहजी को सुन आप मजा आने लगा। भाई से कहा, "काशीराम, सबकी
मनपसन्द वगियां बनवाओ। जम्मूवाले मलाईचन्द हलवाई को बुला लो !"
मौलादादजी ने फिर फुलझड़ी छोड दी—"काशीशाह, बुला तो रहे हो टिड्डे
मलाईचन्द को, पर जी हम जैसे जट्ट-जट्टो के लिए जम्मूवाली फुलिया बताशियां
ही न बना दे !"
गुरुदित्तसिह ने लाड से दाढी पर हाथ फिराया और हंसकर कहा, "शाहजी,
बात यहां पर टूटी कि मौलादादजी को पीडी रडकनेवाली वस्त पसन्द है। इन्हें
रोड़मे दानो पर खण्ड चढवा दो।"
कर्मइलाही हंसने लगे—"इन भाइयों के दांत अभी सही-सलामत हैं, फुल्ल
मखानों की तरह कडी रोड़मी गोल मिठाई पसन्द है।"
कृपाराम ने कुह्का लगाया, "बात यह है गुरुदित्तसिह, तुम्हारे दांतों को आदत
पड़ गयी है नर्म-नर्म कड़ाह-प्रशाद खाने की। सच बता दो गलत तो नही कहा !"
कड़ाह-प्रशाद के जिक्र से ही हलवे के रस्स-चिकनाहट गुरुदित्तसिह की आत्मा
तक जा पहुंचे। सिर हिलाया—"ठीक है। बादशाहो, बाबे ने प्रशाद भी बनाया-
बरताया सिक्ख संगतो के लिए तो घी-खण्ड का हलवा। गुर-सिक्ख जब-जब छके,
दिल की तृप्ति हो।"
हाजीजी ने अपना दबदबा बनाये रखने को कहा, "मेरा कहना यह है कि
शाहजी रसद दे दें और मिठाई बने नौशहरेवाले मियां क़ादिर के हत्थों। सुना है
रावलपिण्डी मे दब्बकर हट्टी चलती है उसकी।"
'जी, छैनामुर्गी मशहूर है पिण्डी की। पर झूठ क्यों बोलें, होती रहे मशहूर
छैनामुर्गी, पर जी कोई आधारवाली वंगी नही। मुंह मे डाली और घुल गयी।"
बात चौधरी फतेहअलीजी के मन लगी—"रब्ब आपका भला करे तोले-
माशे की निक्की-निक्की टुकड़ियां दांतों मे ही गायब। सच पूछो तो यह मिजाजी
शहरियों की मिठाई है। शाहजी, आप बताओ—बन्दा बरस-छमाही मिठाई-वंगी
का टुकडा उठाये और उसका कोई दम-वज़न न हो। अपना कहना तो यह है कि
छैनामुर्गी तो उम्मीदवार जच्चा-जनानियो का दिल-परचावा है।"
बडे क़हकहे लगे। दिये की हल्की-हल्की लौ बैठक गुंजान हो उठी।
गण्डासिह ने नहले पर दहला मार दिया—"इन्हे चाहिए पशोरी साबुन की
टिक्की-जैसा वज़नी कलाकन्द। या फिर बड़े-बडे कत्तलम्मे।"
फ़ज़ल ने हंस-हंस एक और चुटकला सुनाया—"अपने थल्ली वण्डवाले

मीरांबख़्श पार के साल डिंगे में सौंफ-अजवायन के मीठे पुड़ ले आये। सवानी को समझाया—'यह डिंग की मशहूर शै है। कभी बहुत दिल किया तो दो-चार दानों की चुटकी भर ली।'

"पर बादशाहो, यह हिदायत किसने माननी थी! सवानी चरखे पर बैठी-बैठी ही पूरा पुडा फांक गयी। एक दिन चौधरीजी को याद आया तो आवाज़ दी घर-वाली को—'ज़रा लाना तो वह डिंगे की मिठाई। मुंह तो मीठा करें!'

"बेगां भरजाई ऊँचा-ऊँचा बोलने लगी—'जनेया, आवाज़ तो ऐसी तगड़ी दी ज्यों हम मां-बेटे ने मिलकर पजसेरी पंजीरी की डकार ली हो। फिर कभी मौका लगे शहर जाने का तो कोई काम की चीज़ उठाना। ये पंतगी कागज़ों में लिपटी पुड़ियां नहीं। अरे, बन्दा भडुवा कुछ मुंह डाले तो पेट पुरखा कुछ कबूल तो करे! अन्दर कोई माल जाये। रूह पर रौब पड़े कि कुछ खाया-पीया है!'"

"बिल्कुल वाजिब। बेगां भरजाई की बात भावे मोटी है, पर सच्च है।"

शाहजी ने पनियारीवाले फग्गू का किस्सा छेड़ दिया—"अपने मौजोकीवाले भतीजे फग्गू को गवाह बना कचहरी ले गये। फग्गू ने पहले तो खाई मिस्सी रोटियां बरकत भेरेवाले के तन्दूर पर। साथ खैरों से दही की दो बाटियां और लस्सी के कटोरे।

"खा-पी डकार मारा और रलेशाह से कहा, 'मैंने क़हा जी, मीठे का बड़ा लोभी हूँ। गवाह बन गुजरांवालियों की दुकान का बदाना न खाया तो शाहजी, आप जानो गवाही देने का भी क्या मजा आया!'

"शाह ने पाव पक्का बदाने का दौना खिलाया पर फग्गू बरखुरदार हाथ खींचने में न आया। आखीरकार हलवाई ने रलेशाहजी की ओर देखा और हँसकर फग्गू से कहा, 'ओ यमलेया, कुछ होश से। दस्त-पेचिश से पड़ जायेगा तो अगली गवाही का मौका खैरों से अगली दरगाहे ही मिलेगा। हां, इस गवाही को आखीरी याददाश्त बनाना चाहे तो बात दूसरी है।'"

छा! बेले फकीरे लुहार के यहां से मुबारकबादियों के सुर गूंज उठे।

जम्मी जम्म शादियां
मुबारक बादियां
बावन फरजन्द सलामत

सलामत वादियां।

शाहनी मंजी पर बैठी लाली को दूध पिलाती थी। सुनकर बच्चड़े के सिर पर हाथ फेरने लगी।

पास बैठी मांबीबी मोठों में से रुड़क निकालती थी। सुना तो हाथ का छाज रोककर कहा, "अल्लाह बेली, तेरे किये यह मीठी घड़ी आयी हुसैना को! मेरे जाने आज लड़के की झण्ड उतरनी है।"

चाची महरी का हाथ दूध-दही में था। वहीं से पुकारकर कहा,"बच्ची, ताजी-ताजी बधाई दे आ! सिर्फ पड़ोसियों का लड़का ही नहीं, खैरों से अपने लालीशाह का बिरादर है। फकीरे ने मन्नत मांग बाबा फरीद से इसे हांडा बनाया है। रब्ब रखया करे। विचारों के ऊपर-थल्ली चार जातक जाते रहे।"

नवाब भत्ते वेला ऊपर आया। लाली को दूध पीते देख हँसकर कहा, "तो शाह साहिब लगे हुए हैं अपने काम पर!"

शाहनी हँस दी—"रात-भर नहीं जागा। अब कसरें पूरी कर रहा है।"

"शाहजी फकीरे के घर बधाई दे आये हैं। शाहजी को देखते ही बाबो मिरा-सन ने झट घोडी के सुर उठा लिये। पा लिया इनाम। पुज्ज के खच्चर। और शाहनी, फकीरे को तो मौजें हो गयीं। मानो शक्कर, मानो चावल और घड़ा घी का। अब खैरों से फ़कीरा दिल खोल चढाय देंगे। मुहब्बत-सलूक से खिलायें लोगों को खण्ड-चावल।"

"बच्ची, लड़के की तली पर कुछ रख आ। एक तो लाली का साथी, दूसरे नाम से तुम्हारा शरीक।"

लाली को मांबीबी की झोली में डाल शाहनी ने पसार में जा पेटी खोली। दो-चार टोटे-टुकड़े कपड़ों के निकाले। गरी-छुहारा झोली में डाल लोहारों के यहां मुबारकें देने चली।

फ़कीरे की मां करभरी पोत्तरे को कुच्छड़ में डाले बैठी थी। जातक के निक्के-निक्के कानों में फुम्मन्नियां। सिर सफा-चट्ट। शाहनी ने बच्चे के सिर पर हाथ फेरा और मूठ में सगुण का टका धर दिया।

करभरी पहले हँस-हँस शाहनी को देखती रही, फिर चुन-चुन गालियां देने लगी। "थू कौडी रे सूरनी के। शाहनी हाथ में टका दे रही है और तू बद मूठ नहीं खोलता। मांखाने, पकड़ ले, पकड़ ले, रख ले खीसे में। शाहां के टकों की जाग लग गयी तो घर माया के ढेर लग जायेंगे। असली हांडा बन जायेगा, असली!"

शाहनी ने सिरवारना कर जातक का, पनपड़ बाबो को पकड़ा दिया तो बाबो पोड़े-खोलनी दादी करभरी पर बोलने लगी—"लो देखो शाहनी, नाई ने खैरों से झण्ड उतार दी और मुंह में न शक्कर, न शीरनी! आज के सोहणे दिन भी मां करभरी को बस गालियां ही गालियां!

"शाहनी, कभी जातकड़े को फटकारती है—'अरे भड़वे, नाक-कान विंधाकर यह न समझ लेना कि तू मुसलमान नहीं रहा ! अरे तेरा कख न जाय, तू हांडा मुसलमान है। गाजी मरदों-सा बहादुर होना, नहीं तो थाँ मार दूंगी।'"

शाहनी हँस-हँस दोहरी हुई। मुट्ठी खोल जातक की हथेली पर थू कर दिया—"खैर सदके, बाबा फ़रीद की मेहरें। जीता रहो। बड़ी-बड़ी उम्र हो।"

शामी मिश्री का कूजा लिये हुसैना आन पहुंची—"लो शाहनी, चाची, मुंह मीठा करो।"

चाची महरी ने कूजा ले हाथ में चूम लिया—"मुबारकें हुसैना धिये ! हैं री, तेरी सासड़ी करमरी की गालियां पुर गयी कि नहीं ! उसे कहना मेरी तरफ से, जातक के कान में नबी रसूल का नाम भी डाले। यह न हो पुत्तर तेरा खाली दादी के ही करतब सीख ले। पाव-पाव पक्की गालियाँ ही निकालता रहे !"

हुसैना हँसने लगी—"जातक का तो बहाना है। बाकी गालियां तो चुन-चुन फूफी मुझे ही देती है !"

"चल री, जिगरा किये रह। तुम दोनो दुखों की मारी हो। सहक-सहक यह घड़ी आयी है, सास से कोई बखेड़ा न करना।"

शाहनी ने मिश्री के छोटे-छोटे टुकड़े कर पच्छी में डाल दिये—"ले री हुसैना, पहले मुंह लगाये लडके की मां, फिर चाची-ताइयां।"

हुसैना ने चाची महरी की ओर इशारा किया—"पहले लडके की दादी, फिर चाचियां-ताइयां और फिर मैं—फ़कीरे और उसकी मां की लौंडी-बान्दी !"

चाची महरी पास आन खड़ी हुई— "हैं री, जो तो है यह तेरी हँसी-मशकरी तो सो भला, नहीं तो चन्ना अब सब्र कर ले। बूढे वेले किसने बदलना। करमरी अपने स्वभाव के वश।"

मोहरे की बेबे आन पहुंची। आवाज़ हौली करके कहा, "हुसैना, तेरी सास पहले ऐसी नहीं थी। इसका पहला मरद इससे बेमुख क्या हुआ कि यह अपनी सुध से हिल गयी। बस पले-पले गालियां। फिर फकोरे के बाप से निकाह हुआ तो जरा सँभली। नसीब, पुत्तर पड़ा पेट तो विचारा वज़ीरा पूरा हो गया सरसाम से। दुःखों की मारी है विचारी।"

चाची महरी चरखे के आगे जा बैठी—"तक़दीरें, और क्या ! चल, पुत्तर की खैर मना। तेरी सास को भी बड़ी इन्तजारों से यह घड़ी नसीब हुई।"

चाची ने शाहनी को हांक दी—"बच्ची, मेरी बात सुन। कल सूत अटेरती थी तो ऊँघ आ गयी। देखती क्या हूं, जुलाहा सूहे रंग का खद्दर दे गया है और मैं तावली-तावली गुत्थी में से पट्ट की लच्छियां निकालती हूं !

"बस, नींद उघड़ गयी। जी में आता है दोनों जातकों की बहूटियों के लिए फुल्कारियां क्यों न छोट लूं। एक-एक बूटी भी रोज डालूंगी तो इनकी घुड़चढ़ी

तक मुकम्मिल हो जायेगी।"

शाहनी खबरें कैसी अँखियों चाची महरी को देखने लगी कि चाची हँसकर बोली, "बच्ची, जो तेरे दिल-मन आया है वह गलत नहीं। कौन तब तक बैठी रहूँगी। यही न! लम्बी वाट ने एक-न-एक दिन मुकना ही है।"

"चाची, कहाँ से कहाँ ले बैठी बात को!"

छोटी शाहनी जिठानी की मदद पर आ खड़ी हुई—"चाची, जो अपने पिण्ड में लाला वड्डे और वेवे निक्की जैसे वड्डे-वडेरे माजूद हैं तो खैर सदके तुम अभी निश्चिन्त रहो।"

"नजर कुछ धुंधली पड़ गयी है, पर पास से वाह-वाह देख लेती हूँ। लो री, मेरे मन की बात सुनो— नंगा दिहाड़ा देख फुल्कारियाँ शुरू करती हूँ। मेरे हाथों तोड़ चढ़ गयी तो लाड़लों की वरी में ढोहना न भूलना। विन्द्रादइये, तेरे पुत्रों की वहूटियों के लिए तेरी जिठानी काढ़ेगी फुल्कारियाँ।"

हुसैना ने ऊपर हाथ उठाये—"खुदावन्दा करीम, तेरे निगाह-करम से यह मुबारक घड़ी आये। जी सदके, ओढ़ाऊँगी तुम्हारे हाथ की फुल्कारी हांडे की वहूटी को। पहले आकर तुम्हें सलाम करेगी!"

"शाह साहिब, आप खैरों से शहर हो के आये हैं। भला क्या गर्म थी कल गुजरात सर्राफे!"

"जहाँदादजी, एक ही किस्सा सबकी जबान पर! मदीनेवाले वड़ैच का!"

चौधरी फतेह अली ने सिर हिलाया—"कोई कत्ल का मामला है क्या!"

शाहजी ने सुथरी आवाज में सब शक-शुबह मिटा दिये—"यार-प्यारा तेलियों की लड़की को ले उड़ा।"

"शाहजी, क्या लड़के के नाम की भी भिनक पड़ी कान में? वड़ैचों के एक घर को तो मैं भी जानता हूँ। दो भाई हैं। मन्दा और समन्दा।"

"गालिबन वही हैं मौलादादजी। पार के साल मन्दे को कत्ल के लिए उम्र-क़ैद हुई थी।"

"अब हो गयी बात साफ। पकड़ा गया है कि नहीं वड़ैच पुत्तर? भाग निकला तो टल्लागंज के पार, पकड़ा गया तो अन्दर!"

"असल बात तो जाननेवाली यह है कि लड़की बालिग है कि नाबालिग!"

फतेह अलीजी बोले, "बन्दा इस नाकस मामले में पकड़ा जाये त
दिलासे का ही खेल समझो। भूल-चूक लड़की की बोहनी भी हो ज
पाँच साल-छमाही तो इधर-उधर कर लिये जाते हैं।"

कक्कूखाँ साफ़े को लपेटनियाँ देने लगे—"ऐसे मुक़द्दमे में अमू
गवाह नहीं मिलते।"

शाहजी ने दूसरा सिरा पकड़ लिया—"पुलिस ने दफा दर्ज क
इसलिए जाँच-मुआयना तो बराबर करवाती है!"

तापा मैयासिंह को कोई पुराना हादसा याद आ गया—"व
तो दर्ज होती है पीछे, पहले बारी-बारी सिपाही, हौलदार और
मुफ़्त की मिठाई मुँह लगा छोड़ते हैं।"

"तायाजी, यह तो टण्टे हुए न पीछे के। पहले तो बात सही यह
के याराने बुरे।"

मौलू कभी-कभार इश्किया टप्पे जोड़ लिया करता था। खी
"एक मुहब्बत ही रह गयी थी दुनिया में पाक-साफ, उसे भी बदमा
कर डाला।"

नजीबा हँसने लगा—"मौलू बादशाह, सुना हुआ है न—साक
प्रीत तो पलीत। सगे-सम्बन्धी तो हुए न ऐसे ज्यों सोने की सलाख
दोस्ताना-याराना बन्दे का आज है, कल नहीं। दिल में फ़रक आ
को पलीत होते कोई देर लगती है!"

कृपाराम छिड़ गये—"चन्नजी, लगियों के पन्थ न्यारे। शाहज
अपना आलमगढ़िया चौधरी खत्रीशाह फँस गया जवाहराँ धोबन मे
का। कौन बचाये! भाइयों ने चौधरी को डराया-धमकाया पर मुहब
मानना था! चौधरी ने अपने हाथ से फ़ारिगख़ती लिख दी। मा
चौधरी शाह रह गया धोबन के लिए।"

"बल्ले बल्ले, आशिकों जिगरों से!"

आलमगढ़िये शाह शाहजी के शरीक भाई थे, सो शाह साहिब ने
और गण्डासिंह के आते ही मजमून बदल दिया—"आओ खालसो, बै
आज किन कामों में रुझे रहे?"

"मंजी की चूल हिली हुई थी। ठोक-ठाक सही की और इधर
लिया।"

चारखाने खेस की बुक्कल मार गण्डासिंह चारपाई पर शेर की
गये। ताड़ लिया बैठक में कोई खास क़िस्सा चालू नहीं, बस शुरू
"बादशाहो, सुनो किस्सा चार यारों का। हुआ यह कि रणजीतसिंह

है। चारों दर्शनी जवान। सूरत-सीरत में अव्वल और आला!"

चौधरी फतेह अलीजी पहले भी सुन चुके थे यह क़िस्सा किसी शादी-ब्याह में, पर खालसे की खुशकलामी करनी जरूरी समझी—"गण्डासिंहा, अगर यह मन घड़न्त क़िस्सा नहीं तो उन चार के नाम तो कहीं लिखत में होंगे न!"

"बराबर जी। लो सुन लो नाम उनके। भूलने का तो कोई काम न हुआ। भूपिन्दरसिंह सन्धू, जीतसिंह, रामसिंह और हरदाससिंह।

' महाराजा का हुक्म हुआ—'चारों को दरबार में पेश करो।'

"चारों जवान पेश हुए। कड़ियल बदन। नाक-नक्शा सोहणा। चाल-ढाल बढ़िया।

"महाराजा ने हुक्म दिया—'चार यारों को एक ही रसाले में भरती किया जाये और रसाले का नाम रख दिया जाये—चार यार रसाला!' "

शाहजी ने एक मनका और पिरो दिया—"बादशाहो, यह चार यार रसाला खालसा वक़्तों में बहादुरी के लिए बड़ा मशहूर हुआ।"

मौलवी इल्मदीन कुछ और सोच बैठे—"असल बात तो यह शाहजी, कि गण्डासिहजी के ननिहाल महाराज के गोले शाहज़ादों की जागीर में हैं। आये-दिन तभी वहाँ के क़िस्से-कहानी सुनने को मिलते हैं।"

"मौलवीजी, बहादुर जाँबाज़ों की यादें तो आप ही ताजा होती रहती हैं। फिर ये दोनो शाहज़ादे महाराज को बड़े अज़ीज़ थे। महाराज ने एक को दिया स्यालकोट का इलाका और दूसरे को कड़ियावाले का।"

मौलवी इल्मदीन तवारीख में दखल रखते थे। क्यों पीछे रहते—"बाद में जम्मू के राजा गुलाबसिंह के कहने पर ढोंकलसिंह सिपहसालार ने लाहोर फ़ौज की मदद से दोनों भाइयों पर चढ़ाई कर दी। जोर-ज़बर से दोनो की जागीरें हथिया लीं। दोनो शाहज़ादे तब मजबूर होकर कोटलीवाले बाबा महताबसिंह की शरणी पहुँचे थे।"

शाहजी ने एक और जानकारी जोड़ी—"कुँवरों को इन हालातों में देख मुसलमान नजीबों की टुकड़ी ने उन पर हमला करने से इन्कार कर दिया था। बादशाहो, यह ज़माना वह था जब अपने इलाके का कारदार ज़मीनों के मामले जम्मू सरकार को भरता था।"

"शाहजी, इससे तो सही यह हुआ कि इलाक़ा अपना डोगरों के क़ब्ज़े में भी रह चुका है!"

"पढ़ने में आता है कि जम्मूवाला जल्ला मिश्र बड़ा मन्सूबी था। बड़े-बड़े गोंदे और मन्सूबे किये। ज़ुल्म ढाये। कहते हैं न, ब्राह्मण बरछे से नहीं, गुस्से में मारे!"

मैयासिंह सोते-सोते जाग पड़े—"बड्डे लाले से सुना करो इसकी बातें। इस जल्ले ने तो अन्त मचा दी। यहाँ तक कि अमीर दोस्त मुहम्मद के एलची की सिक्ख

दरबार मे ऐसी-तैसी फेर दी।"

"पान्दे-पण्डित गद्दी पर बैठ जायें हकूमत करने को तो अपना हुक्म-हासिल देख के जरते नही। और मचते है।"

शाहजी ने मजलिस के आगे बाबर का दरबार खीच दिया—"किसी संगीन जुर्म मे पकड़े गये नौजवान को बाबर के दरबार में पेश किया गया तो बाबर बादशाह ने पूछा, 'नौजवान, बहलोल लोदी कैसा बादशाह है !'

"जवान ने झट जवाब दिया—'हज़ूर, घोड़े बख़्शनेवाला।'

"बादशाह ने अगला सवाल पूछा—'और बहलोल लोदी का लड़का सिकन्दर लोदी !'

" 'बादशाह सलामत, वह सरोपे बख़्शनेवाला !'

" 'नौजवान, अब बेखौफ होकर कहो कि बाबर कैसा बादशाह है !'

"नौजवान ने बेधडक जवाब दिया—'पादशाह बाबर गुनहगारों के सिर बख़्शनेवाला !'

"इस हाजिर-जवाबी पर बाबर बडा खुश हुआ और हँसकर कहा, 'नौजवान, तुम आज़ाद हो। तुम्हे बाबर बादशाह ने बख़्श दिया।' "

"सुभान अल्लाह शाह साहिब, निचोड तो यह निकला बात का कि घर-घराना और खानदानी राजों-महाराजों, शहंशाह-पादशाहों में भी !"

मौलादादजी ने ढीले पग्गडवाला सिर हिलाया—"कहते है न, असली मुर्ग और असल मुगल दूर से पहचाने जाते हैं। बदोबदी कोई बाबर का पुत्तर-पोत्तरा थोड़े ही बन सकता है !"

मीरांबख़्श के दिल में कचहरी की धुक्धुकी लगी थी—"शाहजी, सफ़ेदपोश अख्तर हुसैन और जैलदार उमरदीन के मुकदमो का क्या हुआ !"

शाहजी हँसने लगे—"मीरांबख्श, हुआ वही कि मुग़लानी बेगम सोयी रही और लाहोर छेकड़ तीस लाख में बिक गया।"

"यह क्या किस्सा है बादशाहो !"

काशीशाह ने सिर हिलाया—"लाहोर ने बिकना ही था। मीर मन्नू की मौत के बाद मुगलानी बेगम लाहोर सूबे की जनान-शाह बन बैठी। गद्दी पर हाकम हुई जनानशाह तो चौफेरे आ घिरे जनान-मन्त्री। बेगम ने चुने सलाहकार खुसरे ख्वास। मियाँ खुशफहम, मियाँ अर्जमन्द और मियाँ मुहब्बत !"

कर्मइलाहीजी बोलने लगे—"लख लानत। बादशाहो, यह तो लाहोर के आला तख्त ताज की हत्तक हो गयी न ! डग्गी छिनाला जनानी सूबेदार बन बैठी !"

चौधरी फ़तेहअली ने हामी भरी—"सच कहते हो कर्मइलाहीजी ! कहा है न किसी ने कि रण्ड भण्ड सब इकट्ठे !"

हाज़री में तो हैदरशाह ही हुआ न लान बहादुर रसालदार। ओ जी, पशुओं को क्या पता कि मालिक अस्तबल का यह कि वह!"

बड़ी मर्जियाँ हिली, बड़े क़हकहे लगे।

शाहजी ने फकीरे को शाबाशी देनी ज़रूरी समझी—"फकीरेया, जान पड़ता है जन्म-पुट्ठी में तेरी दादी-नानी ने शहद की जगह तुम्हें कुछ खट्टा-मिट्ठा चटाया है!"

"याद तो पडता है शाहजी, एक तो था सुच्चे फूलों का गुलकन्द और साथ था आम के अचार का चूपा!"

मौलादादजी ने घुड़क दिया—"बड़ा हास्से खाँ बनता है। सभा में बैठने की तालीम न भूल जा!"

नवाब ने वारी वारी चिलमें ताज़ी की तो गुरुदित्तसिंह बुडबुड़ाने लगे—"गुड़गुड़ बुड़बुड़, हर वेले चिलम और हुक्कडी! पूछो बन्दो से, तम्बाकूनोशी से अपने ही कालजे फूंकने पर लगे हो!"

चौधरी फतेह अली हँस-हँस दोहरे हुए—"खालसाजी, आपको तो तम्बाकू का धुआँ नहीं सुहाता, पर जिन माहनड़-साथो को चिलम का दम लगाये बिना दम ही न आये वे विचारे अपने दम को दम कैसे दें!"

"ओ दमो के लोभियो, मेरी तरफ से मारते जाओ दम-सूटे और गुड़गुड की आवाज़ सुन शतावी-शतावी आन पहुँचेंगे जमदूते।"

कृपाराम ने उठकर गुरुदित्तसिंह के घुटने छू लिये—"तम्बाकू का गुस्सा मनुक्खों की इस बैठक पर तो न निकालो! थूक डालो!"

कर्मइलाहीजी ने टेक बढ़ायी—"गुरुदित्तसिंहा, ये जिन्द-जहानवाली बैठकें अपने पिण्ड की, भोले भाव ऐसे ही सजती रहें! चलती रहे!"

मौलादाद ने गुफ्तगू चढते की ओर मोड़ दी—"शाहजी, अपने लालीशाह की आमद मे कोई रंग-तमाशा ज़रूर हो!"

"बराबर बादशाहो, ज़िन्दगानी का फल बेटा। इससे सवाया मौका और क्या है रस-रंग का!"

चौधरी फतेह अली निक्का-निक्का मुस्काये—"सवाल नाच-मुजरे के आने या न आने का नहीं। सवाल तो इतना ही है कि गुजरातवाली उम्दा आये कि वज़ीराबादवाली मुम्ताज़!"

शाहजी ने छोटे भाई की ओर देखा—"इस महकमे के मालिक काशीराम। भगतजी की मंशा होगी तो आपका यह काम बन जायेगा।"

कर्मइलाहीजी ने सिफ़ारिश की—"सूफीजी, गाना-मुजरा तो आप जानो ज़ियारतों पर भी! परवावा तो बीच में इतना ही न कि नाम ले रब्ब का बन्दा नाच-तमाशा भी देख डाले।"

ताया मैयासिंह ने अपना सारा जोर इसी पलड़े पर डाल दिया—"काशीरा
नाच-मुजरे की भाज न मार देना। आंखें मीटने से पहले एक झलक बीबियो
हमें भी देख लेने दे।"

छोटे शाह बड़ा मिट्ठा हँसे—"तायाजी, आपकी फ़रमाइश नही, फरमान
हमारे लिए!"

गण्डासिंह ने कान के पास मुंह ले जाकर कहा, "आप बीबियाँ जरूर देखोगे
काशीराम, इसी जून मे दिखा छोड़ो ताये को। कहीं अरमान न लगा रहे!"

"कर्मइलाहीजी, जट्ट किसान के भाने मुन्सिफ़-मिम्बर एक ही बात। उसक
दर्जा-ब-दर्जा क्यो जाँचना-फलोरना। वह कोई फौजी कन्धा तो नहीं कि
बन्दा देख के सही करे कि पट्टी पर चमन चीन चढा हुआ है या लाहसा चित्राल।'

"सोलह आने सच्च। शाह साहिब, वह सुनी हुई है न आपने। टाँडेवाले
लबाणे बलकारसिंह का पुत्र क़ुरबानसिंह चित्राल लश्कर से परता तो दिन चढ़े
फौजी वरदी-पोशाक कस के घर-घर अपनी झाँकी देता फिरे। जोड़ीदारो ने
समझाया—'अव्वल तो आप ही अपनी टश्श दिखाना वाजिब नही। दोयम पट्टियो
को देख-देख तेरे हासद पैदा हो जायेंगे।'"

"बात तो, चौधरीजी, दो-टूक हुई। आप जानो डौले-छाती तो दूसरे गब्ब-
रोटों के पास भी हुए न! छाती पैंतीस-छत्तीस, कद छः-पौने छः। बाक़ी फेफड़े-
पुर्ज़े ठीक हों तो जट्ट-जवाटरे हल-पंजाली छोड़ छावनियों के दाइये छूने क्यों न उठ
जायेंगे! फिर ज़िमियों पर काम कौन करेगा!"

फ़तेहअली जी बोले, "बादशाहो,, टाँडे के तो घर-घर मे फौजी कन्धा। एक-
दूजे से कौन कम! जहाँदादजी, आपकी पल्टन मे होंगे टाँडे के लबाणे!"

"जी, बराबर! टाँडा, फालियाँ, खैरियाँ, शाहपुर, गुजरात—अपना इलाक़ा
तो भरा हुआ है न पलटनों में।

"फालियाँवाले मानसिंह का दोहित्र सुजानसिंह और नोशहरेवाले इमदाद अली
का भतीजा फरियाद अली रसूलपुर लण्डीकोतल पहुँचे हुए हैं।"

"जहाँदादजी, रब्ब आपका भला करे, फ़रज़न्द अपने मियाँदाद और बख्श
किस पलटन-रसाले में हैं?"

"शाह साहिब, मियाँदाद २६ पंजाब और बख्श खाँ पंजाबी मुसलमान।"

गण्डासिंह बड़े खुश हुए—"३३पंजाब में ही होगा न !"

"इसके साथ चार-छ: पलटनें लगी हुई हैं—चार कम्पनियां तो है पंजाबी मुसलमान, दो पठान, और दो लवाणा।"

गण्डासिंह पहले खुश हुए, फिर किसी सोच में पड़ गये। वह जवान मौसम कहां फ़ौज के !"

"यारा जहांदाद, यह नहीं हो सकता कि मौसम बहार फिर बदल जाये ! आपां लम्बी छुट्टी के बाद फिर अपनी ड्यूटी रिपोट करें !"

जहांदादजी बड़ा मुख्तसर-सा हँसे—"बादशाहो, मुझसे क्या पूछते हो ! मुझे तो हुक्म करो !"

"ओ ४० पंजाबा, जेकर यह बन्दे के अपने हाथ में होता तो फ़ौजें-पलटनें दुश्मनों को छोड़कर समय को क़ैद न कर लेतीं !"

फ़तेह अलीजी ने खँखारकर कहा, "गण्डासिंह, अपना ध्यान पलटा ले। इन बातों में कुछ नहीं रखा। अपनी जिवियों की तरफ देखा कर।"

जहांदादजी ने बात का पुराना तार पकड़ लिया—"शाहजी, जिस साल मियांदाद की भरती हुई है, उसकी पलटन का पचास सालाना जश्न मनाया गया [illegible] र

[illegible] म

[illegible] के

के तौर पर उन्हें दी जायें। सिर्फ इतना ही नहीं, जाती बार दोनों को सलामी भी दी गयी।"

"वाह ! इज्जत हुई न !"

"अपने काका बख्शश खां को पट्टी तो मिल चुकी है न !"

"जी हां !"

दीन मुहम्मदजी ने सराहना की—"फ़ौजियों का टब्बर है। बाप-दादे बन्दूक सजाते आये।"

कक्कू खां बोले, "कवायद तो नहीं, पर मेहनत तो जिवियों पर भी होती है न ! असल तो वरदी है जो बन्दे को सवाया कर देती है।"

"जट्ट को पहन पचर पोशाकें क्या कहे। आख्यान है न—चिट्टा कपड़ा और कुक्कड़ खाना, उस जट्ट का नहीं ठिकाना।"

मौलादादजी बोले, "अपनी-अपनी कार और अपने-अपने साज-सिंगार ! फ़सलों की रंगत-रूप हत्थ की मेहनत से, अल्लाह तआला की बरक़त से ! यह तो ठीक है, महीन कप्पड और मुर्ग-पुलाव से खेती की वाही-गाही नहीं होती।"

शाहजी ने बात उठा ली—"मौलादादजी, बड़ी सयानफ़ की बात की है आपने। मनुक्ख बच्चा बनकर धरती का ओढ़न न पकड़े तो धरती मां क्यों दूध

पिलाने लगी ! अपने वेद-शास्त्र भी यही कहते हैं कि धरती माँ को आदर-प्यार से सींचा-सराहा न जाये तो माँ के थनों की तरह धरती के मुम्ब भी पूरी तरह नहीं खुलते। जो मुम्ब न खुलें तो दूध की धाराएँ तो आप ही रुक गयी !"

कृपाराम ने सिर हिलाया—"अपने शास्त्रों की भी क्या तुलना ! ऐसे-ऐसे मोती-माणक भरे पड़े हैं—"

"कत्ता कलाम माफ कृपारामा, बेशक पोथियाँ-किताबें बयान करती रहें, पर खूबी तो खैरों से धरती की ही हुई न !"

"आओ मुहम्मदीन, सुना था सवारियाँ जलालपुर पहुँची हुई थीं।"

मुहम्मदीन पाँव के भार ज़मीन पर ही बैठ गये—"ज़रा तिल्लर बीज की ओकड़ बन आयी थी। नमाज़ वेला निकला घर से और पेशी वेला पिण्ड वापस !"

"मुहम्मदीन, तिल्लर बीज की अपने पिण्ड में कौन कमी थी ! कौन-से मानी-दो मानी चाहिए थे। एक एकड़ के खेत में दस-पन्द्रह सेर ही तो ! अल्लाह-रक्खे से ले ली होती !"

"शाहजी, अल्लाहरक्खे ने नरमा कपाह बोयी है। पिछली फ़सल अपनी चंगी न हुई थी। डोडा इट्ट के खिला ही नहीं।"

"मल्लड़ की कमी रह गयी होगी। नहीं तो वजह कोई नहीं कि नरमे का डोडा न खिले।"

"नजीबेया, इस बार पोना लगाया है न ! जलन्धरी कि सहारनपुरी !"

"जलन्धरी। पिछली फ़सल चंगी हो गयी थी।"

मुहम्मदीन ने कश लेकर हुक्का परे कर दिया। फिर खाँसते-खाँसते कहा, "अपनी पिछली फ़सल तो लेन-देन में ही औन-पौन हो गयी। इस बार नरमा छोड़ तिल्लर पर दिल बनाया है। देखो !"

शाहजी ने जैसे रम्ज़ समझ ली हो—"मुहम्मदीन, रुपये पर चार आने का कि एक बीघा पर एक पण्ड दानों की !"

"आप बताओ क्या कहूँ ! शाह साहिब, न काँटोंवाली वाड़ चंगी और न वाले काँटे। जट्ट किसान को तो दोनों तरफ़ फाई !"

गुरुदित्तसिंह ने टोका—"पेंडा मार के थक तो गया है मुहम्मदीन, पर यह वितण्डी हुज्जतें ले बैठा !"

काशीशाह ने हल्का कर दिया—"जी में घुब्ब-घुब्बात हो तो निकल जाने में हर्ज नहीं।"

मुहम्मदीन फिर शुरू हो गये—"बादशाहो, रुपये पर चार आनेवाली दस्ती

का तो यह हाल कि सूद आज सोया, कल ब्याहा और परसों सू गया। पैसा सूद रुपये पर अपने को यूं नहीं सरता कि गहने-गट्टे की पोटली तो ख्वाब ही हुआ!"

कर्मइलाही, नजीबा, कक्कूखां—सब शाह साहिब की वहियों से बंधे थे। मुहम्मदीन की बात सुन कोई चिलम को फूंकें मारने लगे, कोई दबादब कश खींचने लगे।

काशीशाह ने भाई के माथे पर तेवर उभरते देखा तो कहा, "भ्राजी, कभी सरकार भी छूट दे देती है मामले की। आज हो जाये मुहम्मदीन का काम तो कोई हर्ज नहीं।"

शाहजी ने भाई की ओर देखा, फिर आसामियों पर निगाह डाली और चौधरी फ़तेहदीन से कहा, "आप गवाह हैं चौधरीजी! यह सूफी भाई मेरा हिसाब-किताब कुतरता ही रहता है। 'ना' करूं तो मैं हल्का, 'हां' करूं तो हिसाब हल्का।"

"शाहजी, यह फुद्दी-योहन सूअर की नस्लवाला कर्जा चीटी चाल से हाथी बनता जाता है। बन्दा इसकी सूंड पकड़े, पूंछ पकड़े, क्या करे!"

मौलादादजी ने हाथ से रोका—"मुहम्मदीन, सहजे से। बोल-चाल जट्टी यूं ही मोटी, उसे और ही खुरदरी न कर दे! शाहजी, ख्याल न करना!"

शाहजी छोटा-सा हंस दिये—"मौलादादजी, भरम न करो। यहां बैठे सब जने इसी अक्खड़ बोली की औलादें हैं। एक-दूसरे को खूब समझ-समझा लेते हैं।"

नजीबा बोल पड़ा—"आप्पां पिण्ड के चंगे। शहरियों की इत्र-फुलेली बातें किस काम की! न पता लगे हां करते हैं, न पता लगे न!"

गुरुदित्तसिंह बोले, "लाहोरियों का किस्सा सुना हुआ है न शाहजी! पिण्ड का एक बन्दा परोहना बन के लाहोरियों के घर जा ठहरा। रात को सोया। तडके उठकर सैर-सपाटे जाने लगा तो भोले भाव पूछ लिया—'रोटी तैयार हो तो खा जाऊं।'

"अन्दर से आवाज आयी—'रोटी भी तैयार है, गड्डी भी तैयार है। जो चाहो करो। गड्डी पकड लो। रोटी खा लो।'

"बन्दा बोला, 'अभी तो हूं मैं दो-चार दिन!'

"हमारी तरफ से ख़ैर सदके, पर यह न हो आपके बच्चे उदास हो जायें!"

लाहोरियों-शहरियों के खच्चरपन पर सब हंसे। पूछो—यह क्या विग-डिग है! क्या एक ही बात काफी नहीं—या जाओ या न जाओ!

हवेली में लगे ताज़ी चरी और पट्ठों के ढेर की हरियाती खुशबू देर तक मजियों और नाकों पर लहराती रही।

छोटे शाह बोले, "मुहम्मदीन दोस्तदारी निभाने गये थे जलालपुर। बीज का तो बहाना ही था। अरक मुहम्मद अब राजी है न!"

"बेहतर है शाहजी! खून में नुक्स हो गया था। पच्छ लगवाये और ठीक हो गये।"

"इस बिमारी का अकसीर इलाज ही यह है। जोंकें गन्दा खून पी डालती हैं।"

"और कुछ नयी-ताज़ी सुनी हो अड्डे पर!"

"कहते हैं सरकार हुक्म निकाल रही है कि खेत में खड़े रुक्ख-वृक्ख बिना सरकारी इजाज़त किसान न काटे!"

"ज़्यादती है यह सरकार की। अपने खेत में खड़े हों तो ज़रूरत-मजबूरी से ही काटेगा न बन्दा! सरकार के आगे हाथ फैलायें! वह भड़वी कौन!"

"बादशाहो, नहरोंवाले नौदौलतियों ने अन्त मचायी है। ज़मीनों में बंगले डाल दिये! मार सोने के कण्ठे छाप छल्ले पहन-पहन घूमें। देखके सरकार ने मामला बढ़ा दिया। जो जट्ट पहनने लगे सोने के कण्ठे तो समझो खुशहाली ही खुशहाली!"

मुंशी इल्मदीन की बन आयी। बड़ी देर से चुप बैठे थे—"पीछे जमींदारी लीग ने लहौर में बड़ा जल्सा बुलाया था। मियाँ शहाबुद्दीन, मियाँ मुहम्मद शफी और सरदार अजीतसिंह ने ज़ोर-शोर से तकरीरें कीं।"

"काशीशाह, आपका अखबार क्या कहता है!"

"दंगे-फिसाद और खींचातानियाँ बढ़ रही हैं। 'पगड़ी सँभाल ओ जट्टा' की मुमानियत स्यालकोट छावनी तक भी आन पहुँची है।"

फ़तेह अलीजी ने हुक्के की नढी मुँह से निकाल ली—"सरकार की यह बात मन को रुचि नहीं। फ़कत एक मोटे जट्टी गाने से हकूमत का तख्ता पलटता हो तो अगर सारा मुल्क लगे यह गाने, तो क्या सरकार फिरंगी ताज-तख्त छोड़ जायेगी हिन्दोस्तान का!"

"दरअसल सरकार हुब्बलवतनी के गाने पसन्द नहीं करती।"

"नहरी क़ानून बारे जलसा हुआ तो झंग सयाल परचे के मालिक बाँके दयाल ने कही यह नज़म सुना डाली—

पगड़ी सम्भाल ओ जट्टा
सीने पे खावे तीर
राँझा तू देख है हीर
सँभल के चल तू वीर!

"सरकार पीछे पड़ गयी। दंगे-फ़सादों से तो पहले ही परेशान। समझा होगा गदर का नारा है!"

गुरुदित्तसिंह ने माड़ा-सा पग्गड़ हिला दिया—"इशारा तो यही था न कि

खेतीहरो, अपनी पगडी-पत्त सँभाल के!"

कक्कूखाँ बोले, "पूछो सिर की पगड़ी और हल-पंजाली छोड़ के जट्ट किसान के पास और ज्यादा रखा ही क्या है! नहरियों की बात छोड़ दो।"

काशीशाह बोले, "असल घुण्डी तो बंगाल के दो टुकड़े होने में है।"

मौलादादजी को बड़ी सूझी—"शाह साहिब, बात बंगाले की तो ऐसी हुई न जी कि अगर किसी शरीक के पढ़ाये-लिखाये दो पुत्तर लड़ने-भिड़ने लगें तो आखीर को कुनबा विलग-वक्ख होकर ही रहेगा।"

मुंशीजी ने सिर हिला ताईद की—"बँटवारे-अलहदगियाँ तो घर-घर। मुल्की जोड़-बन्द की भी कई मिसालें हैं। दिल्ली अपने पंजाब के साथ मिली हुई है। खानदेश में कई बार ऊपर-हेठ हुआ। सूबा आसाम के टुकड़े इधर-उधर हुए!"

"जो कुछ भी कहो, असल रफ्फड़ नहरिये नौदौलतियों ने ही डाला!"

"बात यह है चनाब कलोनी में तो ज्यादातर हैं ही फौजी जट्ट। अड़ गये।"

कर्मइलाहीजी ने बड़ी सयानफ़ से सिर हिलाया—"वह तो ठीक है, पर लोगों के हाथ क्या लगा! लाजपतराय और अजीतसिंह को जलावतन कर दिया सरकार ने! शाह साहिब, पीछे रह गयी खलकत, सरकार की मुर्दाबादियाँ बुलाने को!"

फतेह अलीजी भी गरमा गये—"रावलपिण्डी दंगे हुए। लाहौर हो गये। सरकार पकड़-पकड़ हत्थकड़ियाँ लगाती रही।"

"सज्जनो, किसी तरह अमन-चैन तो सरकार ने लाना ही है न!"

काशीशाह बोले, "सरकार की नीति-मंशा बहुत अच्छे नहीं। अखबार पंजाबी ने बेगारीवाली खबर छाप दी और सरकार ने उठ के हफ़्तावारी अखबार के एडीटर को क़ैद कर लिया।"

गुरुदित्तसिंह पूछ बैठे—"मैंने कहा यह बेगारीवाला क्या टण्टा!"

"बात ऐसे हुई कि अँग्रेज अफसर एक दौरे पर गया। आप घोड़े पर और बन्दे सामान-असबाब लेकर पैदल। दस-पन्दरह कोह पैंडा चले होंगे तो ढोइयों ने साहब को कहा, 'जरा साँस ले लें। पानी पी-पा आगे चलेंगे।'

"साहब का हुक्म हो गया—'नहीं! रुकेगा नहीं! चलो!'

"बन्दे घोड़े के साथ-साथ दौड़ते रहे और चिट्टी चमड़ीवाला अपनी बद-दिमागी और मगरूरी में अपनी नाक की सीध बेतहाशा घोड़ा दौड़ाता रहा।

"अँधेरा पड़े गोरा बहादुर नहरी बँगले पर पहुँचा तो देखा बन्दे गायब।

"अगले दिन उसी रास्ते से लौटा तो दोनों राह में मरे पड़े थे।"

"शाहजी, यह तो परले दर्जे की बेग़ैरती-बेदिरेगी हुई!"

"जुल्म जी जुल्म!"

"और सुनो, दोनों बन्दों के घरवालों को सरकार ने पचास-पचास रुपये देकर

मुँह बन्द कर खलासी मुकायी !"

"एक तो हादसा यह और दूसरी खबर एक शिकारी बारे। दो शिकारी गये शिकार को। एक अंग्रेज और एक देसी। हाकेवाले भी साथ। उन्होंने आकर खबर यह दी कि अंग्रेज शिकारी ने मचान पर जाने से पहले ही देसी शिकारी का शिकार कर दिया।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बादशाहो, गोरों के सिर हकूमत का ग़लबा चढ़ गया है।"

शाहजी ने अपनी जोड़ दी— 'लाहौर में 'हिन्द' अखबार के पिण्डीदास और 'पंजाबी' के अथावले को जब पुलिस ने हथकड़ी डाली तो भीड़ मच गयी। यह हंगामी हालात अपने मुल्क के लिए अच्छे तो नहीं न !"

नजीबा फ़क़ीरे के पास ढुककर कुछ खुसर-पुसर करने लगा तो दीन मुहम्मद जी ने टोका—"क्यों नजीबेया, क्या गोशा है !"

"न जी, गोशा क्या होना था ! फ़क़ीरे से कह रहा था कि देखो, खोज-खबर तो शाहों के पास। सलाह-मशविरा सो भी इनके पास। जिवियों के हिसाब-किताब, धन-दौलत जो भी बन्दे को चाहिए वह इनके पास ! साहिबे-नसीब हुए न !"

फ़तेह अलीजी ने हुक्का छोड़ फरमाया—"बरखुरदार, यह सब चंगी अक़्ल-बुद्ध और तालीम की बरक़तें हैं। जट्ट हो या शाह, तालीम ही फ़ैजयाब करती है।"

गोमा नकमी की सौतन भोली खा-पी सुखंह हुई। दूधारने में थापी लगा दूध की कड़ाही रख दी और गोद में पच्छी रख सेंवइयाँ वट्टने लगी। शुक्र है रब्बजी, मुझे सुख का साँस तो आया। सौकन मेरी न्यारी रहे, न्यारा खाये-पीये। जब देखो साईं से खीझा-खीझी। चटाक-पटाक। रात चोली दुट्ट पड़ी वैरन को।

मेरे मना, तू ही बता इसमें मेरा क्या दोख। कटोरा भर दूध का उसकी मंजी की ओर बढ़ी ही थी कि पीछे से झपटा मार भड़वी ने मेरी चुटिया खींच ली। …ाप करने लगी—"अरी कुत्तिये, कभी मेरी ओर भी देखने दिया कर इसे !

हाय रे ज़ुलमिया, तू विरला ही नहीं जन्मा दो जनानियोंवाला। दीनिये चार-चार रखते हैं। नये-पुराने मनुक्ख की कद्र करते है। आज इसके पास, कल उसके! है री कंजरिये, दस साल से यह मेरा मर्द! तू कल परणाई और उस पर पूरा कब्जा कर लिया। हाय-हाय री, सड़े तेरी सेज!"

साईं ने उठकर मारना ही था न! चल चंगा, कुछ दिन को तो ठण्डी रहेगी!

भोली ने मटककर ऊपर देखा और गोमा को सुनाने के लिए हेक निकाल ली और हौले-हौले गाने लगी—

"वाह वाह री वाह वाह
कि पुल्ल अजवायन का
कि वाह री वाह वाह
कि नखरा नायन का।"

आवाज सुन गोमा ने कोठे पर से नीचे झांका—"दुर फिट्टे मुंह! चली है खसम के लिए सेंवइयाँ बनाने। अरी, मैंदे में चुटकी-भर मोहरा डाल ले मोहरा!"

भोली ने मटककर ऊपर देखा—"कहे तो तेरे पूर मे डाल दूं! खलासी हो! सुख का सांस तो आये!"

"हां री हां, बेटी-बेच दलालों की धिया! तेरी खलासी न हुई अब तक मेरे हाथों। सब्र कर, वह दिन भी दूर नहीं!"

भोली विफरी—"लोक-जहान सुन ले मेरी वैरिन की बात! कभी सुना है कि सौतन साड़े से इतना सताये! अरी मेरा मायका बेटी-बेच है तो तेरा तो माना-परवाना शाह-शाहूकारेवाला है। वेग़रतों ने बाँझ-बंजर धी डोले चढ़ा दी!"

पडोसन वीरांवाली से न सुना गया—"मुँह पर लगाम दे री भोलिये। वह पहले जली हुई है तेरे हाथो। समय ने उसे कम नही सताया। वहन मेरी, कोख-कुच्छड़ की बात तो मनुक्ख के हाथ नहीं। वह दाते का प्रशाद है।"

भोली ने जल-बलकर चूल्हे मे से धुआंखी लकडी उठा ली—"अरी सौतने, आज तू मेरे हाथों नही बचती। तेरे झाटे मे आग लगा के रहूँगी। काले पानी पहुँच गयी तो भी सुख। इस कल-कलह मे तो छुटकारा पा जाऊँगी।"

गोमा ने बनेरे से नीचे झांका और हाथ फैला बोली, "कमजाते, डर के! ऊपरवाने से डर के!"

भोली ऊँची-ऊँची डुसकियां भरने लगी—"हाय रे रब्बा, तूने मेरी तकदीर को ऐसी खूंटी गाड़ दी कि उठते-बैठते मेरी आंखो के आगे सौतन लटकी रहे। हाय ओ…"

"चुप री मकरो, गोमा विचारी पर तू सौत बनकर आयी, ऊपर से यह खेखन! अरी, जनानी के लिए यह त्रास है त्रास!"

भोली की छाती मे भब्बड़ मच गये—"अरी फलानियो-ढिमकानियो,

सौकन की तरफ़दारनो, मैं अपना डोला आप ही उठाकर नहीं लायी ! पू
पोपरी ठोठी से, एक कतूरा ही जन डालती ! मुझे भी कोई दूजा ठिया
जाता !"

गोमा के नैन-प्राण सुलगने लगे । झट कपड़ा खींच मुँह पर पल्ला डाल
और वैण करने लगी —"अरी ओ सुरगों में बैठी मेरी अम्बड़ी, निज देती तू
इस अभागिन को ! दिया ही था तो इस खल्लाट भड़वे से मेरा संजोग क्यों जोड़ा
हाय री मेरी अम्बड़ी, तू मुझे अपने पास बुला ले, न हो तो मेरी सौतन को
मसानों मे सुला दे !"

गोमा छाती पीटने लगी—

"हाय हाय सौतन हाय हाय
तेरा आगा पीछा हाय हाय
तेरे प्यो भरा हाय हाय
तेरे चाचे ताये हाय हाय !"

सुनकर भोली ने दोहत्थड़ मार लिया—"सुनो ओ लोको, अपने कानों से सुन लो ! अरे, जीते-जी सयापा मेरे वीर-बाबुल का ! अरी, गल-गल गिरेगी तेरी यह जीभड़ी !"

"कोढ़ पड़े तुझे । मैंने किसी का घर नहीं उजाड़ा !"

भोली ढीली पड़ी—"हाथ पीले किये माँ-प्यो ने ! मेरा क्या दोस ! हे जानी जान, मुझे उठा ले ! अरे लोको, मैं डूब मरूँगी चनाब के पानियों में !"

गोमा ने दन्दियाँ झका दीं—"अरी चनां के पानी में डूबती हैं सोहणियाँ ! बोथड़ा तो देख अपना !"

"तेरे से चंगा न होता तो खसम तेरे जीते-जी घोड़ी सजा मुझे लेने न आ ढुकता !"

गोमा ने पल्ला उठा आँखों से भोली के मुँह पर दे थूका—"जा री छाजड़ कन्नो, तू भी जापा पायेगी तो गबरू का नाम लेकर सती हो जाऊँगी । तेरे चूल्हे की आग लगा लूँगी बालों में ।"

भोली ने गाँव-का-गाँव सिर पर उठा लिया—"ब्याहनेवाले ब्याह के लाये और मैं अभागिन पल-पल छित्तर खाऊँ । तेरे रहते इस घर का अन्न-पानी खाऊँ तो अपना थूका उठाऊँ ।"

हाकम को हट्टी पर खबर मिली कि फिर घर में जंग छिड़ा है तो हाथ से तकड़ी फेंक घर उठ धाया ।

"हरामज़ादी उल्लू की पट्ठियों ने इस अकेली जिन्द पर ऐसा पूछड़-तंग कसा है कि दिन-रात का अज़ाब हो गया !"

गोमा ने खसम को अन्दर घुसते देखा तो चनेरे-तले सिर छिपा लिया ।

मंजी पर औंधी पड़ी भोली को दबादब हाकम के हाथों मुक्कियाँ पड़ते देख गोमा के दिल-जिगर में ऐसी ठण्ड पड़ी कि हँसते-हँसते पड़ोसियों का बनेरा फाँद शाहों के घर जा पहुँची।

चाची महरी ने देखा तो झिड़ककर कहा, "क्यों री लटबौरने, होश में तो है न ! देख री, गले के बीड़े खुले पड़े है। बन्द कर !"

"आप खोले हैं मैंने। हवा लगने दे, मेरे कालजे ठण्ड पड़ने दे !"

चाची महरी ने धमकाया—"मुड़ री, शौदाई तो नहीं हो गयी !"

गोमा खिड़-खिड़ हँस दी—"चाची, मैं आज ऐसी प्रसन्न हूँ चित्त में, ऐसी खुश हूँ, रहे नाम रब्ब का !"

"गोमा, डोगन-डोले छोड़। मतलब की कह !"

"तो सुन ले चाची, आज मेरी सौतन को ऐसे घुसुन्न पड़े, ऐसी चण्ड-चपेड़ें कि मेरी छाती हल्की फुल्ल हो गयी है।"

"मुँह पर फन्द रख री ! ज्यादा बक-बक करेगी तो फिर हाड़ तुड़वायेगी हाकम से !"

गोमा चाव-चाव दलहीज़ में बैठ गयी—"हाड टूटें मेरी वैरन के ! कालजा फुके भोली सड़ोली का ! मेरा तो आज रोम-रोम ठण्डा !"

गोमा बायाँ हाथ कमर पर रख दायें हाथ से मुद्वा बना नचौनियों की तरह कमर मटकाने लगी—

"वाह वाह री वाह वाह
कि फुल्ल गुलाब का !
वाह वाह री वाह वाह
कि पानी चनाब का !
वाह वाह री वाह वाह
हुक्म चला साहब का !"

शाहों के घर कड़ाह चढ़े तो हलवा-पूरी की सुगन्ध सारे पिण्ड में फैल गयी। दिन-भर वहँगियों पर रखी परातें भरती रहीं और बँटती रहीं। उत्तरी वण्ड, थल्ली वण्ड, चूहड़ों की ठट्टी, सांसियों की गोठ, कोई भूले-चूके न रह जाये।

परीयों ने भरी वहँगी उठा झीवर गंगू और लम्मू चलने लगे तो श
"देखना गंगू चाचा, कोई पर-आगन छुटने न पायें। यह मिल-वर्तन
नहीं। यह तो यज्ञ का प्रसाद है। जितने मुँह लगे, उतना ही पुण्य!"

ऊपर लालीशाह को झोली में डाले शाहनी कभी बच्चड़े का सिर सह
कभी गोद पर पुस्सा फैला लाड़ले को दूध पिलाती।

मुँह से थन निकाल आँचल से बच्चे का मुँह पोंछा तो गाय-सी दुधारू अ
तृप्त हो-हो गयी। वाह गुरु, सब आपकी बरकतें। देह-प्राणवाली जिस काय
हाथों अपना लाल नहीं झुलाया, अपना दूध नहीं पिलाया, वह जिन्द-जहानवा
महतारी तो न हुई!

मिठाई-वगियों की कड़ाहियाँ गर्मागर्म सोंधी-मीठी मुश्कें फैलाती रहें
शरीके-भाईचारे के लिए लड्डू-मट्ठे और गन्दोड़े। साथ गोल मिठाई।

चलकोरे चाखे पले-पले आ बूँदी की तवियाँ झाँकें।

"मूलेशाह, वेसन जरा सख्त है। जायके में वह पहला रस्स नहीं आया!"

मूला हलवाई चाखों के इस रंग-ढंग से वाकिफ। "बादशाहो, मेरी समझ में
तो ठीक है, पर चाहो तो और चखकर देख लो!"

छोटे लड्डू के बराबर हथेली पर बूँदी रखकर चाखे की नियत भाँप ली—
"कृपारामजी, जरा ध्यान से देख डालो। शक्कर-खण्ड कम-ज्यादा तो नहीं!"

कृपाराम न समझे। बड़े दबदबे से कहा, "मूलेशा, पंचों ने जब यह काम
हमारे जिम्मे छोड़ा है तो बंगी को उन्नीस-इक्कीस कैसे रहने दें!"

मूला दिल-ही-दिल हँसा। वेसन के लूफ्फे जितना लड्डू बनाकर आगे
किया—"देखो, वेसन ने चाशनी पकड़ ली है कि नहीं! जरा ध्यान से चख-छक
कर कोई दर्जा दे डालो! यह न हो चखने-चखने में ही तवी खैरों से आधी रह
जाये!"

कृपाराम ने मूठ-भर बूँदी खायी तो जी खुश हो गया—"वाह-वाह मूलेया,
हाथ क्या है विधि-माता की मूठ है! न कम, न ज्यादा! बस बराबर की!"

"दो लड्डुओं की बूँदी थी। अब भी चुगलाया मुँह स्वाद न पकड़ सके तो
मूला गया काम से, और बादशाहो, आप गये चाखे नाम से!"

कृपाराम ने जरा-सा सिर हिलाया और घी निकालने के बहाने इधर-उधर
हो गये।

।

कपड़े-लीड़ों की दो गाँठें छोटे शाह ने बागे के हाथ ऊपर भिजवायी तो जनानियाँ
मंगल करने लगीं।

चाची ने बागे के हाथ पर टका रखा—"जीता रह, बड़ी-बड़ी उम्र हो!

खैर सदके सगुणों के जोड़े लाया है !"

"छोटे शाह ने कहलवाया है कपड़े-जोड़े लगे-लगाये हैं। एक में घरवालों के और दूसरी में शरीकेदारी के। एक पोटली में किनारी बांकड़ी के तूश हैं।"

गुजरांवाले से खरीदी कपड़ों की गठरियां खुली तो रंग-बिरंगे सुच्चे कपड़े देख-देख ज़नानियों के अरमान हरे हो गये।

चाची महरी ने मखमली जोड़े पर हाथ फेरा—"मल्ला, मेरे काशीराम के अनोखे ही काम ! भतीजे की जम्मनी पर ऐसे भारी जोड़े बनवाकर लाया है ज्यों वरी-दहेज के हों !"

बाबो मिरासन ने पास झुक लाली की बलैयां ले ली—"अरी शाहनियो-खत्राणियो, हर सयाले एक पुत्तर जम्म डाला करो। रब्ब किये फिर ढेरों कप्पड़ और सेरों सोना। आख्यान करते हैं न, हिन्दू शाह ने हिन्दुआनी क्या ब्याही, घर में हथनी बांध ली। सगुण-कुड़माई से लेकर पुत्र-पौत्रों तक गहना-गट्टा और कप्पड़ !"

किसी सयानी ने घुड़क दिया—"चुप री बाबो ! ढंग-पज्ज की खुशियां सबकी बराबर। तू यह क्या तुलना ले बैठी !"

पीढ़ी पर बैठी शाहनी ने सहज स्वभाव मोड़ा—"बाबो, घोड़ी की जगह तू सगुणों की बरकतें गिनने लगी। अरी, यह नहीं कोई अक्ल की बात !"

बाबो शर्मिन्दी होकर बोली, "उजबक मूढ, मेरी बात चित्त-चेत्ते न धरना।"

बाबो तालियां बजा-बजा नाचने लगी। ऐसे घुम्मन घेर डाले कि घर की लड़कियां-सयानियां सब नाचने लगीं।

नीचे से हलवाई ने हांक मारी—"धियो-धियानियो, मिठाई पर मिट्टी पड़ेगी।"

जट्ट कपड़ों पर आ ढुका—

"बिन्द्रादइये, गिन तो सही कितने जोड़े हैं मखमल के ?"

"छः हैं चाची ! पांच तो हुए खैरों से पांच फूफियों के, और एक लड़के की मां का !"

"मुझसे पूछ तो यह छठा जोड़ा है लाली की चाची का !"

"मान ली यह बात, पर फिर जिठानी का कौन-सा हुआ !"

चाची भी सोच में पड़ गयी, "काशीराम ने कुछ तो सोचा होता। जहां छः, वहां सगुणों के सात !"

छोटी शाहनी नखरे से बोली, "उलाहना क्या दूं, पर सारी किड़सकारी-कंजूसी मुझ पर ही होती है !"

"मैंने कहा सुखी-सान्दी, गुरुदास केशोलाल के जन्मने पर तुम्हें भी सुच्चे

जोड़े मिले थे !"

"बराबर मिले थे चाची, पर वह चाव-मल्हार तो मेरे जेठ राजे का था न !"

नन्द कौरां ननँद ने ठिठोली की—"छोटी भरजाई, नाँवे की गुत्थी दोनों भाइयों की एक। बाक़ी तेरे पसन्द के कपड़े पर हाथ तो काशी ने ही रखा होगा !"

"लो और सुनो, तुम्हारे सूफी भाई को इन बातों की क्या शनाख्त !"

चाची ने माँबीबी को हाँक दी—"जा माँबीबी, नीचे से पूछ के तो आ ! पूछना, सातवाँ जोड़ा कहीं बजाजी की दुकान पर ही भूल तो नहीं आया !"

माँबीबी परती तो छोटी शाहनी को छेड़कर कहा, "छोटे शाह तुमसे नहीं हारते। छठा जोड़ा तो है तुम्हारा और बड़ी शाहनी का है प्याज़ी। दूसरी गठरी खोल के देखो। उसमें होगा !"

मखमल का प्याज़ी जोड़ा निकला तो देखनेवालियों की आँखें चौंधिया गयीं। रुपहले-सुनहले सलमे में सुच्चे मोतियों की टाँक !

चाची ने जोड़ा उठा चूमा और शाहनी की झोली में डालकर कहा, "लो देखो बच्ची, अपने देवर की साध ! क्या उम्दा रंग है ! हाँ री, क्यों न हो ! जोड़ा तो बनवाना था भरजाई का और भतीजे की माँ का ! बड़ी भरजाई, जान ले तेरी सवाई शोभा की है तेरे देवर ने !"

छोटी शाहनी मचल गयी—"मल्ला कुछ भी कहो, रंग मुझे भी प्याज़ी ही पसन्द है। मेरे ब्याह का उनाबी मखमली तो पहले ही मेरे पास है।"

चन्द कौरां ने तरकीब लड़ायी—"छोटी भरजाई, दोनों एक-से चंगे। गुरुदास केशोलाल की वहूटियों को ढो देना वरी में !"

"न, झूठी बात ! मेरे मन में बस गया है प्याज़ी रंग ! कुछ भी कहो, इस मौक़े पर मन की न करूँगी तो और क्या बूढ़े वेले करूँगी !"

बड़ी सयानियाँ छोटी शाहनी पर खीजने लगीं—"बिन्द्रादइये, राह की बात कर री ! बड़ी सहक के बाद तेरी जिठानी को यह घड़ी आयी है !"

"बहना, मैं उससे दुगनी खुश ! पर यह बात तो हुई न रंग-पसन्द की !"

शाहनी ने अपनी खुशी में देवरानी का मान रख लिया—"तेरी साध-पसन्द हमारे माथे ! खैरों से लाली की चाची हो ! जो मन आये सो उठा !"

बिन्द्रादयी खुश हो गयी। हँसकर कहा, "जिठानी, मेरी तो दस्स घी में, पर अगर तुम्हारे देवर ने कुछ ऊँच-नीच की तो···"

"छोड़ री ! मैं देती हूँ इच्छा-खुशी से ! कुछ कहेगा मेरा देवर तो सँभाल लूँगी !"

चाची ने अपने लिए दरियाई का जोड़ा देखा तो आँखें भर आयीं—"तेरे

साईं पर बलिहारी विन्द्रादइये, पर तू ही बता मैं कब पहनूंगी इसे ! या मैंने किसी की बरी में ढोहना है !"

"यह भला क्या चाची ! ला री राबयाँ, लाली को इधर ला !"

शाहनी ने लाली को चाची की झोली में डाल दिया, "चाची, तुम्हें सोह है मेरी ! यह पुत्र मेरा नहीं तुम्हारा है !"

शाहनी ने माँबीबी का जोड़ा उठाया—"ले माँबीबी, अपना तहमद-कुर्त्ता ! दुपट्टे पर गुल टाँक लेना !"

"केसरी झग्गा-सूथन और गाढ़ी गुलाबी ओढ़नी ! देख री राबयाँ अपने कपड़े ! पहनोगी तो फड़-फड़ उड़ोगी !"

चाची लाड़ से लड़की की ओर देखती रही—"धिये, ओढ़नी में बन्द टाँक के रख ले !"

"जाओ कुड़ियो, नूरी-मिस्री-चन्नी को बुला लाओ। चुन्नियों को बाँकड़ी किनारी लगायें आके !"

पिटारियों में तूरा बाँकड़ी और घुटनों पर सूहे गुलाबी दुपट्टे। उनावी रंग पर पीली किनारी ऐसी फब्बन उभारे कि सोहणे मिट्ठे दिहाड़ो पर सगुणों की कोर झिलमिलाती हो !

लाली की फूफियाँ, चाचियाँ-ताइयाँ पिण्ड की रल-मिल घोड़ियाँ गाने लगीं—

निक्की निक्की बूँदें
निक्केया मींह वे वरे
वे निक्केया माँ वे सुहागन
तेरे सगुण करे।

धूम मच गयी।

शाहों ने मुजरा-तमाशा बुलाया है।

"जी, सुनते हैं लखनवालवाली बुद्धाँ और हुस्ना को इकोतर सौ की पेशगी भेजी गयी है।"

लोग बुला-बुला पूछें शाहों के कम्मी-गुमाशतों को—"क्यों जी, काशीशाह के पुत्तरों के वेले तो छोटे शाह ने मुण्डी हिला दी थी—'नहीं' ! इस बार बात बनी तो कैसे बनी !"

"वादशाहो, जातक लालीशाह बड़ा महँगा मिला है। उसकी आमद पर लोगों के दिल-अँखियाँ क्यों न परचें!"

"हां जी, यारों के दीदार से दिल गरम और आँखें ठण्डी!"

"मान गये आपकी सुक्खुम अक्ल को!"

"मुहम्मदीना, सुनते हैं उम्दा कंजरी पीरोशाहियों के घर मुबारकें देने गयी है। तभी बुढ़ों और हुस्ना की बन आयी है।"

"नवाव उस्ताद, मुजरे-तमाशे के लिए कोई नया जोड़ा बनवा लिया है न! यार, इस जोड़े में तो देखती नही परियाँ तुम्हारी ओर!"

"वादशाहो, यह बताओ कि नचौनियों का पेशकारा शिरीहवाले खू पर उतरेगा कि दारे के पक्के चबूतरे पर!"

गाँव के गब्बरोट हीर गा-गा दिलों की इन्तजारों को छोटा करने लगे।

कोकले ने सुर उठाये—

इक मिट्ठडी जोड़ी इशक दी
चनां दे कण्डे खेल गयी
एक डाढी बाजी इशक दी।
दो सुच्चे फुल्ल गुलाब के
लोकी मुड़-मुड देन मुबारकां
अरे सदके ऐस चनाव के
जित्थे हीर ने प्रीतां लाइयां
उस यारो दियां घोल घुमाइयां
जिन्हा इश्को बाजियां लाइयां।
जान वार के दिलबर आशिकां तो
जिन्हां रब्बी मजलिसां लाइयां।

दोस्तो-यारो, दिलो में अपनी-अपनी प्रीतें-मुहब्बतें धारकर माई हीर को सलाम करो। हीर और राँझा दोनो हमारी इस मजलिस मे शामिल हैं। लोक आख्यान डालते हैं कि जितनी बार इस अलबेले जोड़े के प्रीति-प्यार दुनिया मे गाये जायेंगे, उतनी बार हुस्न के महताब चमकेंगे आशिको के दिलो में! माशूकों की आँखों मे! जितनी बार हीर के दरदीले सुर हवा मे लहराएँगे उतनी बार हीर सयालों की, राँझा तख्त हजारे का, अपनी रूहों से इन मजलिसों में शामिल होंगे।

वह देखो—ब्याह का रत्तड़ा लाल जोड़ा पहन, सयालो की हीर कुड़ी इस मजलिस मे शामिल है।

उधर देखो—जोगी दरवेश बना राँझा साईं तख्त हजारे का। कण्डे खड़ा है दरिया के। हीर के साल् से बँधी उसकी रूह। उसका कलबूत। यारो, सलाम करो इस महबूब जोड़ी को!

"सलाम कबूल हो माई हीर!" लड़के उठ-उठ सलाम करने लगे।

कोकला उठ खड़ा हुआ और बाँहें फैलाकर कहा—

आशिकों के राह रोशन
उनके अन्दर सूरज
उनके बाहर सूरज
उनकी रूह रोशन।

कोहनी टेक रेत में लेटा बख्तावर उठ बैठा—"झंगसयाला में माई हीर का मजार है। हमने यही मन्नत माँग ली। एक-न-एक दिन पहुँचना ज़रूर है वहाँ!"

घोलू ने छेड़ा—"यार बख्तावर, नूरी को भी साथ ले जाना। खैर सदके, तुम्हारी गैर-हाजरी में उसने भी तुमसे निभायी है।"

लद्दा पास आ बैठा—"चारा काट ढेर लगा आया हूँ। रब्ब जाने नाच-मुजरे में फुरसत मिले न मिले। बाबे की आदत तो पता है न! उत्सव में बैठे-बैठे ही टोका-टाकी करता फिरे!"

चौहदवीं का चाँद। दरिया किनारे तालीमवालियों के लिए तम्बू-छोलदारियाँ लगने-सजने लगे। जा-बज़ा फर्श, पानदान, इत्रदान, पीकदान, चंगेरें, शमादान और घड़ौंचियों पर घड़े-गागरें।

आसपास के गाँवों के गबरू जवाटरे इकट्ठे हो-हो दरिया में तारियाँ मारने लगे।

कोई शाहों के घर से खबर लाया—"यारो, लखनवालवालियाँ कल तड़के पहुँचेंगी बेड़ी से।"

"लो जी, अब गुज़री रात यहीं दरिया किनारे!"

"इधर अपने सुबह की टिक्की निकली, उधर पूरब से दो चाँद चढ़ आयेंगे।"

कोच्छड़ों के बोढ़े ने जलालू की पीठ पर धप्पा मारा, "अभी सारंगियाँ-तबले दूर हैं। ओए, तेरा दिमाग फिर गया न! दिन-चढ़े सूरज निकलता है कि चाँद!"

"दुनिया भड़वी कुछ भी कहती रहे, हम तो अपनी हुस्ना-बुद्धाँ को चाँद कहकर ही बुलायेंगे।"

"यही सही, पर अभी सुबह-सवेर के चाँदों का किस्सा दुनिया में जुड़ा नहीं!"

कोकला हँसने लगा—"बादशाहो, वह भी कोई मुश्किल नहीं। किस्सा सुना दो मेरे चाचे को। बाँध देगा बन्दिश में।"

बूटे ने सिर की खूँडी को बल दिया, "मेरा भाइया मेरी बेबे को बता रहा था कि कुजावाली गौहरजान ताली क्या बजाती है कि टल्लियाँ खड़कने लगती हैं!"

"छोड़ यार, तालियाँ बजाने को मिरासी-नक्काल क्या कम! हथेलियाँ

[illegible] और [illegible]

[illegible] का [illegible] है !"

"[illegible] दो ! [illegible]

[illegible] । और [illegible] कर कहा, "कहाँ है

[illegible] कर [illegible] है [illegible] !"

[illegible] ने [illegible] को [illegible] कर [illegible] लगाने दे।

[illegible] ? बता दो

[illegible] !"

[illegible] ने [illegible] के [illegible] ने तोड़े

[illegible] एक बार कंजरी देख लूँ,

[illegible] न नाचा फिरे !"

[illegible] कि बन्दा सलाम करते हाथों

[illegible] !"

[illegible] था !" [illegible] पूरा । चम-

[illegible] के [illegible]

[illegible] हुआ

[illegible] रजब-चौक आर

[illegible] बूटे ने देख

[illegible] माया था

गोलू को [illegible]

पास होकर कहा

गोहर इनाव ने

बटसिंह ने लम्ब

चाँद निहारने लगा अ.

दूँ !"

"दारा, जल्दी पु

"न

न उस

गोहर और जलालू ने

तो पहुँचा हुआ मरद है ।

रेत पर बैठी

कहीं टप्पे, कहीं पूर्ण

शरीफ़ू दरिया में डुबकी लगाकर आया तो गीला तहबन्द उघाड़ पीढ़े पर दे मारा—"ओए, मुझे अपने से नहीं, तुमसे शरम आ रही है।"

गोहर हँस दिया—"ओए, शरम काहे की ! क्या तेरे पास कोई अजूबा है ! सारी दुनिया ही इससे बनती-चलती है।"

गुलजारी ने सिर हिलाया—"इसका गुमान ठीक नहीं। बड़ों का कहना है हर वक़्त इसके लीला-खेल सोचने से बन्दा खस्सी हो जाता है।"

अपने-अपने तम्बों से आँख चुरा चौकड़ी सिर खुजाने लगी।

पीरू···ऊ···पीरू···ऊ···चन्न की चान्नणी में उड़ती पाखियों की डारें उड़-उड़ दरिया पर जा फैलीं।

पीरू···ऊ···

लड़कों के कान चौकन्ने हुए—"ये फुल्ल सूँघनी हैं।"

"न, शर्त लगा लो, हैं तो यह बबूनी हैं।"

"यह बबूनी भी नहीं। यह हैं सिन्ध बुलबुली।"

"मान ले मेरी, ये हैं धौला धारणी। इन्हीं दिनों पब्बी छोड़ चित्राल चमन की ओर उड़ती हैं।"

फोकले का छोटा भाई डोडा मिरासी आन पहुँचा। बैठते ही काफी छू ली—

मनसा करत सुख चरण तिहारे
मेरी मुरादे परसऊ प्यारे
जो सुख आवे सो फल पावे
ग़ौस नबी को लागे प्यारे !
मनसा करत सुख चरण तिहारे !

ऊँची खनकती आवाज़ डोडे की दरिया की मौजों पर नाचने लगी। ठण्डी हवाएँ चनाव की, लड़कों की ताजी अँखियों को झुलाने-डुलाने लगीं।

अल-सुबह लद्दे की आँख खुली तो शाहों के कम्मी-कारिन्दे छोलदारियों में माल-रसद पहुँचाते थे।

साथ पड़े गोहर और मदद अली को झकझोरा—"उठ जाओ, ओ उठ जाओ ! तम्बुओं में रौनकें लग रही हैं। जल्दी-जल्दी खेत-झाड़े हो आयें। यह न हो कि हम हत्थ-पानी पर हों और उधर से मटक्कनियाँ आ पहुँचें।"

•

•

उत्तरादी दिशाओं पहाड़ों के पीछे से शफ़क़ की गुलाबी ओढ़नी दरिया और आसमान पर एक संग लहराने-झिलमिलाने लगी।

पानी पर उजियारा लिशकारा मारने लगा। वह देखो बेड़ियाँ तिरती आती हैं इधर और उधर जवान गबरुओं की आँखें ओढ़नियों में अटक-खटक जाती हैं।

फैलायीं-खड़कायी और वेल-वधाइयाँ माँग लीं। पर जी, नाचने-गानेवालियाँ तो अपनी तालीम का खाती हैं।"

"ओ रहने दो! बोल उठायें, छन-छन घुंघरू खनकाये और मरदों के दिल तड़पाये। और काहे की कार-कमाई है!"

मदद अली की आँखें फैल गयीं। ओठों पर ज़बान फेरकर कहा, "कहते हैं चुम्मा-चाटी से बन्दे को तबाह कर देती है कजरियाँ!"

बूटासिंह अकड़ गया—"ज़रूरी नहीं कि कंजरियाँ सभी को अग लगाने दें। पहन-पोशाक इनकी आला और रूप सवाया!"

जलालू ने टोका—"ओए कलन्दरो, सुनी-सुनायी पर शट्टलियाँ? बता तो सही बूटेया, तू पैदा कब हुआ? कब लाहौर गया और कब देख ली कजरी!"

"सौंह रब्ब की, आँखों देखी बात है! अपने छोटे मामे के ब्याह में सोहरे गया था। उन्होंने कुंजावाली मुमताज़ बुलायी हुई थी।"

"खबीसा, पहले तूने कभी ज़िक्र नहीं किया! आँखें एक बार कंजरी देख लें, उसका जगमग-जगमग वेश देख लें तो दिन-रात शौदाई बन टप्पे न गाता फिरे!"

"न मान! तस्वीर कंजरी की ऐसी मीठी मोहनी कि बन्दा सलाम करते हाथों को देखता जाये। कुर्बान हो जाये।"

"बता दे बूटेया, कुंजावाली ने पहना हुआ क्या था!"

बूटा आसमानी चढ़ गया। माथा फैलाकर कहा, "बनाव-सिंगार पूरा। चम-चम पेशवाज मोतियों का दुर संजाफ से टँका हुआ। ऊपर किनारी के माच्छवाला दुपट्टा। माथे पर टीका। हाथ में रतन-चौक आरसी। कानों में गुच्छे खम्बों के कुण्डल!"

मौलू को यक़ीन हो गया, हो-न-हो बूटे ने देखी ज़रूर है मुजरेवाली!

पास होकर कहा, "कुछ याद है क्या गाया था कुंजावाली ने!"

गौहर शनास ने टोका—"होगा कोई काफ़ी-टप्पा आशिक़-माशूक़ का!"

बूटासिंह ने लम्बा होका भरा। अपनी पन्दरह बरसी प्यास से आसमान पर चाँद निहारने लगा और आह भरकर कहा, "एक ही बन्द याद है—कहें तो सुना दूँ!"

"यारा, जल्दी सुना। सुना भी दे!"

"न उस बेवफ़ा में वफ़ा
न उस बेहया में हया।"

गौहर और जलालू ने गलबाँही दे बूटे को भींच लिया—"ओए बूटासिंहा, तू तो पहुँचा हुआ मरद है। यारों से इतनी देर छिपाये रखा!"

रेत पर बैठी टोलियाँ पूरे चाँद पर क़ुर्बान हो-हो गयीं।

कहीं टप्पे, कहीं पूर्ण भगत, कहीं सस्सी-पुन्नू। कहीं मिर्ज़ा साहिबाँ की तान!

शरीफ़ दरिया में डुबकी लगाकर आया तो गीला तहबन्द उघाड़ गीडे पर दे
रा—"ओए, मुझे अपने से नहीं, तुमसे शरम आ रही है।"

गौहर हँस दिया—"ओए, शरम काहे की ! क्या तेरे पास कोई अजूबा है !
री दुनिया ही इससे बनती-चलती है।"

गुलज़ारी ने सिर हिलाया—"इसका गुमान ठीक नहीं। बड़ों का कहना है हर
त इसके लीला-खेल सोचने से बन्दा ख़स्सी हो जाता है।"

अपने-अपने तम्बों से आँख चुरा चौकड़ी सिर खुजाने लगी।

पीरू···ऊ···पीरू···ऊ···चन्न की चान्ननी मे उड़ती पाखियों की डारें उड़-
ड़ दरिया पर जा फैलीं।

पीरू···ऊ···

लड़कों के कान चौकन्ने हुए—"ये फुल्ल सूंघनी हैं।"

"न, शर्त लगा लो, है तो यह बबूनी हैं।"

"यह बबूनी भी नहीं। यह हैं सिन्ध बुलबुली।"

"मान ले मेरी, ये हैं धौला धारणी। इन्हीं दिनों पब्बी छोड़ चित्राल चमन
ओर उड़ती हैं।"

कोकले का छोटा भाई डोडा मिरासी आन पहुंचा। बैठते ही काफी छू ली—

मनसा करत सुख चरण तिहारे
मेरी मुरादें परसऊ प्यारे
जो सुख आवे सो फल पावे
ग़ौस नबी को लागे प्यारे !
मनसा करत सुख चरण तिहारे !

ऊंची खनकती आवाज़ डोडे की दरिया की मौजों पर नाचने लगी। ठण्डी
ाएँ चनाब की, लड़कों की ताज़ी अँखियों को झुलाने-डुलाने लगीं।

अल-सुबह लद्दे की आंख खुली तो शाहों के कम्मी-कारिन्दे छोलदारियों में
ल-रसद पहुंचाते थे।

साथ पड़े गौहर और मदद अली को झकझोरा—"उठ जाओ, ओ उठ
ओ ! तम्बुओं में रौनकें लग रही हैं। जल्दी-जल्दी खेत-झाड़े हो आयें। यह न
कि हम हत्थ-पानी पर हों और उधर से मट्टक्कनियाँ आ पहुँचें।"

तरादी दिशाओं पहाड़ों के पीछे से शफ़क़ की गुलाबी ओढ़नी दरिया और आस-
न पर एक संग लहराने-झिलमिलाने लगी।

पानी पर उजियारा लिशकारा मारने लगा। वह देखो बेड़ियाँ तिरती आतीं
इधर और उधर जवान गबरुओं की आँखें ओढ़नियों में अटक-खटक जाती हैं।

छातियाँ धड़कने लगती हैं।

एकाएक शोर मच गया—"किसी ने देखा भी हुआ है पहले कि नहीं!"

"शाहों के यहाँ से कोई भी नहीं आया! पहचानेगा कौन? मुहान्दरों का हमें क्या पता! बुढ्ढाँ कौन है! हुस्ना कौन है!"

काशीशाह बुढ्ढाँ और हुस्ना की अगवानी के लिए घोड़े से उतरे। इधर-उधर नज़र मारी। दरिया कण्डे आसपास के पिण्डों के गबरू-गब्बरोटों को देख मुधरी आवाज़ में कहा, "बरखुरदारो, कहने को यह नाच-मुजरा है, पर असल में यह बड़ी गूढ़ी तालीम है। याद रहे, गाने-नाचनेवाले लोग बड़ी ऊँची तालीम के मालिक होते हैं। इसलिए उनकी इज्ज़त बराबर होनी चाहिए।"

लड़कों को सुनने का ताव कहाँ!

"करेंगे जी, बराबर इज्ज़त करेंगे! पर पता तो लगे कौन बुढ्ढाँ है! कौन हुस्ना!"

छोटे शाह ने सब शक-शुबह दूर कर दिये—"गुलाबी दुपट्टेवाली हुस्ना और काशनीवाली बुढ्ढाँ।"

किश्तियाँ किनारे की ओर बढ़ती आयीं।

बूटे ने आँख पर हाथ की ओट कर पानी में छलकता सूरज का लिशकारा बचाया और ऊँची आवाज़ में कहा, "बुढ्ढाँ कंजरी तो जी मुहान्दरे में मेरी बेबे लगती है।"

डोडे ने समझाया—"बूटेशाह, सिक्खोंवाली बातें! ओ सिंहा, बुढ्ढाँ तालीम में रावलपिण्डी तक कोई सानी नहीं रखती। इस जैसा ठुमरी-टप्पा गानेवाला अभी कोई पैदा नहीं हुआ।"

जलालू ने उचककर देखा—"छोड़ ओए खुण्डी छुरी को! देख हुस्ना को जो प्रतख हीर है झंग सयाला की। हाय ओ रब्बा! क्या सूरत, क्या रूप-जवानी!"

मल्लाहों ने ज्यों ही बेड़ियाँ किनारे लगायीं, छन···छन···बाँहों के छनकार और पाँवों की झाँझरें बजने लगीं!

हुस्ना की नाक का मोती ऐसे चमका ज्यों किसी लखरानी की सुच्ची प्रीत हो!

जलालू ने छाती पर हाथ रख टेक लगा दी—"मैं तो गया यारो! रब्बा मेरेया, यह झाल नहीं झेली जाती मुझसे!"

कहते-कहते गन्धम की रंगतवाला जलालू रेती पर चित्त लेट गया।

ठोड़ी पर हरा तन्दोला और उजले दाँतों की लड़ियोंवाली बुढ्ढाँ हँसने लगी—"सदके तेरी सजरी जवानी पर चन्ना! यह झाल इन कपड़ों-लीड़ों और गहने-

गट्टे की नहीं, यह रौशनाई तेरे ताज़े-रत्तडे खून की। माँ के शाहज़ादड़े, उठ खड़ा हो जा और सलाम कर हुस्ना परी को!"

फिर बूटे की ओर खरी चितवन से देखा—"भोले बादशाह, अभी बच्चे हो। दुनिया-जहान में ढूँढ़ने चढ़ धाओ तो भी कोई मुजरन नचौनी किसी की वेवे न लगे! फिर मैं तो ठहरी बुद्धाँ कजरी! चल रे सिहा, मुझे वेवे बुला ही लिया है तो एक बार पैरीपौना तो कर दे। मुझे भी तुम्हें बरखुरदार कहने का चाव हो आया है!"

बूटे ने न किसी दोस्त-यार की ओर ताका, न कुछ सोचा-साचा।

आगे बढ़ पैरीपौना बुलाया। बुद्धाँ के पाँव छुए और हाथ सिर को लगा उठ खड़ा हुआ।

"जीता रहो। बड़ी-बडी उम्रें। जवानियाँ मान ओ सिहा। मैं सदके, मैं बलिहारी शाहों के ग्राँ पर, जिसने बिन माँगे मुझे पुत्र दे दिया!"

बुद्धाँ छोटे शाह की ओर मुड़ी—"बहुँ मोल-दात इस झोली। शाह साहिब, कभी सुना था कजरी को भी किसी ने भोले भाव से ही वेवे कहकर पुकारा हो! जाहिरा पीर लखनदाते सखी सरवर की सिफ़तें, बरक़तें!"

"शाह साहिब, बड़ी-बड़ी मुबारकें हो लालीशाह की!"

"खैर मुबारकें!"

बुद्धाँ और हुस्ना अपनी रंग-रंगीली चाल मे छौलदारियों की ओर बढ़ी तो नौजवान अश-अश कर उठे!

बख्तावर ने आवाज कस दी—"रब्बा, पता तो लगे, इनके पाँव की जुत्तियाँ किस्मतवालियाँ पोठोहारी हैं या सलीमशाही!"

काशीशाह ने पीछे मुड़कर देखा और पाक-साफ आवाज़ में कहा, "बरखुरदार, यह पोठोहारी नही, सलीमशाही है।"

फिर ऐसे क़दम उठाये ज्यों पिण्ड में मुजरा नहीं 'सुरुद-समाँ' जमनेवाला हो!

धूप निकलते ही चूहड़ों की ठट्ठी में मैले-कुचैले बच्चो की टोलियाँ बाहर निकल आयीं—

दामन बीबी फ़ातिमा का
छत्तर तान दिल्ली का

हुकम मान क़ाबे का
ताबा तान मक्के का।

मैली-कुचैली सुथनियों में ढकी-लुकी लड़कियाँ खेनू खेलने लगीं—

बालाशाह नूरी किसके बेटे — अमीरशाह नूरी के बेटे
अमीरशाह नूरी किसके बेटे — हैदरशाह नूरी के बेटे
हैदरशाह नूरी किसके बेटे — हव्वत ताला नूरी के बेटे
हव्वत ताला नूरी किसके बेटे — मौला मुश्किल कुशा

"दौड़ो, अरी ओ दौड़ो! पीरों का बकरा ''पीरों का बकरा'''"

सुनते ही लड़कियाँ उठ धायीं।

"सींगों पर उठा लेगा, सींगों पर!"

कुच्छड़ों में छोटे बहन-भाइयों को उठाये न्यानियाँ वह जा और वह जा!

रहमे मुसल्ली के जुड़वाँ बेटे कहीं से बदहवासी में दौड़ते आये—"ढट्ठे खू से चिट्टे बालोंवाला लड़का निकला और अरड़ियों पर ग़ायब हो गया। ह अपनी आँखों देखा है। दौड़ो लोगो, दौड़ो!"

बच्चे दौड़-दौड़ दादियों-फूफियों से जा लगे।

"क्यों रे क्यों, क्या क़यामत आ गयी जो दौड़ते-भजते नज़र आते हो?"

"बेबे री, बन्ने कन्ने ने कुंए में से आता जातक देखा चिट्टे बालोंवाला।"

"हाय ओ रब्बा!" बेबे शरबती ने झट सिर पर कपड़ा डाल सीस झुकाया—

"तेरे आगे अपनी फ़रियाद
तेरी फ़रियाद धुर दरगाह।

दूर बलाईं। बाबा बालाशाह, रहम करना!"

बन्ने कन्ने की माँ ने गला फाड़ खबरदार किया—"अरे बच्चड़ो, अरड़ि की ओर न जाना! दिन-दिहाड़े जिन्न ख़्वास नज़र आया है। रब्ब खैर करें!"

पंगूड़े पर सोये सुक्खनी के पुत्तर ने खांस-खांसकर दूध फेंक दिया। हाथ क बरतन परे रख जातक को गोद में उठा लिया और पीठ मल-मलकर कहा "ख खांसी, खुरे, हट-हट'''"

दादी दौनी हाथ पर टुक्कड़ रखे मुंह चुगलाती थी। आवाज़ दी—"क्यों कुचज्जीए, क्यों रुला रही है लडके को! लड़के को अरा-परचा, मुंह में मम्मा दे!"

दौनी ने दूसरा कौर मुंह में डाला ही था कि सुक्खो ने चीख मार दी—"हाय री बेबे, कर ले जो करना है! लाल तो गया मेरा!"

दौनी उठ धायी—बहूटी की गोद में लड़के को देखा कि आँखें फिर गयी हैं।

छाती पीट ली—"ओ रब्बा मेरे, बख़्श दे! बख़्श दे! मेरी पोह की बोआ है।"

सुक्खनी ने छाती पर हाथ धर साँस देखा और धाड़ मार दी—"अरी बैर

सासड़ी, मेरा लाल तो कोई न !"

साथवाले कोठे से बूढ़ी वडेरी जमालो उठ धायी और दलहीज के बाहर खड़ी हो गरजी—

"काली चरी, चार चरी
काट-काट देही को खाये
पानी बहाये समुद्र का भूत
चुड़ैल भस्म हो जाये।
काली चरी चार चरी काट काट···

"हट-हट, दुरे-दुरे···"

लड़के ने आँखें खोल दीं तो माँ और दादी दोनों भर-भर आंसू बहाने लगी।

बेबे जमालो ने लड़के के सिर पर हाथ फेरा—

लाल घोड़ा
लाल जोड़ा
लाल कलगी
लाल निशान।

बच्चा माँ का दूध चुंघने लगा तो दादी दौनी ने बलैया ले ली—"साईं खैर सदके ! रब्बा, तूने वापस कर दिया !"

जमीला ने दमड़ी ले दौनो से पल्ले बांध ली और ढाढ़स दिया—"बक्शवा दिया री, बक्शवा दिया अपने लाड़ले को। इसकी खेसी के नीचे निम्बू धरेक के पत्ते और लोहा रख डालना।"

"हला बेबे।" दौना जमीला के पास ढुकी—"किसकी रूह-परछाईं थी बेबे !"

जमीला ने मन-ही-मन पीर-मुरशदों को याद कर हौले से कहा, "वही री, चिट्टे बालोंवाला अवानों का जातकड़ा ! मामू मुसल्ली ने धोखे से क़त्ल कर दिया था। हैं री, उसकी रूह मुड़-मुड़ इस पिण्ड में भटकती है। हर बरस कूएँ से निकल अरुढ़ियों मे ग़ायब हो जाता है। पार के साल हुसैना के पसार मे जा लुका। मैंने बहुतेरा डराया-धमकाया, न मुड़ा। हारकर टिब्बीवाले मलवाने ने आ सुलतान से अलग किया। चढ बैठा था उस पर !

"टिब्बीवाले ने मिरचों की धूनी जला धमकाया—तू मिट्टी हो चुका। तू पूरा हो चुका खिलन्दड़े ! इधर का ख्याल छोड़ दे। मुंह मोड़ ले। बोल क्या कहना है तुझे ! किससे कहना है !

"भूत बोला, 'नीच मुसल्ली ने वार किया, मेरी छाती पर नही, पीठ पर, बदला लूंगा !'

"टिब्बीवाला मलवाना कड़ककर बोला, 'पीठ को छाती बना दूंगा। हट परे—परे हट—हट-हट !'

"डरकर मूत वह जा और वह जा !"

बाबे ने गिनकर दुअन्नी धरवा ली।

जमीला थैवे जाते-जाते दोनों को कह गयी—"मैंने कहा बाबा लाल के नाम का चूरमा करवा दे ! सातों खैरें पीर पैगम्बरों की ! चवन्नी-अठन्नी की किड़स-कंजूसी न करना !"

गुजरात कचहरी से खबर चली कि जिला लाट इलाके का दौरा करेंगे।

पटवारी और लम्बड़दार ने पीली पड़ी पगड़ियाँ लद्दे धोबे के आगे डाल दीं—"ले भई लद्दैया, कुछ रंग-रंगत निकाल अपनी पगड़ियों का। सुनते हैं मैली पगड़ियों से नया साहिब बड़ा खिच्च होता है। कुछ ऐसा करतब कर कि अपनी पेशी सही-सलामत निकल जाये।"

"जरूर बादशाहो, जिला लाट भी क्या याद करेंगे किसी पिण्ड से सलामें मिली थीं।"

लद्दे ने हाथ में पगड़ियाँ उठा ऐसे वजन किया ज्यों एक साथ लम्बड़दार-पटवारी के हकूमती सिर हाथ मे आ गये हों।

पगड़ियाँ खोल आँखों के आगे लहरायीं। देख-दाखकर कहा, "बादशाहो, घिसी-घिसायी मलमलें हैं। चलो, कुछ न कुछ दक्ख बना देंगे !"

लद्दे ने गुच्छा-मुच्छा कर पगड़ियाँ दोनों मिट्टी के कूंड में फेंक दीं।

मौलू मिरासी पास खड़ा दाने चबा रहा था। देखते ही हाथ ऊपर किया—"ओए लद्दैया, यह क्या ! कानूनी दफा के अन्दर आ जायेगा। एक साथ दो सरकारी सिरों की पागें कूंडे में फेंक दीं। बादशाहो, काम तो नालायक ने ऐसा किया है कि सीधे हवालात मिले !"

लम्बड़दार पटवारी दोनों बड़े कच्चे पड़ गये।

लद्दे ने झट बात सँभाली—"बादशाहो, जिस हाकम के सामने चिट्टी पगड़ियोंवाले सिर झुक-झुक पड़ें, उसकी हकूमत तो आप सवाई हो गयी न !"

मौलू ने आगे बढ़ लद्दे की दाढ़ी हाथ लगा दिया—"कमाल किया है लद्देशाह, ऐसी बोली-ठोलियाँ तुम्हारे मुँह से निकलने लगीं तो हम मिरासियों की तो मिरास गयी !"

लम्बड़दार-पटवारी के पाँव उठाते ही मिरासी की जबान तुरन्त उतारने

लगी—"कोई हमसे पूछे तो सफ़ाई-धुलाई की भी क्या जरूरत ! खैरों से अहल्कार सरकार के तो सरकारी साँडों की तरह दूर से ही नजर आते है।"

मौलू ने ढोकलमल पटवारी को आवाज दी—"पटवार साहिब, सुनने मे आया है कि ज़िला लाट बड़ा पाटेखां है। चलो, अपने को क्या लेना ! हिसाब तो पूछे जायेंगे आप अहलकारों से। बाकी रियाया के हिस्से मे तो साहब बहादुर के दीदार ही !"

लद्दे ने बीच मे टोक दिया—"मौलूया, तुमने कौन-सी हाकम के हाथों जिवियो की मालकी लिखवानी है !"

"न जी। तौबा करो ! रब्ब रसूल ने तो पहले ही मिरासियों को खुश-रहनी जागीर बख्शी हुई है। पटवारीजी, हुक्म हो तो साहिब के सामने कुछ शंसा-कवित्त हो जाये !"

लम्बड़दार ने पटवारी का इशारा समझ घूर दिया—"खबरदार मौलूया, मौक़ा से जरा दूर ही रहना। यह हाकम बडा कड़वा है।"

"हद कर दी मोतियोंवालो ! अपनी हथेलियो पर न हाकम की मिठास उगनी है, न कुड़त्तन ! मिरासी का फ़न जिसे न भाये वह भड़वा हो। अपने तो भागवान जजमान राज़ी रहें। इन बन्दरमुँहों से क्या अपनी रोटियां जुड़ती है। भूंडों की तरह आये और भू-भू करके चले गये।"

लद्दे को पुराना किस्सा याद आ गया—"ओ मौलूया, लायलपुरवाले होदी काने का किस्सा तो सुना हुआ है न ! नहरोंवाला यंग साहिब विलायत जाने लगा तो इलाके मे बड़ा जलसा हुआ। खलकत ने जी भरकर साहिब की महिमा गायी। होदी खां काने ने भी तुक्कड़ जोड़ा हुआ था—

सलामत रहे अँग्रेज़ का राज
कोहेनूर वाला शहंशाही ताज
नहरो से किया पंजाब आबाद
यंग साहिब बहादुर जिन्दाबाद
कयामत तक बना रहे
सलामत रहे अँग्रेज़ का राज।

"बस जी, जलसे मे होदी काने को बडी वाहवाही मिली। गोरे साहिब बहुतेरे थे माजूद जलसे में। सुनकर ऐसे कुप्पा हुए कि सरकार से होदी काने को खिल्लत दिलाने की सिफारिश कर दी।

'बादशाहो, काना होदी बड़ा तेज़ ! झुक-झुक सलामें बजायी और बोला, "सरकार आला जो भी दे सिर-आंखों पर। अर्ज सिर्फ इतनी है जनाब कि एक आंखवाले काने को खिताब देकर सरकार की शान न बढ़ेगी। खाँ साहबी मिल भी गयी तो भी लोग बुलायेंगे तो होदी काना ही। साहिब, ज़मीन दे डालो तो सरकार

का क़ौल भी रह जायेगा और मेरा दिल भी परच जायेगा।'"

ऊपर से तो हँसते रहे लम्बड़दार और पटवारी, पर मन-ही-मन बड़ा पछोतावा लगा।

"तक़दीरें अपनी-अपनी! उम्र गँवा दी सरकार का हुंकारा भरते, पर इनामी मौक़ा हाथ न आया।"

मौलू को ऐसा उबाल आया कि होदी खाँ को कोसने लगा—"ओए कानेया कंजरा, इलाके की मिरास मर-खप्प गयी थी या मुंह-सिर लपेट कोठों पर पड़ी थी कि तू अपनी मुसलमानी दिखाने यंग साहिब के आगे जा खड़ा हुआ। भड़ुवा खच्चर!"

ढोंकलमल और लद्दे ने मिरासी को मच्छरते देखा तो कदम उठा लिये—"त्रिकालों तक पगड़ियाँ कर रखना!"

"बराबर बादशाहो, हकूमती पागों में कैसी देर! लाट बहादुर के ऐलान-फरमान खैरों से इन्हीं साफ़ों से चलते हैं।

दुपहरीं ज़िला लाट की इन्तज़ार में इकट्ठ हो गया। मैले-अधमैले पग्गड़ खेसों पर सजे रोब-दाबवाले मुहान्दरे मंजियों पर जम गये। कुछ पांव के भार बैठ अपनी हुक्कियों में सझे रहे। कुछ खड़े-खड़े साहब की राह देखने लगे।

शाहजी ने मजलिस पर नज़र मारी। पिण्ड का मुंह-माथा देख सिर हिलाया और पटवारी की ताज़ी पग्ग देख आवाज़ दी—"ढोंकलमलजी, इस साफ़े में जंच रहे हैं आप!"

मुहम्मदीनजी हँसने लगे—"खैर सदके, अबरकवाली पग्ग और कलफ़ी कुल्ला। शाह साहिब, नौशा लग रहे हैं पटवारी अपने!"

गण्डासिंह छिड़ गये—"ढोंकलमलजी, फुल्ल-फैलाव आपका चंगा है। इसी बहाने एक-दो बीवियाँ और कर छोड़ो। कोई ज़रूरतमन्द बिचारियाँ खा-पहन जायेगी आपके राज में। दौलत-माया की तो कोई कमी ही न हुई। खाते जाओगे दिन-रात तो भी खूनी न खुट्टना।"

कर्मइलाहीजी फतेह अलीजी को देख-देख खच्चरी हँसी हँसते रहे। कहा, "मैंने कहा फ़तेह अलीजी, इस मामले में अपने मुसलमान बन्दे चंगे। हाथ सुखल्ला सौक्खा हुआ तो एक और निक़ाह कर डाला। आखीर को जहाँ इतने वहाँ एक जान और सही।"

मौलादादजी कुछ सोच में थे। बड़ी संजीदगी से सिर हिलाया—"बात तो ठीक आपकी! सवानी खायेगी तो काम भी तो करेगी!"

मैयासिंह चमक पड़े—"मौलादाद, है कोई नयी भरजाई नज़र में! मु

बचौलिया बना लेना !"

बड़ी देर हास्सा पड़ा रहा। शाहजी ने पूछा, "ढोंकलमलजी, अपने कागद-पत्तर सही कर लो। मियाँ लोग करेंगे नालिशें साहब के आगे और तुम्हारी गर्दन नाखून खुबेगा !"

"शाहजी, अपने जामिन तो हुए पिण्डों के चौधरहट्टे। बाकी अँग्रेज़ी क़ानून की लिखतें पड़ी हुई है। हम तो सिर्फ़ लीकें मारनेवाले हुए !"

मौलादादजी हँसने लगे—"ढोंकलमलजी, पटवार की सयानफों को कौन गिनाये। पर यह तो बताओ बादशाहो, अब तक तो गागरें भर गयी होंगी मोहरों से !"

"खानदानी पटवार और माया के अम्बार !"

शाहजी ने धार-मारू मशकरी की—"जहाँदादजी, ढोंकलमलजी पर ज्यादती हो रही है। सरकारी अहलकार कहीं माँगने नहीं जाते लोगों से। लोग बद्दो-बद्दी उनकी झोलियाँ भरते हैं !"

गुरुदित्तसिंह को अपनी ताज़ी बीसी याद थी—"पटवार-लम्बड़दारियाँ नसीबों से। कर्मों के खेल ! कोई मेहनत कर दाने चुने, कोई मोतियों की चोन पर जा बैठे !"

नजीबा पैरों के भार बैठा था, उठकर खड़ा हो गया—"बादशाहो, लहरें-बहरें और दौलत की बरक़तें ज्यादा करके तो हिन्दुआनी चोले की ही मालकी समझो।"

चौधरी फ़तेहअली ने एक छोटी-सी मकर-भरी निगाह शाहजी तक दौड़ायी और हुक्के-खाँसी की मिली-जुली आवाज़ में बात का रुख फेर दिया—"शाहजी, सरकार अँग्रेज़ी घोड़े पर कागजी बुत्त भी बिठा दे तो कानून के ज़ोर-ज़बर से उसमें रूह बोलने लगेगी !"

"आफ़री-आफरी !" शाहजी ने दाद दी—"आपने तो तत्त निकालकर रख दिया चौधरीजी !"

छोटे शाह ने गुरुदित्तसिंह की सराहना की—"बात तो आपकी भी खरी थी, पर ढोंकलमलजी पर ढेले क्यों फेंकने !"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"बात तो ठीक है। जो मिल जाये अहलकारी तो रब्ब का बन्दा क्यों काम करने लगा !"

"खालसा राज में भी बड़ी माया-दौलत खट्टी कमायी गयी। दिवान सावन-मल मुलतानवाले के पास सत्तर-अस्सी लाख ! गुप्त की तो बात छोड़ दो ! बेहिसाब सोना, मोती, जगह, ज़मीन ! लहनासिंह मजीठिया करोड़ों का मालिक ! सुननेवाली बात है, तीर्थयात्रा पर लहनासिंह निकला तो पच्चीस सौ के लश्कर पर एक करोड़ खर्चा आया ! मेरठवाला जमादार खुशहालसिंह बनारस पहुँचा और

७०। के छः लाख दान-दक्षिणा कर दी !"

ज़मीन पर उकड़ूं बैठे नजीबे की हाथ की तलियों में सड़कन होने लगी— "शाह साहिब, यह कितनी पुरानी बात होगी ?"

"यही फिरंगी के आने से पहले की !"

नजीबा खलबली में उठ खड़ा हुआ—"यह तो सरासर बेइन्साफ़ी है। मेहनत करनेवालों को रब्ब थोड़े से छोटे दे तकदीरों के और गोदीवाले दरबारियों, अमीर-उमरा को खुले दरिया लगा दिये ! अल्लाह ताला को यह क्या सूझी !"

मौलादादजी ने हाथ से इशारा किया—"बैठ जा, बैठ जा नजीबिये, सब्र रख ! पुराने समय की बातें हैं। फिर ये घुण्डियां अमीरी-ग़रीबी की हमारे-तुम्हारे हाथ में नहीं !"

कृपाराम ने सारी सयानफ़ गले में भर ली—"यह गल्ल-बात खाली बन्दे के हाथ में नहीं नजीबिया, तक़दीर भी कोई चीज है ! अपने-अपने भाग्य अनुसार किसी को चुटकी-भर, किसी को लप्प-भर और किसी को मिल गये ढेरों-ढेर !"

नजीबे का चौड़ी फांक का-सा मुंहान्दरा लम्बोतरा हो गया—"कमाल है न बादशाहो ! क़ुदरत की बात करते हो तो आप जानो कुदरत तो सबको बराबर हिस्सा बांटती है !"

फ़तेह अलीजी ने टोका—"सुन, ओ सुन !"

"क्या सुनूं ! मीह बरसे तो सब पर बराबर ! धूप निकले तो सब पर एक-सी ! चन्न-तारे चमकें तो उनकी रोशनाई एक-सी ! सूरज सब पर ! बन्दे के रिज़क पर ही क़ुदरत ने उल्टी लकड़ी क्यों फेर दी !"

हाजीजी तेवर चढ़ा, अनपढ़ जाहिल की ओर घूरने लगे, फिर झिड़ककर कहा, "ओ जट्ट, कुदरत को रब्ब रसूल मानने लगा है ! याद रख, सूरज रब्ब नहीं, वह डूब जाता है ! चांद रब्ब नहीं, वह डूब जाता है। अल्लाह के अलावा कोई इलाह नहीं ! अल्लाह ही इन्सान को सलामती की राहें दिखाता है !"

सुनते ही मुंशी इल्मदीन का दिमाग रोशन हो गया—"याद रखो, ज़मीन अल्लाह की है ! अल्लाह जिसे चाहता है उसे उसका वारिस बनाता है !"

नजीबा अड़ गया बैल की तरह। मुंशी का मुंह तोड़ने के लिए जवाब न सूझे। बिफर के कहा, "मुंशिया, अल्लाह बेली की जाने अल्लाह बेली। इस वक़्त तो ज़मीनों की सच्ची-झूठी मालकी शाहों के पास है। कोई बन्धे, कोई रहन, कोई गहनें।"

कर्मइलाहीजी ने निकाल ऊंची आवाज़ गले से, धमका दिया—"बस ओए डंगरा ! जो बात न करनी आये तो मुंह नहीं खोलते सभा में !"

शाहजी ने संजीदगी से सारा वार झेल लिया। समझाकर कहा, "भरम न कर नजीबे, बात तो बात से ही कटती है। हो गयी। बाकी तुमसे एक बात पूछता

हूँ—तुम्हें मिले जो तहसीलदारी या सरिश्तेदारी तो कर लोगे ?"

नजीवा पांव के भार बैठ ज़मीन पर लीकें खींचने लगा—"न शाहजी ! अप्पन जट्ट बूट ! क्यारे बना लिये, जिवियों को पानी लगा दिया। बो लिया, काट लिया। ढोर-डंगर देख लिये !"

शाहजी बड़े साहिबे-सलीक़ा बनकर बोले, "नजीबेया, अब तेरी बात आप ही निबड़ गयी। निचोड़ इसका यह कि जो दिमाग़ से काम करे उसे बहुता और जो हाथ से मोटा काम करे उसे थोड़ा ! क्यों जहांदादखां जी ?"

"शाह साहिब, इसे कहते हैं सयानफ़। दूध का दूध और पानी का पानी !"

मुंशी इल्मदीन ज़रा उखड़ गये थे। अपना तुक्का तीर बनाकर छोड़ दिया—"ज़िला लाट का दौरा आज तक न हुआ इन पिण्डों में ! अब क्या खास बात है !"

कक्कूखां बार-बार हुक्का छोड़ अहदियों की तरफ़ देखें और कभी हाथ से लड़ छू लें, कभी सिर की पगड़ी मांथे से ऊपर कर लें, कभी ज़रा-सी नीची।

गण्डासिंह का ध्यान पड़ गया—"खैर मेहर है यारा ! तुम्हारे मुहान्दरे पर सजी हुई है पग्ग तुम्हारी। साहब ने यहां पहुंच कोई एक सूरत नही देखनी। उसके भाने सारे पिण्ड की एक ही पग्ग और एक ही मुंह-माथा !"

मौलादादजी ने टोका—"गण्डासिंहा, वाक-बाणियां हमेशा सही नहीं बैठती। खैर सल्लाह जितने मुंह उतने माथे और जितने माथे उतनी पाग्गें। एक पग्ग और एक मुहान्दरा, यह कैसे हो सकता है ग्रां का !"

मजलिस तमाशा देखने लगी। बारीक़बाज़ी में कौन पछाड़ा जाता है !

गण्डासिंह मंजी से उठ खड़े हुए। दाढ़ी पर लाड़ से हाथ फेरा। बड़े दाना अन्दाज में खेस की बुक्कल मारी और फौजी टंकार से कहा, "ठहरो, बताता हूँ। फ़ैसले के वक्त हर चौधरट्टे पंचायत की पगड़ी एक होती है कि नहीं ! मेरा मतलब वही…"

[illegible] काल परे फर दी। उठे और जाकर [illegible] या—"ओ पुट्ठे बालोंवाले कंजरा [illegible] ! मेरे यारा, तेरे तुल कोई नहीं !"

मैयासिंह ने आवाज़ दे दी—"भज्ज के जाओ, ढोलिये को बुला लाओ ! लग जायें रौनकें !"

"तायाजी, रौनकें बराबर लगेगीं, पर त्रिकालां के बाद। साहब का दौरा सही-सलामत भुगत जाने दो।"

बैठा-बैठी हो गयी तो छोटे शाह ने अखबारी खबर दी—"सरकार नहरी ज़मीन के मामले बढ़ा के रही।"

"बादशाहो, जिवियों के दाम चढ़ेंगे तो जिन्सें भी ऊपर जायेंगी। खेतीहरों

तरतीबवाला मामला जान पड़ता है। सरकार ने कांग्रेस को पहले आगे बढ़-बढ़ थापियाँ दीं, शाबाशियाँ दीं, उसके जलसे जमाये-सजाये, फिर मुसलमीन भाइयों को चोक दे दी कि मियाँ लोगो, तुम भी मैदान मे आ लगो।"

"नहीं काशीराम, यह मेरी-तुम्हारी रंजिश का मसला नहीं। बड़े मसले न इस तरह पैदा होते हैं, न इस तरह हल किये जाते है। असल बात तो यह कि ये नामाक़ूल टण्टे-फ़साद अपने सूबे के बाहर के हैं।"

कभी-कभार अखबार जहाँदादजी भी पढ़ लेते थे—"देखो, इधर लाट कर्ज़न ने बंगाल के दो टुकड़े किये, उधर तन्न-तनाव बढ़ गया!"

"ओहो जी, सरकार ने ऐसा कर भी दिया तो क़यामत क्या आ गयी! ये हदबन्दियाँ जमानों से होती आयीं। खालसों ने काबुल तक का इलाक़ा घेर डाला पंजाब में!"

"दूर क्यों जाना कर्मइलाहीजी, अपने कोटला, ककराली, खारी, खरियाली पहले कश्मीर रियासत के भिम्बर परगना में लगे हुए थे। बाद में सरकार अंग्रेज़ी ने अपनी तरफ खींच लिये। और लो शाह साहिब, पहले शाहपुर ज़िले के आठ पिण्ड अपने ज़िला गुजरात मे लगे हुए थे। बजावत और तवी के इलाक़े को स्याल-कोट मे लगा दिया। सरकार जो चाहे करे। सरकार जो हुई!"

मैयासिंह मजबून से तंग आ गये थे। बड़े बड़प्पन से कहा, "आखीर को हकूमत! कुछ लग्ग-लपेटी तो हाकमों ने भी करनी हुई! कुछ कारस्तानियाँ-कारसाजियाँ करके दिखायें हाकम लोग, तभी उनकी गुड़-शक्कर बनती है!"

कृपाराम को कच्ची-पक्की झोंक आ गयी थी। आवाज़ सुन झट आँखें खोल दीं—"बादशाहो, किसे चखा रहे हो गुड-शक्कर! पटवारी लाब्भमलजी, ज़िला लाट तो आपका कहीं राह मे ही रह गया है। कहीं कबरों मे न लेटा हो पी-पा के!"

"नहीं। ज़िला लाट जलालपुर टेलर डाकदर के साथ भत्ते वेला पूरी करके चलेगा!"

"जी, फिरंगियों का खाना-पीना बड़ा नाकस! ज़रा-सी डब्बरोटी और रत्तीक मक्खन, आण्डे और चाय, कहवे की ठुठ्ठी! पर शाहजी, चेहरे बन्दरमुँहों के लाल सुर्ख! निकाल-निकाल बादामरोग़न पीते होंगे!"

"न जी, बादामरोगन नहीं, फिरंगी लाल रोगन पीते हैं!"

काशीशाह बोले, "बात यह नहीं तायाजी, जहान में दो तरह की कौमें हैं। एक सुरखरू यानी लाल-मुँही और दूसरी स्याहरू—काली-मुँही!"

"ओ जी, कोई चिट्टी चमड़ी और कोई काली!"

गुरुदित्तसिंह का टब्बर सारा गोरा-चिट्टा। कहा, "फिरंगी को तो छोड़ो, बाक़ी जो मुगल से गोरा वह कोड़ा!"

का फ़ायदा है इसमें।"

"जहाँदादजी, आजकल कनक सवा दो रुपये मन, चने एक रुपया बारह आने, ज्वार एक ग्यारह। बाजरा एक तेरह…"

"सोचनेवाली बात है, मामला-लगान ज्यादा तो फ़सल की क़ीमत ज्यादा। तम्बाकू पर मामला सवाया है तो क़ीमत भी अल्लाह के फ़ज़ल से गूढ़ी।"

काशीशाह ने समझाया—"एक गुर याद रहे! बड़े अहलकार के सामने न हँसिए, न रोइए। बस हैरान हो खड़े रहिए!"

सुनकर बैठक में हास्सा पड़ गया।

"बात तो जनाब सौ सैकड़ेवाली है। आनेवाला गिटपिट करता रहे और आप घुन्ने बनकर बिटबिट तकते रहें!"

[illegible] भारखा समझ [illegible] हैं। [illegible]

"शाहजी, क़ौम तो अँग्रेज की बड़ी चौकस!"

"इसी बलबूते पर हकूमत कर रही है। झूठ क्यों बोलें, सरकार का पीछा सुनता है, रियाया के साथ सलूक अच्छा है। कानून आला, चैन-अमन…"

काशीशाह ने रोका—"छापे में आया है कि सरकार मुल्क की बदअमनी से बड़ी फ़िक्रमन्द है। अपना 'पैसा अखबार' और लाहौरवाला 'वफ़ादार' बड़ी लम्बी-चौड़ी पेशीनगोई कर रहे हैं।"

नाई रमज़ान लाहौर जा कम्मियों की लीक पार कर चुका था। धड़ल्ले से कहा, "मुस्लिम लीग भी खड़ी हो गयी!"

मौलादादजी और चौधरी फ़तेह अली लम्बी खाँसी के बाद रुके तो शाहजी की ओर सरसरी नज़र मारकर कहा, "हमको क्या फ़रक़! हो गयी तो चंगा, न हो तो वाह भला! यह तो समझो कि अपने-अपने खेत और अपना-अपना बन्ना।"

"रब्ब आपका भला करे, खेत को भी तो मुँडेर की ज़रूरत पड़ती है! यही करने के लिए कि यह खेत मेरा है, यह तेरा है!"

शाहजी सुनकर बोढ़ के पुराने पेड़ की ओर तकते रहे, फिर सिर हिलाकर कहा, "अपने समझ से तो जो बुलबुली सरकार ने उड़ायी है, उसका ताना-फेरा निबड़नेवाला नहीं!"

काशीशाह ने बड़े भाई की बात उजागर की—"यह कुछ तरक़ीब और

तरतीबवाला मामला जान पड़ता है। सरकार ने कांग्रेस को पहले आगे बढ़-बढ़ थापियाँ दीं, शाबाशियां दीं, उसके जल्से जमाये-सजाये, फिर मुसलमीन भाइयों को चोक दे दी कि मियां लोगो, तुम भी मैदान मे आ लगो।"

"नही काशीराम, यह मेरी-तुम्हारी रंजिश का मसला नही। बड़े मसले न इस तरह पैदा होते है, न इस तरह हल किये जाते है। असल बात तो यह कि ये नामाकूल टण्टे-फसाद अपने सूबे के बाहर के हैं।"

कभी-कभार अख़बार जहांदादजी भी पढ़ लेते थे—"देखो, इधर लाट कर्ज़न ने बंगाल के दो टुकड़े किये, उधर तन्न-तनाव बढ़ गया!"

"ओहो जी, सरकार ने ऐसा कर भी दिया तो क़यामत क्या आ गयी! ये हदबन्दियां जमानों से होती आयीं। खालसों ने क़ाबुल तक का इलाक़ा घेर डाला पंजाब मे!"

"दूर क्यों जाना कर्मइलाहीजी, अपने कोटला, ककराली, खारी, खरियाली पहले कश्मीर रियासत के भिम्बर परगना में लगे हुए थे। बाद में सरकार अंग्रेज़ी ने अपनी तरफ़ खींच लिये। और लो शाह साहिब, पहले शाहपुर ज़िले के आठ पिण्ड अपने ज़िला गुजरात में लगे हुए थे। बजावत और तवी के इलाक़े को स्याल-कोट में लगा दिया। सरकार जो चाहे करे। सरकार जो हुई!"

मैयासिंह मजबून से तंग आ गये थे। बड़े बड़प्पन से कहा, "आख़ीर को हकूमत! कुछ लग-लपेटी तो हाकमों ने भी करनी हुई! कुछ कारस्तानियां-कारसाज़ियां करके दिखायें हाकम लोग, तभी उनकी गुड़-शक्कर बनती है!"

कृपाराम को कच्ची-पक्की झोंक आ गयी थी। आवाज़ सुन झट आंखें खोल दीं—"बादशाहो, किसे चखा रहे हो गुड़-शक्कर! पटवारी लाब्भमलजी, ज़िला लाट तो आपका कही राह में ही रह गया है। कहीं क्वेटे में न लेटा हो पी-पा के!"

"नही। ज़िला लाट जलालपुर टेलर डाकदर के साथ मछे वेला पूरी करके चलेगा!"

"जी, फिरंगियों का खाना-पीना बड़ा नाज़ुक! [illegible] डबलरोटी और रत्तीक मक्खन, आण्डे और चाय, कहने की [illegible]! [illegible] शाहजी, चेहरे बन्दरमुंहों के लाल सुर्ख! निकाल-निकाल बादामरोग़न [illegible]!"

"न जी, बादामरोग़न नही, फिरंगी [illegible] हैं!"

काशीशाह बोले, "बात यह नहीं [illegible], जहान में दो तरह की [illegible] एक सुरखरू यानी लाल-मुंही और दूसरी [illegible]—काली-मुंही!"

"ओ जी, कोई चिट्टी चमड़ी और कोई काली!"

गुरुदित्तसिंह का टब्बर [illegible]। कहा, "फिरंगी [illegible] बाक़ी जो मुग़ल से गोरा यह [illegible]!"

मुंशी इल्मदीनजी को मौका मिल गया—"अपने लोग तो खैर गन्धमी हुए।
…-बीच में काले भी हैं, पर ज्यादातर…"

शाहजी ने जाने क्या सोचा और क्या देखा, हमेशा की तरह अपनी सयानफ़
… मोहर लगा दी—"जिस तरह क़ौमें सुरखरू और स्याहरू हैं, उस तरह दुनिया
… खलक़तें भी दो हिस्सों में बँटी हैं। अशराफ़ और अजलाफ़।"

साँवल खोजी का पुत्तर टोटो कहीं से दौड़-दौड़कर आया और पटवारी से
…हा, "लाट जिला पीपलवाले खू के पास पहुँच गया है। आगे-आगे ठानेदार, पीछे
…सकी चपड़ास !"

मौलादादजी ने हुक्का छोड़ दिया—"खैर सल्लाह है पुत्तरजी, हुक्मरानों के
…ाथ कई मीर-पीर और वज़ीर ! जी सदके आयें ! शाह साहिब, ज़रा आगे बढ़-
…कर कीकरोंवाले मोड़ पर मिल जायें साहिब बहादुर को !"

स्वांग पर भीड़ इकट्ठी हो गयी।

दुर्गा भवानी अंग संग हमारी मुश्किल आसान कर।

"हाँ, चल बोल जमूरेया, लक्खी साँसी और स्यालकोटिये जमाल चिड़ीमार
में कोई फर्क नहीं ?"

"क्यों नहीं जी।"

"सोच के बोल, जलालपुरनी बहाराँ और एक-एक मन के चूतड़ोंवाली
डंगली ललाइन में कोई फ़र्क़ नहीं ?"

"बराबर है जी।"

"चल, और बता जमूरेया, बीबी फूलाँ खत्राणी की बग़ोची और चूड़ों की
ठप्परी … नहीं ?"

"तो और बता, …
कोई फ़र्क़ नहीं ?"

"क्यों नहीं जी ! एक के सिर पर साफ़े का साज-सिंगार और दूजे के हाथ
में बोकर बुहार।"

"वल्ले ओ वल्ले ! सही हुआ जमूरेया कि कुछ अक़्ल-बुद्ध है तुम्हारी खोपड़ी
में।"

"अब जो पूछता हूँ उसे आँख से देख-परख के जवाब दे।"

"जो हुक्म।"

"बोल, काम करवाने के लिए बन्दे को कैसी ज़नानी चाहिए?"

"ख़ुरासान की रहनेवाली ख़ुरासानी।"

"वाह-वाह! अब बोल जमूरेया, बच्च-बलूंगड़ों को पालने-पोसने को कैसी ज़नानी?"

"रब्ब सबका भला करे। लालन-पालन को हिन्दुआनी।"

"अब ज़रा ज़ोर लगा के सोचना जमूरेया! मर्द के दिल-बहलाव के लिए?"

जमूरे ने छाती पर हाथ रखा—"यारो, दिल को तरसाने-बहलाने के लिए हूर ईरानी।"

"बहुत खूब! बहुत ख़ूब! अब इतना बताया है तो एक और बात भी बता छोड़। इन तीनों के दिलों में खौफ पैदा करने के लिए?"

जमूरे ने चद्दर फेंक दी। मुँह उघाड़कर तड़ातड़ गालों पर धप्पे मारने लगा। गले से लम्बी हिचकी ली और छाती पीट ली—"लोको, डराने-धमकाने को जल्लादनी-तुर्कानी।"

आसपास खड़े लड़कों ने जमूरे को गुदगुदाना शुरू किया—"उठ जा, ओ उठ जा डोडेया। हूरें बिछी भली, तुम खड़े भले।"

डोडा झूठ-मूठ आँखें मलने लगा—"न जी न, मैं नहीं उठता। मैं अड़ गया हूँ। मुझे तो लेनी हैं दुल्हन बुखारे की।"

एकाएक तमाशबीनों में हलचल हुई और खोजों के नादिर ने दो दिये झापड़ जमूरे की कनपटी पर—"ओए मिरासिया, यह कैसा स्वांग है तेरा! बन्दा कितनी देर तुम्हारी बूथियां-बोथड़े तकता रहे! और अपनी हँसी खैरों से छातियों में ही बन्द रहे! उठ। उठ जा। झाड़ ले मिट्टी चूतड़ों से और छोड़ दे अखाड़ा!"

जने जवान हँसने लगे। निरी बेजान बोलियां। भड़ुवो, तुमसे खुसरे अच्छे। मिरासी होकर ऐसा मिट्ठा स्वांग। जा-जा।

शुर्ली ने नादिर को समझाने की कोशिश की—"उस्ताद, झूठ क्यों बोलें! एक-एक मनवाली बुरी न थी।"

शरीफू ने और लशाया—"क्या अच्छी थी! चूतड़ का नाम ले बन्दे को चूतड़ नज़र न आये तो थूक मिरासी की तालीम पर।"

नादिर ने झुमका मारा—"जट्ट बूट होंगे हम अपने घर। हमें ऐसे फूहड़ तमाशे के काबिल समझा!"

बोद्दे ने टीडा दिया—"मार औरतों की क़िस्में गिना डालीं! कोई पूछे, हमने ज़नानियों के आचार डालने हैं चूप्पेवाले! ख़ुरासानी, ईरानी, पु-

हिन्दुआनी। ओए मिरासिया, अपने को तो दूधिया वीज की हट्ट-कट्ट पंजावन ही चंगी।"

गीडे ने पीछे से आकर वोहे को गलवाँही दे दी—"क्या बात की है घुस्सा-योहन! जो हाथ तले, वह अपनी!"

वोहे ने कसकर लगाया मुण्डी पर—"पशुया, हाथ तले नहीं, छाती तले।"

गीडे ने उछल-उछल डड्डू की तरह शोर मचा दिया—"ओ देखो लोको, मेरे सिर का कमण्डल फूट गया!"

वोहे ने चुमकारा—"आ जा पुत्तरा! फूट गया है तो कुम्हार से नया घड़वा देता हूँ। ओ फग्गू ओए, एक मटका घड़ दे इसकी खोपड़ी के नाप का।"

डोडे को यकायक कुछ सूझ गया। तावली-तावली कोकले पर चादर तान दी और सिर पर लकड़ी घुमायी—"काली दुर्गा, छिन्न मस्तका, सती अम्बिका भवानी उमा पार्वती गौरा चमुण्डा का नाम लेकर याद कर कोकले पुराने वक़्तों को जब मुण्डियों के ढेर लगा करते थे!"

"किस-किस के नाम गिनाऊँ! शाह सिकन्दर, शाह ग़ोरी, शाह गजनी, शाह बाबर, शाह नादिर, शाह अब्दाली—शेरों का शाह सिंह महाराजा रणजीतसिंह!"

चाचा गुरुदित्तसिंह के निक्के पुत्तर दीदारसिंह ने जयकारा बुला दिया—"जो बोले सो निहाल, सत-श्री अकाल!"

कोकले मिरासी ने लेटे-लेटे ही हुंकारा भरा—"ओए, कौन है! किसे खाज-खुरक छिड़ गयी शहर कोट जीतने की! ओए दीदारसिंहा, आराम कर। अब नहीं तुम्हें मिलती ज़फ़र-जंगी मुल्तान फ़तेह करने की और न मिलती नुसरत-नसीबी कश्मीर जीत लाने की। ओए ताजी दाढ़ीवालेया वरखुरदारा, सिक्खा सरदारा, क़ानून लग गया अब फिरंगी का। मस्त होकर हल वाहो, जिंदियाँ सजाओ। छाती-डौले हैं तो लश्करों में जाओ।"

वोधा, गीडा, मुरली और शरीफ़ू कोकले के पास आ ढुके—"ओ मिरासिया, तेरी भूखें जगें।"

कोकला छिड़ गया—"सज्जनो, शादी की भुख, वैरी की धुप्प, ज़िमींदार की चुप्प, माँ मत्रेयी की कुट्ट…"

डोडे ने-टोका—"ओए, तू क्यों दाढ़ी में तिनका ढूँढ रहा है?"

"तुम्हें क्या! मैं शाह को कहूँ, सवार को कहूँ, चोर को कहूँ, साहूकार को कहूँ, वैरी को कहूँ या यार को! तुम्हें क्या!

"ले, और सुन। चोर को चट्टी, कुत्ते को गत्ती, रण को चक्की। अन्न की थग्गी खसमों ने तोड़ी।"

"वस यारा, वस! अब और कुछ न पूछना! मेरी वुद्ध ज़रा ज़्यादा ही

लिशक गयी है। चल, एक चुटकी-भर अमल दे दे। अब आप्पां सोयें !"

डोडे ने हेक निकली—

"अफ़ीम मत खा तू ज़ालिम,
हो जायेगा अफ़ीमी
तन सुकुड़-पुकुड़ जायेगा
खुजायेगा, आवाज़ हो जायेगी धीमी
नाहक क्यों कुनकुना बनाता है
अपने को गुलज़ार यार सिम्मी।"

कोकले ने पलटकर जवाब दिया—"पीर-फकीरों के मुंह से सुना नहीं तूने—

चरस चिलम चोक्खा
न जीवन की आस,
न मरन का दोक्खा।"

फत्तू और सिकन्दर वड़ैच ने शोर मचा दिया—"ओए मिरासियो, कुर्बान को जाने अपनी मौत पर। कोई ताज़ी सोहली बात करो ज़िन्दगानी की। मरन के दोक्खे क्यों ले बैठे ! मौत आयेगी तो मर जायेंगे कि पहले ही धड़की लगा लें !"

कोकले ने झट सलाम किया—"माफ़ी शाहज़ादडो, माफ़ी। कान पकडे। इन अहमकों ने देखा ही नहीं कि पिण्ड का सयाना पूर यहाँ हाज़िर ही नहीं।"

डोडे ने तमाशा बदल दिया—"ढूंढेशाह ढूंढे खाँ की औलादो, ढूंढेमल के बच्चड़ो, ज़रा पीछे-पीछे ! और पीछे, और पीछे ! रत्तीक और, थोड़ा सा और पीछे हो जाओ !"

कोकले ने मुण्डी उठा झुमका दिया—"क्या पीछे-पीछे, ओए डोडेया, मतलब क्या है तेरा ! तू पीछे के ही पीछे पड़ गया ! मेरी समझ में तू ज़रूर सूबा पंजाब को धिक-धिक कर हिन्दुस्तान पहुँचाना चाहता है।"

"चल, चाहता हूं ! जो करना है, कर ले !"

"ओहो भ्रत्या, मैंने क्या करना है !"

"नहीं करना तो टोह-टाह के पहले अपनी गुत्थी देख ले। है एक दमड़ा, एक रोठा, एक गोंगलू, एक ठिप्पर, एक छित्तर—यह भी नहीं ? चल कोई नहीं ! रब्ब भेज दे एक प्यारा मित्र !"

"म्रोए मूतनी के, जियें-जागें मेरे जजमान चढ़ती कलाओंवाले। तू मेरा फ़िकर तो करना न ! यहाँ खड़े सब साहबज़ादे, जट्टज़ादे, अखुण्डज़ादे कुछ-न-कुछ देकर ही अपनी तौफ़ीकें बढ़ायेंगे।

"बादशाहो, फैलाऊँ झोली, फिराऊँ थाली !"

"मुड़ ओए, बड़ा आया मिरासवाला। अपने चाचे-बाबे के साथ आया करो। तुम्हारा नहीं जमता स्वांग !"

डोडे ने खींच कोकले की चद्दर, सिर पर साफ़ा बांध लिया। उँगलियों से मूँछों को मरोर दिये। अकड़कर घोड़े की रासें खींचीं—"खबरदार, लग जाओ किनारे। खालसा फ़ौजें चलीं गज्ज-वज्ज के। दबड़···दबड···

"आगे-आगे वड्डी सरकार। रणजीतसिंह महाराज। डेरे पंचनद अटकों पार। गज़नी, क़ाबुल और कन्धार। तगड़ी मूँछोंवाले महाबली सरदार। झण्डे फिर गये अटकों पार।"

कोकले ने आवाज़ दी—"ओए डोडेया, चुप क्यों हो गया !"

"बात यह है कोकले कि माला टुट्ट गयी। मनके बिखर गये।"

"डोडेया, यह क्या बोल दिया !"

"कोकले, चलियांवाला क़त्लगढ़ का नाम सुना है क्या ?"

"सुना है।"

"फिर क्या कोकले ?"

"उसी मनहूस मैदान में पंजाब की कोहेनूरी कलगी खो गयी।"

"हाय ओ, जा लगी गोरों के हत्थ। चढ़ गया हीरा मलका के मत्थ। सारे हिन्दोस्तान पर पड़ गयी अंग्रेज़ राज की छत।"

"खबरदार ! होशियार !

"पलटनें-लश्कर मुड़ते हैं जनरैली सड़क पर !

"कलकत्ता से दिल्ली !"

कोकला उठ के खड़ा हो गया—"डोडेया, यह न होने दे। चिट्ठियां कर दे जंगी लाट को !"

"क्या लिखूँ रुक्के मे ?"

"लिख दे—हाकमा, जो जायेगा दिल्ली सो पछोतापगा। सरकारें पहुँचीं दिल्ली और रस्ता काट गयी बिल्ली। जो जम गया दिल्ली सो नेस्तनाबूद।

"न, दिल्ली है दाखलाफ़ा। जो डट्ट गया उसकी इज़्ज़त में इज़ाफ़ा।"

"भोलेया, अब दिल्ली में न तख्ते-ताऊस। न कोहेनूर। न शाह-बादशाह। न लकझक बेगमें। न शाहज़ादे, न शाहज़ादियां। न हीरे-मोती। न उठती हुई जवानियां।

"सुनो लोको, ये सारी जिन्सें चुरा-चुराकर फिरंगी अपने मुल्क में डाल आया।"

"डोडेया, अब क्या हालत है दिल्ली की ?"

"सुन। अब वहां बिकता है हरा धनिया। चिट्टा जीरा। काली कलौंजी। हरी इमली। पीली हल्दी और टाटरी खट्टी-टीट।"

"ओए, अंग्रेज़ बड़े लुटेरे। मुल्क अपने का सारा शाह-सत्त खींच ले गये। डोडेया, एक बात तो बता ! इनकी सनकुक्कड़ी मेमों के क्या राग-रंग !"

"उनका नाम न ले। खसमपिट्टियों को शरम-हया नहीं। अलफनंगी टाँगें। न सूथन, न सलवार। माडी-सी छाती ढकी हुई और दो उंगल का जाँघिया। मलकड़ी उतर आयें।"

"बादशाहो, अब आगे कुछ न पूछना। मर जाऊँगा जजमानो, मैं ढह जाऊँगा। हाय ओ रब्बा!"

भोटे गब्बरुओं ने शोर मचा दिया—"ओए माँ के यारा, सभा के सिगारा, सच करके दिखाया है! वल्ले-वल्ले, क्या महतावी छोड़ी है! क्या तस्वीर दिखायी है गोरी मेमों की!"

"शाहज़ादड़ा, गोरी मेमों की आसें न लगाओ। न दिल अपने प्लीत करो। किसी लुकमान हकीम ने अनुपान तो नहीं बताया कि फिरंगी मेमों को गोद भरो।"

"जजमानो, जो जाओगे इस खेल के रास्ते तो हिस्से तुम्हारे पड़ेंगे—बेभरे घुट्ट, ठानेदार की कुट्ट, शर्मिन्दगी की चुप्प, सक्खनी बुक्क!"

"छोटी-सी अर्ज़ है बादशाहो! आज आपके खादिम शीरेवाली मीठी घुंघनियाँ खाने की लगन में बैठे हैं!"

"जागो रे जागो लोको, मेरे पुत्र पर टोहका चल गया। हाय रे, मेरा लाड़ला गर्दन से गया। अरे, कोई क़ातिल को पकड़ो···शरीक़ों ने वैर कमा लिया···"

पिण्ड अभी सोया ही था कि सुनारों के यहाँ से अँधेरे में लपलपाती आवाज़ सुन झटापट उठ बैठा।

चाची महरी ने शाहनी को हाथ से झँझोड़ा—"बच्ची, किसी ने धाड़ मारी है। ज़रूर कोई जाता रहा।"

दिवान सुनारे की घरवाली ने दोहत्थड़ मार छाती पीट ली—"जिस कंजर की औलाद ने यह वैर कमाया उसके नैन-प्राण टूट-टूट पड़े। उसके कातिल पुत्र को फाँसी के तख्ते तक न पहुँचाऊँ तो इस अभागी माँ का नाम भी वीरांवाली नहीं। हाय ओ मेरे लाड़ले पुत्रा, तू कैसे पड़ गया इन वैरियों के हाथ!"

वीरांवाली की चीखों ने पिण्ड इकट्ठा कर लिया।

थर-थर काँपता दिवान सुनारा हाथ में गुल पकड़े करतारे की कोठरी की ओर बढ़ा तो उसने दलहीज़ पर खड़े ठण्डी आवाज़ में धमका दिया—"खबरदार,

किसी ने मेरी कोठरी में क़दम रखा तो !"

दिवान सुनारे की घिग्गी बँध गयी—"अरे ज़ुल्मियो, वह मेरे जिगर का टुकड़ा है। देखने तो दो ज़िन्दा कि···"

वीरांवाली ने अँधेरे को फाड फिर चीख मारी—"अरे पिण्ड के बड़े इन्साफ़ियो, पगड़ियाँ उतार सोये पडे हो ! अरे, कोई तो आगे आओ हमारी इमदाद पर !"

शाहों की हवेली की तरफ़ बाँहें फैला दी—"हम जिनकी छाँह में, उन शाहों के यहाँ से पखेरू नहीं फड़कता।"

नयी बैठक में सोये तारेशाह की बाँहें और मूंछें फड़कने लगीं। तहमद कस नीचे उतरा और ज़बर कदम उठाकर सुनारों के यहाँ जा पहुंचा।

गुल की रोशनी में गुलज़ारी की माँ वीरांवाली आग्नेयी बन तड़पती थी—"अरे, मैं नहीं जीती अब। हाय ओ रब्बा मेरेया, मेरे पुत्र की यह क्या ललाट-रेखा खींच डाली थी !"

थड़े पर खड़ी वीरांवाली को हाथ से घेर तारेशाह ने ढाढस दिया और हाथ से इशारा किया—ख़ामोश !

फ़क़ीरे के हाथ से गुल ले करतारे की कोठरी की ओर बढ़ा।

भीड़ में हर साँस को कान लग गये।

करतारे ने कपाट पर हाथ दिये-दिये ही ठण्डी आवाज में कहा, "मेरी कोठरी की ओर मुंह न करना।"

तारेशाह की आवाज़ कड़की—"ओए, भज्ज के जाओ, मेरी बैठक से दारू ले आओ।"

तारेशाह ने क़दम उठाया कोठरी की ओर—एक-दो-तीन···और बाजू बढ़ा एक ही झपट में करतारे की मुण्डी पकड़ दीवार से दे मारी।

"ओए चमारा, किसकी शह पर यह खेल खिलाया है ?"

तारेशाह कोठरी में दाखिल हुआ। गुल नीचे की—मंजे पड़ा गुलज़ारी ख़ून में लथपथ।

तारेशाह ने छाती पर हाथ रखा और गर्दन पर दारू उँडेला। तड़प-तड़प गुलज़ारी की आँखें थिर हो गयी। साँस चलती जान मंजी के लिए आवाज़ दी।

कोठरी को सूंघा। कोने में पड़ी एक जुल्ली। एक दोतही। पास ही ख़ून से रँगी कोई पोथी। उठा के देखा—क़िस्सा जुलेखा।

गुलज़ारी को मंजी पर डाला तो किसी ने आगे बढ़ दूध के दो घूंट ओठों को लगाये।

दूध ओठों से निकल ख़ून में रलते-मिलते देख दिवान सुनारा मत्था ज़मीन पर पटकने लगा—"मेरे मालिका, उठा ले मुझे !"

चाचा करमदीन का कोठा पिछवाड़े राधू सुनार की खुरलीवाली दिवार से

मिलता था। हादसे को समझ-बूझ दांत-दर्द के बहाने मजी से उठ खड़ा हुआ और भीड को सुनाकर कहा, "मैंने कहा तूम्बा दे मुझे घी-हल्दी का। टीसें ऐसी उठती है कि दाढ-तलें कोई ववा उठ आयी हो।"

नीचे खड़े वजीरे ने तल्खी से कहा, "चाचा, तूम्बे का जिक्र ही काफी नही। नीचे उतर आओ। टोहका चल गया है।"

राधू सुनार ने चाचा कर्मदीन को बीच मे ही रोक लिया।

दोनो बाहर आये तो चाचा कर्मदीन ने झूठी फिक्की टकार से कहा, 'तारेशाह, वक़्त न गँवाओ। मंजी उठवाओ और लड़के को दवा-दारू तक पहुँचाने की करो।"

तारेशाह ने उड़ती-उड़ती नजर चाचा कर्मदीन और राधू सुनार पर डाली और पास खड़े नजीबे को आवाज दी—"नजीबेया चल मेरे साथ।"

तारेशाह ने गली के पिछवाड़े कर्मदीन की खुली ड्योढी में जाकर आवाज दी, "कौलों भरजाई, भूसेवाली कोठरी से सुनारों का चिराग निकाल बाहर कर दे, नही तो तेरा घर फुंक जायेगा।"

भूसे के ढेर मे छिपा बाली थरथर कांपने लगा। आव न देखा ताव और कोठरी से निकल पौड़ियो पर पाँव रख लिया।

तारेशाह ने पलक झपकते खूंख्वारी से लड़के को बांह से दबोच लिया!

बाली सहम से ऊँचा-ऊँचा रोने लगा।

तारेशाह ने दो-चार हत्थ मार लडके का मुंह घुमा दिया—"जल्दी से फूट दे, टोहका कहां छिपाया है!"

कौलां हाथ मे चिराग ले भूसे के ढेर की ओर बढ़ी और पुचकारकर कहा, "ढूंढ़ ले पुत्तर, दे दे। पकडा दे तारेशाह को।"

एक हाथ के शिकजे मे बाली, दूसरे मे टोहका—तारेशाह ने गली मे आकर सबकी ऐसी-तैसी कर दी "अपने-अपने नाम, वल्दियत, जात और साकन याद कर डालो। यहां माजूद लोगो मे से कोई भी गवाही देने को मुनकर हुआ तो समझो गया! क़ानून के मुताबिक वह क़त्ल में मददगार समझा जायेगा।"

राधू सुनार ने आवाज की भभकी पहचानी और आगे बढ हाथ जोड दिये—"इस घडी तुम शाहवली हो। दो खानदानो को गर्क होने से बचा लो।"

तारेशाह ने क़दम आगे बढा लिया—"जहां खूनी और खून एक साथ माजूद हो वहां न दोस्तदारी न रिश्तेदारी!"

काशीशाह ने पहुँचते ही गुलजारी की नब्ज देखी। छाती पर हाथ रखा। फिर छोटी-सी डिबिया निकाल चुटकी भरी और हाथ से गुलजारी के मुंह में रख फूंक मार दी।

महांसिह के टब्बर ने आ वीरांवाली और दिवान को हाथ दे ढांढस दिया—

"ऊपरवाले से भिक्खया माँगो। काशीशाह ने शेर का कलेजा मुँह में फूँका है। सच्चे पातशाह, जातक की रखया कर।"

गली का झब्बा कुत्ता मंजी के आस-पास घूम-घूम पले-पले राघू के टब्बर पर झपटे-भौंके।

काशीशाह ने वीरांवाली को दिलासा दिया—"भरजाई, रब्ब के घर में कोई कमी नहीं। जाप करती चल। काके की बड़ी हुई है, नहीं तो झब्बू इस घड़ी करलाता होता!"

वीरांवाली छाती पीटने लगी—"अरे, मेरा दूध मार रत्त वहाया। पहाड़ोंवाली देवी खूनी को न छोड़ेगी। कट-कट गिरेंगे अंग उसके।"

"बस भरजाई, लड़के का भला चाहती है तो जप्प कर। आठ कोस पैण्डा है। जाप का एक मणका न छोड़ना। जप्प में बड़ी सत्या।"

राघू सुनार थर-थर काँपने लगा। सहन न कर सका तो दिवार से ढाह दे मारी—"हाय ओ लोको, मुझे आज की रात मसानों में सुला आओ। आँखों से कल का सवेरा न देखूं। साँइया, औलाद ने खानदान पर खून की वज्ज लगा दी।"

घोड़े पर सवार शाहजी आये तो तारेशाह को कान में कुछ कह, आगे बढ़ गये।

इधर गुलज़ारी की मंजी उठी, उधर तारेशाह ने वाली को साथ ले हवेली की ओर पीठ कर ली। मुड़कर करतारे को आवाज़ दी—"कोठरी में पाँव न रखना।"

छतों-बनेरों से झाँकती जनानियाँ हाथ मल-मल कहें—"अन्धेर साँई का। मल्ला सुनार-पुत्र को यह क्या सूझी! न जिवि-फ़सलों का झगड़ा, न घर-कोठे फ़साद। उठा के टोहका चला दिया भाई की गर्दन पर।"

दोनों भाई करतारे लुण्डे की कोठरी में क़िस्सा गाने बैठे थे। गुलज़ारी ने वर्का खुला कि वाली ने उठा टोहका गर्दन पर वार कर दिया!

शाहनी ने माउन्टीवाले बनेरे से चोह की ओर तक्क मारी—"मल्ला ये झीवर रुक क्यों गये कण्डे पर!"

चाची को कुछ न दीखे। गूढ़ी अँधेरी रात अमावस की। ऊपर आसमान पर तारे, नीचे अन्धेर घुप्प घेर।

"बच्ची, अँधेरे में कहाँ नजर आता है!"

छोटी शाहनी ने त्रिकाल सन्ध्या की सीध देखा। अँधेरे में रोशनी टिमटिमाती थी।

"इस चाल से चले तो कब पहुँचेंगे! लड़का उबरे आख़िरी स्वास गिन रहा है।"

चोह का रेता पार कर झीवरो ने क़दम धीमे कर लिये।

बीच-बीच में कुछ हँफे, फिर मंजी कन्धो से उतार ली।

दिवान सुनारे से न रहा गया—"स्वासों में अटकी पड़ी है मेरे बच्चड़े की जान। इस बुरी घड़ी ऐसा वैर न कमाओ। जरा त्रिखा पाँव उठाओ।"

गंगू झीवर ने काशीशाह को आवाज़ दी—"शाह साहिब, जातक के मुँह में ज़रा दूध-घी डालो। गरमाहट रहेगी।"

दूध ओठों के बाहर ही ढुलक गया तो राधू सुनार का कलेजा मुँह को आ गया। दिवान का हाथ पकड़ रो-रोकर कहा, "जिस पीर-फकीर की मेहर से बच्चडा तेरी झोली पड़ा था उसी के आगे झोली फैला मेरे भ्रत्था।"

दिवान ने कुछ कहना चाहा पर गला रुंधया गया। काँपते हाथ लालटेन को थिर किया और फफक-फफककर रो लिया।

शाहजी का घोड़ा साथ आ मिला। घोड़े से उतरे। दोतही पट्टू में हाथ डाल गुलज़ारी का पिण्डा देखा। गर्म।

"पाँवों में पंख लगा लो जनेयो। जान बचा लो लड़के की।"

काशीशाह ने मुँह में अर्क डाला तो लड़का कराह उठा। पागल की तरह दिवान ने काशीशाह के पैर पकड़ लिये—"छोटे शाह, कुछ करो कि रास्ता कट जाये!"

"उस सच्चे पातशाह की मरजी के बिना पत्ता नहीं हिलता। उस दाते से मांगो, रहम करेगा। बस, पाठ करते रहो।"

बड़े शाह ने दिवान और राधू को कन्धों से छूकर कहा—"थाना-कोतवाली बाद में। पहले सलामतगढ़वाले जर्राह खलीफा तक पहुँचने की करो।"

फिर आवाज़ होली कर दोनों शरीको के आगे अपना फ़ैसला रख दिया—"दो ज़िन्दगानियाँ जायेंगी और दोनों टब्बर उजड़ जायेंगे। दोनों घरों मे एक-एक पुत्र।"

शाहजी ने राधू को हाथ से सैनत की तो राधू ने पगडी उतार भाई के पाँव में रख दी—"मेरी गवाह है साच्चे दरबारवाली। जो भतीजे गुलज़ारी को कुछ हो गया तो अपने हाथों पुत्र को दरिया में बहा आऊँगा।"

शाहजी ने दिवान को हाथ दे अपने पीछे घोड़े पर बिठा लिया। झीवरो को दम्म-दिलासा दिया—"हवा बनकर चल निकलो। गंगू चाचा, अपने पैरों का सदका, इसे मौत से तुम्हीं बक़शवा सकते हो।"

झीवर घोड़े की रफ़्तार दौड़ने लगे—

राम रहीम
हैय्यी शाबाश
रहीम क़रीम

हैय्यी शाबाश
जल्दी-जल्दी
हैय्यी शा···

सुर सिलसिलाए अहले जुनूँ मूए मुहम्मद
महराबे इबादत खम अब्रूए मुहम्मद।

यादे-इलाही में मिरासियों के कोठे से ज्यों ही डोडे और कोकले के मिले-जुले सुर उठे, गाँववालों ने जान लिया कि खैरों से क़दमों के मेले की तैयारी है।

छोटे शाह माथा टेक कुटिया से लौटे ही थे। सीढ़ियों पर कदम रखते ही आवाज कानों में पड़ी तो रोमांच हो आया।

काशीशाह चारपाई पर आ बैठे और ध्यान में आँखें मूंद लीं—"सुल्तानुल सुल्तान, तेरी मेहर-क़रम से यह भिनक कानों में!"

बोल [illegible]

"आज यह सही हो गया कि डोडा और कोकला अच्छी तालीम की राह पर हैं। मौलू का इरादा इस बार इन्हें क़दमों के मेले में पेश करने का है। इन्हें दूध लगा दो। बादाम-मिश्री कुछ फाँक लेंगे तो गला हरा रहेगा। खैरों से आज से रियाज शुरू कर रहे हैं।

शाहजी ने नवाब को आवाज दी—"नवाब बादशाह, भण्डार से टोपा-भर बादाम ले लड़कों को दे आओ और एक वेला दूध का गड़वा इन्हें पहुँच जाये तो मेले तक गला खुल जायेगा।"

"जी शाह साहिब!"

नवाब ने चोर नजरों से चरखा कातती चाची की ओर देखा और नीचे उतर गया।

डोडा, कोकला, दूने चाव से गाने में मस्त हो गये—

मेरा पेशवा अल्लाह बक्श पेशवा
महबूबे-खुदा मामून अल्लाह बक्श पेशवा
मेरे साहिबे-औलिया अल्लाह बक्श पेशवा

मेरे पेशवा···

सुन-सुन तन-मन भीज गये। लाली को ले खटोले पर बैठी राबयाँ संग-संग गुनगुनाती रही।

शाहनी ने देखा तो कहा, "क्यों री, दोनों भाइयों ने कैसे मीठे सुर निकाले हैं! नये ही बोल जापते है। बावे बुल्लेशाह की काफी तो नही?"

"जी शाहनी! यह काफी बुल्लेशाह की नही, गंगोईशाह की है!"

छोटे शाह सुनकर बड़े खुश हुए—"राबयाँ बेटी, तुमने यह कैसे जाना!"

चाची ने बड़ाई की—"पुत्तरजी, राबयाँ खैरों से मसीती बैठी थी। खैर सदके, कुरान शरीफ के सपारे याद हैं इसे! बता शाहजी को!"

छोटे शाह को लडकी के लिए बड़ा लाड उमड़ा—"बल्ली, यह नही बताया कि तुम्हे गंगोईशाह की शनाख्त कैसे हुई!"

"जी, पार से पारसाल चाचा के साथ ढोंकल गयी थी जियारत मे। वही सुनी थी यह काफी!"

बड़े शाह अपलक राबयाँ को देखते रहे।

मोटा गाढा कप्पड़, ऊपर झलक सुच्चे पट्ट की! वाह क़ुदरते!

शाहजी कुछ कहने को हुए कि अपने ही कान मे जैसे दिल ने हौले से कहा, 'हीर किस देखी!'

चाची बोली, "बड़ी वड़भागन है री तू! लखनदाता के दरबार भी हो आयी! बच्ची, लाली के मुण्डन कर पहले तो सीस नवायें बाबा फरीद के दरबार, फिर चलें सखी सरवर के हज़ूर!"

शाहजी बोले, "राबी, जो मन हो तो कुछ सुना!"

शाहजी भाई के साथ मंजी पर बैठ गये तो शाहनी लड़की के पीछे पड़ गयी—"राबयाँ बल्ली, शाह मदार की काफी सुना भाइयों को! कल रात गा रही थी न!"

"जी शाहनी!

ज़िन्दा शाह मदार
अल्लाह किस औन्दा देखया
मदार री मदार
नीले घोड़ेवाला
सब्ज दुशालेवाला
बाँकिया फ़ौजांवाला
किस औन्दा देखया
नीले घोड़ेवाला!

घनीली-रसीली आवाज़ राबयाँ की दिल-मन से उठ गले में घुल गयी।

समय-थान भूल गये।

दोनों भाई उठे तो बारी-बारी राबयाँ के सिर पर हाथ रखे—"जीती रहो! जीती रहो!"

शाहजी ने जैसे दरिया-पार से हाथ लौटाया हो। कुछ कहने को हुए कि लड़की की नज़र में तिरती एक किश्ती झिलमिला गयी। सिर हिलाया—नहीं। और चुपचाप अपनी बैठक की ओर मुड़ गये!

शाहनी दो-चित्ती-सी देखती रही, फिर एकाएक भासा जैसे दरियाओं ने रुख बदले हों और किनारों पर ढह लग गयी हो।

राबयाँ ने लाली को पंगूड़े से उठा शाहनी की गोद में लिटा दिया और आप खड़ी-खड़ी खेसियाँ-दोत्तहियाँ तहकर पच्छी में डालने लगी।

लाली का घुंघराला छनकना छनकाते शाहनी ने अचानक राबयाँ की ओर ताका।

हैं री, देख तो लड़की को। क्या ठहराव मदमाता और पनीली-भरीली अँखियाँ!

पूछा, "क्यों री कुड़े, कितने दिनों में नहाती हो?"

राबयाँ हँसी—"नित नहाती हूँ शाहनीजी!"

शाहनी छन-भर को रुकी, फिर कहा, "क्यों री, जिन्दगानी से होने लगी न!"

राबयाँ कुछ न बोली। जैसे समझी न हो।

"पूछती हूँ, रुत से होने लगी न!"

"जी शाहनी!"

शाहनी ने लड़की को नयी चितवन से देखा, फिर कहा, "दिनवार शरीर में न्दगी हो तो भले नागा कर लिया कर।"

सामने से बिन्द्रादयी चली आयी। राबयाँ को घूरकर बोली, "खुम्बी बनी कती रहती है! मैंने कहा जिठानी, शक्ल-सूरत से लगती है यह अराइयों की

अरी सिरमुन्नियाँ, मरदों के सामने ढंग से उठा-बैठाकर!"

राबयाँ खड़ी-खड़ी मुस्कराती रहीं।

ले री, तेरी साथनें आ पहुँची हैं। बाहर-अन्दर जाना हो तो हो आओ।"

शमा-चन्नी के साथ राबयाँ नीचे उतर गयी तो बिन्द्रादयी बोली, "तो कमादों की तरह झट क़द निकाल लेती हैं। दोनों बहनें फ़तेह और या ऊँची निकली हैं! राबयाँ तो हमें चंगी, पर री मरगयी हुस्ना सोहणी ी भर कर! मुखड़ा देख जनानी की आँख नहीं झपकती, मरदों की कौन लिया धियों की शादी-ब्याह कर सुरखरू हो तो भला! ते हैं करज़ाई होकर बैठा है!"

"वन्दा तुम-सा भी सीधा न हो जिठानी। अलिया अकेला करज़ाई है क्या! अपने शाहों की लिखत मे घरों-के-घर वँधे पड़े हैं। शाहूकारा ठहरा! दादे ने लिया तो पौत्र और पड़पौत्र तक चलती रहती है देनदारी।"

"अरी, यह सूद की पण्ड बड़ी डाडी जट्ट किसानों पर!"

"जिठानिये, जो तंगी-तुर्शी मे पैसे-धेले से मदद करे, वह सूद-ब्याज का हक़दार तो हो ही गया न!"

"हो भले, पर री ऐसा भी क्या कि तीन पीढ़ियाँ इनकी लपेटनियों में लिपटी रहें!"

बिन्द्रादयी के मुँह से शाहों के वावे-दादे बोलने लगे—"भोली बातें न कर बहना! खत्रेटे शाह दवदवा न रखें तो ये जट्ट मुसले दमड़ी न लौटायें। जिठानी, इनमें हिन्दुआनी सब्र नहीं कि कुछ खायें, कुछ बचायें। इनकी तो बस आयी चलायी। इनकी मत्त-बुद्ध ही ऐसी। ईद पर तम्बा न हुआ तो नंगा।"

चाची महरी को अनोखाँ बीवी याद आ गयी—"बच्ची, अनोखाँ का पुत्तर क़ाबुल जा सुच्ची दरियाई वालों के पास जा लगा। रुपयों की मूठ मिलने लगी। यहाँ अनोखाँ का वही पीहन, वही चक्की। मैं एक दिन कह बैठी—'है री अनोखाँ बीवी, पुत्र को एक रुक्का भेज। चंगा खट्ट कमा रहा है दिसावर में। कुछ घर के लिए भी बचा ले।'

" 'माहिया, पुत्र मेरा अपनी तासीर तबअ के वश। जब तक पैसा आयेगा, दीन-मुहम्मदी रज्ज के खायेगा। मौज करेगा। न होगा तो रब्ब का नाम ले सब्र कर लेगा।'

"मैंने घुड़की दी—'अनोखाँ, छोड ये बातें। छोटा-मोटा छाप-छल्ला घड़वा ले। किसी वक़्त काम आयेगा।'

"अनोखाँ हँसने लगी—'जट्ट पुत्तर पैसों को भी दाने समझता है। कोई पराच्छा-अरोडा तो नही चाची!' "

शाहनी बोली, "अनोखाँ ने खरी कही। इनके पराच्छे और अपने अरोड़ों में कोई लम्बा-चौड़ा फर्क नहीं। दोनो सुई के नक्के पर चलते है। न खर्चना, न खाना। वस जोड़ना।"

"हैं री, जोड़ के किस हंडाया! जो खा-वरत जाओ, सो हो अपना! आँखें मीटे पीछे किस देखा!"

"धियो, जो कोई कहे धर्म का चोला बदलने से मनुक्ख की तासीर बदल जाती है सो झूठ। खोजे-पराच्छे दीन कबूल करने से पहले अरोड़े-कराड़ ही थे न!"

"वरावर थे। गक्खड़ों ने भी दीन कबूल कर लिया, पर ब्याह-शादी मे वही हमारेवाले लाँवा-फेरे और खारा-बिठाई। और सुन, इनके ढंग-कारजों में काज़ी-बाम्हण दोनों मौजूद रहते है। सुन्नत मुसलमानी को छोड़कर वही झंड-मुण्डन,

तम्बोल-माइयां, वही वटना न्योन्दरा, वही जंज, वही सेहरे सरवाले।"

"पर री, यह अल्ल मुसलमान क्यों हुई ! क्यों घुटने टेके ! हक़ीक़त बच्चड़ा मरा न अपने धर्म की खातिर ! आज तक दिलों में पुजता है !"

"सुनने मे आता है स्यालकोटिये पुरियों का पुत्र था। मदरसे में मौलवी से कुछ कहा-सुनी हो गयी। काज़ियों ने कैद करवा लाहोर मे मुक़दमा चलवा दिया। इनको जुल्म कौन सिखाये ! बच्चड़े के पीछे पड़ गये। मौत की सज़ा सुना दी।"

"मल्ला जीते-जी धर्म भ्रष्ट कौन करना चाहता है ! पर यह तो, री, अपनी धरती पंचनद की। पुण्य और पुज्ज दोनों एक साथ। लहरें-बहरें देख अपनी जिवियों और दरियाओं की नित नये ग़ाज़ी और नित नये लश्कर। कोई आगे बढ़-बढ़ लड़े, खेत हो गये। मरने से थिड़के तो घुटने टेक दिये। दीन क़बूल कर लिया। पिण्डो-के-पिण्ड, टप्पों-के-टप्पो ने क़लमे पढ़ डाले। बस निखड़ गये अपने वंश-कबीलों से !"

"चाची, सच पूछो तो अंग्रेज के राज की सौ बरकतें। लोकों को सुख का सांस तो आया। ग़र्क़जाने आये-दिन के हो-हल्ले और खून-खराबे तो खत्म हुए !"

"बहनू, वह मोटे मुंहवाली मलका, देखती तो हो न रुपयों पर ठाप्पा। वही थी अंग्रेजों की वड्डी-वड्डेरी। उसी के टब्बर का राजपाट है।"

"सुनते हैं भावें मलका थी मुल्क की, पर गबरू उसके हुक्म के हेठ था। यह मुच्छड़ शाह उसी का अंश है।"

"हो मलका महारानी ! बहन मेरी, मर्द का साया तो उसके लिए भी लाजिम।"

चाची ने कोई आवाज़ सुनी हो जैसे—"बिन्द्रादइये, गुरुदास रोया है। क्या सबब ! मीठा ढोढा तो नहीं मांग रहा !"

"न, कान की पीड़ से रो-रो जाता है।"

चाची ने झिड़का—"मूरखे, रुलाने से ठीक हो जायेगा क्या ! तेल मे लहसुन जलाकर डाल। चैन पड़ेगा। न फ़रक पड़ा तो लड़कीवाली सज्जरी माँ के थन से दूध की धार मरवा ला। उच्ची वण्डवाली आराकईयों की प्यारी कल ही चालीसवां नहायी है।"

जट्टों राज नाही
मुट्ठों काज नाहीं
घोड़े बिन साज नाही
डाची बिन कार नाही।

नमाज़ वेला खट्टेवाले खू की गाद्दी पर बैठे हाजीशाह ने आवाज़ पास आती जान आंखो पर से खेस हटाया।

कौन है जो सुर मिलाये इधर चले आ रहे हैं ?

हूं ! अपना सिकन्दरा और गुलाम नबी। पूछो अहमकों से,सवेरे-सवेरे हमे क्या बताने चले कि जट्टो से राज नही ! यह कोई भेद-भाली बात है ! अपना तो राज ही जिवियां खेत ! श्रो किसी ने यहां से छलांग मारी तो पुलिस-फौज में पग्ग पेटी !

खुले गले हांक मारो—"क्यो सिकन्दरे-आज़म, आज सुबह-सवेरे कैसे ! यह कोई दण्डी-संन्यासी का थान नही, जहां शाह सिकन्दर आके खड़ा हो ही जाये !"

दोनों लड़के हँसने लगे। सिकन्दर ने दलांग भरी और नज़दीक होकर कहा, "सलाम करता हूं जी ! खेत के निकले तो मन में आया चलो हैदरशाह को ही मिलते जायें ! खैरों से अभी कुछ दिन तो रहेंगे न !"

"यार तुम्हारा कल ही तैयार है जाने को ! काम-धन्धा छोड़कर आया है।"

हाजीशाह ने छोटे भाई को आवाज़ दी—"हैदरशाह, ज़रा खू की ओर श्राना। तेरे लँगोटिये खड़े हैं !"

चारखाने तहबन्द पर पिड़ियोवाला खेस ! हैदरशाह ने बाहर आते ही सिकन्दरे को बांहों मे भर ऊपर उठा लिया।

"ओये रानीखां के, तुझे रात-भर नीद नहीं आयी !"

"न यारा, नीद कैसे आनी थी। दिल तो लगा हुआ था न तेरी यारनी मे !"

फिर हाजीशाह को सुनाने के लिए कहा, "ओए पिण्ड दादनखां के दरोगेया, सुनते है तुझे डंगरों की जागीर मिल गयी है ! कुछ फैज़-फ़ायदा हमें भी करवा छोड़ !"

हैदरशाह खू से दूर ज़रा मुंडेर से नीचे उतर गया। आवाज़ हौली कर पूछा, "ओ बाशे, क्या नियत है !"

"अपनी समझ मे तो एक ही बात आयी है कि डाची बिन कार नही ! यारा, एक रात को मिल जाये सांडनी तो काम निबटा घरों को परतनेवाले बनें।"

"अपना हिस्सा ?"

"चौथाई—न कम, न ज़्यादा ! है मंजूर !"

"शर्त एक है !"

"यारा, वह भी साफ़ कर ले !"

"मुंह अँधेरे मोमदीपुरवाली मसीत के पीछे पहुंच जाये मेरी डाची।"

"हो गया क़रार।"

"बाकी हिस्सा माल ?"

"बराबर चार !"

हैदर ने पीठ मोड़ी और गाद्दी पर बैठे अपने भाई को सुनाकर कहा, "सिकन्‍ अगर किल्ले से डाची खोली तो वापस किल्ले बांध जाना !"

"हल्ला !"

दोनों मन्सूबिये खेत से लौटते लटबौरियां करने लगे।

शिरींहवाले खू पर मुटियारों की किलकारियां-नटखनियां सुन पड़ती थी।

दोनों के तन-बदनों को धूप लग गयी।

ऊपरी वण्ड की नयी ब्याहेली हबीबो बिन कप्पड़ ओलू में बैठी मुंह पर छं मारती थी।

रेशमा ने दुपट्टी से छाती ढँपी थी।

"हट री हबीबो, ज़रा आगे को हो !"

हबीबो शरारत से छींटे मारने लगी तो प्यारी ने पीछे से गुत्तड़ी खींच ली—"अरी, बड़ी खुमानी बनी फिरती है। क्या रांझड़े ने लगा दिया किनारे !"

"फिटे मुंह री, कुछ शर्म कर।"

"सच-सच कह री, कान का लोलक कहां गिरा आयी !"

"हाय री, मैं मर गयी !" हबीबो ओलू से ठीकरियां निकाल-निकाल देखे—"खाला न छोड़ेगी !"

शीरी ठीकरी से एड़ियां रगडती थी। हँसकर कहा, "अरी, तेरे हुल्ले हुल्लेरे ! भूसेवाली कोठरी मे तो नहीं गिरा दिया !"

रेशमा प्यारी हँस-हँस दोहरी हुई—"हाय री, कख न जाये तेरा ! सारा घर-कोठा छोड़कर कुल्लेलें तबेले में !"

हबीबा ने बांह बढ़ा कांटों की बाड़ से झग्गा उठाया तो रेशमा को पानी से ऊपर का पिण्डा दीख गया—"सहेलिये, ये पींगें प्यार की ! निशानियां !"

हबीबा ने झग्गा डाला। ओलू से बाहर हो सूथन डाली। गीले बालों को माथे से समेट सिर पर दुपट्टी ओढ़ ली—"तुम्हें भी देर नहीं। आप ही पता पा जाओगी। जिस दिन ढग्गा—"

"दफ़ा हो री ! प्यार-मुहब्बत न हुए कि जमीन की गाही-वाही हो गयी !" हबीबा खिल-खिल हँसने लगी—"वत्तर लगा। हल चला। जमीन वाही। पट्ट फिरा। पोली जमीन बीज पडा—"

नूरी ने हबीबा का लटकता-ठुमकता परान्दा घुमा दिया—"क्यों री, पड़ गया

तेरी क्यारी में !"

सुनकर गुलाम नबी और सिकन्दरे का मुंह-दिल शीरे से भर गया।

सिकन्दरे ने भुभका मार गुलाम से कहा, "यारा, कल लपेटम-समेटम न करनी होती तो इन बकरियों को—"

"जट्टोंवाली बात ! यह पली-पलायी गऊओं की वग्ग तुम्हें बकरियों की नज़र आती है ! आँखें खोल के देख खलीफा—बकरियां नहीं, जट्टियां हैं जट्टियां !"

"हला। बुज़ुर्ग कह गये हैं न—जट्टियां ज्यों भैंसों की कट्टियां !"

सिकन्दरे न ऊँची आवाज़ हीर के सुर उठा लिये तो भोर की ताज़ी हवाओं में रौनकें लहराने लगीं—

तेरा हुस्न गुलज़ार बहार बनया
अज हार श्रृंगार सब भांवदा री
अज ध्यान तेरा आसमान ऊपर
तुझे आदमी नज़र न आंवदा री।

हँसती-हँसाती, एक-दूसरे पर छींटे मारती लड़कियां खू से उठ धायीं।

"हैं री, सिकन्दरा गर्कजाना सुबह-सुबह मस्तानड़ियों में। लुच्च ने हीर भी उठायी तो यहां से !"

फिर शीरीं को गल-बांही दे कहा, "बरखुरदार से हारा है। आवाज़ सुन इसकी ! तड़प ! तेरे लिए है री शीरीं ! तू घर बसा बैठी !"

बलोच से ली हुई खरी हींग के तड़के ताम्बियों मे गर्म हो-हो मुश्के छोड़ ही रहे थे कि पिण्ड मे अनहोनी उड़ गयी।

अराइयों की फ़तेह घर नहीं पहुंची।

"हाय रे, कफन पड़े ऐसी जवानी पर ! सरगी बेला की घर से गयी-गयी लड़की अभी तक नहीं लौटी।"

"भल्ला किसी ने वैर तो नहीं कमाया। मार-काट मुटियार को खेत में डाल दिया हो !"

"छोड़ री, पूरे जोबन पर लड़की। सारा जहान वजूद में समा जाये ! उसे काचू दिखाने से पहले कोई ज़ुल्मी मौज-मज़ा क्यों न कर लेगा !"

गोमा ने सुना तो नाम लेने की पहल कर ली—"मेरे जाने मुगली घुट्टी बेचता वह बलोच गर्कजाना भगा ले गया लड़की को। हाय री, सुरमेवाली उसकी अँखियाँ फणयारे मारती थी फणयारे। कुर्ती मखमली छाती पर ऐसी सजी-बनी कि कच्ची कवारियाँ फिदा हो-हो जायें।"

लुहारों की हुसैना बोली, "रात को बलोच दारे मे सोया था। नमाज़ वेला ऊँट और ऊँट का मालिक दोनों गायब! कहने में आता है बलोचों की लातें लोहे की! इस घड़ी यहाँ तो दूजी घड़ी वहाँ।"

"रब्ब की रब्ब जाने। किसी ने आँखों से तो देखा नहीं जाते।"

"अन्धेर साँईं का। खबरे किसका परछावाँ पड़ा अपने गाँव पर कि जवान-जहान मुटियार माँ-बाप के मुँह कालिख पोतने लगी।"

मोहरे की बेबे बुडबुड़ाने लगी—"मत्त मारी गयी। और क्या, बुद्ध उल्टी होते क्या देर लगती है! गलती अलिये की। थम्म जितनी लड़की—उसका लढ़ बाँध किसी से। भरी-भरायी चाटियाँ डुल-डुल न पड़ेंगी? मुँह क्यो न मार जायेगा कोई!"

शाहनी ने तन्दूर पर से छोटी-सी आवाज़ दी—"बुरा हुआ बेबे, बहुत बुरा हुआ। पर जैसे लाज-इज़्ज़त-पत्त अपनी, वैसी अलिये की!"

"सौंह गुरु की धीए, मैं भी अलिये के लिए ही झुरती हूँ। पिछली उम्रे बन्दा इन धक्कों को सहार सकता है! घरवाली पहले ही मर-खप्प गयी थी। इन लूठी लड़कियों के मारे बाप ने घर न बसाया।"

"बेबे, बुरी घड़ी का क्या पता! कब सिर पर आ पड़े।"

त्रिकालाँ कचहरी से लौट शाहजी ने सुना तो अलिये को बुला भेजा!

अलिये ने हवेली की दलहीज़ लाँघी तो उसका ऊँचा कद हाथ-भर छोटा हो गया। सिर की पगड़ी निरी बेजान।

भर्राई आवाज़ में कहा, "इस बाप का तो जीते-जी मरण हो गया!"

"बैठो। हौसला रखो। ऐसी घड़ी हिम्मत हारने से कुछ नहीं बनना। हाँ, खोलकर कहो तुम्हें किस पर शक़ है।"

"शाहजी, सबसे हँस-खेलकर बोलती है! किसका नाम लूँ। छोटी राबयाँ इससे बिल्कुल उलट।"

छोटे शाह भी आ शामिल हुए।

"काशीराम, नासमझ अगर दरिया पार करके गये हैं तो या अम्बड़याल या या सम्बड़याल। जो गुजरात पहुँच सके हैं तो रेलगड्डी से लालामूसा!"

"लगता नहीं। दिन-दिहाड़े सौ देखने-पहचाननेवाले। रहा बलोच का तो

इतनी बेख़ौफ़ी से ग़ैर इलाके में लड़की अगवाह कर ले—नामुमकिन। मेरा कहना यह है कि ढिंढोरा पीटने से पहले अपना घर-दर क्यों न देख लें!"

सुनकर अलिये का दिल धड़कने लगा।

छोटे शाह ने बड़े भाई की ओर देखा और सुथरी आवाज़ में सब शक-शुबह साफ़ कर दिये—"एक दिन त्रिकालां पड़े फ़तेह को दरिया किनारे धाड़ीवालियों के शेरे के साथ देखा था। दोनों दरिया से नहाकर निकले थे।"

अलिये ने साँस रोक पूछा, "संगो-संग थे क्या!"

काशीशाह ने सिर हिलाया— 'फतेह खेत से निकली और दौड़ दरिया में जा डुबकी लगायी। फिर देखता क्या हूँ—शेरा नहाकर निकला और गले से सुहावने सुर उठा लिये! लड़के का गला बहुत मीठा। मैं खड़ा-खड़ा सुनता रहा।"

उस शाम छोटे शाह भागोवाल से लौटे थे। सूरज आसमानी नीलाहटों से सरकता-सरकता धरती की पगडण्डियों पर आ ढुका था।

दरिया किनारे से घोड़ा ग्रां की तरफ़ मोड़ा ही था कि एकाएक चरी के खेत में से खिल-खिलाहट सुन ठिठक गये। दूर से देखा—अलिये की बड़ी धी कीकरों के झुण्ड में से निकली और हिरनी की तरह रेती की ओर भाग चली। कुरता-ओढ़नी उतार रेत पर फेंके और तारियाँ मारती धार के बीच चली गयी।

'आगे न जाओ, भँवर पड़ता है'—काशीशाह आवाज देना चाहते थे कि दूसरी परछाईं देख चौकन्ने हो गये।

दरिया से निकल शेरा रेती पर आ खड़ा हुआ। तहमद कस अँगड़ाई ली। फिर बाँहें फैला जैसे दरिया को पुकारा हो। फिर पाक-साफ आवाज़ में सुर उठा लिये—

चढ़िये डोली प्रेम की दिल धड़के मेरा
हाजी मक्के हज्ज करन मैं मुख देखूं तेरा।

घोड़े पर बैठे-बैठे ही छोटे शाह यादे-इलाही में खो गये। ऐसा ध्यान लगा कि आँखों के आगे गुरुपीर आ खड़े हुए!

होश-सुरत लौटे तो आसमान पर तारे झिलमिलाते थे और कोर पर चांद का आधा टुकड़ा नज़ारा बन के सजा था। सामने रब्बी बख़्शश-सा बहता दरिया किनारों से जुड़ा ज़िन्दगी की लीक-सा लगता था।

उस एक पल में काशीशाह ने वहाँ खड़े-खड़े ही उस अगली दरगाह का दर देख लिया जहाँ हर दर्दवाले को अपने महबूबे-खुदा से मिल जाना है।

शाहजी उठ खड़े हुए।

"अलिये, रब्ब तब्बकली फतेह वहीं मिल जाती है तो घाड़ीवालियों के फ़रजन्द से साक-सम्बन्ध बन जाता है न!"

"बनता क्यों नहीं शाह साहिब। धी के नसीब चंगे हों तो!"

शाहजी छोटे भाई की ओर मुड़े—"मसीत से मौलवी को साथ ले चलें। और मौलादादजी या फ़तेह अलीजी को भी।"

अलिये का दिल रह-रह घिरने लगा—परवरदिगार, इस गरीब को यह घड़ी देखनी बदी थी!

मौलवीजी साथ चले तो दिल-ही-दिल शाहों की इस तरकीब पर मुस्कराते रहे। भगानेवाला जट्ट हो या बलोच, धी अलिये की रावी-पार।

घोड़े गांव से निकल दरिया किनारे उतरे। टालियों की गोटठ से शाहजी ने बेले की ओर नजर दौड़ायी तो पिल्छ के बूटों मे आग की ललाई नजर आयी!

खुले आसमान तले या कंजर भेड़कुट्ट या नये-नवेले आशिक।

शाहजी का अनुमान ठीक निकला।

पिल्छों के झुरमट मे दोनों को एक-दूसरे से लिपटे, नींद मे बेखबर देखा तो बुजुर्गवान इन्तजार करने लगे और आपस मे आंख चुराये रहे।

शेरे ने जैसे नींद मे ही कोई आहट सुनी हो। आंखें खोल इधर-उधर देख फिर फ़तेह को किनखाबी नींद से जगाया—"ऐ फतेह, सुन। देख ऊपर आसमा पर कुतुब तारे के पास एक तरेर। मैंने कहा पैगम्बर साहिब जब खुदा से मुलाक़ात करने गये तो दौड़ते-भागते गाजी के पैरों से धूल उड़ने लगी। यही है वह दूधिया धार।"

कसमसाकर फ़तेह ने बांहें फैलायीं और शेरे के बाजू पर नाखून भर दिया—"हट परे, सोने दे।"

शेरे ने अपनी ओर खींच लिया।

फिर वही भारों पर पड़ने लगी।

सयानों ने अपनी इज्जत-पत्त रखने को आवाज दे डाली—"उठ खड़े हो जाओ। उठो। धिये फतेह, इतनी नासमझी, इतनी बेगैरती···"

"हाय, मैं मर गयी। हाय अल्लाह!"

दोनों हड़बड़ा के उठ बैठे।

फ़तेह ने शेरे का हाथ पकड़ लिया—"तुम्हें सोह है अल्लाह पाक की जो तू कौल से मुड़ा। तुम्हें मार डालूंगी और आप दरिया में डूब मरूंगी!"

शाहजी ने साफ़ सख्त आवाज में कहा, "धी होकर घर की आबरू का ध्यान
किया। इस क़सूर की सजा बड़ी डाडी। पर टाबरो, तकदीर
है। शेरे, कल तुम दोनों का नि

शेरे ने सिर झुकाया—"जी शाह साहिब !"

"मौलवीजी, शेरे के साथ जाइए और इसके घर-टब्बर को समझा दीजिए कि नौशा के लिए ऐसा फ़रमान क्यों निकला है !"

फिर शेरे की ओर मुड़कर कहा, "इस कोजी कुरूप बेअक़्ली की पीठ ही पीठ है। पर बरखुरदारो, तुम्हें मुंह-माथा रखने की रियायत मिल रही है। अपने भाग सराहो !"

अलिये का गला भर आया। शेरे के कन्धे पर हाथ रखकर कहा, "करार से न हटना पुत्तरजी। इस मुंह से क्या लानत-मलामत करूं ! बेटी का बाप हूं···"

शेरे ने हाथ उठा अलिये को सलाम किया तो फ़तेह कुड़ी ओढ़नी में मुंह छिपा रोने लगी।

अलिये ने झिड़का—"धिये, अब क्या रोना ! पोटली जहान पर खुल गयी ! रब्ब से मांग जो शाहजी ने बनत बनायी है वह सज-फल जाये। नहीं तो धिये, काम तो ऐसा कि टोटे कर दोनों के दरिया में डाल देते !"

अगली शाम अलिये की बड़ी धी फतेह की जंज आ ढुकी।

जनानियों ने हेक निकाली—

तेरी फूफी का है घर
रे निशंक वेहड़े वड़
तुझे किसी का नहीं डर
आ ढुक रे !

बेबे करमो ने सिठनी उठा ली—

चाचा न पढ़ेया तेरा दादा न पढ़ेया
पुत्तर हराम का मसीती न चढ़ेया
यह बात बनती नहीं !

"बेबे, इसके चाचे-दादे को क्या, इसके बाप को सिठनी-गाली दे ! क्या बसमा लगा के जवानी दिखाने आया है। पुत्तर अपने का भाई बनके जंजे चढ़ा है !

"बब्ब अपने ही चंगे रे
शेर अली लाल चीरा
जो चढ़ते हैं जंजे रे
शेर अली लाल चीरा।"

निकाह पढ़ा गया तो सहेलियों-सायनों को ठेल फ़तेह कुड़ी को देखने पिण्ड टूट पड़ा।

लड़का खैरों से हुस्न चिराग। लड़की मरजानी पर रूप सवाया।

रसूली ने पास जा चुटकी ली—"क्यों री फ़तेह, रब्ब को हाज़िर-नाज़िर जानकर कह, क्या सचमुच में आज ही दुल्हनियां बनी है !"

सुनकर शेर अली का गन्धमी चेहरा सुर्ख हो गया।

फतेह ने हँस-हँस गूढ़ी रची मेंहदीवाले हाथों मे मुँह छिपा लिया।

"अरी, छोडना न इस ढग्गे को। क़ाबू करके रखना, नहीं तो पले-पले दरिया में तारियाँ मारेगा!"

शेर अली मियाँ गब्रू बना कुड़ियों-सहेलियों से छेड़छाड़ करने लगा!

कुड़ियाँ ऊँचा-ऊँचा गाने लगी—

आर बेला पार बेला
विच्च वावुल घेरेया
भल्लारें देती जंज आयी
सम्भल वावुल मेरेया।
आशिक़ों के कौल पक्के
क़ाज़ी पल्लू फेरेया!

पास खड़ी रावयाँ कभी साध सद्दरों से टुक बहन को देखे, कभी लाड़े शेर अली को।

रेशमा ने पास आ गलबाँही दी और गाल पर टनोका लगाया—"क्यों री गुलबदनो, जरा अपनी ओर भी देख! फतेह ने तो लगा ली तारी बेले में। देखें, तू लोचन बीबी कहाँ डुबकी मारती है!"

नूरी ने ओढनी खींची—"अपनी आँखों मे देख—एक नहीं दो-दो चनाब तेरी अँखियों में लिशकारे मारते हैं!"

"हट, छोड़ मुझे!"

नूरी न मुड़ी। सबको सुनाकर कहा, "अरी बता भी दे। तेरी बेड़ी किन पत्तनों पर उतरेगी!"

अल्लाह के फ़ज़ल से खेतो मे हल चले सुहागे फिरे और नयी फ़सल के बीज
बो दिये गये।
पिण्ड के जट्ट-जट्टाटर फारिग हो मजलिस में आ जुटे।
इधर दिल-मन सुरखरू, उधर गन्धारी तम्बाकू के सरूरी सूटे।
रब्ब रसूल की रहमतें!
"कर्मइलाहीजी, खैरों से बड़े बेफ़िक्र नज़र आते हो!"

"दीन मुहम्मद, रब्ब की मेहर से खेत सज-बन गये हों तो बन्दा ज़रा सुरखरू हो मौज-मज़ा कर लेता है !"

"बराबर बादशाहो, जट्ट किसान के लिए तो यह बादशाही वक़्त हुआ।"

मौलादादजी ने खुलासा किया—"क्यों नहीं, अल्लाह ताला ने इन्सान को मेहनत-मजूरी लगायी तो इसीलिए न कि बरस-छमाही बन्दा मिठ-लूणे हलकोरे ले सके।"

मुंशी इल्मदीनजी को बेमांगी मिल गयी—"पुराने ज़मानों में भी बादशाहों का यही दस्तूर रहा। आठ महीने मुल्की और माली कारोबार के वास्ते बाहर जाते और चार महीने मौसम के किल-ए-मुबारक में आराम फरमाते।"

नजीबे को हँसी आ गयी—"मुंशीजी, कहाँ जट्ट किसान और कहां बादशाह-शहंशाह ! पूछे कोई आपसे कि आपने इन दोनों की जोटा-जोड़ी मिलायी तो कैसी मिलायी !"

शाहजी बोले, "धन-दौलत बुरे नहीं ! न बुरी इनकी वाजिब रोशनाइयां। पैसा-माया तो दुनिया की ताकत हुए। क्यों जहांदादखांजी !"

"बिल्कुल बादशाहो !"

शाहजी नजीबे की ओर मुड़े—"बात सिर्फ इतनी ही नहीं। रब्ब ने हर इन्सान को छोटी-मोटी बादशाहत तो लगा ही रखी है ! मनुक्ख साबुत-सालम रहे; हाथ-पांव चलते रहे, छोटे-बड़े काम सरते रहें, वह बादशाह का बादशाह !"

कक्कूखां को सूझ गयी। हँसकर कहा—"शाहजी, मालूम होता है रब्ब रसूल ने जट्ट किसान की मदद के लिए ही शाह-शाहूकार भी बना छोड़े ! ज़रूरत पड़े तो सौ-हज़ार लेकर बन्दा काम चला ले !"

हुक्के गुड़गुड़ाते रहे तो काशीशाह बोले, "ऊपरवाले की निगाह में कोई दुजैगी फर्क नहीं। राजा-रंक दोनों के दो हाथ, दो पांव। एक मुंह-माथा, एक धड़ !"

जहांदादजी ने बड़ी सयानफ से बात बढ़ायी—"रब्ब आपका भला करे, पातशाह बाबर से लेकर शाह अब्दाली तक वही सबके दो हाथ, दो पैर।

"बादशाहो, सवाई चीज़ तो दिल की बहादुरी और शमशीर ही हुई न !"

"वाह नजीबेया, डाडी अक़्ल की बात की है ! कोई जिन्न-भूत तो तुम्हें यह पट्टियां नहीं पढ़ा रहा !"

अनपढ़ नजीबे की तारीफ इल्मदीनजी को रास न आयी ! एक और छलांग मार ली—"पैगम्बर साहिब ने फ़रमाया है कि जन्नत की कुंजी शमशीर है शमशीर !"

ताया मैयासिंह हँसने लगे—"पुत्तर मुंशिया, तेरा भी जवाब नहीं। शमशीर का कम्म शमशीर ने और हल-फाले का कम्म हल-फाले ने करना।"

गण्डासिंह बीच में आ कूदे—"मुल्क जीतने हों तो शमशीरें, पर अन्न-दाने उगाने को तो हाथ की मेहनत ही काम आयेगी !"

चौधरी फ़तेहअलीजी जहांदादजी की ओर देखने लगे—"बादशाहो, शमशीर का खड़का-धड़का और कामयाबियां तो जगत-सिद्ध, पर हौंसला पहले और हथियार पीछे !"

शाहजी ने सूत्र पकड़ लिया—"अगर ऐसा न होता तो चौदह बरस की उम्र में बाबर हिन्दुस्तान पर चढ़ाई करने के ख्वाब देखता ! अकबर ने तेरह साल की उम्र में हीमू बक्काल को मौत के घाट उतार दिया।"

"शाहजी, अपने रणजीतसिंह महाराज कौन-से कम थे !"

मुंशी इलमदीनजी ने झट घेरा डाल लिया—"हीमू रिवाड़ी का बक्काल था। अपनी अक्ल और दानिशमन्दी से बड़ा ऊपर पहुंचा, बड़े-बड़े उपद्रवियों को दबाया-हराया। आखिर दिल में आ गयी कि हिन्दुस्तान का सम्राट-बादशाह मैं भी बन सकता हूँ ! बस जी, ऐलान कर दिया और नाम अपने के साथ बिक्रमा-जीती लगा ली और अपने नाम के सिक्के घड़वा दिये ! उधर बहराम खां अकबर का सलाहकार। बस, टक्कर करवा दी ऐसी कि बिक्रमाजीत और बिक्रमाजीती दोनों अकबरी तलवार के हेठ चित्त-चुप्प !"

जहांदादजी बोले, "बादशाहो, लड़ाई का खेल तो ऐसा कि जो पहल कर ले, वही बाजी जीत ले !"

गुरुदित्तसिंह बोले, "महाराजा रणजीतसिंह की घुड़चढ़ी १२ साल की उमर में मैदाने-जंग में हो गयी। जैसे बाबर-अकबर, वैसे रणजीतसिंह !"

शाहजी हंसने लगे—"बात वाजिब भी हो तो बन्दा पहले तोले। जनानियों-वाली तू-तू मैं-मैं तो न हो जाये कि बहना बाबर मेरा, बिक्रमाजीत तेरा ! या तुर्क तेरा और मुगल मेरा।"

"वाह शाह साहिब, कमाल आपकी अक्लों के ! असल में अरबी-फारसी पढ़ जाये बन्दा तो सयानफ़ पर तो धार चढ़ जाती है न !"

फ़तेह अलीजी बोले, "मौलादाद कहते तो ठीक हैं। मदरसा स्यालकोट का मामूली नहीं ! सुनने में आता है बड़े डंके इस मदरसे के !"

"चौधरीजी, मदरसा यह जहांगीर के वक़्तों से मशहूर है। इसे चलानेवाले उस्ताद मियां अहमद और मियां सादिक बड़े आलम-फाज़िल हो गुजरे हैं ! नाम उनका फ़ारस-यूनान तक पहुंचा हुआ था। सबब समझो कि हम दोनों भाइयों ने वहीं तख्ती लिखनी शुरू की और वहीं इमला पक्की की !"

शाहजी मदरसे जा पहुंचे—"फ़तेह अलीजी, मार तो हम नालायक़ों को कई बार पड़ी, पर एक बार तो हाथों पर लासें पड़ गयीं। हुआ यह कि उस्तादजी ने हुक्म दिया—पढ़ो पण्डनामा बेमानी। हमने शुरू कर दिया बामानी ! भूलेखा

समझो या लापरवाही, हाथ पर छम्ब उभर आये।"

"लो जी, ख़ुशी मुहम्मदजी आन पहुंचे हैं। ख़ैरों से शहर से लौटे हैं!"

सबको साहब-सलामत बुलाकर ख़ुशी मुहम्मद रौबदाब से मंजी पर बैठे, तो देखनेवाले समझ गये कि मियां साहिब की गुत्थी में कोई नयी-ताज़ी ज़रूर है!

फ़क़ीरे को सब्र कहां—"क्या गल्ल-बात है चाचा! लगता है पल्ले आपके कोई सवाई-ड्योढ़ी ज़रूर है!"

"उच्चर डालो ख़ुशी मुहम्मदजी। बेसब्री में तो इन्तज़ार भी नहीं होता!"

ख़ुशी मुहम्मद के चेहरे पर एक साथ सोच और कसाव उतर आया—"क्या बतायें, बात कुछ चंगी नहीं! वह अपने बूधा पिण्डवाले नवाज़ख़ान—रकाबों में पैर फंस गये और जान से गये। घोड़ा नया था, ले दौड़ा!"

शाहजी परेशान हुए—"पिछले हफ़्ते कचहरी में टाकरा हुआ। तारीख़ लगी हुई थी उनकी!"

"मौत आ गयी समझो। चूकनावाली के अल्लाह रक्खा ख़ान से घोड़ा ख़रीदा था! रकाबों में पैर फंसे रह गये और घोड़े के साथ-साथ टिब्बों पर उटकते-पटकते रहे। लहू-लोहान!"

"इत्तफ़ाक़, नहीं तो नवाज़ ख़ां चंगे सवारों में से थे!"

"बादशाहो, लाहौर के सूबेदार मीर मन्नू का ख़ात्मा भी इसी तरह हुआ।"

"ग़ालिबन इसी हादसे के बाद मुग़लानी ने सूबा लाहौर की बागडोर संभाली! मुगलमानी बेग़म शाह दुर्रानी के मुंह लगी हुई थी! छनाला कभी अफ़ग़ानों को नचाये-रिझाये, कभी मुगलों को गले लगाये।"

जहांदादजी को जाने क्या याद आ गया। बड़ी देर हंसते रहे। फिर हुक्के का कश लेकर कहा, "शाह साहिब, घाटेवाली बात तो असल में यह हुई कि ज़नानी को ख़ुदा की तरफ़ से कस्तूरी लगी हुई है। बन्दा आगे बढ-बढ आप उसके पास ढुकता है।"

शाहजी के साथ-साथ सारी मजलिस दिल खोल के हंसी—"थी न कुछ वजह कि शाह दुर्रानी ने ख़ुश होकर बेगम को सुल्तान मिर्ज़ा का ख़िताब दे डाला था।"

मुंशी इल्मदीन छिड गये—"कुछ भी कहे, शाह दुर्रानी बड़ा ज़बरजंग शहंशाह हो गुज़रा है। बादशाहो, एक बार अब्दाली शाह हिन्दोस्तान को डरा-धमका कन्धार को लौटने लगा तो दरिया चनाब में काग़ें आ गयी। हज़ारां घोड़े-सिपाही बीच धार के वह गये!"

गुरुदित्तसिंह के साफ़े पर कोई ख़ुमार चढ गया—"हिसाब-किताब तो, मुंशीजी, एक दिन पूरा होना ही था। दुर्रानी शाह ने ख़ालसों का बीज नष्ट करने की क़सम खायी थी, पर लौटती वेला अफ़ग़ान-पठान यहीं काम आ गये। आखिर

फो उसने सिर्फ़ डाकाज़नी के लिए ललकारा था।"

गुरुदित्तसिंह का माथा भखने लगा—"तुम्हारा इल्म कच्चा है। आखिर तो जिन्होंने हरमिन्दर साहिब की बेअदबी करने की हिमाक़त की, उनकी गर्दनों के ढेर भी क़ाबुल-कन्धार तक लग गये न! अब्दाली के खज़ाने ने सिक्ख मुण्डों का दाम लगाया था एक पाजा, वही खालसा सरकार ने सगुणों के पाँच रुपये लगा दिये बलोच पठान की गर्दन पर। खैरों से फिर बावटा लहराया शेरे-पंजाब का अटकों पार!

सवा लाख की एक गिनाऊँ
चिड़ियाँ कोलों बाज मरवाऊँ।
तभी गोविन्दसिंह नाम धरवाऊँ।"

"बस ओए बस, तुम दोनों कमले तो नहीं हो गये! शुक्र-शुक्र सुख का साँस आया, तुम पुरानी मार-काटें दोहराने लगे।"

शाहजी ने बात का मुँह-माथा सही किया—"महाराजा रणजीतसिंह के वज़ीरों के नाम तो सुने होंगे। खलीफ़ा नूरुद्दीन, फकीर अजीज़ुद्दीन और ऐसे ही बेहिसाब अमीर-उमरा और सरदार-जागीरदार।

"सज़ा, जुर्म, जुल्म, मारकाट, क़त्ल-आम—ये तो हुए न खेल हमलावरों के। बाक़ी शाह-बादशाहों के साथ गुणग्राहकी भी लगी ही हुई है।"

काशीशाह बोले, "दुर्रानी शाह बटालेवाले शायर 'वाक़िफ़' को क़ाबुल ले गया था!"

गण्डासिंह उचाट हो गये थे—"ओ ले गया होगा अपनी वाहवाही के लिए। शायर, मुसाहिब और सलामिये तो हुए न दरबारों के हीरे-मोती!"

"जो भी समझ लो। बाक़ी दुर्रानी शाह ने कई हिन्दू वकील रखे हुए थे।"

मौलादादजी खुश हुए—"सच पूछो शाहजी तो हिन्दुओं का काम ही हुआ अक्लों से बातों को खोदना-खरोचना! हकूमतें-वज़ारतें इन्हीं तरकीबों से चलती हैं!"

मैयासिंह सोते-सोते जाग पड़े—"मैंने कहा काम की बात है, ज़रा सुनो ध्यान से। लाले बड्डे के पुत्तर चन्नमल्ल की जंज हाफ़िज़ाबाद ढुकी थी। वहाँ की मिरास ने बड़ा मोहना स्वाँग किया। काशीराम, एक बन्दा तगड़ा खूबसूरत, चंगे कद-बुत्तवाला आ खड़ा हुआ। सलवार। झग्गा। ऊपर पोसतिन। सिर पर कुल्लाह। सरपेच। कमरबन्द पर पेशकब्ज। यह समझो कि सचमुच का शाह दुर्रानी बनाकर पेश कर दिया।

"आगे सुनो। शाह दुर्रानी तख्त पर विराजमान और उसके आगे पेश है—प्राणचन्द पुरी!"

"तायाजी, गप्प-गप्पाड़े छोड़ो। बिचारे पुरियों को क्यों घसीटते हो शाह के आगे!"

मैयासिंह बौखला गये—"ओए सुनो! सुनो, काम की बात है। प्राणचन्द पुरी रहनेवाला था घड़तल का। वैरागी पुरुख। घूमते-घमाते पंचनद जा पहुँचा। पचनद के पास खेमे लगे थे शाह के! शाह का टाकरा हो गया सन्यासी पुरी से। गण्डासिंह, ओ गुरुदित्तसिंह, किधर है! सुनो गुरुदित्तसिंह, शाह दुर्रानी के दस गुनाह, पर हिन्दोस्तान के साधु-सन्तों की उसके दिल में बड़ी ललक और इज्ज़त।

"हुआ यह कि उन दिनों शाह के नाक पर कोई रगत का उठान आया था। इशारा कर प्राण पुरी से पूछा, 'महात्मा प्राण पुरी, यह उठान दिन-रात रिसता है। कोई दवा-दारू बताइए। हो कोई नुस्खा आपके पास।'

"बादशाहो, पुरी बच्चे ने बड़ी अक्ल लडायी पर कुछ न सूझा। उसे न हिक़मत का पता, न वैद्यक का। सोचा, शाह को बतायें तो बुरा और न बतायें तो बुरा।

"आँखें बन्द कर ध्यान लगाया। लम्बा साँस लिया और आँखे खोलकर अर्ज़ की—'काबुलशाह, ऊपर से ऐसा हुक्म आया है कि आपकी शहंशाही और आप जी के नाक में कोई रब्बी मेल है। इसलिए किसी एक को दूसरे से जुदा करना मुनासिब न होगा।'

"जवाब सुन शाह अब्दाली महात्मा प्राण पुरी से बड़ा खुश! बस निहाल हो गया!"

"वाह-वाह तायाजी, आपने चंगी सुनायी और प्राण पुरी ने चंगी कही। जवाब देने में जो थिड़क जाता घड़तल का पुरी तो साध खत्रेटा या किसी खुड्डे जा लगता या गर्दन से जाता!"

"नही कर्मइलाहीजी, प्राण पुरी इतनी आसानी से न हार मानता। कुछ-न-कुछ तरकीब लड़ा ही लेता!"

"कहते तो ठीक है शाह साहिब, अपने लोकों की अकल माड़ी नही!"

काशीशाह ने नयी बात उठा ली—"अकबर बादशाह के दरबार के हँसोड़ का नाम तो सुना हुआ है न आपने! बीरबल राजा। बीरबल जो बात करे, अकल की पुड़िया में हास्सा पेश कर दे। अकबर बादशाह बड़ा राजी था बीरबल पर।

"अपने दरबारियों को कहे—'बीरबल एक तो मिजाज़ से खुला-खुलासा, दूसरे समझ चंगी, तीसरे कुछ भी कह सकने का हौसला!'

"एक बार दरबार में पहुँचा तो जी भर के नाम कमाया। और जी भर के ही इनाम पाया। अकबर बादशाह जान के कोई छेड़-छाड़ कर दे और बीरबल सोच-

साच के जवाब तराशे और बादशाह सलामत के आगे पेश कर दे !"

जहाँदादजी बोले—"बड़ी क़ाबिले-तारीफ़ बात है कि मनुक्ख जब बोलें, सुननेवाले बेहिसाब-बेख़ौफ़ हँसें। शाहजी, अपनी फौज के अफ़सर भी जवानों-रंकों की चंगी गुफ़्तगू की बड़ी तारीफ़ करते हैं। बाक़ायदा उनकी सराहना करते हैं। यह गुण तो बन्दे में क़ाबिले-तारीफ़ हुआ !"

शाहजी ने छोटे भाई को याद दिलाया—"राजा बीरबल का दूसरा जोड़ीदार राजा टोडरमल था। यह भी चूनिया का टण्डन खत्री। पहले टोडरमल शेरशाह के दरबार में था। अकबर के दरबार में वकील बन गया। काम में बड़ा तेज-तर्रार और हुशियार। पहले मिला खिताब राजा का, फिर मिल गयी चार हजारी मनसबदारी। असल बात यह कि टोडरमल बड़ा दूर-अन्देश। परख बड़ी आला। मुगल वक़्तों में टोडरमल ने जिवियों के मामलों और टकसाल में कई फेर-बदल किये और किसानों के फ़ायदे के लिए कई तरक़ीबें बनायीं-उठायीं। लो सुनो, अकबर के दरबार में पहुँचकर हिन्दुओं को सलाह क्या दी कि चाहते हो खुशहाल होना तो फ़ारसी पढ़ो ! वैसे टोडरमल बड़ा पूजा-पाठिया मशहूर था।"

मौलादादजी बोले—"बादशाहो, दरबारों में चमकने-उभरने के लिए सितारा और क़ाबलियत दोनों ही लाज़िम हैं।"

शाहजी ने एक और पौड़ी चढ़ी—"शाहजहाँ समयों में एक और शख्स अपना बड़ा ऊपर पहुँचा था ! वज़ीर सादुल्लाखान। दरोगा गुसलखाना से शुरू करके शाहजहाँ बादशाह की वजीरी हासिल की ! वज़ीर सादुल्लाखान अपने सैय्यदवाल का ही रहनेवाला था।"

"वाह, यह तो अपने इलाके की कुछ बात हुई न !"

जहाँदादजी ने बड़े रौबदाब से सिर हिलाया—"अपना हमवतनी ही हुआ न जी!"

"जी, लिखत कहती है कि सादुल्ला वजीर के उसूल बड़े पाक़-साफ़। न बादशाह की दिलजोइयाँ करनी और न गरीबों पर जुल्म-अत्याचार। बड़ी शोहरत पायी सादुल्ला वज़ीर ने।"

ताया मैयासिंह कुछ और ही सही कर रहे थे—"मैंने कहा सैय्यदवाल तो दो-तीन हैं। यह पीपल बोढ़ोवाला तो नहीं !"

"वही जी वही। राम-लच्छन का चौतरा कहलाता है !"

दस लाख जान बख्शी
दस लाख सूबा बख्शी
दस लाख हिन्दोस्तान न जाने की
कौल बख्शी।

"बिक गया जी, बिक गया, लाहौर सूबा बिक गया।"

कर्मइलाहीजी ने आवाज मारी—"कौन है ? ओए कौन है यह कौल बख्शी-वाला मस्तानड़ा !"

फज्जू ने अन्दर आ सलाम किया और कहा, "दादा साहिब, थल्ली वण्डवाला वजीरा है।"

"हूँ। तो बरखुरदार यह बता रहे हैं कि खैरो से तीन जमातें टाप ली हैं।"

"मालूम होता है मौलवीजी ने आज छुट्टी कर दी है बलूंगड़ों की।"

फ़कीरा नजीबे की ओर देखकर हँसा—"मौलवीजी ने कोई पग्ग-साफा धोना-धुलाना होगा। होता ही है न, किसी को दीदार देना, किसी से लेना।"

"छोड़ दे न फ़कीरेया। मौलवीजी के लिए मूंछ-दाढ़ी ताजी करने की घड़ी आन ही पहुँची है तो खैर सदके उन्हें भी दिल खुश कर लेने दे यार !"

कर्मइलाही और चौधरी फ़तेह अलीजी ने दिल-ही-दिल मौलवीजी का आनन्द लिया। ऊपर से रौब भी बनाये रहे।

"शाह साहिब, अब तो खैरों से बात एक सोचनेवाली यह भी हो गयी न कि लाली शाह किस मदरसे-मक़तब में बैठेंगे।"

जिक्र से शाहजी खुश हुए—"चौधरीजी, बन्दे का वश चले तो बन्दा औलाद को अपने मदरसे मे, अपने उस्ताद के पास ही पेश करे। पर समय ने तो नही रुकना। वक़्त दिन-दिन नया और उसके साथ ही उस्ताद भी नये।"

जहांदादखां बोले, "अब तो मिशन मदरसे चंगे खुल गये हैं। लालीशाह अपने वही जायें। अपनी फौज-पल्टन मे उनकी बड़ी पूछ। थोड़ी-बहुत अंग्रेज़ी आ जाये तो चल निकलता है।"

शाहजी रस लेने लगे। हँसकर बोले, "सच पूछो तो फ़ारसी पढ़कर ही बन्दा बन्दा बनता है।"

गण्डासिंह ने मजी से उचककर करारी आवाज दी—"मुंशी इल्मदीन कहाँ छिपे हुए है ! बन्दे होने की ऊँची गद्दी मिलने लगी तो आप नजरों से ओझल।"

मौलादादजी की चिलम ज़रा ठण्डे पर थी। नवाब को आवाज़ दी और बोले,
दी है। हम जैसे माहतड़-साथ तो बन्दा

—"यह रवैया तो अपनी हकूमत का है। जो आप सरकार के साथ है, उसके खादिम हैं तो वाह भला, नही तो देसी रियाया

जाहिल तो है ही !"

शाहजी ने ज़रा-सी देर को आँख बन्द की और कुछ याद करके ले आये—"चौधरीजी, आख्यान बडा पुराना है। सुनो।

"दक्खन का एक मशहूर ज्योतिषी वराहमिहिर घूमता-घुमाता स्यालकोट आ पहुंचा। उन दिनों शहर स्यालकोट का नाम स्वातिनगरी होता था। गुजरात अपने का नाम ऊदीनगरी था।

"वराहमिहिर वड़ा घुमक्कड़। कश्मीर, हज़ारा, मुल्तान सब पैरों से घेर-घार आया था। घूमते-घुमाते वह एक गुज्जर ग्राँ मे पहुंचा। लोगो को पता लगा राहगीर मुसाफिर ज्योतिषी-नजूमी है। लोग आ ढुके हाथ की रेखाएँ पढवाने-दिखाने।

"जो आये, प्रश्न पूछे। वराहमिहिर ज्योतिषी पण्डित बड़ा पहुंचा हुआ। हस्त-रेखा और ललाट देख दूसरे का आगा-पीछा सही बता दे। लोग बड़े मुश्ताक़।

"अर्ज़ की—'महाराज, रात होने को आयी। आज आप इसी पिण्ड में पड़ाव करें। हमारे हाथो कुछ आपकी सेवा का भी संजोग हो।'

"वराहमिहिर बोले, 'आज ग्रहों का योग ऐसा है कि मैं अगर अपने घर-परिवार मे होता तो मेरी पत्नी को एक बड़ा विद्वान पुत्र कोख मे पड़ता। समय-स्थान के अन्तर ने यह घड़ी इस गांव में नियत कर दी।

"रात खू पर पड़ी झुग्गी में ज्योतिषीजी की मजी विछ गयी। दूध पिला लोग प्रणाम कर विदा हुए।

"आँख मुंदी ही थी कि झुग्गी के बाहर किसी जनानी की आवाज़ सुन पड़ी—'महाराज, ज़रा कृपा कर मेरी बात सुनो।'

"'कौन ! अन्दर आ जाओ माते···'

"हाथ मे दीपक लिये माई अन्दर आयी। सीस नवाया और बोली, 'महाराज, आपके कहे अनुसार आपके नच्छत्रो मे आज पुत्रदान का योग है। मेरे पुत्र की भार्या से मेल कर लो महाराज ! अपना कुल तर जायेगा।'

"वराहमिहिर ने उँगलियो पर कुछ हिसाव-किताव लगाया और उठ खड़े हुए—'चलो माते, तुम्हारी आज्ञा शिरोधार्य है।'

"गुज्जरी की वहू की मनोकामना पूरी हुई।

"वराहमिहिर मुंह-अँधेरे स्नान-ध्यान कर आगे बढ गये।

"वक़्त पर गुज्जरी को पोत्रा हुआ। लड़का श्याम-वर्ण पर बड़ा तेज़, बारीक़ अक़्ल। वड़ा हुआ। उस पर माँ की बड़ी मामता। अपने खेतों की गाही-वाही मे लग गया।

"वरसों बाद एक दिन आन पहुंचे वराहमिहिर उसी गांव। लड़के को पहचान लिया। कहा, 'पुत्र, तुम्हे अपने साथ ले चलने को आया हूं। तुम्हें अपनी विद्या

सिखानी है। त्रिस्थली दिखानी है। अपने गुरुपीठ की परदच्छिना-वन्दना करवानी है। अविलम्ब चलो पुत्र, मेरे पास समय अधिक नही।'

" 'मै माँ को छोडकर नही जा सकता महाराज! मेरा यही घर-द्वार है। यही जिवियाँ-खेतियाँ है। यही पूजने जोग माँ है।'

" 'पुत्र, विधि का विधान मै जानता हूँ। पिता की आज्ञा तुम्हे माननी होगी।'

"माँ अन्दर-बाहर जाती आँखो से भर-भर नीर बहाये। न किसी को कुछ बताये, न सुनाये।

"लड़का बहुतेरा झुँझलाया पर वराहमिहिर न माने। ले चले लड़के को अपने साथ।

"ग्राँ से बाहर निकले ही थे कि वराहमिहिर पकी कनकों के खेत पर रुक गये।

"एक साथ गेहूँ और जौ के सिट्टे इकट्ठे देखकर लडके से पूछा, 'ये दो बीज एक ही खेत मे क्यों बोये गये?'

" 'महाराज, गेहूँ उनके जो इन खेतो के मालिक है और जौ उनके जो इन खेतियों के वाहक है।'

"वराहमिहिर अपनी शास्त्र-विद्या के दाम्भिक। सिर हिलाया—'शास्त्र-मर्यादा के अनुसार खड़ी फ़सलो पर अधिकार उन्ही का जिनके पास भूमि का स्वामित्व।'

"लड़का चुपचाप कुछ सोचता रहा, फिर पिता को साष्टाग प्रणाम किया और अपने ग्राँ की ओर मुँह कर कहा, 'आप विद्वान है। अगर खड़ी फसलों पर धरती के मालिको का ही अधिकार है तो मेरी जगह भी अपनी धरती पर। अपनी माँ के पास। आप दोनो के मामले में माँ ही धरती है। मेरे लिए वही थिर है।' "

"वाह-वाह, गुज्जर बच्चे की अक़्ल देखो—विद्वान ब्राह्मण को लाजवाब कर दिया।"

शाहजी ने चौधरीजी को हँसकर देखा और कहा, "बादशाहो, बन्दा बिरादरीवाली बात साफ हो गयी न अब! असल बात यह कि माँ की तरह जिवियाँ भी मनुक्ख के लिए विद्या-जानकारी की गुत्थलियाँ हैं। जिन्दगी-जीवन कौन-सा तत्त है जो किसान वाहक न निकाल सके!"

नवाब ने दिया वसीक लौ जरा ऊँची की, कि शाहजी की नजर ताया तुफ़ैल सिह के पुत्तर नसीबसिह पर जा पड़ी।

ड्योढ़ी से अन्दर आ सबको पैरीपौना बुलाया तो दीन मुहम्मदजी बोले, "पुत्तरजी, आपके तो दीदार ही दुर्लभ। शाहजी, काका अपना बड़ा सौदागर बन के रहेगा। हट्टी के आगे कल लद्दी-फद्दी डाची देखी थी। खैरों से माल आया होगा!"

"क्या माल और क्या डाची! चाचाजी, हम तो लुट-पुट गये।"

सब चौंकते हुए—"क्यों बरखुरदार, खैरियत तो है?"

नसीबसिंह ने साफे के नीचे से रुक्का निकाल शाहजी की ओर बढ़ा दिया—"शाहजी, बुरी हुई है बाबे के साथ। माल-मत्ता सब बंगाले में लुट-पुट गया है।"

शाहजी ने दीवटा पास किया और सबको सुनाकर रुक्का पढ़ने लगे—

कलकत्ता

तारीख छब्बीस माह चैत्र।

चिट्ठी मिले बरखुरदार नसीबसिंह को उसके बाबे तुफ़ैलसिंह की। पुत्र प्यारे नसीबसिंह बाबा आपका वाहगुरु की कृपा से खैरियत से है। आगे पटना साहिब से पहुंचे कलकत्ता नौरात्रों में। रब्ब की मेहर से हाट-व्यापार चंगा रहा। खट्टी कमाई भी वाह-वाह हुई। पर पुत्तरजी, शहर कलकत्ता में गदर मच गया है। हिन्दू-मुसलमान में रंजिश यहां तक बढ़ी है कि एक फ़िरका हाकमों के हाथों माल-मत्ता खाये। दूसरा लाठियां-गोलियों की बौछारें। माल स्वदेशी की गल्ल-बात तो अंग्रेज को छेड़ने का बहाना है। असल सुरद की जड़ तो बंगाले का बंटवारा है। बंगालियों को इसकी डाढी पीड़ है। हकूमत भी चोखा ज़ुल्म ढाह रही है। गोरखा फ़ौज ने भी कम खौफ़ नहीं कमाया। पिण्ड में सबको मालूम हो कि अपने डेरे में कोई जान नहीं बची। सब छोटे-बड़े गोलियों से भून दिये गये। वाहगुरु की मेहर मैं संक्रान्त के दिन बाबे के हज़ूर में माथा टेकने चला गया था। सो बचाव हो गया। पुत्रजी, उसकी महिमा अपरम्पार है। हाथ राखे जन अपने को। धर्मसाला जाकर अरदासा ज़रूर करवा देना। बलवाइयों ने अपना माल-मत्ता-बजाजी सब फूंक डाले। नसीबसिंहा, मन को न लगाना। इस हल्ले में से जान बच गयी, लाखों कमाये। हां, यहां बंगाली बाबू बड़ा मचा हुआ है।

पुत्तरजी, सरकार के खिलाफ़ वहां भी कोई ऊंच-नीच हो जाये तो बजाजी उठाकर नौशहरेवाले कादिर पराच्छे के यहां डाल आना। आजकल सरकार अंग्रेज़ी मुसलमीनों की हिमायत पर है।

वाहगुरु की कृपा से सुख सान्द रही तो बैसाखी पर पिण्ड पहुंच जाऊंगा। पिण्ड के सब छोटे-बड़ों को मेरा सत-श्री अकाल बुलाना। बेबे को कहना मुसीबत टल गयी, सो फ़िकर न करे।

पुत्तर नसीबसिंहा, अपनी भूरी गाय के लिए एक बड़ी सोहणी खड़केदार टल्ली खरीदी है। हठीली भूरी चलेगी तो पिण्ड सुनेगा। सुनकर तेरा जी बड़ा राज़ी होगा। मजलिस को बताना, गदर नादिरगर्दी से डरकर कलकत्ते का बड़ा हाक़म इस्तीफा दे गया है!

आपका बाबा
तुफ़ैलसिंह

चिट्ठी का मजमून सुन सब सकते में आ गये।

शाहजी कागद हाथ में पकड़-पकड़े कुछ सोचते रहे, फिर साफ़े को छूकर कहा, "इस हिसाब से कामोकी मण्डी से उड़ी लाल गश्ती चिट्ठीवाली अफ़वाह गलत नहीं लगती!"

नसीबसिंह सहम गया—"शाहजी, बंगाले की तरह जेकर अपने पंजाब के भी दो टुकड़े हो गये तो माहत्तड़-साथों का क्या होगा!"

मौलादादजी ने सहारा दिया—"नसीबसिहा, कलकत्ते की हवाएँ कलकत्ते ही रहें तो चंगा। अपने यहाँ काहे का डर! असल बात यह है कि सारे फसाद शहरियों के खोपड़ में पैदा होते हैं।"

कर्मइलाहीजी ने भी हाँ-में-हाँ मिलायी—"सच पूछो तो शहरियों का न धर्म-ईमान, न इन्साफ़ी-पंचपरमेश्वर और न इमदाद सुननेवाला चौधरहट्टा।"

"हाँ जी, ख़ारबाज़ी में आकर जो सरपंच बन जाये खरपंच तो बताओ झगड़ा-फसाद कैसे मुके! कौन मुकाये!"

शाहजी ने समझाने की कोशिश की—"चौधरीजी, यह मसला छोटे-मोटे लड़ाई-झगड़े से बहुत बड़ा है।"

"काशीराम, आप कुछ पढ़ते-पढ़ाते रहते हो। लाहोरवाला अख़बार क्या कहता है इस बारे!"

गण्डासिंह बिना जवाब सुने ही मच गये—"जो गल्ल-बात अख़बारों तक पहुँच गयी, समझो पेशेवर जनानियों की तरह बेपर्दा हो गयी।"

गुरुदित्तसिंह ऊँघने लगे थे, चौककर उठ बैठे—"शाहजी, जो हीरा मण्डी-वालियों की बन आये तो आप ही बताओ टब्बरों की माँओं-बहनों को कौन पूछेगा!"

बेवक़्त और बेअर्थ! कृपाराम बड़ा खीजे—"धन्य हो, धन्य हो खालसाजी! बात हो रही थी बंगाले की और आपकी आँखों के आगे चमकार-छनकार हो रहे हैं हुस्न-बाजारों के! नींद्रे में ऐसे ठोके सबके लगें। बिना पेशगी नाच-मुजरा!"

गण्डासिंह अनसुनी कर आगे बढ़ गये—"अख़बार यह कहती है, अख़बार वह कहती है! ओए, सरकार से भी बड़ी हो गयी ये बक्क-बक्कोनियाँ कुत्तेखानियाँ अख़बारें। हकूमत के सिर चढ़ बैठा स्याही-चूस छापाखाना।"

"नहीं बादशाहो, यह हकूमत-सरकार की अपनी करनियाँ हैं। कभी हिन्दुओं को भड़काये, कभी मुसलमीनों को लड़ाये, कभी सिक्खों को। ईसाई विचारे तो किस गिनती!"

"ईसाई अपने तो जी चढ़ती कलाओं में। अंग्रेज़ियाँ पढ़न, गिटपिट-गिटपिट करन। अपने गुजरातवाले दीदारसिंह की पूरी शाख मसीही बन गयी है! माना-परवाना टब्बर है!"

खैर सल्लाह, गिरजा बिरादरी में रले-मिले हैं तो हमारी तरफ़ से फलें-फूलें। इन्हें सरकार से फ़ायदा ही फायदा है।"

नजीबा मुजे बैठा हुआ था—"चूहड़ों की ठट्ठीवाला फत्तू मुसल्ली जलालपुर जा के मसीही बन आया है। सरकार नये मसीहियों को तो दब्ब के फ़ायदा पहुंचायेगी।"

शाहजी ने पगड़ीवाला सिर हिलाया—"इधर दीदारसिंह खालसा बिरादरी से अलग हुए, उधर डाक्टर यगसन को कैसरे-हिन्द तमगा मिल गया।"

गण्डासिंह ने मुहाड़ा न मोड़ा—"यह तो हो गयी न बात, पर छापेखाने और अखबारों का क्या करोगे!"

शाहजी बड़ी लूणी हँसी हँसे—

"बादशाहो, बिल्ली सिंह पढ़ाया
बिल्ली को खाने आया।

'मतलब यह कि पढ़-पढ़ अंग्रेजियां, रियाया हिन्दोस्तान की अब हाकमों से लड़ेगी! जहांदादजी, अब न काम ॰ येगी उर्दू-फ़ारसी और न मुल्तानी-लहन्दी।"

नजीबे का ध्यान शाहजी की बहियों पर था—"शाह साहिब, लुण्डों का क्या होगा! आपका हिसाब-किताब उन्हीं में चलेगा कि वह भी बदल जायेगा!"

अँधेरे पक्ख घुप्प अँधेरे में दो-दो के जोटे पड़ गये।

पहला पहर गूढा होते ही सिकन्दरा पीरोंवाले खू की गद्दी से उठ खड़ा हुआ। दोत्तही से मुंह-सिर लपेटा और रुढ़ियों के पीछे से होता हुआ खुल्लरों की गली में जा घुसा।

भौंकते कुत्तों को रोटी डाल चुप करवा लिया और केहरसिंह की खुली कोठरी से फलांग तबेले की छत्त पर जा पहुंचा। इधर-उधर सूंघा और पौड़ियां उतर हवेली के पिछवाड़े।

गाय-भैंसें और जविन्दे शाह और लोड़िन्दे शाह की घोड़ियां। और आगे काथासिंह का मुश्की घोड़ा।

परवरदिगार, यह क्या टण्टा-फ़साद उठ खड़ा हुआ! टांडेवाला लबाणा काथासिंह तो मारखान बन्दूकी है। अगर लबाणा ऊपर पौड़ता है तो गयी रात

मलामत में।

पट्ठो और चरी के ऊँचे ढेर के पीछे मुस्तफा सदंखानेवाली दिवार के साथ जा लगा। अँधेरे में ही दिवार पर हाथ फेरा और उभरे हुए खड़ेप को मिट्टी से हौले-हौले चाक करने लगा।

दिवार खुरचती चली।

मुस्तफ़ा के कान खड़े हुए—फस्स…फस्स…नौबतिया कि गाय-मंस तबेले में फोस लगा रही हैं।

गर्दन पर भरपूर हाथ पड़ा—"कौन!"

मुस्तफ़ा फुसफुसाया—"कार्यासिंह का घोड़ा बँधा है तबेले में!"

नौबतिये ने चमककर अपने को थिर किया और सैनत से बताया—"माउन्टी पर रस्सा पड़ चुका। चूकने से फायदा!"

उँगली से ऊपर इशारा किया—"छोड़ दे ऊपरवाले पर!"

मुस्तफा ने हाथ डाल सूराग सही किया और बदन सिकोड़कर अन्दर जा घुसा।

बाहर कन्द के साथ लगे नौबतिये ने कानों के चार टुकड़े कर लिये। आधा केहरसिंह काम्मे की कोठड़ी की ओर, आधा तबेले के दरवाज़े पर, आधा मुस्तफ़े की घुसर-पुसर पर, आधा तत्ता सांसी की ओर।

पिछले पखवा रण्डियावी की कमाई से तत्ता सांसी दब्ब दबावड़े में। साथ थे ताजा और खुशिया। दोनो फुरतिये। तबेले की पौड़ियों तले छिपे हुए।

मुस्तफ़ा ने सन्नी से लकड़ी की पेटी खोल ली। नीचे हाथ डाला और गहने-गट्टे की बुचकियाँ निकाल तहबन्द में खोंस लीं।

फिर खेसों के बड़े ढेर को सरकाया और मारतोड़ से अडोल कुड़ा खींच लिया। ढक्कन उठा टटोला ही था कि अशरफियोंवाली पोटली हाथ आ लगी।

चौकन्ने हो अपने पैरों की आहट सुनी, फिर नौबतिये को पोटली दी कि ऊपर छत पर किसी के दौड़ने का शोर पड़ गया।

"ओए मार गये, ओ ले गये, हाय-हाय मेरी चूड़ियाँ—"

हवेली तबेले की पौड़ियाँ बजने लगीं।

मुस्तफा और नौबतिया पट्ठे के ढेर से लगे-लगे सदर दरवाज़े तक आ पहुंचे और शोर-शराबे में कुण्डी खोल गली में कूद गये!

दौड़ते-दौड़ते आवाज़ मारी—"ओ पकड़ो लोको, पकड़ो—शाहों के घर चोर पड़ गये!"

ऊपर खुल्लरों की धी पसार में दीवटे की लौ बच्चे को गोद में डाले दूध चुंघाती थी कि भड़भड़ा पट्ट खुला और ताजा और खुशिया मुंह-सिर लपेटे ऐसे घुसे ज्यों भूत प्रकटे हों।

डर के मारे खुल्लरों की धी तोती की न चीख निकली न आवाज़! बस घिग्घी बँध गयी।

खुशिये ने सोने के चूड़े में डांग घुसेड़ ऐसे घुमायी कि तोती पीड़ से करला पड़ी—"हाय ओ!"

ताजे ने झपट दुपट्टा खींचा और मुँह में ठूँस दिया कि झटके से पड़पड़ा बच्चा रो दिया।

साथ की मंजी पर सोयी तोती की माँ उठ बैठी—"क्यों री, काहे रुला रही है काके को...?"

तोती ने हिचकी भरी—"डाकू, माँ, डाकू—"

दोनों झपटकर माउन्टी की ओर भागे कि रस्से पर हाथ पड़ते-पड़ते रह गया!

खुल्लरों के घर रात-भर को रुका पाहुना कार्यासिंह माउन्टी की छत पर हाजत को बैठा ही था कि नीचे शोर पड़ गया।

धड़धड़ाते ताजा और मुस्तफा रस्से पर हाथ डालने को ही थे कि कार्यासिंह ने बैठे-बैठे दो हाथों से दो गर्दनें दबोच लीं। मुण्डियों को एक-दूसरे से बजाया—"ओए, कौन हो!"

ताजे ने बदन को लचकाया-हिलाया पर कार्यासिंह की गिरफ़्त न ढीली पड़ी।

"ओए कुत्तेओ-खस्सियो, डाका डालने चले थे कि हगने-मूतने!"

लोढ़िन्दे शाह के ऊपर आते ही दोनों लौंठों की धुनाई होने लगी तो आँखों से तारे टूट-टूट गिरने लगे।

"हाय ओ रब्बा...हाय ओ...हाय-हाय..."

कार्यासिंह ने रस्सी खींच बनेरे से दोनों का शिकंजा कस दिया और माउन्टी की सीढ़ियों से नीचे धकेल दिया।

बैठक में पहुँच अपनी बन्दूक उठायी और सामने कर कहा, "नाम बोल दो यारों के, नहीं तो तुम नहीं..."

खुशिये के मुँह से खून निकलने लगा था—"एक घूँट पानी...जो पूछो बताता हूँ।"

कार्यासिंह ने दोनों के मुँह गीले करवाये और मंजी पर बैठकर लाड़ से कहा, "क्यों ओए, रात के पहले पहर चमकनेवाले तारों के तो नाम याद होंगे! नाम और पते दोनों..."

दोनों साथ-साथ जैसे कोई भूली इबारत याद करने लगे—

"सिकन्दर वल्द जहाँगीरा,

नौबतिया वल्द..."

काथासिंह ने बीच में ही टोक दिया— "ओए, ढग्गों की वल्दियत छोड़ दो। ली नाम ही हो जायँ।"

"जी, तत्ता सांसी सांराकीवाला और···और···जी मुस्तफ़ा।"

"बस! आये हाथ मेरा! बाप से चेहमागोइयां कर रहे हो कि काथासिंह गणा से जवाब-सवाल! ऐसे कण्डे लगाऊँगा कि कब्र और रूह एक हो जायँ। यी समझ में!"

खुशिये ने जुबान से ओठ तर किये—"माफी बादशाहो, एक और भी शख्स —इस तबेले का राक्खा केहरसिंह।"

ताजे को कम्मनी छिड़ गयी। केहरसिंह धाकड़ हमें न छोड़ेगा।

रिसते अंग-अंग और जोड़ों में पीड़ें जाग पड़ीं।

"माफ़ी, सरदारजी माफी! माल-मत्ता आपका कहीं नहीं जाता। डाची भी गुजरात की राह में होगी।"

काथासिंह इस मासूमियत पर हँसने लगा—"जविन्देशाह, देख लिये हैं न, ये गा डाकू बनने चले थे। ओए कंजरो, डाके और डंगर-चोरी में फ़र्क है।"

सरदार काथासिंह ने मंजी पर पसर सिर तले अपना घुस्सा खींच लिया और ढ़िन्देशाह से कहा, "रास्ते में जा पकड़ो। मोमदीपुर मसीत के पीछे होंगे। क्यों खोते के पुत्तरो, वहीं मिलना था न तोफ़कियों ने?"

दोनो ने उकड़ूँ बैठ कान पकड़ लिये—"सोलह आने ठीक बादशाहो···"

काथासिंह ने इस बार आँखें लड़कों पर थिर कर दीं—"याद तो करो ल्लुओ, इस फ़ोकटिया बारात मे डाची-घोड़ी किसकी आयी थी!"

"पिण्डदादन खां वाले हैदरशाह की।"

"जविन्देशाह, न हड्डी न हड्ड। इन्हें दूध-दारू पिला छोड़ो। थाने में काम येंगे।"

फिर खांसकर थूक का बड़ा-सा थोब्बा दोनों के सामने दे मारा—"खस्सियो, म्हारे ऊपर कोई ढंग की वज़नदार गाली भी नही सजती। मूत्र तुम्हारा निकल-किल पड़ता है, आंखें तुम्हारी रो रही है। तम्बे ऊपर खोंसकर चल पड़े डाका लने। ओए पोतड़ो, पांव में हों फिरकियां, कानों में लगे हों खड़क, आँखों मे ल, दिमाग़ मे हो फ़ौलाद और छाती पर पहाड़ डटा हुआ हो तो डाले जाते हैं के। यह तो पजामियों मे मूतना हो गया!"

इधर मुस्तफ़ा और नौशहिया ने घोड़ी जिल्ले बांधी, खल्ले उतार टंगने पर टांगे कि गांव-भर में खलबली मच गयी।

"यह क्या लोको, डाका पड़ा घर आलमगढ़ और पुलिस हमारे द्वारे।"

आलमगढ़िये खुल्लरों की हिनहिनाती घोड़ियाँ और खाये-पिये पुलसियों दी काठियाँ ऐसे टकारों से गांव में उतरीं कि उत्तरी वण्ड और पल्ली वण्ड दोनों गुंजारने लगीं।

"हाय-हाय री, अन्धेर सांई का! आज थामलेवालों का कैसा जमघट्टा!"

"रब्ब भली करे—सिरीहवाले मुस्तफ़े के नाम की भिनक पड़ी है कान में..."

हुसैना को फकीरे ने घुड़क दिया—"मुंह पर लगाम दो। जब तक थाना न डुबकी मार ले, किसी का नाम न लो।"

"हुसैना, फकीरा सच कहता है। रब्ब जाने किसका तो दुम्बा और किसकी जहमत!"

बनेरे से झांक चाची महरी ने आवाज दी—"हैं री, पिण्ड में यह शोर कैसा!"

"चाची, सुनते हैं आलमगढ़िये खुल्लरों के यहाँ डाका पड़ा है।"

"पुलिस खोजी यहाँ क्यों पहुंच पड़े! खबरे किसने वैर कमाया है!"

शाहनी का ध्यान पीहर को भटका—"मैंने कहा चाची, खुल्लरों के यहाँ से जरूर कोई आया होगा। झटपट कड़ाही चढ़ा के पूड़े उतार डालूं।"

"उतार भले मेरी बच्ची, पर उन्होंने कौन-सा मुंह जूठा करना है! उल्टे धियों-धियानियों के सगुण-शास्त्र करके जायेंगे। खैरों से एक तुम, एक रागियों की बहूटी और री एक मुसिल्लयों की करमो। दे-दिला जायेंगे सो भी चंगा। उनके पिण्ड की धियें बसती-रसती रहें। आलमगढ़िये शाह बड़ी चढ़तलों में।"

छोटी शाहनी आ मिली—"आज दोनों भाई कचहरी हैं। खरमस्त पुलसियों को कौन सँभालेगा! बहना, किसी को भेज पीहरवालों के खाने-पीने का तो पुछवा। लाले वड्डे के घर से थाली जा सकती हैं। मुंह तो जूठा करेंगे ही न!"

चाची बुड़बुड़ाने लगी—"राख पड़े ऐसी औलाद के सिर। जब तक अन्धेर पक्ख चोरी-डाका न डाल लें, तब तक टुक्कड़ हज़म न हो।"

"नालायकी और क्या! अक्ल-बुद्ध चंगी हो तो पुलिस-फ़ौज में न भरती हो जायें।"

मांबीबी ने चाची के कान में कहा—"मुस्तफे से बड़ा शौकत पहले ही क़त्ल के मुकद्दमे में अन्दर है। मां नसीबनी करेगी क्या!"

"करना क्या है! जेलियों की मुट्ठियां भरेगी और पुत्रों से मुलाक़ातें करेगी। उसने कौन-सा सदर कचहरी चढ़ जाना है।"

नवाब सिर पर से मन्दासा लपेटते-लपेटते तबेले से निकला और ऊपर ज़नानियों की ओर देखकर कहा, "लो जी, अपने बरखुरदार मुस्तफा ने भी बिस्मिल्लाह कर डाली ! पुलिस का डेरा पड़ा है, देखें किस-किस की गठरियाँ-पोटलियाँ खुलती हैं।"

इधर गाँव के बच्चे, बड़े-बूढ़े, चौधरी-पंच और उधर सिपाही थानेदार। मजमा पूरा ज्यों दरबार लगा हो।

जाने-पहचाने सलामत अली के तबादले पर आया महबूब अली अपनी तोतई नाक से सारे गाँव को सूँघ-साँघकर ठानेदारी के गहरे पेटे मे पचा गया।

मंजी पर बैठे-बैठे दो-एक बार बेंत खड़काया और फिर नौजवान टोली को ऐसे धौंकने लगा ज्यों जने जवान न हों, भेडु-बकरे हों !

सिपाहीजी ने बेंत खड़काया और मजमे से सीधे-सादे बन्ते से पूछ लिया—"भला खजूरें कितनी तरह की ?"

"जी-जी..."

"ओए बोल दे, बता दे किस्में खजूरों की।"

"लूना पिण्ड, बनकी पिण्ड, शगिस्ती और चीखो पिण्ड।"

"तो आज खिलायी जाय बदमाशो को पिण्ड खजूर चीखो···"

मदरसेवाले लड़के हँसने लगे—"यह थाना है कि मदरसा !"

सिपाहीजी की बन आयी—"अभी बताते हैं।"

मुस्तफ़ा के खालाज़ाद भाई उसमान लंगे को आवाज़ पड़ गयी—"ओए मुँह-खुरे, जरा चल के तो बता। कब से लंगेप्पा हुआ तेरी लातो मे। डाके की रात क्या तू भी कुत्तों को रोटी डाल रहा था ?"

उसमान ने डर-डर कदम उठाया और पास आ थानेदार को सलाम बजाया, फिर कि जवाब में बूथी पीछे जा लगी।

किसी सयाने ने थानेदार को शाबाशी देने के अन्दाज़ मे कहा, "इस बिचारे की लग्गड़ टपोसियाँ तो पैदाइशी ही समझो। साहबजी, इसे खातिर ख़िदमत पर लगा छोड़िए। और कुछ नही तो दौड-दौड़कर बेंत ही पकडाता रहेगा।"

गुरुदित्तसिंह ने सुनकर सिर हिलाया—"सदके दानिशमन्दी के। जितनी देर में उसमान लंगा बेंत उठायेगा, मार खानेवाले को भी जरा साँस आयेगा।"

ठानेदार की चिरायती आँखें गुरुदित्तसिंह की ओर घूमी तो गुरुदित्तसिंह पगड़ी में हाथ डाल सिर के बाल खुजाने लगे।

सिपाही हुक्मा और खुदाबख्श चमूनो को लेकर आन पहुँचे।

थानेदार कड़के—"जोड़ीदार तुम्हारे हिरासत मे हैं, अब तत्ते साँसी का खप्पा और भर डालो।"

मुस्तफ़ा ने नौबतिये से बिना नजर मिलाये थानेदार की ओर देखा और

फटाक से फूट दिया—"सांसी ने टिल्ले की ओर मुंह किया था।"

थानेदार ने मंजी पर बैठे-बैठे लात पर लात चढ़ा ली—"सुन रहा हूं, बकते जाओ।"

"गहना-गट्टा मोतीरामियों के पास, बाकी माल-मत्ता इस्लामगढ़ के टिब्बे।"

गांव के छोटे-बड़े सयाने थू-थू करने लगे।

अरे इस जिगरे पर डाका-चोरी ! लक्ख लानत लूम्बड़ों पर।

बरखुरदार छाती पर हाथ बांधे खड़ा रहा और खच्चरा बन बेमलूमा-सा मुस्कराता रहा।

ठानेदारजी ने घूरकर देखा तो जीभ मचल गयी।

आवाज़ देकर कहा, "ओए, ज़रा सब्र तो करना था ! आप ही बन गया वादा माफ़ गवाह ! इससे अच्छी तो अरोड़ों-करोड़ों के साथ फेरी लगायी होती रूमाल-तेल-कंघी की। बहादुर पेशे तुम्हारे बस के नहीं।"

ठानेदार ने कंजी आंखों से ऐसे देखा ज्यों जवान जट्ट न हो चिलगोज़ा हो।

सिपाही ने पास होकर कहा, "हज़ूर, खानदानी नम्बरी है। बेपरवाही से ही झटक दो।"

ठानेदार ने अपनी नज़र की लाज रखी—"बद के तुख्म, थाने पहुंच जाना हाज़री के लिए।"

बरखुरदार खां को मन की मुराद मिली। बहादुराना शौक़ीनी से हंसकर कहा, "ठानेदार जी, हुक्म सिर मत्थे, पर शहादतों का काम आप्पां नहीं करते। अपनी ही चंगी-बदी की पैरवी पर हाज़र होते हैं। वैसे कहो तो जरूर पहुंचेंगे बड़े सांई के थान।"

ठानेदार ने ओंठ मरोड़कर दिल-ही-दिल कोई खतरनाक फ़ैसला किया और जविन्देशाह के आगे निक्की-सी पोटली रख दी—"छोटे-मोटे छाप-छल्ले पर नज़र मार लो। इनके तम्बों से निकला है। बाकी पक्की शनाख्त तो थाने में होगी ही।"

त्रिकाल वेला शाहों के घर दिये जले ही थे कि नीचे तारेशाह का घोड़ा आ खड़ा हुआ।

घोड़े की टाप और तारेशाह के गले की टंकार सुन नवाब ड्योढ़ी पर उठ

धाया।

"खुश आमदीद तारेशाह!"

आगे बढ़ गाजी के माथे पर हाथ फेरा—"सुलेमान, शाह साहिब को कहां से चक्कर लगवाके लाया है!"

तारेशाह ने घुड़का—"ओए कंजरा, तुम्हें फारसी का चस्का कब से लगा!"

"तारेशाह, आप्पां तो ठहरे ढोर-डंगर के खलीफ़ा। हमे फ़ारसी-अरबी से क्या लेना!"

"रब्ब आपका भला करे शाह साहब, लालीशाह की जम्मनी पर नाच मुजरेवाली आयी थीं न! सारे पिण्ड को सिखा गयी—खुश आमदीद। जो जना जवान महफ़िल में पहुंचे, नचौनियां हंस-हंस सलाम करें—खुश आमदीद!"

तारेशाह एक हाथ अपने पेट पर रखे हुए। दूसरे से लगाम थामे हुए।

"खच्चरा, जान-बूझकर जट्टांवाली यमलियां मार रहा है न! तूने देखा नही, मेरे साथ कोई और भी है।"

"जी, अंधेरे मे कुछ माड़ा-सा झौला तो पड़ा था।"

"ध्यान से सुन नवाव, मेरे पास वक़्त नही। मेरी नयी सजोगन वरकतो है। इसे शाहनी के पास पहुंचाने आया हूं। उतार ले नीचे।"

नवाब ने लुकी-ढकी चादरू ताने जनानी का कच्चा कोमल हाथ पकड़ घोड़े से नीचे उतारा तो सिर से पांव तक फुरफुरी दौड़ गयी।

चादर के नीचे कोई बच्चा कसमसाकर रूं···रूं···करने लगा।

"बल्ले-बल्ले, शाह साहिब, यह क्या रंग-तमाशे है!"

"यारा, आज अपने तमाशो का रंग लाल है। आंतड़ियां मेरी वाहर निकली हुई है। कसकर कपड़ा बांधा हुआ है। तेरी भरजाई को यहां पहुंचाना जरूरी था।"

"रब्ब खैर करे तारेशाह, क्या इसकी कसर रह गयी थी!"

"वरकती, ऊपर जा, शाहनी के पांव छू आशीष लेने की करना। नवावेया, शाहनी से कहना चक-मन्हासा के तेलियो की कुडी है। पिछले सयाले वेवा हो गयी थी। अपना टाकरा हो गया। हां, जो नाक-मुंह चढायें तो कहना लसूड़ेवाले कोठे पर ठौर कर दें इसका। आप पका-खा लेगी।"

तारेशाह ने घोड़े का मुंह घुमा लिया—"नवावशाह, मेरी गैरहाज़री मे तुम इसके भाई हो। नज़र रखना। किसी ने हुज्जत की तो वता देना शाह आके फेंट देगा।"

नवाव ने हुंकारा भरा—"जी।"

अर्ज़ की—"कुछ दूध-दारू पी जाओ शाह साहिब! दोनों भाई भी आते ही होंगे।"

तारेशाह ने चलते-चलते मानो ग़ैर-हाजिर भाइयों को ही घुड़की दे दी—"मेरे बाप ने फ़ारगती दी थी—पर दादे की ज़िमी-ज़मीन पर बराबर हक़ रखता हूँ। कह रखना, जायदाद का जहाँगीरी काग़द तारेशाह के क़ब्जे में है।"

"शाहजी, ज़ख्म तो दारू से धुला-पुंछवा लो।"

"ओ मूर्खा, तेरी अकल वड़ेवे खाने तो नहीं गयी! जख्मी पेट अपना थाने ही जाकर खुलेगा। और वहीं तेलियों का जुर्म दरज़ होगा। वहन को टुक्कर न खिला सके तो उसकी प्रीतों पर धावा बोल दिया।"

तारेशाह ने लगाम खींची और हवेली की ओर पीठ कर ली।

नवाब ने बाँह वढ़ा बरकती से बच्ची ले गोद में उठा ली। सयाने गले से कहा, "भरजाई, यह ऊपरवाली छलांग टपोसी तो तुम्हें ही मारनी पड़ेगी। मेरी लम्बड़दारी तो इतनी ही कि जो तारेशाह कह गये हैं मैं वह दोहरा दूं।"

बरकती रोने लगी।

"सहारा रख भरजाई। मामले में कोई अड़क-गुंजल है भी, तो इस घड़ी उसका खुलासा करने की ज़रूरत नहीं।"

बरकती ने आँखें पोंछी, नाक छिनका और मुंह पर घुंघटा खींच अंधेरे में नवाब के पीछे-पीछे सीढ़ियाँ चढ़ने लगी।

नवाब ने हौले-से पूछा, "लाँवा-फेरे तो करवा लिये थे न!"

बरकती ने सिर हिला जवाब दिया—"कहाँ!"

नवाब ने थड़े पर पहुंच आवाज़ दी—"शाहनी, दरिया पार से तुम्हारे पराहुने आये हैं।"

हाथ में दिवटा लिये शाहनी चौके से बाहर निकल आयी—"कौन! नवाब, किसका नाम लिया?"

"तारेशाह के घर से हैं।"

बरकती ने घूंघट के साथ आगे बढ़ पैरीपौना किया।

"ठण्डी रहो! साँई जीवे! अरी, मैंने पहचाना नहीं!"

चाची महरी पास आ खड़ी हुई—"किसका नाम लेती हो धिये, कौन है!"

नवाब ने दोहरा दिया—"चाची, अपने तारेशाह की घरवाली।"

"कुछ होश कर रे! न मंगनी, न कुड़माई और बहूटी बिनब्याही ही चली आयी! अरे, बिन साक-अग-जंज-घोड़े के ही परणा लाया! मल्ला हमें न भरमा।"

बरकती रो-रो चाची के पाँव पड़ गयी—"झूठ बोल के ज़िन्दा कहाँ रहूँगी! शाह से लग गयी और घर से पाँव निकाल लिया। तड़के मुंह-अंधेरे कमादों में छिपी शाह की राह तकती थी कि शाह के घोड़े की टाप सुन बाहर निकली। इधर मैं निकली, उधर वैरी मेरे भाइयों ने शाह के पेट में लोह-पञ्जा पुबेड़

दिया। शाह घोड़ा दौड़ाते आया और मुझे बांह से खींच घोड़े पर बिठा लिया।"

"सतनाम सतनाम !" शाहनी का आह निकल गया। चाची ने सांस रोके पूछा, "फिर री, फिर क्या हुआ ? बोल धिये, बोल ! खैरों से लड़का हमारा तो सही-सलामत है न ?"

बरकती रो-रो हिचकियां लेने लगी—"शाह की आंतड़ियां बाहर निकल आयीं। रुकने की घड़ी न थी। पंघाली पहुंच शाह ने ज़ख्म पर दारू डाला, कपड़ा कसा और घोड़ा दौड़ाते यहां आन पहुंचे !"

चाची नवाब पर बोलने लगी—"कमलेया, थल्ले से आवाज़ दी होती। लड़के को दूध-घी तो पिला देते !"

"कहा था, पूछो भरजाई से, पर नहीं माने।"

"बहुतेरे तरले मिन्नतें की। मेरे लिए इतना पेंडा न मारो शाहजी, पर न माने। बोले—तेरे भाई मचे हुए हैं, उनके हाथ पहुंच गयी तो तुझे जिन्दा न छोड़ेंगे। मुझे यहां उतार शाह अब थाने गये हैं।"

चाची महरी ने पास झुक बरकती को नयी नजर से देखा, फिर गोद के बच्चे का मुहान्दरा सही किया—"झूठ न बोलना बल्ली, यह तारेशाह का टाबर नहीं। बता तो सही, इसका दात्ता पिदर कहां !"

बरकती आंखों में ताजा पानी भर लायी—"वह गया बैकुण्ठों। पार के साल कस्स चढ़ी और आंखें मीट लीं।"

नवाब ने टोका—"चाची, सुबह से भूखी-प्यासी हैं मां-बेटियां। कुछ रोटी-टुक्कर आगे रखो !"

आवाज सुन छोटी शाहनी बाहर निकल आयी—"कौन है चाची !"

शाहनी ने देवरानी के कन्धे पर हाथ रखा और धीरे-से कहा, "तारेशाह की लग्गो।"

"तर गयी किस्मतें। भला यह यहाँ कैसे !"

"देवरानी, तारेशाह को जख्मी कर छोड़ा है इसके भाइयों ने। इसे यहीं उतार थाने गया है।"

"बुरा हुआ जिठानी, मामला थाने-कचहरी चढ़ेगा। मर्द आज घर नहीं। कहीं यह न हो कि अपनी ही थूया-फजीहत हो जाय। क्यों री सुभान कौरे, तुझे कहीं और ठौर नहीं था ?"

बरकती ऊंची-ऊंची सिसकारियां भरने लगी।

"क्या कहूं, सिर पर बुरी घड़ी आन पहुंची। मत्त मारी गयी मेरी भी।"

छोटी शाहनी ने घुड़का—"मल्ला बहुत खड़का-धड़का न कर। आज ही पिण्ड इकट्ठा कर लेगी। लोक जहान पर नशर तो होनी है। आज सहारा कर ले। मर्द अपने घर नहीं।"

नवाब ने इशारा किया—"पानी का कटोरा तो दो, ज़रा चित्त ठिकाने आये।"

छोटी शाहनी ने कटोरा आगे कर गागर नीचे झुकायी तो झट मन में तुटक गयी—"मैंने कहा क्या नाम बताया भाई-ब्रादरों का! सुनूं तो!"

"बड़े का नाम दित्ता। विचकारवाले का लाड़ा और छोटे का कुक्का।"

विन्द्रादयी के तेवर चढ़ गये—"आगे बोल री, तेरे बब्ब का नाम क्या!"

"महीपत।"

शाहनी ढीली पड़ गयी और पानी-भरा कांसी का कटोरा हाथ में पकड़ा दिया।

शाहनी ने चाटी में से मीठी वंगी निकाल जातकड़ी को पकड़ायी—"खा, ले खा, मैं सदके गयी। सुबह से भूखी है।"

"भरजाई, मुन्नी का नाम तो बता!"

"रसीली।"

"आ रसीली—आ मेरे पास आ।"

बरकती के आगे थाली आयी तो छम्म-छम्म रोने लगी—"कल त्रिकालों इस घड़ी अच्छी-भली बैठी रोटियां उतारती थी। इधर मेरी मत्त मारी गयी, उधर मां-जाय भाइयों ने वैर कमाया। खबरें शाह किन हालों में!"

चाची बोली, "नवाब पुत्तर, तारेशाह अपना थाने तक तो पहुंच जायगा! कैसा था उस वक़्त!"

"फ़िकर न करो, शाह अपना धाकड़ बन्दा है। बरकती भरजाई, बुरा न मानना, तेरे भाई नहीं बचते इस मारवान खत्रेटे के हाथों।"

शाहनी बोली, "अरी देवर तो मेरा ही है, पर री, करतब तारेशाह के बुरे। मार-धात, जुर्म-मुक़द्दमे, थाना-कचहरी। पहले किसी की धी-बहन भगायें, जिन शरीक भाइयों से मुंह-मुलाहज़ा न हो उनसे बिना पूछे जनानी उनके घर छोड़ जाये! बता, अगला साक-सम्बन्धी क्या करे!"

चाची ने सबको दिलासा दिया—"चल रात की रात, कल आप लड़के आके देख लेंगे। इन मामलों में अपनी पैग़म्बरी क्या!"

छोटी शाहनी बोली, "कहते हैं न, लुच्चे सबसे उच्चे! मेरे जाने भड़वे पर छाया हुआ है यौब्बन-मद! उतरेगा, अभी कर ले बदफ़ैलियां…।"

कोच्छड़ों की कम्मो बिम्बो के चूंडों में जुयों ने डेरे डाल दिये तो माँ वज़ीरो ने पहले तो मारे कसे हत्थ दो-दो धप्पे लड़कियों के सिर, फिर उनकी गुत्तड़ियाँ खींच मींडियाँ खोल दीं।

कूंडी में जूं बूटी और धरेक के पत्ते पीसकर सिरों में लेप कर दिया और पीठ पर थपकी दे कहा, "जाओ खसमाखानियो, जाकर धूप में बैठो। सिर सूख जाये तो शाहनी के कोठे जाकर नाइन को दिखा आना। सुनो री, अब खेली कभी तोतड़ी के साथ तो टाँगें तोड़ डालूंगी। उसके सिर जुयों और लीखों के अम्बार है। माँ मुकाली देखती नहीं कि लड़की के भाटे में फौजें रेंग रही हैं।"

पक्की धूपें सिरों पर आ फैली तो न्यानियाँ-सयानियाँ सिर खोल कोठे पर आ जमीं।

उमराँ नायन ने आते ही कम्मो, बिम्बो और तोती को अलग कर दिया—"जुयों की पिटारियो, ज़रा हट के बैठो। जाओ, दूसरे कोठे पर जा बैठो। मैं वहीं आ जाऊँगी। अरी साथ-साथ ढुकी रही तो सारे गाँव के सिर सुलगने लगेंगे।"

उमराँ ने पहले छोटी शाहनी के सिर घी रचाया। चाची महरी के धवल धौलों में कंघा फेर कसकर चोटी बाँध दी। फिर शाहनी पीढ़ी पर आ बैठी।

खुले बालों की कतार देखकर कहा, "कुड़ियो-चिड़ियो, आज क्या सूझी! सबने एक संग बाल खोल लिये।"

"मेरे नसीबों को शाहनी। दिहाड़ी पुग जायेगी नख पीटते।"

उमराँ ने शाहनी का परान्दा खोला और घी गर्म कर लाने को आवाज़ दी।

बरकती घी की कटोरी ले आयी तो मुड़-मुड़ लड़कियाँ उसको ताकने लगीं।

चिड़ो की पाशो से न रहा गया। कह ही दिया—"कहाँ तारेशाह खजूर के तने-सा जवर और कहाँ भरजाई बरकती गुलबाशी की बेल-सी नाजुक। मैंने कहा भरजाई, बिना पत्रे कैसे मिलाये ये मेल-संजोग!"

चाची ने फटकार दिया—"चुप री। छोटा मुंह बड़ी बात।"

पाशो न मुड़ी—"झिड़क ले चाची, पर दुनिया तो बातें करती है। किस-किसका मुंह पकड़ोगी!"

शाहनी ने हाथ से चाची को इशारा किया—"मल्ली दुनिया क्या कहती है, मैं भी तो सुनूं!"

"यही कि बरकती भरजाई के न फेरे हुए, न ब्याही-परणायी।"

बरकती ने पहले शाहनी की ओर देखा, फिर हँस-हँस बोली, "कोटली के ठाकुरद्वारे पान्देजी ने वेद-मन्त्र पढ़वा मेरी ओढ़नी का लड़ तुम्हारे वीर के दुपट्टे से बाँध दिया। अब बता बहना, तुम्हें और क्या चाहिए!"

मोहरे की वेवे मीन-मीख निकालने लगी—"बलिहारी जाऊँ वधूटिये, यह तो कह पण्डित-पान्दे ने ब्याह कैसे पढ़ाया! मन्त्र-श्लोक भी उच्चारे कि नहीं! इससे

तो आनन्द कारज करवा आती। तेरी गोद मे तो पहले ही एक काकी···"

बरकती के गोरे नखरीले मुखड़े पर बड़ी मिट्ठी हँसी फैल गयी—"बेबे, अपने पहाड पर तो दूजी तरह से परणाया जाता है। कहो तो बता दूं!"

शाहनी ने आँख से सैनत की—"न री।"

लड़की-बालड़ियाँ ज़िद करने लगीं—"बता दे भरजाई बरकती, बता दे।"

बरकती हाव-भाव में सचमुच ही तारेशाह की दुल्हन बन गयी। मुखड़ा साध-कर पण्डित पान्दे की तरह दोहराया—

"अस्स कन्या तुस्स गोत्र
तुस कन्या अस्स गोत्र।"

बोल की लय बड़ी भायी लड़कियों को। इकट्ठी मिलकर बोलने लगी—

"अस्स कन्या तुस्स गोत्र
तुस कन्या अस्स गोत्र।"

मोहरे की बेबे फ़ीकी पड़ गयी—"क्यों धिये, एक ही मन्त्र में सातों फेरे हो गये!"

"न बेबेजी, हर बार नया! दूजी बार पान्दा बोला—

अस कवार तुस्स लाढ़ा
तुस कवार अस्स लाढ़ा।"

सुननेवालियाँ हँस-हँस दोहरी हुईं।

बरकती नयी ब्याही केसरो का सिर खोल उसके पीछे जा बैठी।

"उमराँ बीबी, अपने पहाड़ मे चूंडा कैसे गूँथा जाता है, बताती हूँ तुम्हे।

"लाढ़ीजी, हिलना मत!"

शाहनी तारेशाह की इस चहकती बुलबल को देख बड़ी खुश हुई—"लाख कहो तेलन-तम्बोलन है, पर री, हाव-भाव में निरी रस की गगरी। क्या ताल से बातें करती है! क्यो न भाती तुर्शी तारेशाह को!"

बरकती अपने छोटे-छोटे सुघड हाथों से केसरो की वर्त्तनी गूंथने लगी।

केसरो ने टोका—"भरजाई री, पहले माथे की अगली मीडियाँ तो गूंथ!"

"तनिक सहारा कर लाढ़ी, जुल्फें और कुण्डल ऐसे बनाऊँगी कि गबरू देख इन्हे शरमाये!"

उमराँ छिपी नजर केसरो के सिर पर 'किड़ा' बनता देखती रही।

वर्त्तनी का पीठदार जाल पडता देखा तो बरकती से खार खा बैठी। ठुनक-कर कहा, "जम्मूवालिये, चूंडा खैरों से मीडियों का! भले दरिया पार, पोठोहार या सन्दल बार का। जेकर चाहो सिर पर चिड़ियाँ-तोते बिठाने तो बीदाना लगा बाल ऐसे सजें कि पूरे पक्ख मर्द की आँख वही टिकी रहे।"

बरकती को अपने तारेशाह की मौज-बहारें याद आ गयी वो मीठी महीन

आवाज़ में गुनगुनाने लगी—

कुन बैंइठी सिर खोलिके
कुन बैंइठी पीठ मोड़िके।
गोरां बैंइठी केश खोलिके
शिवजी बैंइठे मुख मोडिके।
गोरां माथे बिन्दुली चमके
शिवजी माथे चन्न सोहवे।
कुन बैंइठी पीठ मोड़ि के···

बरकती के गले के रसभीने बोल सुन ज़नानियां भक्ति-भाव में डूब गयीं।

चाची बोली, "कैसा सोहणा प्रसंग है गोरा-पार्वती का। इधर गोरा देवी बाल खोल बैठी, उधर शिवजी आन विराजे।"

"अवतारी महिमा! सुख रहे चाची तो एक बार देवी के साच्चे दरबार माथा टेकने ज़रूर पहुँचेंगे।"

"बच्ची, पहाड़ोंवाली देवी से मांग—तेरी इच्छा पूरी हो।"

लड़कियां भरजाई बरकतो के पीछे पड़ गयीं—"एक और गीत छू ले भर-जाई! डाडे मीठे सुर तेरे पहाड़ के!"

चाची का अपना मन कर आया—"सुना री सुना, तारेशाह की सुराहिये!"

बरकती की अँखियों में अपने पिण्ड के पठार खिच गये और कालजे में तारे-शाह की मौजवारी बांहें। सुरों में चश्मा छलछलाने लगा—

मियां मजनुयां ओ
चिट्टे तेरे दन्द दिक्खी हस्सियां ओ
मियां मजनुयां ओ, गुज्झे तेरे नैन
दिक्खी डुल्लियां ओ
मियां मजनुयां ओ कलमी तेरे छत्ते
दिक्खी भुल्लियां ओ
मियां मजनुयां ओ
रोन्दियां करलान्दियां
कगनां घड़ानियां
मिल जाओ ओ

टिक्के बिन्दी दोस्ता
टिक्के बिन्दी महरमा
टिक्के बिन्दी वैरिया
टिक्के बिन्दी लाइता

मेरे वालुये !

गाते-गाते वरकती की आँखों में झड़ी लग गयी।

केसरो के बाल गूँथ उठकर पसार की ओट हो गयी।

शाहनी बोली, "चाची, बधूटी सच्ची है विचारी। जिस दिन से यहाँ छोड़कर गया है—न खोज-खबर, न रुक्का-पत्री। अपना घर-द्वार छोड़ के आयी है।"

आजवायन, सौंफ और पुदीने के अर्क़ निकालने को शाहों के घर सब हाथ रुझ गये। छाजों में डाल कोई सौंफ छाँटे, कोई आजवायन और कोई पुदीने के पत्ते तोड़-तोड़ रखती जाये।

नीचे तद्दरों से ताम्बिये-वल्टोइयाँ निकाल धो-माँज साफ़ किये तो शाहनी पास आ खड़ी हुई। अरख-परखकर वर्तन-भाण्डे देखे, फिर गागर से पानी ले अपने हाथ से नितारने लगी। पास खड़ी मिट्ठी से कहा, "जा वल्ली, धनदयी को बुला ला। बड़ी कामल है इस काम में। आकर नाल लगा देगी।"

लक्खमी बाम्हणी पास आ खड़ी हुई और कमर पर हाथ रखकर कहा, "शाहनी, भला यह कौन मुश्किल काम! मैं कर देती हूँ। पार के साल पंजसेरी आजवायन का सत्त निकाला था मैंने।"

"लक्खमिये, दोनों एक-दूजे का हाथ बँटाओगी तो काम जल्दी निवड़ जायेगा। जा री निक्किये, मनोहर के कोठे से नीचे उतर जाना।"

लक्खमी से न रहा गया। छाज फटकारती रेशमा को सुनाकर कहा, "यह तो वही बात हुई, घी सँवारे सालन और बड़ी बहू का नाम। मैंने कहा शाहनी, धनदयी को क्या अनोखे लाल लगे हुए हैं!"

चाची पास बैठी चंगेर में पोदीने की डण्डियाँ चुन रही थी। सिर उठाकर लक्खमी को घूरा और झिड़ककर कहा—"अरी, नथ का नगीना अपने-आप ही बोलता है। मल्ला धनदयी बड़ी सुचज्जी। उससे तेरी क्या खारबाज़ी!"

लक्खमी पाँव के भार पास आ बैठी—"चाची, इतना कह दूँ ऐसे कामों में संभाली चंगी नहीं। वस्त का तत्त ही बिखर-निखड़ जाता है।"

चाची ने घूरकर देखा—"हैं री, बात तो तूने चंगी की है। आख़िर को जातकड़ी तू बाह्मणों की। पर धिये, बत्तीस सुलक्खना वह जो अपनी अक़्ल करे। बँतीस सुलक्खना वह जो दूसरों से पूछ करे।"

लक्खमी खीज गयी—"सत्त वचन चाची ! अब न भूलूंगी ! तुम लोगों के तो धनदयी ही सोलह कला सम्पूर्ण।"
मिट्ठी परत आयी और शाहनी से कहा, "धनदयी मौसी तो मुंह-सिर लपेटकर है। पिण्डा तप रहा है। कहती है कस्स चढ़ी है।"
शाहनी हँसने लगी,"हला री, सो भला ! ले लक्खमी, तेरे मन की मुराद हुई !"
लक्खमी ने सिर की ओढ़नी उतार दिवार के साथ खड़ी चारपाई पर टंग दी बैठकर फरन-फरन छाज छटकने लगी—"शाहनी, इन कामों में क्या देर है !"
मांबीबी ने छाज पकड़ लिया और लक्खमी से कहा, "चौके से ताम्बियां-उठा ला, यह तो मैं भी निवेड़ लूंगी।"
लक्खमी ने पीतल की बल्टोई ला गागर से पानी डाला और उसमें आज-, सौंफ डाल दी। फिर लोहे की नाल लगा ताम्बिये पर टिका दी।
शाहनी ने आस-पास ढुकी कन्या-कवारी पर नज़र मारी—"अरी कोई कपड़ों तो परे चली जाये। परछांवा न दे अर्क़ को !"
एक-दूजे को धौल-धप्पे मारती शान्नो-चन्नी शरमा-इतराकर दूर हट गयीं, ाहनी ने अनोखा हँसकर लाड़ से सिर हिलाया—"लो देखो, मरजानियां जल्दी सयानियां हो गयी।"
ताम्बिये के ढक्कन पर हाथ दिये लक्खमी को खबरे क्या सोच पड़ गयी। दूर शान्नो-चन्नी को बिटर-बिटर तकती रही। आंखों से ओझल भी हो गयी, भी आंख न परतायी।
शाहनी ने टोका—"क्यों री लक्खमी, किधर है ध्यान तेरा ! ढक्कन पर रखे बैठी है। उठा ले, हाथ जल जायेगा।"
लक्खमी ने एक लम्बा स्वास भरा तो शाहनी चौंकी।
पास बैठ कन्धे पर हाथ रखा—"अभी तो चाव-चाव बैठी थी। अब क्या में विक्खोभन उठ आया। अरी, अर्क़ दवा-दारू है। इसे निकालने में जो तेरा ा-खपता रहा तो किसी के तन-पेट न लगेगी इसकी बूंद !"
लक्खमी शाहनी से आंख चुराये रही।
शाहनी से हाथ का संकेत पा लड़कियां-काम्मियां इधर-उधर हो गयी तो , "किसी बात का फ़िक्र करती है क्या ! आयी कभी रुक्का-पत्री तेरे सासरे "
लक्खमी की छाती धौंकनी-सी चलने लगी। दुपट्टा नीचे कर सिर हिलाया— !"
शाहनी ने तीखी नज़र से देखा—"तन तो ठीक है री तेरा ! चेहरा पहले से ा लगता है।"

भर्राई

कोरी आवाज़ में फुसफुसायी—"क्यो री···!"

लक्खमी ने सिर हिला हामी भरी तो अँखियाँ चू पड़ीं।

"हाय री! मैं मर जाऊँ लक्खमिये, साईं तेरा सुरगों में। यह पसर-कटाली क्यों फैलने दी!"

लक्खमी लकड़ियों को लगा-बुझा धुएँ में ही फूँकें मारती रही और रोती रही।

चाची महरी ने धड़े पर से आवाज़ दी—"तन्दूर तप गया बच्ची, आकर रोटियाँ लगा ले।"

शाहनी ने पेड़े घड़ परात भर ली और शताबी-शताबी रोटियाँ उतार घी रचाने लगी। श्रीराम···श्री···राम! कलजुग वरत गया। विधवा ब्राह्मणी और री, ये लच्छन-कर्म!

नीचे हवेली के दरवाज़े से कोई रौला सुन पड़ा। बनेरे से झाँककर देखा—नवाब किसी जने से पूछ-ताछ करता था।

"छोड़ो, छोड़ो मुझे! ऊपर जाने दो! मेरी उम्दा ऊपर है।"

"नवाब चन्ना! कौन है? किसकी आवाज़ है? कहीं माँबीबी का घरवाला इलाहिया तो नहीं!"

"वही शाहनी, वही आन प्रकटा है। दिमाग चल निकला है शौदाई का।"

शाहनी ने तावली-तावली उठकर माँबीबी को आवाज़ दी—"अरी आना ज़रा! हाथ का काम छोड़ आ!"

सिर पर काली दोहर डाले माँबीबी भजती आयी—"मुझे हाँक दी शाहनी! क्या काम आ पड़ा मेरे ज़िम्मे!"

"चौकस हो माँबीबी! खैरों से नीचे इलाहिया आया है।"

"हाय अल्लाह!" माँबीबी ने हाथों की तालियाँ मल-मल कहा, "शाहनी, क्या करूँ! बताओ क्या करूँगी!"

"हौंसला कर री। तुम्हें कौन कूचाबन्दी करनी है। बरसों बाद तेरे मियाँ ने इधर मुँह किया। जी सदके। जा री, ज़रा लटें सँभाल अपनी।"

चाची अर्क की निगरानी में बैठी थी।

नवाब को ऊपर देखा तो पूछा, "कौन है मल्ला, कौन आया है? किसकी आवाज़ थी?"

"चाची मुबारकें! खैरों से जवाँई भाई आया है!"

"कौन रे! इलाहिया! मैं वारी! आओ पुत्तरजी, आओ बैठो। अरी, कोई

मंजी विछाओ !"

इलाहिया खाली-खाली अँखियों ब्रिटर-बिटर तकता रहा।

चाची पास आ खड़ी हुई—"राजी हो न !"

मांबीबी सामने हुई तो इलाहिये की आँख में कोई पहचान न उभरी।

चाची ने लस्सी का कटोरा आगे किया—"माँ रज्ज गयी। पुत्तरजी, पियो !"

इलाहिये ने लस्सी का कटोरा गटककर नीचे रख दिया और पूछा, "मेरी उम्दा कहाँ है ?"

चाची ने लाड़ बरसाया—"लो जी, यह रही मांबीबी ! तुम्हारी अमानत !"

"न···न···यह नहीं, वह। मुझे मेरी उम्दा बेगम चाहिए। मिलने दो न मुझे उम्दा से !"

चाची ने शाहनी को सैनत मारी—"मांबीबी को निकाल दे कोई चमकी का जोड़ा-दुपट्टा। पहन के उम्दा छन्नकन्नो बन जायेगी। हाँ पुत्तर इलाहिया, बड़ी देरों से लौटे ! वहाँ किस काम पर लगे हुए थे पुत्तरजी !"

नवाब हँसने लगा—"अल्लाह बेली इससे क्या पूछना ! अपने इश्क के महकमे में नोकर हुए पड़े हैं। चाची, होश-हवास वहीं हैं। खबरे पिण्ड की ओर कैसे मुंह कर लिया !"

चाची ने हाथ से नवाब को रोका—"मुड़ रे, बात पूछने दे। पुत्तर, यह तो बताओ उम्दा बेगम कौन ?"

इलाहिये ने मुण्डी हिला दी—"बेगम एक, नवाब अनेक। नित-नित नयी लहरें। मौज बहारें।"

चाची ने राबयाँ को आवाज़ दी—"बल्ली, मुँह मीठा करवा बहनोई का। घड़े में से गुड़ निकाल ला। मैं इसकी घरवाली को तो देखूं।"

चाची के संग-संग मांबीबी अन्दर से निकली तो पहचानी न जाये। चम-चम चमकी के जोड़े पर बन्दोंवाला गुलाबी दुपट्टा। रूप-जवानी खिल-खिल पड़ी।

चाची ने हाथ से आगे किया—"मैंने कहा जवातरे, यह उम्दा से कम तन्नाज नहीं। तोला दो भारी ही होगी। जा पुत्तर, ले जा इसे घर। घर तो याद है कि नहीं ?"

इलाहिया हँसने लगा—"जहाँ उम्दा वहीं घर।"

चाची मांबीबी के पास हुई—"खैर मेहर है री मांबीबी ! तबेलेवाली पौड़ियों से उतर चरखेवाले अँगना जा पहुँच। कोठा अन्दर लिपा हुआ है। झाबरी पानी की भेज देती हूँ। सेंवइयाँ रांध लेना। घी-बूरे के बर्तन राबयाँ रख आयेगी।"

शाहनी बिलगकर मांबीबी को एक ओर ले गयी—"मियें के साथ चटाक-पटाक न करना। विचारा किसी टूने से बँधा है। सेवा करना, रब्ब भली करेगा।"

दोनों नीचे उतर गये तो चाची ने बेबे करभरी को बुला भेजा—"राबयाँ बल्ली, ज़रा साथ लेती आ बेबे को। आ के इलाहिये का टोना उतार देगी।"

मांबीबी-इलाहिया बेबे को नीचे उतरते दीखे थे। ऊपर आकर पानी की कनाली भरवायी और चाकू से पानी काट दिया—

ईची मीची कोको खाय
कंजरी भड़वी जहन्नुम जाय।
ईची मीची कोको खाय
कंजरी भड़वी जहन्नुम जाय।

बेरियोंवाले खू पर आन उतरा नट-कंजरों का डेरा।

गधों पर लदी खटोलियाँ, छाज, लुगड़, बाँस, रस्से और ढोल। आगे-आगे नट, पीछे-पीछे नटनियाँ।

बच्चड़ों को गोद में लगाये थन चुंघाती सरों के पेड़-जैसी लम्बी-पतली। घघरिया घुमाती पिण्डलियाँ। लम्बे-काले भब्बे। पेट पर झूलती काली फ़िरोज़ी झालरें। मीढ़ियों-गुंथे सिरों पर ओढ़नी की झुंभलें। नाक में चौड़ा लौंगड़ा।

नट-कंजरों की काली लुनाई पर ढीले साफ़े।

"अरी ओ फुम्बी-खुम्बी, यहीं डेरा जमा लो। छाँह है छाँह!"

सयानी नटनी ने हाथ बढ़ा गधों पर से खटोली उतार दी—"ले डाल न्यानों को।" फिर बड़े-बूढ़े को आवाज़ दी—"आ ओ डोकरे उठल्लू। फैला दे लुगड़, तेरा कोड़मा बैठे।"

बूढ़े नट ने बाँसों की कैंची लगा ऊपर खेस का लुगड़ डाल दिया।

दोनों गधे सुरखरू हो पहले ढीले पड़े, फिर पीठ हल्की हुई जान हिनकने लगे।

फुम्बी ने पास जा दोनों को थप्पे दिये और अरढ़ियों की ओर ठेल दिया।

बब्बर और गब्बर दोनों छाँह में पसर गये।

सयानी चौंती को हाँक दी—"डोकरी, पिण्ड में से उपला लेती आ। चिलम धुखायें। ज़रा दम तो आये!"

डोकरी खीझ गयी—"वाह ओ हरकतिये, बड़ा कल्न सरीर से के बैठा है। आप ही उठकर चिलम लगा ला!"

म्बी गब्बर को देखकर तुनकी—"अरे, सब्र कर ले लँडोरे! मैं ही ला के । नट को देख जट्ट गूजरियाँ इमरतियाँ बन जाती हैं। कहीं एँलगैल में हो । कटारी से कलेजा निकाड़ दूँगी।"

ब्बर पसरा-पसरा मसखरी करने लगा—"देखूँ इस दिलवैया को। बीध । गिनने लगेगी तारे।"

म्बी ने उठ बालक को बब्बर की छाती पर डाल दिया और लहँगड़ूं से एक मार बोली, "ले, जरा-सी देर खिला अपने दुम्बे को। मैं गाँव में झोली के आयी।"

ोड़ी-सी दूर गयी तो बब्बर ने हाँक मारी—"अरी ओ, खुमानी बन के न । किसी भूखे की खुद्दिया उठ गयी तो डाल लेगा वही!"

जा ए, एक ही लात से खँडेरू को खिला दूँगी। हाँ री जेठी, इस ग्राँ मे नट- की गोटठ तो न होगी!"

न री, इसमें सिर्फ़ साँसी। होगी तो कालू साँसी की क़बीलदारी होगी। नर नर!"

ोकरे को खाँसी छिड़ गयी। दम आया तो धमकाकर कहा, "बस री, उसकी गाती चली जाती है। वह था बटमार लुटेरा। तभी यह छाँह-ग्राँ याद तुम्हें।"

'तो और क्या डोकरे! क्या तेरा ही शहद पिण्डा था जिस पर घिर-घिर थी माखियों!"

ोकरे को लग गयी—"जा री, ज्यादा न मच। खींच दूँगा जबान।"

'जा ओ जा, तेवर दिखा के तू न बन जायेगा बादशाह! हज़ार मकर-ढोंग हेगा तो कंजर का कंजर!"

ोकरे ने छोटी-सी डाँग उठा ली और हाथ से दिखाकर कहा, "मेरे हाथों ी, तभी राह पर आयेगी।"

ोकरी माथे पर हाथ मार-मार फिटकें भेजने लगी—"अरे, बहुत देखा ! तेरी जवानी भी घनी देख ली! खाती हूँ बेर, चबाती हूँ दाने। बोल, ज़िल्लत काहे उठाऊँगी। खाती होती खीर-हलवा चाँदी की थाली में तो तेरा सहती!"

'बकती है रांड। दो टीपरी आज, दो परसों। भ जादी बघारने चली।"

'डोकरा बुढ़ा गया। अरे कंजर अपनी ज़ात के, तू औरों की तरह नींव खोद दिवारें उठा उन पर घर डाल लेता, तो क़ैद हो जाता बड़े आदमी की ़त-हैसियत में। सारी जिनगी बिता, थान-मसान पहुँचने लगा तो अपनी को छोटा समझने लगा। दीदे फाड के देख ऊपरवाले को। उसने कोई घर । खुले आसमान पर डटा पड़ा है।"

"अरी ठाड़ी रह । बढ़-बढ़ बोलेगी तो धरती लील लेगी ।"

फुम्बी-खुम्बी दोनों हँसने लगीं ।

फुम्बी ने हाथ मटकाये—"अरी, इन दोनों के बोपड़े न रुकेंगे, जब तक डाल मे खलीफ़ा ढोल न वजा देगा !"

"चुप री, हरी लहर पर इतराने लगी । अरी, सबकी सूझती है यह चोह !"

दोनों नटनियाँ जवान, खिड़-खिड़ हँसने लगीं । फिर छाँह में लेटे गब्बर-बब्बर को हाँक मारी—"अरे, घुग्गे बनकर चिलम ही फूंकते रहे तो बुड्ढा जाओगे और रत निकल जायेगी ।"

बब्बर ने छलांग खुम्बी का [illegible] "[illegible]र, जा पीने को पानी

बब्बर हँस-हँस बकने लगा—"कमजात-कमचोर कंजरी, जवानी पर इतराती है क्या !"

खुम्बी अपनी काली सुरमेदानियों से घूरती रही और निशंक हो बोली, "अरे, बाप ने दिया स्वास और माँ ने दी यह काया । तू काहे ठठेरा बन गाली बकता है !"

"चल री, पिण्ड इकट्ठा हो रहा है करतब देखने को और नाक तेरे में लालड़ी नहीं फबती । उठ जल्दी ।"

डोकरे ने आवाज़ दी—"रब्ब तरसी, जल्दी-जल्दी मण्डे तो टीप ले । फिर सजेगा तमाशा ।"

टोपा-भर आटा-दाल-गुड़ शाहों के यहाँ से लाकर डोकरी मण्डे उतारने लगी ।

उधर लचक-मटक खुम्बी-फुम्बी चमकी के रूमाल हिला-हिला जमावड़े को रिझाने लगी ।

खुम्बी ने भीड़ में खड़े बालक के सिर पर टनोका दिया—"जा रे, माँ से कुछ खाने को ले आ ।"

गुल्लू ने मुण्डी हिलायी—"बता तो सही, क्या लाऊँ ?"

"लाड़ले, याद कर ले तेरी माँ ने आज क्या सलूना चढ़ाया था !"

गुल्लू मच्छर गया—"नटनी, पाँच पकवान थे पाँच !"

"वाह रे, तू तो बड़े धनाढ्यों का पोता-दोहत्रा ! अरे बता तो सही, पकवान क्या थे !"

गुल्लू के साथी कोई गुल्लू का झग्गा खींचे, कोई उसके कन्धे पर हाथ मारे, कोई बाँह पकड़े—"कुछ मत बोल । साथ ले जायेंगे कंजर ।"

गुल्लू को जोश आ गया—"क्यों न बताऊँ ! बताऊँगा । मेरे घर आज बना

था आम का आचार। आम का छिलका। आम की गिटक। आम का मसाला। आम का चूपा।"

नटखट गुल्लू ने घूमकर फिरकी डाली और कुत्ते की तरह भौंक-भौंककर पूछने लगा—"लाऊँ चूप्पा, लाऊँ! लाऊँ चूप्पा, लाऊँ!"

फुम्बी लड़के के पीछे-पीछे नठने लगी—"आ रे आ। नहीं तो डाल दूंगी चोर-फन्दा। सुन, पाल-पोस भरतार बना लूंगी।"

फुम्बी ने लड़के को खींच अपने साथ सटा लिया।

बलूंगड़े शोर करने लगे—"निकल आ गुल्लू, छूट आ! नही तो पकड़कर समरक़न्द-बुखारा ले जायेगी।"

फुम्बी छेड़-छेड़ खिझाने लगी बालकों को—"क्यों न ले जाऊंगी इस कोल-डोडे को! करतब सिखाऊँगी। बाज़ीगर बनाऊँगी। तमाशे में सजाऊँगी। सुनो रे सुनो, अगली बार इस पिण्ड लौटेगा तो यह गबरू ठुमका डालेगा। घुमेर डालेगा।"

बड़े लड़के शोर करने लगे—"नट बनेगा इस घाघरेवाली का!"

एकाएक आगे बढ़ गुल्लू ने नटनी की चूनर खींच दी।

बच्चे हँस-हँस तालियाँ बजाने लगे और नटनी झूठ-मूठ का गुस्सा दिखाने लगी—"दुरमुख कहीं का! अरे मिठलूणे, बांध लूंगी तुझे अपने चुटीले से!"

हौलू ने गुल्लू की मदद को कब्बडी के से दो-चार फुकारे मारे और चकरी खाकर नटनी की पिंडली पर चूंडी काट ली।

नटनी बकारा करने लगी—"तेरा थोबड़ा लीप दूंगी। तेरा बोथड़ा पोत दूंगी। रोता-रोता माँ के कुच्छड़ में जा बैठेगा।"

डोकरी भी हँसती अँखियों झूठ-मूठ बुड़बुड़ाने लगी—"अरी, चुप न करेगी! बब्बर गोल पिटारी सजाने को है।"

बब्बर ने गले में एक तख्ती लटका ली। पंचमुखी कौड़ी ली और पांवों में सींग बांध लिये।

गब्बर ने रस्सियाँ बाँटकर डण्डों पर कस दीं।

बब्बर ने पांव के सींगों को रस्सी की खूंट में फंसाया। दोनों पैरों का वज़न सही किया और पहला क़दम उठा लिया—

कसर रह गयी
कसर रह गयी।

"वाह-वाह-वाह!" किसी ने खुश हो अपनी पाग उतार नट की ओर उछाल दी। किसी ने झग्गा उतार दिया। कोई दौड़-दौड़ घरों से दाने ले आया।

खूब लहराते लहँगे के घेर में फुम्बी लहरका नाचने को आ खड़ी हुई।

लाल-काली चोली। नीली ओढ़नी।

बाँसों पर कसी रस्सियों पर चलती फुम्बी एक ठुमका मारती हुई आगे को सरपट झुकती। फिर अपना दाहिना हाथ आगे को फैला बायाँ हाथ छाती के आगे मोड़कर दाहिनी बाँह की ओर ले जाती। फिर झुकी गर्दन फिराती और रस्सियों पर पाँव टेक आगे क़दम भर लेती।

'क़ुर्बान जायें! बलिहारी जायें!"

गब्बरोट एक-दूसरे को देख-देख हँसने लगे—

हाय मुरब्बो।
हाय आन्नदो।
हाय गुलकन्द।
परमानन्द।

पीछे से आ शौके ने दित्ते को गलबाँही दी और हँस-हँस कहा, "चाशनी है। चाशनी है।"

नटनी ने आँखें मीची-खोली, फिर मींची, फिर हाथ का छाज बनाकर कहा, "खायेगा! दूं!"

बड़े लडके बाजू हिला-हिला पाँव से थिरकने लगे।

डोकरी ने धमका दिया—"अरे टब्बरो, यह बेसवा का नाच नहीं। नट-कंजरों का करतब-तमाशा है।"

"अरी गूं-मुननी, हमें न बता। हमें न सिखा। हमें न पढ़ा।"

किसी ने होलू के सिर पर धप्पा मारा—"अरे, दौड़ो-दौड़ो! नटनियाँ कई कब्ज़ा कर लेती हैं।"

तुर्कों का हर सुल्तान खलीफ़ा और जी, खलीफा वह जिसके हाथ में तलवार।

तारेशाह ने पहले तो चक मनाहसां के तेलियों की बहन भगायी, फिर उन्हें क़त्ल की साज़िश में सज़ा ठुकवा दी।

मुक़द्दमे का फ़ैसला सुनाया गया तो शाहों की पगड़ियाँ हाथ-हाथ ऊँची हो गयी।

तारेशाह ने आज के दिन बड़ी बरखुरदारी निभायी। भरी कचहरी दोनों भाइयों को झुक पैरोपौना किया तो शाहों की आँखें गीली हो गयी। लाख मन-

मुटाव, लड़ाई-झगड़े हों, शरीक भाई तो एक-दूजे के बाज़ू-बाँहें हुए। शाहों को मुबारकें मिलने लगीं।

"शाहजी, आपने मुकदमे के जोड़-बन्द पुख्ता कर डालने मे कोई कोर-कसर नही रखी।"

"सही है। नविवाली गुत्थली वड़ी और सयानफ-अक़्ल और भी बड़ी। मुकदमा तो हक़ मे जाना ही था।"

"मुकदमे शाही मामले भुने हुए दानो से नही निवटते।"

"क्यों न हो बादशाहो, आखीर तो खून का रिश्ता है। साहिबसिंह के पुत्र-पौत्रों और चढतसिंह की अल-औलाद मे क्या फ़र्क़! मुण्ड एक ही, शाखाएँ अलग-अलग।"

"फिर बादशाहो, शाहों का नामी-गिरामी क़बीला और टाकरा करनेवाले बीच में तेली।"

बड़े शाह सुनते ही चौकस हो गये।

काशीशाह को कोने में ले जाकर कहा, "काशीराम, सामने महीपत खड़ा है। अदालत-कचहरी के दस्तूर तो एक तरफ। बाप का दिल है। फ़ैसला सुन-डांवा-डोल हो रहा होगा। ऐसे सदमे की मार अच्छे-अच्छे तगड़े नही सहारते।"

काशीशाह का मन न माना—"ज़ख्म पर नमक छिड़कनेवाली बात हुई। भ्राजी, आप चाहो तो दम्म-दिलासा दे आयें। मैं ज़रा अहलमद मुंशी को भुगता लेता हूँ।"

शाहजी ने दूर से देखा। दुबला-पतला बरकती का बाप महीपत थका-हारा लोगों से आंखें चुराये, साफ़े के लड से आँखें पोछता जाता था।

पास आ शाहजी ने हमदर्दी जताने को महीपत के कन्धे पर हाथ रखा तो महीपत तेली फफक-फफक रो पड़ा—"हाय ओ रब्बा, सदा ही धनाढों की चोट ग़रीबो पर। ऊपर से औलाद भड़वी ने बरबाद कर दिया। लड़की गयी, साथ इज्ज़त ले गयी। घर की लाज बचाने को सामना किया पुत्रों ने तो उन्हे क़ैद हो गयी। गरीब की बरबादी ही बरबादी।"

महीपत अजीब चोट-खायी बेबस आंखों से शाहजी की ओर देखने लगा। देखते-देखते आँखों में खूंख्वार दहशत उतर आयी—"कहाँ शाहों का माना-परवाना मत्था, कहाँ ग़रीब तेलियों की धी।"

महीपत ने सिर का साफ़ा उतार हाथ मे ले लिया—"इज्ज़त-पग्ग दोनों चली गयी शाहजी! इस सताये हुए तेली की एक बात पल्ले बांध लो। जो मेरी धी को मान-इज्ज़त से शाहों ने घर मे न बसाया तो इस बाप का स्राप इस ऊंचे क़बीले पर लग जायेगा शाहजी! इतना याद रखना।"

महीपत ने बेबसी मे हाथ अपने कलेजे पर रखा और ज़हर की कल्ली फंक

दी—"हाय···हाय···हर स्वास के साथ मेरी हाय लगेगी शाहजी! ग़रीब दी हाय बुरी।"

दोनों को साथ-साथ देख लोग पास आ जुटे।

शाहजी ने समझदारी दिखायी—"महीपत, जो अर्जी-परचा होना था सो हो चुका। अब मेरी बात ध्यान से सुनो। तुम्हारी धी अब हमारी छांह में। दूसरे बहू-बेटियों की तरह हमारे अंग-संग। तुम्हारे बरखुरदार पहल न करते तो यह फ़साना न बनता। अब हमारी हरचन्द कोशिश होगी कि रिश्ते के मुताबिक़ तुम्हारी मान-इज्जत हो।"

गुरुदित्तसिंह पास आ ढुके—"क्यों नहीं, खानदानी चंगिआइयां छिपी तो नहीं रहती। बात निकले मुंह से, वह भी वज़नदार!"

ऐसा सुन शाहजी और नरम पड़े—"महीपत, आज से तुम हमारे सम्बन्धी हुए।"

महीपत की आंखों से सावन-भादों बरसने लगे—शाहजी के दोनो हाथ पकड़ रुंधे गले से कहा, "पहले तो बच्चड़ी ने बाप का मुंह काला किया, फिर तारेशाह ने हमें ही रगड़ दिया। शाहजी, घर उजड़ गया अपना।"

शाहजी ने दिलासा दिया—"हौसला करो महीपत। कभी दरिया पार आना हो तो बेटी का घर-दर देखते जाना।"

कचहरी के लण्डो-मुश्टण्डों के साथ आते तारेशाह ने महीपत को शाहजी के साथ खड़े देखा तो ज़हरीली हँसी फैला दी—"ग़ैरों से किससे बातें हो रही हैं!"

तारेशाह के कचहरी-यार खुशिये ने मश्करी की—

नाम खीर ख्वाज पानी टिप्प नहीं
नाम बोढ़ शाह पत्तर इक नहीं
नाम नूर अली आंख इक नहीं
वाह वाह रजपूती नाम तेली महीपत्त का!

महीपत बेबसी गुस्से से कांपने लगा तो तारेशाह के गवाह शेरा और अता मुहम्मद हंस-हंसकर बोले, "बादशाहो, लगा दी न पीठ। अब इस मुबारक दिहाड़े जश्न-जलसा हो जाये!"

तारेशाह यार-दोस्तों के साथ माच्छियों के तन्दूर की तरफ बढ़ गये तो शाह भाई ठहरी-परखरी चाल में कचहरी से निकले।

दित्ते जेहलमी की दुकान से बूंदी-बताशे की टोकरी बंधवायी और घोड़ों पर सवार हो गांव की राह जा पड़े।

अड्डा पार कर काशीशाह बड़े भाई से बोले, "भ्राजी, कचहरियों की क़ानूनी और मुहर्रिरी झूठ-झंखाड़ ही समझो। वादी कुछ कहे, गवाह कुछ।

हादसा कुछ, बयान कुछ। जुर्म किसका और सजा किसको। पुख्ता चीज तो एक ही अदालत में—अदालत और अदालत की कुर्सी।

शाहजी ने तीखी नजर भाई पर डाली—"काशीराम, इस बात पर मैं तुम्हारे साथ मुत्तफिक नहीं। अँग्रेज़ की कचहरी में इन्साफ़ होता है। वक़ील पढ़े-लिखे। क़ानून लिखत में दर्ज। इन्साफ का घर है कचहरी-अदालत, लट्ठुम्मनों का डेरा नहीं कि जिसके जो मन में आया बोल दिया या फ़ैसला दे दिया।"

"आपके कहे मुताबिक तो मुकद्दमों की रुबकारी बिला रू-रियायत भुगत जाती है!"

"बिला-शक काशीराम! आज का फैसला मद्देनज़र रखकर क्या कहा जा सकता है कि मुन्सिफ जज ने फैसला सही नहीं दिया!"

काशीराम हँस दिये—"इस फ़ैसले का सेहरा तो आपके तजुरबे, मुस्तैदी और तारेशाह की बिछायी हुई बिसाते-शतरंज को है। जो चश्मदीद गवाह हमारी तरफ से पेश हुए उन्होंने मुकद्दमे का मुँह-माथा ही बदल दिया।'

काशीशाह ने एक भरपूर नजर बड़े भाई पर डाली—"रह-रह दिल में ख्याल उठता है गरीब महीपत की बेबसी और मुफलिसी का। भाई हमारे ने उनकी इज्जत पर हाथ डाला। बेटी भगायी। बेटों को सज़ा दिलवायी और आप सुबकत फ़ारिग हो मुकद्दमा जीत घरों को चल पड़े।"

'एक जरूरी बात भूल रहे हो काशीराम, किसी पर छुरे से कातिलाना वार करना, किसी बेवा औरत को उसकी मरज़ी से फुसलाने से ज्यादा बड़ा गुनाह है।"

काशीराम नरम हो बोले, "कानून की निगाह में ज़रूर यह बड़ा जुर्म है और बड़े जुर्म की सजा मुज़रिम को ज़रूर मिलनी चाहिए।"

शाहजी भाई की चुभन को समझे। चुपचाप कुछ सोचते रहे, फिर सरपची मुद्रा में बोले, "देखा जाये तो तुम्हारा ऐसा सोचना भी गलत नहीं। जिस तरह आशिक़ को माशूक के वस्ल के सिवाय कोई दूसरा इलाज नहीं, उसी तरह कचहरी में भी कुफ़-झूठ के बिना गुजारा नहीं। वहाँ तो खुले-मुँह दीद-बाजी की तरह दलीलबाज़ी शुरू हो जाती है और सच बिचारा किसी पर्दानशीन औरत की तरह परदे के पीछे से झाँकता रहता है।"

काशीशाह ने दाद दी—""वाह भ्राजी, जो मैं कहना चाहता था उसे टकसाली जामा पहनाकर आपने क्या असर पैदा किया!"

छोटे भाई से तारीफ सुन शाहजी का मुखड़ा दमकने लगा। ढंग से मजमून बदल दिया—"आज कचहरी में शमशेरसिंह का पुत्तर महताबसिंह कान में कह गया था कि तारेशाह गगूवालवाले सरबदयाल को धमकी दे आया है कि आग लगा दूंगा पकी फ़सलों को।"

"कब तक चलेंगी यह वहियां और बद-बाज़ियां। कहते हैं न—

माले हराम बूद
बाज़ ए हराम रफ़्त!

•

लखमी बाम्हनी सिल-वट्टे पर लहसुन-प्याज पीसते-पीसते गाने लगी—

मैं जाना वह हंस है
ता मैं किया संग
जे जानूं बग्ध बप्पड़ा
मूल न भेटूं अंग।

सुनकर शाहनी के लूं खड़े हो गये। आवाज़ में गूढ़ा दर्द। पास जा पीठ पर हाथ रखा—"है री निगोड़ी लक्खमिये, तेरे दिल से अभी तक न उतरे काले बादल!"

लखमी ने आँखें पोंछी और घुटनों पर सिर डालकर कहा, "क्या करूं शाहनी, टिब्बे से उतरी और खू में! इस अशोभे दिल पर अपना बस नहीं।"

"क्यों री, फिर मिली थी उससे?"

सिल-वट्टे पर हाथ फैला लक्खमी ने न 'हां' की न 'न' की। भर्राये गले कहा, "मैं तत्ती क्या करूं शाहनी! सैयदज़ादड़ा जाने किस जादू के ज़ोर मुझ पर हक़ जमाये हुए है। बहुतेरा संजम रखा पर वह मेरे तन-मन से नहीं उतरता। उतरता ही नहीं।"

लखमी सिसकारियां भरने लगी तो शाहनी ने पास बैठे हौले-से कहा, "है री बाम्हनिये, तू उस तक पहुंची तो कैसे पहुंची! धर्म के चोले का भी लिहाज़ हया न रखा।"

"कर्म इस अभागिन के शाहनी। पार के साल नौशहरे गयी थी अपने नानके। बस, सैयदज़ादे ने ऐसी दीठ दी कि सीधे नैन-प्राणों में खुब गयी।"

चाची के पांवों की आहट पर शाहनी चौकस हो गयी। ऊंचे गले से कहा, "मैंने कहा लखमी, तावली-तावली काम समेट और ज़रा तद्दरों में चल। भण्डारे को धूप लगवानी है!"

चाची महरी ने पास आ एक तीखी नज़र लक्खमी पर डाली और झिड़क-कर कहा, "सिर-सड़ी इसकी ग़ज़ल घोड़ी जारी ही रहती है। सब्र कर ले री।

C 221

ज़रूरी नहीं तेरे क़िस्से-करतूतें दिन-रात लहकते ही रहें।"

लखमी ने धनिया-जीरा पीस सिल-बट्टा उठा दिया। पानी ले हाथ धोये, ओढ़नी के छोर से पोंछे और शाहनी से पूछा, "झरोखे-कपाट खोल दूं न नीचे के!"

"हां री, चल मैं भी चलती हूं।"

नीचे तद्‌रों में गेहूं-बाजरे की काची गन्ध ने लखमी के चित्त को ऐसा भरमाया-डुलाया कि भर-भर अंखियां रोने लगीं।

शाहनी कुछ देर अजान बनी रही, फिर प्यार से कहा, "फिट्टे मुंह री, अभी तो कल तेरे सिर से बला टली है। हमारे ही सिर पर पाप। मल्ला इतना ऊपर-हेठ काहे को किया-करवाया। तू जा बैठती सैयदों के पिछवाड़े। जन्म लेती हराम का!"

लखमी गहरे पछोत्तावे से बोली, "लोक-लाज, दुनिया का डर-डरावा और क्या! रब्ब गवाह है शाहनी, उसने मुझपर कोई ज़ोर-ज़बर नहीं किया। सच पूछो तो जना अपने वचन से नहीं डिगा। रो-रो उसे बताया तो बोला, 'मेरा कौल रहा लखमिये, तू मान जा। अगली ड्योढ़ी से घर चढ़ाऊंगा।' "

"धिक्कार री, तू बाम्हनों की जायी डुली भी तो मलेच्छ पर। बड़ा उसे सैयदज़ादा बुलाने चली है! पहले साल जुलाहा, दूजे शेख, पैसे चोखे आ गये तो सैयद। छोड़ दे री, दिल से निकाल बाहर कर उसका ख्याल। जात-धर्म से बाहर वह तेरा कुछ नहीं मल्ला।"

हाथ फैला लखमी ने बाजरे की बोरी ऐसे उठायी ज्यों सेरी-पंसेरी हो। दिवार के साथ टिका एकाएक शाहनी के पांव पकड़ लिये—"क्या करूं मैं अभागिन, क्या करूं! जग के आगे मेरे दुखड़ों का मुंह-माथा कोई नहीं। क्योंकर कहूं लोक-जहान से, मैं उसके बिना नहीं जीती!"

"होश में आ। शौदाई हुई है क्या! अरी, पल्ले बांध ले किसी भी बाम्हनी का सांई न कोई नमाज़ी सैयद हुआ, न होगा।"

लखमी बाल खींच-खींच अपने सिर पटकने लगी—"जानती हूं। लाख समझाती हूं पर दिल नहीं मानता। शाहनी, देह से वह ज़िन्द अलग हो गयी—पाप चढ़ा सो विरथा और मैं तत्ती वहीं-की-वहीं। इस हल्ले से मैं नहीं बचती शाहनी। मैं मर जाऊंगी।"

"हाय-हाय, कलजुग वरत गया। विधर्मी के संग अंग भेंट तेरी मति भ्रष्ट हो गयी। मल्ला ज़रा सोच के देख। क्या उसके चौके में खाये नुगलायेगी! अरी, तू जन्म की बाम्हणी, मलेच्छ को मुंह मारने दिया!"

लखमी का दुबला चेहरा दमकने-चमकने लगा। कुरते-तले छातियां धर्राने लगीं।

"खम्मा शाहनी। मेरे जालिम नरुछत्र, और क्या! सैयदड़े की बात सोचते ही इस गिरन्दी धरती पर कागें घिर आतो है। मर जाऊँगी, उसके बिना मैं मर जाऊँगी।"

"मुड़ री, खबरदार जो यह बात दोहरायी! दिल से निकाल बाहर कर अधर्मी यवने को। निकाल फेंक उसकी यादें दिल से और गाड़ आ उसका पुतला कब्रों में।"

लखमी ने कानों पर हाथ रख लिया—"देवी-देवते मेरे गुनाहों को बख्शें। ऊपरवाले को हाजिर-नाजिर जान के कहती हूं, वही मेरे तन-मन का साथी।"

शाहनी की आवाज़ एकाएक ठण्डी हो गयी—"अरी पवित्रो बाम्हणों की, तेरे सिर मौत खेल रही है। तू मर जावेगी। टोटे कर डालेंगे तेरे भाई-बिरादर। तू नहीं बचती—"

लखमी ने आंख न झपकी और खड़ी-खड़ी शाहनी को वहशत से घूरती रही। शाहनी ने पास आ कन्धों से झंझोड़ा—"कान खोल के सुन री, तू पेट से रह गयी, चाची ने तुमको हाथ दिया। वड़ी बेला के नामवाले तेरे बाबा भृगुनाथ के हित। अब धर्म का चोला उतार तू भट्टनी बन, शेखनी बन या कंजरी। जुहार कर, सलाम कर, हमारी बला से!"

लखमी को घूरते देख शाहनी बाहर निकली और अडोल कुण्डी चढा दी।

उस रात लखमी शाहों के तहखाने में गल्ले की बोरियों पर औंधी पड़ी रही और ऊपर शाहजी की बैठक में देर तक सलाह-सूत्र होते रहे।

आधी रात गये लखमी का वीर परसराम कोटली लोहारांवाले जजमाने के यहां से लौटा तो शाहों का बन्दा सीधे हवेली बुला लाया। शाहनी हाथ मल-मल गयी—"इस धर्म-पिट्टी ने अपना सत्त-संजम डिगा लिया। चाची, भाई नहीं छोड़ते इसे।"

"नसीब बुरे लड़की के और क्या! यह जिन्द काया की खलबलियां जब भी मचें, बुरी। सुना हुआ है न—लगियां-पच्छागच्छतियां मुड़-मुड़ कलेजे बींधें।"

"लख लानत इस लड़की पर। सैयदज़ादड़ा मर्द बच्चा है। यहां लग गयी, यहां। वहां लग गयी, वहां।"

"मल्ला यह अपने कुल की पहली छलकन नहीं। इसकी मौसी मातुलानी गर्कजानी घर-गृहस्थी को पीठ दे गयी थी। है री, घराने में भूख न पड़ जाये एक बार, खुधा-खुद्दियां पुश्त-दर-पुश्त नहीं बुझती। इस मंगलामुखी की प्यास तो दरिया में ही ठण्डी होगी।"

चाची महरी-गहरी सोचों में सबरे क्या-क्या सोचती रही। निक्की-सी झोंक के बाद आंख खोली तो बोली, "बच्ची, मनुक्ख सोचने पर आये तो नौशहरेवाले शेख कौन-से बग़दादी सैयद हैं। अरी क़लमा पढ़े होंगे सौ-दो सौ साल! बाम्हण

ही होंगे या मच्छीखाने या खीरखाने, जो भी समझ लो !"

शाहनी सुनकर भौंचक रह गयी—"चाची, नींद्र में तो नहीं बोल रही ! एक बार जो भ्रष्ट हुआ सो धर्म गया। सौ-दो सौ साल के बाद भी क्या सैयदों का प्रजापति गोत्र जुड़ा रहेगा उनके नाम से ! अन्धेरे पड़ गया। चाची, कुछ तो सोचो…"

"सोचूं क्या मेरी बच्ची ! सोच-सोच तो मत मारी गयी इस बुढडी की। मैं ही पुड़िया ले आयी थी न उस कुत्ती जमालो से कि बाम्हणी की लाज रह जाये। तू ही बता, पाप किसके सिर चढा। मेरे ही न ! दिल मे बड़ा क्लेश पाती हूँ। हत्यारन तो मैं ही हुई। यह मरगयी लहकाती जाये तिरखा-तृष्णा को और मैं तोहमत के लिए !"

"चाची, जो लखमी के भाग। जो हमें करना था, सो किया। अब मरदों तक बात पहुंच गयी, जो ठीक समझेंगे करेंगे।"

मंजी पर लेटे-लेटे चाची ने बोल उठा लिये—

> गये वक़्त ते उमर फिर नही मुडदे
> गये करम ते भाग न आंवदेने
> गयी लहर समुद्रों तीर छुटा
> गये मौज मजे न आवंदेने
> गये गल्ल जबान थी नही मुड़दी
> गये रूह कलबूत न आंवदेने।

"बेड़ा गर्क हांगकांग के जहाजों का, प्लेग के चूहे ले आये हिन्दोस्तान। महामारी फैला दी !"

"हांगकांगियों की क्या लानत-मलामत ! भला चूहे क्यों डरने लगे सरकारी कानून से !"

"दुरुस्त बादशाहो। जनावरों पर अंग्रेजी क़ानून का क्या जोर। चढ़ बैठे गल्लेवाले जहाजों पर।"

"जो, चूहों को कौन-सी राहदारियां चाहिए थी !"

"सुनने मे आया है इस बार पिछली प्लेगवाले हांगकांगी चूहे नहीं, इस बार मंचूरी चूहे हिन्दोस्तान भेजे गये हैं।"

"भोली बातें। मंचूरी चूहों ने कौन-से कोह पहाड़ लांघकर आना था।"

"महामारी तो यह तीन-चार बार पड़ चुकी है। टब्बरों-के-टब्बर पुंछ गये!"

फतेह अलीजी ने मुंह से नड़ी निकाल ली—"शुभ-शुभ बोलो। मुंह से न नाम लो इस खप्पड़-कफनवाली का। रिहायश से गल्ला-दाना दूर रहे, बाक़ी सब खैर मेहरें हैं।"

"अदालतगढ़ से चली हुई है यह खबर कि शहरों-शहरी टीके शुरू हो रहे हैं। पहला हल्ला इसका बम्बई में हुआ है।"

मौलादादजी बोले, "पिछली प्लेग में सरकार ने मलकवालवालों को लगाये टीके और जी, घण्टे दो में सबका कूच हो गया।"

"डाकदर अपने बुला लेती है सरकार विलायत से। इनकी तरफ से कोई मरे, कोई जीये! ये गोरे अपने घोल बताशा पीयें। देसी लोगों को इन्सान नहीं समझते।"

"खालसा गुरुदित्तसिंह, आपकी हमेशा ही बरखिलाफी बातें। पूछो, रब्बी मार पर सरकार का क्या दोष! अकाल-महामारी तो बन्दे के किये नहीं न!

"शाहजहां वक़्त में मुल्क में डाडा अकाल पड़ा था। मनुक्ख ने मनुक्ख को खा डाला!"

गुरुदित्तसिंह अड़े रहे—"सुना है कहीं कि कोई अंग्रेज हाकिम भी मरा हो प्लेग से।"

हास्सा पड़ गया—"क्या पता हाकिमों के मसीहा मौला ने यही हुक्म निकाला हो कि मरे तो बन्दा देसी ही मरे। कुछ-न-कुछ दांव-पेच है जरूर इसमें भी! देखो न जी, अपने इन्कलाबी काके सिरों पर बांध के कफनी उठ खड़े हुए हैं। बादशाहो, अपने मुल्क का चोनमा सिट्टा है। उठती पौद है।"

कृपाराम दिल से अपनी सरकार के खैरख्वाह, बोले, "बादशाहो, कुछ भी कह लो, बग़ावत की मरहम-पट्टी तो कोई हकूमत नहीं करती। जो सिर उठायेगा, कुचला जायेगा।"

गण्डासिंह को जोश आ गया—"अपने नहरियों ने सरकार हिला दी। कुछ सिर फट्टड़ हुए, कुछ खोप्पड़ फूटे, कुछ पर फुंके। टेशनों पर बम-पटाखे भी चल गये, पर मालियेवाली सरकार की तूती तो रुक गयी। वजह यह थी कि खेतोंवाले भी तैयार थे मरने-मारने को। बादशाहो, यह तो नहीं कि सिर भी न फूटे और बन्दा बढ़-चढ़ के फ़तेह-बरकत भी चूम ले।"

शाहजी बोले, "यह तो हुआ न जी खुला-खुलासा खत्त-धर्म पर, थोड़ी-बहुत तिकड़म मुमकिन है तो वकीली जिरह में।

"मेरी बात पल्ले बांध लो। जुल्म, जुल्मी और जुल्मत नेस्तनाबूद करने हों

तो सिर तली पर रखकर ठिल जाओ।

"गुरु साहिब कहते है—

जो तुम्हें प्रेम करन का चाव
सिर धर तली गली मेरी आव।"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"बात यह है कि नहरी इलाके में टब्बर के टब्बर फौजियो के। जंगी लाट ने सलाह दी सरकार को कि नमकहलाल फौजों को बाग़ी और इन्क़लाबियो से न मिलने दो। अच्छा यही है कि इनकी बात मान लो!"

शाहजी ने हामी भरी, "बात एक और भी है कि जगी लाट तो हुआ न असली लाट। सालिम सबूता। पुड़ से पुत्ता। बाकी सिवल लाट तो आधा लाट हुआ। इसीलिए उसे टुण्डा लाट कहते है। हकूमत का एक ही हाथ उसके पास और वह क़ानून का। बाक़ी फ़ौज की ताक़त तो जगी लाट के ही पास हुई।"

"रब्ब आपका भला करे, यह मामला यारोनी पादशाहवाला ही है। यारोनी पादशाह मतलब अद्धा पादशाह।"

मुंशी इलमदीन छिड़ गये—"फ़ौजी बिगड़ैल खुदा-ना-ख्वास्ता मच जाये तो नतीजा अच्छा नही हो सकता।"

मैयासिह ऊँचा-ऊँचा हँसने लगे—"फौजियो, बुरा तो मनाना मत। पहले फ़ौजी और ऊपर से जट्ट। पुट्ठियाँ तो आप हो गयीं! सरकार ने सोचा होगा कि जालिम उठ के खड़े हो गये तो गदर मचा देंगे।"

कर्मइलाहीजी ने हुक्के के साथ-साथ खूब मज़ा खींचा इस बात का—"गण्डासिंह, अंग्रेज की शनाख्त-पहचान बुरी नही। समझ लिया कि कौम खालसा की हुई ही मुण्ड से गदरी। बेइन्साफी देखी और उठगये! इन्हें लड़ना कौन सिखाये!"

गण्डासिह की ढीली पगड़ी को बैठे-बैठे कलफ़ लग गयी—"प्यारेयो, सरकारें अपनी मरजी से नही झुकतीं। लोक हो जायें तैयार तो या पलटे तख्ता हकूमत का या हो इन्कलाब।"

शाहजी ने ऐसी निगाह दी कि सुरंग में सुराग देख लिया हो। खबरदार कर कहा, "अपने पुत्र-पौत्रे तैनात हो लाम-लश्करो मे तो चौकसी ही चगी।"

दीन मुहम्मद ने झट डोर पकड ली—"शाह साहिब, अपने इन्क़लाबियों के क्या हाल-चाल! बड़े धूम-धड़क्के है इनके आजकल।"

छोटे शाह बोले, "जब खुदीराम के साथी को पुलिस ने क़ाबू कर लिया, तो बड़े ज़ोर-जुल्म हुए उस पर, पर उस माई के लाल की एक ही चुप्प। अपने किसी साथी का नाम मुँह पर न लाया। तंग आकर पुलिस ने सिर काटकर बहादुर का कनस्तर में डाल दिया और कलकत्ता भेज दिया शनाख्त के लिए।"

"बल्ले-बल्ले ओ शेरा! वाह, मौत भी क्या सजी! सुच्ची पाक़ शहीदी हो

गयी के।"

कृपाराम को याद आ गया—"आपने इन्क़लाबी ढींगरे की भी खबर सुनायी थी अखबार से।

"पढ़ने गया विलायत और बच्चड़े ने जा मारा तमंचा कर्जन की छाती में और सरे-बाज़ार ऐलान किया कि मादरे वतन के लिए मरने में सवाब ही सवाब! चढ़ गया सूरमा फाँसी हँसते-हँसते।"

मीराँबख़्शजी परेशान—"लाट कर्जन तो माड़ा नहीं था, भला उसकी जान क्यों ली!"

"नाम से गलतफ़हमी होती है, पर मरनेवाला लाट कर्जन नहीं था। शरीके में कोई होगा दूर-पार का भाई-बन्द।"

"चलो जी, लाट बच गया। हिन्दोस्तान में खट्टी कमाई उसकी चंगी ही थी। उससे अदावत करने में क्या रखा था।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "मीराँबख़्श, वैर-अदावतों में शक्कर-शीरनियाँ तो नहीं बाँटी जातीं। किसी को मार छोड़ा या किसी के हाथों मर गये। जो पहल कर ले सो वाह भला!"

शाहजी को कुछ याद आ गया और ज़बान में रंग चढ़ गया—"तवारीख भरी हुई है अदावत और सिखावत से। एक बार बीज फूट आये, फिर नहीं रुकते जंग-लड़ाइयाँ। इसी अदावत के पीछे गक्खड़ों ने शहाबुद्दीन गोरी की जान ले डाली।"

जहाँदादजी गरमा गये—"शाहजी, हो जाये यह क़िस्सा। कहीं थोड़ा-बहुत सुना हुआ ज़रूर है, पर ठीक तरह याद नहीं।"

"गोरी ने बढ़-चढ़कर हमले किये हिन्दोस्तान पर। जब क़दम रखे पंजाब में, पहले टाकरा हो गक्खड़ [illegible] ने [illegible] भी मारे पोठोहार की मालवी! [illegible]
पुञ्ज के बहादुर कौम। [illegible]
जंग गक्खड़ सिफ़रखान [illegible]
फ़िदाईखाँ खोखर को साथ मिला [illegible]
गुर्रार।

"गोरी लौट रहा था लाहौर से ग़ज़नी। धमियाक पर पड़ाव पड़ा। क़नातें लग गयीं। खेमे रोशन हो गये। ग़ोरी चैन से आराम फ़रमाने लगे। उधर दुश्मन चौकस।

"मौका पाकर हल्ला बोल दिया। पहले तो खेमों के बाहर पहरुओं को हलाक किया। फिर बारी आ गयी शहंशाह की। वार किये गोरी के बदन पर पूरे बाईस और पिण्डा शहंशाह का छलनी कर छोड़ा।"

गण्डासिहजी ने सिर हिलाया—"चलो, हो गयी शहंशाही ढेर!"

काशीशाह बोले, "हाँ जी, गक्खड़ बड़ी बहादुर क़ौम! जो हमलावर आये,

उससे भिड़ जायें। कई जंग जीते और कई हारे। कई बार कत्लेआम हुए। आख़ीर इन्हें दीन कबूल करना ही पड़ा!"

मौलादादजी बोले, "गक्खड राजा होडी ने राजा रसालू की बेटी से शादी की थी।"

जहाँदादजी ने मन-ही-मन कुछ याद किया—"अजनालेवाले गक्खड़ चौधरी मरदान अली खाँ और सुल्तान अली खाँ के कबीलों के गिनकर पचास लोग फ़ौज में हैं।"

फ़तेह अलीजी बोले, "हैयीशाबाश, उनके सजने की जगह ही वही हुई! बाक़ी जिवियोंवाले हैं। जेहलम सिकद्रयाल रोहतास में इनके टब्बर की बड़ी इज्जत-आबरू।"

"अपने राजा महमूद खान साहिब के टब्बर की भी चंगी मशहूरी है।"

शाहजी बड़े मिज़ाज से बोले, "बादशाहो, पिण्डीवाले मुकर्रब खान गक्खड़ को तो न भूल जाओ। गुजरात जेहलम की मालकी थी उसके पास। भंगियों की मिस्ल उठ पड़ी तो इसे छोड़कर जाना पड़ा।"

गण्डासिंह ख्यालों-ही-ख्यालों में अपनी पल्टन में पहुँच गये थे। एकाएक याद आ गया—"जेहलम, रख्ख बेल के लाढ़ा साहिब के दो पुत्तर अरज़ खान और ममीरा खान पंजाब घुड़चढ़ी में वरदी मेजर थे। इनके टब्बर में एक लड़के का नाम था रैंजीमेन्ट बहादुर।"

कर्मइलाहीजी बड़े रौब में आये—"भला यह क्या नाम हुआ! झूठ क्यों कहें, सुनने में तो चंगा रौब-दाबवाला नाम जापता है।"

"रैंजीमेन्ट बहादुर का मतलब पल्टन बहादुर। काशीराम, नाम कुछ सुना हुआ-सा लगता है ममीरा खान। वही तो नहीं जिन्हें अदालत आला की कुर्सी दी गयी थी!"

फकीरे ने अपनी हाँक दी—"अपनी सम्बड़यालवाली खाला का पुत्तर काले-पानियों से आया है। माँ गयी थी मिलने! बताता है कि इन्क़लाबियों को वहाँ कोल्हू में जोत छोड़ते हैं।"

"यह डाडा ज़ुल्म है। बहादुरी की हत्तक करनेवाली बात है न! ढग्गों की जगह बन्दे जोत दिये!"

"सरकार करती रहे बेरहमियाँ, सरगरमियाँ इन्क़लाबियों की भी ज़ारी हैं। दाव लग गया तो बन्दरों को छोड़ेंगे नहीं। पलट देंगे तख्ता सरकार का।"

"हाँ जी, सिर पर कफ़नी बाँध ली काकों ने तो खौफ क्या और भय क्या!"

"बड़े जिगरे और गुरदों के मालिक। ओ जी, दिल्ली के चाँदनी चौंक में दिन-दहाड़े लाट साहिब के हौदे पर बम फेंक दिया। इरादा यही न कि या मर जायेंगे या मार डालेंगे।"

गुरदित्तसिंह ने बड़े नखरों से अपना दहला निकाल बाहर किया—"तो,
सुनो ! हुआ यह कि कलकत्तिये हाकम का तबादला हो गया लाहौर। इन्क़ल
लाहौरियों को भिनक पड़ गयी। बस जी, साहब उधर लाहौर पहुंचा,
आनन-फानन गोरे की गुद्दी गुड्डुच्च !"

गण्डासिंह ने नासें फुला लीं—"यह तो हकूमत और इन्क़लाबियों की
वर्तन हुई न ! एक ने सगुण किया, फांसी चढ़ा दी। दूजे ने तम्बोल डाला,
दाग दी।"

मुंशी इल्मदीन बोले, "खबर बड़ी पक्की है कि जर्मन हमारे इन्क़लाबियों
काबुल की राह पिस्तौलें भेज रहा है।"

चौधरी फतेह अलीजी बोले, "जर्मन शाह का सलूक अपने मुल्क के
चंगी दोस्तदारी का रहा है। चाचा बताया करते थे जर्मनशाह ने पाई
अकाल में या मरकानवाले में अपने लोगों की पुज्ज के मदद की थी। एक
एक लाख सिक्का भेजा था हिन्दोस्तान को।"

"वाह, बात हुई न !"

मैयासिंह ठोंका लगाके उठ बैठे—"मेरे जाने लन्दनशाही के साथ इनकी
रिश्तेदारी भी है। शरीक़ ही हुए न उनके ! कोई धी-बहन ब्याही होगी। लेन-
तो बनता है न !"

जहाँदाद खाँ और गण्डासिंह दोनों मिलकर दबा के हँसे—"जो जर्मन हा
बात यह है कि क़ा
, पर सरकार न मानं
। नहीं मानता था,
ला था कि हिन्दोस्ता
[र]गिज़-हरगिज़ अफ़
नियों के हाथ में न देंगे।"

लाट की सराहना शुरू हो गयी—"बाल लाट की बड़ी सयानफवाली थी
बन्दूकें जाती अफ़गानियों को और कबाइलियों की गोलियां चलतीं अपने गा
और छावनियों पर ! बलोच पठान के भाने तो मरना-मारना राह-रस्म हुई न !

शाहजी बोले, "उस इलाक़े में क़ानून अँग्रेज़ी चलना ज़रा मुश्किल है। हु
यह कि एक बलोच ने किसी बन्दे के साथ बीवी जा पकड़ी अपनी। बस, आन
फानन दो क़त्ल हो गये। जिरगे की मौजूदगी में मामला पेश हुआ। अँग्रेज़ हाक
ने अपनी जानकारी और कानून मुताबिक तीन साल ठोक दिये। इधर हाक
ने फ़ैसला दिया, उधर हास्सा पड़ गया। अँग्रेज़ डिप्टी ने सोचा कोई होगी मस
की बात। चिट्टे-दाढ़ियों को बुलाकर पूछा—'माजरा क्या है ?'

"उन्होंने समझाया—'साहिब, इस जुर्म पर तो दो या तीन दिन या जुरमा

रुपये पचास का। जनाब को यहाँ के क़ायदे-कानून धीरे-धीरे सब पता लग जायेंगे।' "

फ़कीरे ने पूछा, "शाह साहिब, ऐसी हालत में हाकिम की क्या रह आयी होगी ! कच्चा तो पड़ गया होगा।"

काशीशाह ने बात साफ़ कर दी—"उसने अपने से बड़े हाकम को मुरासला लिख भेजा होगा।"

कर्मइलाहीजी ने ठण्डी होती चिलम फरोली—"यह ठीक है। अपनी लिखत में तो बड़ी माहिर हुई न यह कौम ! छोटा अहल्कार बड़े को लिखे, बड़ा उससे बड़े को, अगला उससे भी बड़े को। शाह साहिब, एक बात बता छोडो। जंगी लाट तो हुआ ही न बड्डा लाट। पर लाट साहिब किसके आगे जवाबदेह है !"

"बात यूं है चौधरीजी, कि लाट साहिब विलायत में बैठे सबकत्र हिन्दोस्तान के आगे पेश हो जाता है। वह हाँ कर दे तो हाँ। वह न कर दे तो न !"

"और जी, अपना जंगी लाट ?"

"बादशाहो, जंगी लाट मुल्क की फ़ौजों का मालिक। मूंछों को माड़ा-सा ताव देने का इशारा भी कर डाले तो दुनिया खुड्डे जा लगे।"

जहाँदादजी ने बड़ी सवाई तुरप ऐसे फेंकी ज्यों जंगी लाट उनके कबीले का वड्डेरा हो—"सिवल लाट और जंगी लाट के दरमियान कुछ खड़बा-खड़बो हो गयी। जंगी लाट ने ऐसा पैंतरा डाला कि कर्ज़न लाट कखों से हौला होकर इस्तीफा दे गया। और लाट जंगी अभी भी सजा हुआ है अपनी फ़ौजों पर। बात हुई न !"

डाडी हुम्मस, पत्ता एक न हिले।

दारे के पुराने बोढ़ की छाँह में सारी मंजियाँ भर गयी।

एक जुम्मे का दिन, उस पर हुस्सड़। जो उठे, कम्म छोड़कर दारे जा बैठे।

मसीतवाली कुंई पर रौनक़ें लग गयी।

कोई लज्ज नीचे डाल डोल भरे और पिण्डा गीला कर ले। कोई तम्वा-कुरता उतार पानी सिर पर उंडेले और अपने को ठण्डक दे परत आये। गर्म हुक्कों की हकूमत आप ही ठण्डी हो गयी।

कोड़ेखाँ ने मेहदी-लगे बालों पर हाथ फेरा और जातक को आवाज दी—"मिट्ठी कुंई से पानी की झझरी भर ला। माँ से गुड़ की डली ले, ज़रा शर्बत

घोल ला शताबी।"

"अभी लाया अब्बूजी।"

कौड़ेशा फ़तेह अलीजी की ओर मुड़े—"प्यास की हुड़क ही नहीं जाती। इस हड़ महीने तो अन्दर-बाहर भट्ठ तपते हैं भट्ठ। इतनी गरम, कांव की आंख निकलती है आंख।"

"हां जी, हड़ ताय और सावन लाय। खुदावन्दा मीह बरसाय तो जरा चैन पड़े।"

अल्लाहरखा पांव के भार बैठ बदन पर निकली मरोड़ियों को खुजा रहे थे। फ़िक्र से कहा, "बादशाहो, पानी इतना ही बरसे कि ज्वार अपनी ठीक-ठाक रहे। पार के साल इतना पड़ा कि खेत की भाक्खी लग गयी थी।"

वज़ीरे को अपना फ़िक्र पड़ा—"चौधरीजी, अपनी फ़सल को भी सुण्डी चढ़ गयी थी।"

"अल्लाह बेली की नज़र रहे सीधी, अपनी फरियाद तो उसी के आगे!"

कुंई से शेरा और बरखुरदार दोनों नहा के उतरे।

बरखुरदार के कानों में दुर और गले में कण्ठा।

शेरे का जिस्म कमाया हुआ और गले में काले डोरे से लटकता नामा। शेरे ने तम्बा दोहराकर कसा तो गब्बरोटे की जवानी खिल-खिल उठी।

चौधरी फतेह अलीजी की नज़र कई देर शेरे पर रुकी रही। कुछ भी कहो, इस घाड़ीवालियों के ने हमारे पिण्ड की हंसली उतार ली। अलिये की धी फ़तेह किसी शाहज़ादी से कम तो नहीं। और छोटी धी राबयां तो लालामूसा है।

शेरे ने गीले पटे छितराये-बिखराये और छांह में पड़े पत्थर पर जा बैठा और बुल्लेशाह छू लिया—

न मैं अरबी
न मैं लाहोरी
न मैं हिन्दी
शहर नगोरी
न मै हिन्दू
तुर्क पिशोरी
न मैं रहन्दा
विच्च नदौन
बुल्ला की जाने
मैं कौन!

कर्मइलाहीजी झूम उठे, "वाह ओ वाह बाबा बुल्लेशाह, तेरी वाह ही वाह! मोती पिरो डाले माला में। वह भी सुच्चे। पुत्तर शेरेया, बड़ा सोहल गला

पाया है। एक बार और उठा ले सुर। कान में अच्छी भिनक पड़े।"

फतेह अलीजी बाँह पर सिर टिकाये मंजी पर लेटे थे, उठ बैठे—"पुत्तरजी, गला-कण्ठ तो ऐसा कि ज्यों किसी ने चनाब पर सुर फैला दिये हों कि जाओ, लहरों पर तिरो-बहो। वाह ओ मौला, बरकतें पंजाब को दरियाये-चनाब की और दूजे बाबा बुल्लेशाह की। बाबा वारिसशाह भी भला कहाँ कम! प्राण निकाल अपने रला-मिला दिये काफियों में कि जाओ लोको, गाओ और अपनी रूहों को गुंजान रखो।"

सुनकर शेरा रौ में आ गया—

हिन्दु न नाही मुसलमान
बैठिये त्रिजन तज अभिमान
सुन्नी न नाही हम शिया
सुलह कुल का मार्ग लिया
भुक्खे न नाही हम कज्जे
रोन्दे न नाही हम हँसदे
उजड़े न नाही हम वस्सदे
पापी न नाही सुधर्मी
पाप पुण्य की राह न पकड़ी
बुल्ले शाह शाह हर चित्त लागे
हिन्दु तुर्क दोनों जन त्यागे।

"वाह···वाह···वाह···पुत्तरजी, जैसे बोल वैसा गला!" बड़े सयानों ने खूब दाद दी पर आँखें चुराये रहे।

मौला तेरे रंग। गुल्ली-डण्डा खेलनेवाले बच्चड़े जवान हो दारे आन चढ़े। खैर सदके चढ़ता पूर तैयार हो गया। वक़्त की दौड़ें।

मौलादादजी उठ खड़े हुए मंजी से। मुसल्ला बिछाया। वजू कर सजदा किया। नमाज़ पढ़ी और इत्मीनान से रकू किया।

दिवार से लगी खुरलियों से हटकर छोटे-बड़े बच्चे सौंची खेलने के अन्दाज़ में एक-दूसरे को ललकारने लगे—

कत्तक पाला जम्मया
मंगर हुआ जवान
पोह फ़ौजें चढ गयी
मारेया हिन्दुस्तान।

किसी वड्डे ने आवाज़ दी—"ओ अहमको, पोह माह छोड के सावन बुलाओ।"

बच्चे शुरू हो गये—

ओलिया मौलिया मेंह बरसा
अपनी कोठी दाने पा
चिड़ियों के मुंह पानी पा
. ओलिया मौलिया मेंह बरसा ।

कहीं से सांवल खोजा का पुत्तर टोटो दौड़ा-दौड़ा आया । मैला-कुचैला झग्गा और नीचे नंगा ।

शौके ने छेड़ा—"ओए टोटेया, तम्बी किधर है ! बेबे से कह कुछ डाला करे, नहीं तो चुहिया कुतर जायेगी तेरी मुसलमानी ।"

टोटे ने हाथ रख छिपा ली और मौलादादजी से कहा, "चाचा साहिब, कस्से पार कीकर के हेठ एक बन्दा सोया पड़ा है । गले में उसके गठरियां-पोटलियां । सिर तले सन्दूकड़ा और मुंह साफ़े से ढका है । उसके कपड़ों मे से हट्टियोंवाले ताया तुफैलसिंह की गन्ध आती है ।"

मुहम्मद अली और चौधरी फ़तेह अली बड़े खुश हुए—"गजेंदी गोले, तेरी ऐसी बारीक़ समझें । लगता है सांवल खोजी के घर उसका बाबा कमेठा जन्म पड़ा है । उम्र खैरों से जातक की सिर्फ़ पांच बरस और आंख की तक्क देखो और मार देखो । पुत्तर टोटेया, आ इधर ।"

मौलादादजी ने सिर पर प्यार का थापड़ा दिया—"अपना टोटा पुत्तर चिराग़ है चिराग़ । चल पुत्तर, देखें तुम्हारी खोज । शौकिया, जा हट्टियों पर चाचा नसीबसिंह को कहना झटापट गड़वे में लस्सी-शरबत ले के पहुंचे । ताया तुफ़ैलसिंह न भी हुए तो कोई और पानी से निहाया होगा ।"

नसीबसिंह को सन्देसा मिला तो लस्सी की मटकी-कटोरा ले उठ धाया । संग-संग पिण्ड के बच्चड़े तपती धरती पर ऐसे दौड़े कि पलक झपकते बाबे को जा घेरा ।

शोर सुन ताया तुफ़ैलसिंह ने आंखों पर से साफा उठाया । आंखें खोली तो बलूंगड़ों की भीड़ देखकर लाड़ से चुमकारा-धमकाया—"ओए खरदियो, टैनेो, मैनेयो, इस शिखर दुपहरी तुम्हें कैसे हवा पहुंच गयी कि ताया सांस लेने को खड़ा पड़ा है !"

शौके ने आगे बढ़ सलाम किया—"तायाजी, खोजियों के टोटे ने आकर दारे में धुमा दी कि कीकर तले कोई बन्दा लेटा है । कपड़े-लत्ते से चाचा नसीबसिंह का भाइया लगता है ।"

"बल्ले ओ बल्ले, वड्डे खोजिया ! क्यों न हो, सांवल खोजी का पुत्तर है । आंख खानदानी ।"

चोपरछट्टा आया जान ताया तुफ़ैलसिंह उठ खड़े हुए तो गले में पड़ी गठरी-पोटलियां भी साथ ही उठके खड़ी हो गयीं ।

कोई साहब-सलामत बुलाये, कोई पैरीपौना। कोई हाथ मिलाये।

मौलादादजी ने देर तक हाथ न छोड़ा—"बादशाहो, आपकी मशा तो जग जाहिर हो गयी। अगवानी को आये तो पूरा पिण्ड ही आये। नहीं तो ताया साहिब त्रिकालों तक यहीं लेटे रहते।"

फतेह अलीजी आगे बढ़े—"क्यों खालसाजी, बंगाले का हाट-व्यापार सारा क्या आपके हाथों-ही-हाथो मे था कि पिण्ड पहुँचना ही मुश्किल था!"

"तायाजी, माल-असबाब तो बड़ा इकट्ठा कर लाये हो। खट्टी कमाई चंगी हो गयी लगती है।"

"शुक्र मना मुहम्मदीन, सबूता-सालम निकल आया हूँ इस हल्ले से!"

"क्यों जी, क्या बंगाले हिन्दोस्तान मे सचमुच गदर मचा हुआ है?"

"बादशाहो, क्या बताऊँ! जितनी खलकतें राह मे, उतना ही शोर-शराबा। हर टेशन पर गारद। सरकार बढ़-बढकर रियाया को अपनी फौज-पुलिस की वरदियाँ दिखाये तो बन्दा आप ही समझ लेगा कि कोई ऊँच-नीच होनेवाली है।"

अगले दो दिन ताया तुफ़ैलसिंह कस्स बुखार में पड़े रहे। पिण्डा तपे। बेबे देस्सन ने एतबारसिंह का नाम लिया तो तुफ़ैलसिंह ने हाथ से वर्ज दिया—"मैंने कहा अगली दरगाहे जाना होगा तो बन्दा गोली खाय या एतबारसिंह की या फ़ज़ल अहमद की। है न फ़ज़ल इन दिनों पिण्ड में।"

"न, धी-जवाँई के पास नहरों पर गया हुआ है!"

तुफ़ैलसिंह को कुछ याद आ गया कि हँसने लगे। हास्सा ही न रुके।

देस्सन ने त्योरियाँ चढा ली—"कुछ बताओगे भी कि हँसते ही जाओगे!"

"ले सुन—

फ़ज़ल अहमद की गोलियाँ
ज्यों लच्छमन के बाण
पहली गोली खाय के
निकल जायँगे प्राण।"

"सुखी सान्दी नसीब के भाइया, यह क्या याद किया! ताप चढ़ा है तो उतर जायेगा। मरजानो फज़ल अहमद की गोली पर ध्यान लगा लिया।"

"भोलिये, फ़ज़ल अहमद कौडी का हकीम न हो, पर मेरा वह लँगोटिया यार है। क्यों न याद करूँ उसे! तेरी सौह, याद कर पुरानी यारियाँ रूह निथर जाती है!"

कलकत्ते की खबरें सुनने को लोगों की भूखें सूख गयी। रोज मजलिस लगे और रोज खालसा गायब।

आखीर हवेली से बुलावा आया—"खालसाजी, अपने भाव न बढ़ाओ। दरस दे जाओ। दवा की पुड़िया काशीशाह तैयार रखेंगे।"

ताये ने दूध का कटोरा गटका और हवेली आ पहुंचे!

"शुक्र है, शुक्र है। लो जी, आन पहुंचे हैं सरदार कलकत्तासिंह। चंगे नखरे सीख के आये हो शहरियों से!"

मौलादादजी को जवानी की पिछली ड्योढ़ी में से कोई भूला-बिसरा बन्द याद हो आया—

एक यह दिल है सो जान से शौदाई है
एक तुम हो कि मिलने की कसम खाई है।

तुफ़ैलसिंह ने मौलादादजी के घुटने पकड़ लिये—"बस कर, बस कर मेरे मुरीदा! मेरी बात का यक़ीन कर, बच के निकल आया अपने यारों-प्यारों की खातिर, नहीं तो सौंह गुरुओं की बंगाले मे बुरा हाल था।"

"बैठो। सजो। क्या खबरें लाये हो हिन्दोस्तान से!"

चौकड़ी मारते ही मंजी पर, तुफ़ैलसिंह का मुहान्दरा कलकत्ते के बड़े हाकिम-वाला हो गया।

"लो सुनो बादशाहो, लाट नये ने नयी साहा-चिट्ठी निकाल मारी है।"

उम्र के लिहाज़ से सिर्फ़ कर्मइलाहीजी तायाजी को डाँट-झिड़क सकते थे।

"तुफ़ैलसिंहा, अब छोड़ दे सिक्खोंवाली बातें। मैंने कहा लाट की धी-बहन ब्याहने जोग हो गयी कि मुल्क का काम-काज छोड़ के पण्डित-पान्दों से लग्न निकलवाने को उठ दौड़ा है!"

ताया तुफ़ैलसिंह को बचपन मे खेला गुल्ली-डण्डा याद आ गया। जवाब में टुल्ला मार दिया—"फ़रमान बंगाले के बारे में ऐसा निकल चुका है ज्यों को महबूब से कहे कि दे बोसा और ले ठोसा।"

बैठक हस्स-हस्स दोहरी हुई।

गुरुदित्तसिंह झुंझलाकर बोले, "तायाजी, बताओ तो सही, लिया तो बो किसने लिया और दिया तो ठोसा किसने दिया!"

तुफ़ैलसिंह अपनी देसावरी अदा मे आ गये। साफ़े को बड़े लाड़ से छू कहा, "बादशाहो, मैं तो बताऊँगा ही! आखिर आँख से देखके आया हूँ, पर आ भी तो अपनी अक़्ल लड़ाओ।"

मुहम्मदीनजी ने नड़ी मुंह से निकाल ली—"चलो, लग गयी पीठ हमारी। अब मतलब पर आने की करो।"

तुफ़ैलसिंह ने शाहजी की ओर देखा और बड़ी खुफ़िया आवाज़ में कहा, "लाट नये ने बंगाले के मुसलमीनों को तुफक दिखा दी।"

मुंशी इल्मदीनजी मंजी पर ही उचक गये—"बुझारतें न बुझवाओ, खोलकर

बात करो।"

"बात ऐसी है कि बंगाले की फटी धोती का दुबारा बखिया मारने का हुक्म हो चुका या हत्तलवस्सा होनेवाला होगा।"

"लाहौलविल्ला, यह क्या सूझी सरकार को! वहाँ के मुसलमीनों की रोटी-रोज़ी न हिन्दुओं को पची, न हकूमत को।"

तायाजी बडे ठस्से से बोले, "सयापा तो, बादशाहो, यही पडा न! बंगाले में तम्बेवाले गरीब और लागड़वाले अमीर। छिड़ गयी। एक बात मेरी याद रख लो, लड़ाई में जीतेगा तो धनाढ अमीर ही।"

कृपाराम ने कोसाकासी की—"नाइन्साफ़ी और नाइत्तफाकी दोनों तरफ। सरकार भी करे तो क्या करे!"

तुफैलसिह शाहजी की ओर देखने लगे—"वैसे देखो तो दिमाग बंगाली का बड़ा उत्तम। चौकस। दिमाग खोपड़ इतने तेज़ कि गोशों मे ही सरकार हिला दें। इन्कलाबी मिजाज। बस, कसरबन्दी बात एक ही कि भद्रलोक वहाँ का मेहनती नही।

"भद्रलोक क्या हुए?"

"वहाँ के माहत्तड-साथी अपने को भद्रलोक कहते है। भद्रलोक मास-मच्छी और गाने-बजाने मे लगा रहता है। कम्मचोर। बाकी नसवार की चुटकी और साथ लगी हुई है लोगो को।"

"बादशाहो, यह कोई नयी बात नही। मास-मच्छी या गाना-बजाना क्या अपने लोगों में नहीं! असल बात तो हड्डों से डट्ट के मेहनत लेने की है।"

"बराबर बादशाहो, मनुक्ख डट्ट के दिन दिहाड़ी कम्म न करे, मचल मार छोड़े तो शाह साहिब यह मजलिस क्या ऐसी बेफिक्री से सज सकती है! मान लो बद्दी-बद्दी एक बार सज भी जाये, हुक्के गर्म हों, तम्बाकू की मुश्कें-लपटें उठती रहे, पर जेकर खेत-जिवियों की गाही-वाही न की हुई हो बन्दे ने तो यहाँ आकर कौन विराजमान होगा!"

शाहजी बड़े खुश हुए—"वाह-वाह मुहम्मदीनजी, बड़ी दानां बात की है आपने।"

मैंयासिह छिड गये—"मैंने कहा मुलतान के पटोली पटफेरो की सुनो! सारा दिन आँख की सीध पट्ट के धागे जोड़े-बुनें, खड्डियाँ चलायें, मार गुलबदन दरियाई धूपछाँव बुन-बुन निकालते जाये। मज़ाल है काम छोड़कर मक्खी भी उड़ा ले। डट्ट के चगा काम करना और कम-से-कम एक दफा हफ़्ते मे मुजरा ज़रूर देखना!"

फतेह अलीजी जोश मे आ गये—"हैयो शाबाश ए। यह तो पीर मर्दों वाला काम हुआ न! अंग्रेज साहबो की तरह हफ़्तावारी मौज-मज़े लगे हुए हों बन्दे

को।"

हाजीजी का ध्यान बंगाले पर ही टिका था—"आख़िर बना तो क्या बना बंगाले का! कोई नया हुक्म निकाला है क्या सरकार ने!"

तुर्फैलसिंह फुल्ल गये—"बादशाहो, कोई भरम-भुलावे की बात नहीं। परचों मे आया था कि ढाके वाले नवाब के ख़ज़ाने पर जो करज़न लाट ने रातों-रात भरवा दिये थे—हकूमत मय सूद-ब्याज के वापस लेगी।"

फ़क़ीरे और नजीबे दोनों के दिल बड़े ठण्डे हुए। नजीबे से न रहा गया—"हो वही जो अल्लाह भावे! नवाबों का भी हाल हम माहतड़-साथों जैसा ही हुआ न! रुपया ले कर्ज तो सूद समेती गिनकर देना पड़े। अलबत्ता पैग़म्बर साहिब ने सूद न लेने की क़सम मुसलमानों को तो खिला ही रखी है। जो भी कहो बादशाहो, यह लूलियाँ-बखेड़े करज़न लाट के ही लगाये हुए हैं। चंगी भली हकूमत चल रही थी। कभी यहाँ हुलथल, कभी वहाँ। बीच में से निकला क्या!"

नजीबे ने बूथी उठायी ज्यों बड़ी अक्ल की बात करने लगा हो—"यह तो जी अपने ढग्गों को हांकनेवाली बात हुई न! हत्थ में डण्डा लेकर कभी इस वल्द की ढुई में घुसेड़ा, कभी उसकी।"

मुंशी इल्मदीन ने घुड़क दिया—"नजीबे, यमलियाँ छोड़। शाहजी, वैसे सोचो तो लाट करज़न बड़ा सजीदा आदमी था।"

जहाँदादजी बोले, "मुंशीजी, यह तो ग़लत नहीं कहते आप। लाट ने अफ़रीदियों के लिए सड़कें बना दीं। सुनने में आता था कि लाट का इरादा चीन-रूस तक की सड़क बनवाने का था।"

छोटे शाह बोले, "लाट पुलसियों की तनख़्वाहें तो बढ़ा ही गया।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "लाले वड्डे के पुत्र के मुण्डनों में लाले का जवाई आया हुआ था। बताता था कि लाट करज़न बड़ा ऐयाश था।"

"बादशाहो,

कर्म इलाहीजं

थी। लारेन्स साहि

जाये, पर बात न [illegible]

फ़ारस का हिकायत-ग्रो हो।"

वजीरे का ध्यान लाट पर ही टिका था—"शाहजी, रमज़ान कहता था लाहौरियों में मशहूर है लाट पचीसी खेल बड़ा पसन्द करता था। ऐयाश भी हुज्ज के! दिल्ली दरबार के वक़्त उसने लालकिले में नंगे नाच नचवा दिये। यह भी कि लाट की मेम हर रोज़ सरोड़ों की यख़नी पीती थी।"

मैयासिंह बोले, "यह कहना वाजिब नहीं। इतने बड़े मुल्क की बजाज जिसके हाथ में और बन्दा थोड़ा-बहुत रंग-रस भी न करे। ऐसा बन्दा बहुत ही

सूफ़ी हो तो रियाया मुल्क के सरताज को खस्सी समझने लगती है।"

गुरुदित्तसिंह ने टीडा दिया—"फिर वैद्य-हकीम ढुकने लगते हैं ड्योढ़ियों [illegible]!"

बैठक हास्सों से गूंजने लगी।

मुहम्मदीन ने छेड़छाड़ की—"शाहजी, ज़रा खरोड़ोंवाली बात भी साफ़ हो [illegible] दे।"

"मुझसे पू[illegible] [illegible] खरोड़ों की यखनी पीती थी तो चंगा [illegible]" [illegible] करती थी। [illegible] से [illegible] दर सहारना [illegible]

"ताया मैयासिंह, यह बता छोड़ो कि खरोड़ोंवाली [illegible] [illegible]लो!"

"सहजे से, बताता हूं। वह है न मेरे सांढू का भतीजा, पल्टन में ग्रन्थी लगा हुआ है। उसी ने बताया था।"

शाहजी मुस्कराये—"बादशाहो, इस वक़्त तो तायाजी की ही मान लें। जेह-लम जाना हुआ तो फौज के ठेकेदार आदमजी पीर भाई बोहरे से पूछ लेंगे कि वह लाट-लाटनी के लिए कुक्कड़ भेजता था कि खरोड़।"

मुंशी इल्मदीन खीझ गये—"छोड़ो जी, लाट करज़न कब का इस्तीफ़ा दे गया। अब नये लाट की बात करो।"

नजीबा बोला, "मुंशीजी, यह तो क़ायदा हुआ दुनिया का—नये की वाहवाही और पुराने की बदखोई।"

मौलादाद जहांदादजी से मज़बून पर बहुत-कुछ सुन चुके थे, सो कहा, "लाट बहादुर और जंगी लाट में ठन गयी। जंगी लाट अपने देसी लोगों के हक़ में है। बेदरेगी नहीं करता। देसी कन्धों को कमाण्डरी दे दी है।"

शाहजी ने हुंकारा भरा—"सरकार ने अपनी पलटनों को चंगी मान-इज़्ज़त बख़्शी है!"

गुरुदित्तसिंह ने नया ही पूर्णा डाल दिया—"लाट करज़न ने पंजाब में पैर पीछे डाला और मत्था टेकने दरबार साहिब पहले पहुंच गया!"

मुंशी इल्मदीन झट कूद पड़े—"भोली बातें! अमृतसर जाने में लाट का मक़-सद कुछ और रहा होगा। जाकर देखना होगा कि हरमन्दिर साहिब में खालसों ने कहीं असला तो नहीं छिपा रखा।"

शाहजी हंसने लगे—"मुंशीजी, बात तो आपकी खरी है पर अब तोपों-तल-वारों का समय कहां!"

छोटे शाह बोले, "भाजी, यह तो ठीक है पर मुल्क-भर में इन्क़लाबी मौसम तो छाया ही हुआ है। कहीं हत्थगोले बम, कहीं फांसी, कहीं उमर क़ैद। वतन के

लिए जान की बाज़ियाँ लगायी जा रही है। देखें क्या हश्र होता है!"

गण्डासिंह बोले, "तख़्ता पलटने की तैयारियाँ हैं। सरकार दबाने पर और लोक उठने पर। क्यों तायाजी, आप तो बंगाले के हाल देख ही आये हो।"

"बराबर। अब होनेवाला है और भी बड़ा भगड़ा-फ़िसाद। पूछो कैसे। बंगाले मे बैठा-बैठी हुई हकूमत को, इन्कलाबी और लशेंगे। एक दफ़ा जो जलूसियों-इन्कलाबियों ने सरकार मना ली तो आगे के लिए रब्बत पक्की। अब आओ दूसरी ओर। मुसलमान भी क्यों न मचेंगे! आख़ीर को सूबा दे के वापस ले लेना कोई छोटी-सी चोट तो नही!"

ख़ूनी आंधी के गुबार ऐसे जबर चढ़े कि देखते-देखते गांव में तरथल्ली मच गयी।

ऊँची लम्बी टालियाँ, बोढ, तूत, पीपल, लसूढे ऐसे कड़-कड़ झूलने लगे ज्यों वृख आसमानी झूले पर चढ़ बैठे हों।

माँओ बहनों की हांकें रह-रह कोठों-बनेरों से उठने लगी—"अरे कख न जाय तुम्हारा टाब्बरो। परत आओ घरों को। सूखे भँवरों मे फँस गये तो अन्धड़ दस कोह दूर जा फेंकेगा।"

"हाय-हाय रे, ख़ूनी आंधी चढ़ी दिखती है।"

कुड़ियों को गालियाँ पड़ने लगी—"अरी खसमाखानियो, घरों को लौटो। जल्दी दौड़ आओ नही तो खेतों में पड़ी मिलोगी।"

नाइयो के यहाँ से आवाज पडी—"पुत्तर वज़ीरेया-नज़ीरेया, घरो को आओ। हैं रे, न अन्दराला दिखे, न बहराला। लो नाम हज़रत सुलेमान का। वही इन आंधी-अन्धड़ों का राखा।"

"सुलेमान पादशाह, इस बलो को सँभाल।"

कच्चे-पक्के कोठों के भित्ति-पट बजने-खड़कने लगे। बिन्द्रादयी और शाहनी मुंह-सिर लपेट नीचे ड्योढ़ी पहुँचीं और हवेली की सांकल बजा-बजा नवाब से पूछा, "नवाब चन्ना, ढोर-डंगर अपने-अपने खूँटों पर हैं न!"

"ख़ैरों से सब अपने ठौर-ठिकाने। कुण्डी चढा ऊपर चढ़ जाओ। माउन्टी का पट्ट भिड़ाना न भूलना।"

शाहनी के पसार तक पहुँचते-न-पहुंचते वा-वरोले के घू-घुम्मर बजने-गज्जने

लगे।

चाची ने पानी के छींटे मार चूल्हे की आग बढ़ा दी। छोटी शाहनी से कहा, "विन्द्रादइये, जा बच्चों के पास। कुण्डी चढ़ा माफ़रा दे लेना। हाँ माँबीबो, राबयाँ को साथ ले कुँईवाले पसार में जा बैठ। देखना कोई ताकी न खुली हो। ऐसे दिहाड़े घर में मर्द नहीं।"

शाहनी लाड़ले को झोली में डाले सिर पर हाथ फेरती और पले-पले दोह-राती—"शाह सुलेमान, रखवया करना। बच्ची, कहीं दोनों भाई राह में न फँसे हों।"

कुण्डी चढ़ा दोनों मंजी पर आ बैठीं। दिया उठा आले से नीचे रख लिया।

"चाची, काशीराम साथ हों तो दुविधा-चिन्ता नहीं।"

"बच्ची, देवर तुम्हारा तो स्यालकोटिये जोगी रम्माल की सगत में रह आया है। आँख से पहचान लेता है कि बरखा आयेगी—आँधी-अन्धड़ या घनघोर घटा।"

"चाची, सुनने में आता है कि रथवाने जोगी पकी फ़सलों में तलवार टिका तूफ़ानों पर क़ाबू पा लेते हैं।"

आँधी के ज़ोर पसार की छोटी ताकी खुल गयी तो लपक चाची ने भित्तों को हाथ से रोक लिया। बाहर गूढ़ी लाल आँधी और सगो-सग क़हर और बिजली।

"चाची, पार के साल भी ऐसी खूनी आँधी आयी थी। सम्बडयालवाले सैयदों की झोटी उड़ गयी थी।"

"सुनने में ज़रूर आता है बच्ची, पर कभी देखा नहीं कि भैंस-भैसड़िया उड़ जायें!"

सायँ···सायँ···आँधी का जोर, अन्धेर घुप्प घेर!

शाहनी रहरास का पाठ करने लगी। सुरों के मणके हिलते-डुलते पा लाड़ले ने नन्हीयारी अँखियाँ एकटक माँ के मुखड़े पर गड़ा दीं।

"बारी जाऊँ मैं, सदके जाऊँ। देख री बच्ची, वजूद तेरे पुत्र का इतना छोटा और आँखों में ऐसी लग्न।"

चाची ने लाली के सिर पर हाथ फेरा तो बच्चा हँस-हँस आँचल खींचने लगा।

"पिछले जुगों का कोई सन्त-महात्मा लगता है। तेरे कर्मों के पुण्य-प्रताप से तेरी कोख आ पड़ा।"

शाहनी ने सच्चे पातशाह के आगे सिर झुकाया और मीठे सुरों में बोल उठा लिये—

चाँदना चाँदन आँगनि प्रभु जीऊ
अन्तर चाँदना
आराधना आराधनु नीका हरिहरि

नाम आराधना
तियागना तियागना नीका काम
क्रोध लोभ तियागना
मांगना-मांगना नीका हरि जस
गुरु ते मांगना।
जागना जागनु नीका हरि
कीरतन महि जागना।

सतनाम सतनाम। चाची महरी ने हाथ जोड़ दिये।

कपाट की विरल से झांका—गर्द-गुबार दक्खनादी दिशा को मुड़ गये थे। किवाड़ खोलते ही ऊँची-ऊँची आवाजें कानों से आन टकरायीं—"अन्धेर साईं का लोको, माई किच्छी गुम हो गयी। घर से कुटिया के लिए निकली थी।"

बेबे किच्छी के पुत्र-पोत्रे ढूंढने उठ धाये।

गुरुदित्तसिंह के शरीक महासिंह ने ऊँचे गले से कहा, "टब्बरो, बेबे को ढूंढ के लाओ। नहीं तो सारे कबीले का मरण है मरण!"

"हाय हाय रे, अरोड़ों की बेबे किच्छी अन्धड़ में गुम हो गयी।"

"सूखे भंवरों में तो सौ हाथियों की ताक़त।"

"सुनते हैं पूर्णसिंह की वधूटी सास के आगे बोली थी। बेबे उठकर कुटिया चल दी। अरी, पुत्रों के राज और माँ मोहताज!"

"न सहन हुआ। गम खा गयी।"

लोग पहले पहर कच्ची-पक्की नींद से उठ बैठे।

"बेबे आ गयी, बेबे आ गयी..."

चारपाई पर डाले लड़के बेबे किच्छी को घर ले आये।

कोठे पर चढ़ महासिंह ने हुंकारा दिया—"मेहरें सच्चे पातशाह की—बे तीन कोस चरायों के कोठे जा गिरी थी। उसे लेकर आये हैं।"

बेबे किच्छी कुटिया वाली राह पर त्रिखा-त्रिखा पांव उठाती सूखे भंवर में फंस गयी। अंखियों में धूल-घट्टा पड़ा तो आँखें मिच गयीं। पैर उखड़े ऐसे ज्यों सुलेमान पीर की गजब ताकत ने बेबे किच्छी को कनियारी पिण्ड के चरायों के तबेले में जा फेंका।

आंधी-अन्धड़ उतरे पीछे चरायों का काम्मा तबेले की ओर बढ़ा कि खुरलियों के पास सयानी बूढ़ी काया गुच्छम-गुच्छा पड़ी थी।

सुनकर चरायों को हाथ-पांव पड़ गये। टोह-टाह देखा, न घाव न खरोंच, सिर्फ मूर्च्छा। इधर टब्बर आ इकट्ठा हुआ, उधर पिण्ड में शोर पड़ गया।

चरायों की घरवाली सतवन्तो तत्ता-तत्ता घी ले आयी और बेबे के हाथ-पांव मलने लगी।

बेबे ने आँख खोली। इधर-उधर देखा और सूखा-सिकुड़ा हाथ ओठों पर रखा। कुछ कहने को हुई पर बोल न उभरे।

ओंठ खोल इशारा किया—पानी। भीड़ में से किसी सयानी ने आवाज दी—"अरी पानी न देना। तत्ता-तत्ता दूध ले आओ।"

दूध के कटोरे मे डली-भर घी डाल सतवन्तो ने माई किच्छी के मुंह लगा दिया।

दूध निरा अमृत। घूंट अन्दर जाते ही बेबे का रत्त पल्लर आया। सिर हिला-हिला बोली—"पुत्रा, मेरे घर सन्देसा भेज दो। पुत्र मेरे मुझे आके ले जायेंगे।"

चरायों के द्वारे भीड़ें लग गयी। गांव-का-गांव आ ढुका।

"बड़ी बडेरी में किसी सुच्ची आत्मा का निवास है, नहीं तो यह पक्की दुबली काया और चार कोस अन्धड़ मे उड़ जीती-जागती उठ बैठे! चलो री, हाथ जोड़ो, पैरीपौना करो।"

बेबे किच्छी अपने आगे नमते सिर देख आप ही संन्यासनी बन बैठी। हाथ उठा भीड़ को आशीर्वाद दिया—"बच्चड़ो, मनुक्ख की क्या हस्ती! करण-कारण वाहगुरु सच्चा पातशाह। जिसको राखे सांइया, मार सके न कोय! वाहगुरु अकाल पुरख, तू ही तू!"

खबर-सन्देसा मिलते ही बेबे किच्छी का टब्बर बेबे को लेने आ पहुंचा।

महासिंह शाहों के लाक्खे घोड़े पर। साथ पुत्तर और पोत्तरे। चरायों के घर रौनकें लग गयीं। वारी-बारी लड़कों ने बेबे के पांव छूए तो माई किच्छी पर मलका-महारानियोंवाला तेज-सरूप जाग उठा!

"पुत्रो, रब्ब की मेहर···"

धौले केशोंवाले महासिंह ने आँखें पोछ ली—"बेबे, तुम्हे कुछ हो जाता तो टब्बर तुम्हारा मुंह छिपाता फिरता।"

बेबे को हाथों में उठा महासिंह ने घोड़े पर बिठाया तो चरायों की सतवन्तो को भर-भर आसीसें मिलीं—"जीती रहो। साईं जीवे। धिया, तू जरूर किसी जन्म की मेरी वधूटी है, नहीं तो इस पिछली उमरे मैं तेरे हाथों की सेवा लेने आन पहुंचती! मल्ला कभी सुना था बन्दा आप आकर घर ढूंढ ले। महासिंह, आज से यह तेरी सबसे छोटी भरजाई हुई। घर में कोई ढंग-पज्ज हो, शादी-ब्याह हो, इसका सगुण-दस्तूर पक्का। भूलना न मेरी बात।"

"हुक्म तुम्हारा सिर-माथे बेबे!"

छोटा-सा घूंघटा निकाले सतवन्तो की अँखियों से फुहार पड़ने लगी।

बेबे का घोड़ा क्या चला ज्यों आंखो के आगे कोई दरशनी झांकी निकली हो।

वाहेगुरु, वाहेगुरु, बेबे तो साक्खयात राजमाता सरकार-सी फबती है! रब्बा, कुटुम्ब-क़बीला हो तो ऐसा!

ब्राह्मण अन्तिम श्राद्ध खा-पुजा चुके तो जनानियाँ पानी के कलश उ पितरों को विदा करने चलीं। राह में पानी के छींटे तरोंकती रहीं।

सतियोंवाले तालाब पर पहुँच हाथ जोड़े। सीस नवाया—"पितर देवो, वैकुण्ठों को प्रस्थान करो। अपने मुण्ड-परिवार से तृप्त हो स्वर्गलोक को पध आपजी के थान-घर-परिवार इसी तरह अपनी जगह स्थित सलामत रहे।"

पितर विदा हो गये।

घरों को लौट जनानियों ने घड़े भरे।

पीढ़ियाँ विछा पूनियाँ छू लीं। तारें निकाल तकलों पर डालीं और सान्दी घरों के सगुण-शास्त्र शुरू हो गये।

दुपहर होते-होते लड़कों की टोली ने शोर मचा दिया—"दयानन्दी आया चार वेद लाया।"

शाहनी बोली, "चाची, समाजी आर्या हर साल इस वक़्त आन पहुँचता है। श्राद्धों से पहले या बाद में जरूर इसकी फेरी लगती है। पर न कोई दान-दक्षिणा, न लेना-माँगना। बस मन्त्र बोल लिये। धर्म-वार्ता कर ली।"

"बच्ची, समाजियें के पैर और दिमाग बस यात्रा पर चढ़े रहते हैं। कहना यही कि हवन करो। सन्ध्या करो। वैदिक मन्त्र उच्चारो। व्रत-अनुष्ठान न करो। पितर न पुजाओ। सिरफिरा श्राद्धों के पीछे ही पड़ा रहता है। थाली लगाकर भेज छोड़। न हो पण्डित-पान्दा, अभ्यागत तो है न!"

बच्चों में से जाने किसने तुक जोड़ ली। दिन-भर बोलते फिरे—

> इधर आला उधर आला
> बीच आले में किल्ली
> आर्य्य की माँ मरी
> वैतरणी मंसी बिल्ली।

काशीशाह ने सुना तो बच्चों को नसीहत कर दी—"ये कुछ चंगे बोल नहीं। खबरदार किसी ने दोहराये तो।"

संझा वैदिक महाशय जंजघर के आँगन में जम गये। बच्चों को इकट्ठा कर जयकारा बुलाया—"वैदिक धर्म की जय। ऋषि दयानन्द की जय। आर्य समाज की जय।"

बच्चों की टोली चौकड़ी मार पंगतों में जा बैठी। एक तरफ़ जनानियाँ, दूसरी तरफ़ जने।

आर्य प्रचारक ने पहले बच्चों को सम्बोधित किया—

"बच्चो, आज दिन-भर मैं आपके मुँह से ऐसे वचन सुनता रहा जो निश्च ही कर्णकटु थे। अप्रिय थे और तर्कसंगत भी न थे। बालको, मेरी पूजनीय माः अभी जीवित हैं और सब काम प्रभुकृपा से अपने हाथ से करती हैं। बच्चो, क

सवेरे हम विधिवत हवन-यज्ञ करेंगे। सब बच्चे खेत जा नहा-धो यहाँ आ जायें। माताओ-बहनो, इस बार मैं आपके बच्चों को गायत्री मन्त्र सिखाकर जाऊँगा।

"मेरे पीछे-पीछे बोलिए—

मातृदेवो भव
पितृदेवो भव
आचार्य देवो भव

"माताओ-बहनो, अर्थ पर ध्यान दो।

"एक माता, दूसरा पिता और तीसरा आचार्य अर्थात् गुरु शिक्षा देनेवाले हों तभी मनुष्य ज्ञानवान होता है। आज प्रात: जब मै इस सुहावने गाँव मे पहुँचा तो यहाँ की देवियाँ पितरों को विदा करने जा रही थी। मैं हर वर्ष इन दिनों यहाँ आता हूँ और हर वर्ष बताकर जाता हूँ कि पितरो के नाम पर श्राद्ध करना वैदिक धर्म के विरुद्ध है, क्योकि यह केवल अन्धविश्वास है।

"जिन मृत प्रियजनो के शरीर अग्नि में भस्म हो पंचभूतों मे विलीन हो चुके हैं वे जीमने के लिए आपके पास कैसे पहुँच सकते हैं! यह निरा पाखण्ड है। अन्धविश्वास है।

"प्यारे ग्रामवासियो, ज़रा सोचो जो पुरखे-प्रियजन अपनी-अपनी जीवनयात्रा सम्पूर्ण कर इस जगत से अलग हो चुके है वे आपका खीर-पूरी खाने कैसे चले आयेंगे! मैं ज़ोर देकर बताना चाहता हूँ, कहना चाहता हूँ कि लालची-पाखण्डी ब्राह्मणों ने अपने लोभ की ख़ातिर ये सारे अनुष्ठान-व्रत और पूजाओं की पोपलीला बुन रखी है। हमारे देश मे निकम्मे, आलसी, अकर्मण्य ब्राह्मण साधु और मठाधीशो ने केवल अपना स्वार्थ गाँठने के लिए सारे ढोंग और प्रपंच फैला रखे हैं।

"काशी के लाट भैरव की कथा सुनिए—काशी के ब्राह्मणों ने उड़ा दी कि काशी के लाट भैरव में बड़े-बड़े चमत्कारिक गुण हैं। सत्या है।

"औरंगज़ेब के समय की बात है। मुग़ल सेना लाट भैरव पर पहुँची तो कायर पुजारी-पण्डित सब डर-डरकर भागे। मन्दिर पर जब गोलाबारी शुरू हुई तो संयोगवश धुएँ के ज़ोर लाट भैरव की छत पर लगे मक्खियों और भूँडो के छत्ते छिड़ गये!

"जब मुग़ल सेनाएँ अपने प्रहार-आक्रमण के बाद वापस लौट गयीं तो पाखण्डी अपनी गद्दियो पर लौट आये। भोले-भाले अन्धविश्वासी भक्तजनों को इकट्ठा कर भैरव की महिमा शुरू कर दी—'देखो-देखो, लाट भैरव की सत्या देखो। दैवी शक्ति देखो। भूँडो और भिड़ों के रूप मे लाट भैरव ने मुग़ल सेना तक को भगा दिया!'

"ग्रामनिवासियो, यह पाषाण का चमत्कार नही था। इसमें लाट भैरव की भला क्या लीला थी! आप तो हर रोज अपने गाँव में भिड़ों के छत्ते

होंगे।

"भाइयो, मैं ऋषि दयानन्द द्वारा चलायी आर्य समाज का एक तुच्छ-सा प्रचारक हूँ। देश-भर में घूमता रहता हूँ। मैंने पाखण्डियों की पोलाघड़ी और पोलखाते बहुत देखे हैं।

"रंग है कालियाकन्त को, जिसने हुक्का दिलाया सन्त को।

"दक्षिण में एक कालियाकन्त की मूर्ति है जो लगातार हुक्का पीया करती है! आपका यह आर्य-सेवक पहुँच गया वहाँ। ध्यान से देखा हुक्का पीनेवाली मूर्ति का मुख पोला है। पोलखाता यह कि पीछे से छिद्र निकालकर उसमें हुक्के की नड़ी जोड़ दी गयी है। पुजारीजी दिवार के पीछे हुक्का भरवाकर देवता के मुखवाली नली से जोड़ आप भक्ति-भाव से प्रतिमा के सामने बैठ जायें। पीछे से कोई हुक्का पीता रहे और धुआँ देवता के मुख से निकलता रहे। चढ़ावा चढ़ता रहे।"

कृपाराम सनातन धर्म में विश्वास रखनेवाले। उठकर खड़े हो गये और बोले, "महाशयजी, मन्दिर कहाँ, पुजारी कहाँ! इस खण्डन-मण्डन से हमें क्या लाभ!"

जनानियाँ हँसने लगीं।

"प्रिय भ्राता, जो मैं कह रहा हूँ, उसमें से गहरा सार निकलेगा। जो देवता दक्षिण के उस मन्दिर में पूजित है अगर वह देवता ही होता तो उसे क्या हुक्का पीने से अच्छा कोई दूसरा काम नहीं!"

जनानियाँ पहले हँसने लगीं, फिर गम्भीर हो सिर हिला-हिला सतनाम-सतनाम करने लगीं।

"देवियो, मुहम्मद गजनी जब सोमनाथ पर पहुँचा तो किस तरह मन्दिर के ढोंगियों का पर्दाफाश हुआ, वह सुनाता हूँ।

"खबर पहुँची कि गजनी अपार सेना के साथ सोमनाथ पर चढ़ाई करने आ रहा है। ध्यान से सुनिए वहाँ के पोंगापन्थी पुजारी इस खबर को सुन लेने पर क्या करते हैं। पूजा-स्तुति-आरती में लग गये पण्डित-पुजारी और इनके साथ आ मिले भक्तजन। सब मिलकर घण्टे-घड़ियाल बजायें।

"वहाँ के राजाधिराज चिन्ता में थे। पुजारियों ने उनसे भी कह दिया कि हे राजन, चिन्ता न करें। स्वयं भगवान सोमनाथ यवनों का नाश करेंगे।

"ग़जनी की सेनाओं ने घेरा डाल दिया तो पुजारी-पण्डित-पान्दे सब भागा-भागी में।"

निक्की बेबे मुँह पर उँगली रखकर बोली, "अरी, आर्या यह क्यों नहीं कहता कि भाजड़ें पड गयीं!"

"मन्दिर के पट्ट टूटे तो कुछ प्रजाजनों ने हाथ जोड़ गजनी के आगे प्रार्थना

की—'आप तीन करोड़ मोहरें लेवें पर भगवान की प्रतिमा भंजन न करें।'

"मलेच्छ गज़नी हँसा—'बुत-परस्त नहीं, हम बुतशिकन हैं।'

"मूर्तियाँ तोड़ दीं। वो अपार भण्डार, हीरे-जवाहरात, माणिक-मोती के ढेर लग गये। मन्दिर का कलश गिरा तो जगतप्रसिद्ध मूर्ति चुम्बक मिकनातीस से अलग हो खण्डित हो गयी। चकनाचूर हो गयी।

"श्रोताओ, अगर पूजा-स्तुति के बदले लोगों ने मिलकर शूरवीरों की सेना सजायी-बनायी होती तो गज़नी का मुक़ाबला करने को कोई तो उठता! जो जाति-देश अपने शूरवीरों की कद्र नहीं करता वह धराशायी हो जाता है।

भाइयो, एक हिन्दू जाति को पोंगापन्थियों ने हज़ारों-लाखों उपजातियों में बाँटकर उसकी शक्ति क्षीण कर दी है।

ज्यों केले के पात पात में पात
ज्यों कवियों की बात बात में बात
ज्यों गधों की लात लात में लात
त्यों हिन्दुओं की जात जात में जात।"

सभा हँस-हँस दोहरी हुई। बच्चे लम्बी हेक में मिल-मिलकर दोहराने लगे—

ज्यों केले के पात पात में पात।
ज्यों गधे की लात लात मे लात।

"इनके वृत्तान्त क्या-क्या न सुनाऊँ आपको! सुनो—

कोई मच्छीखाने ब्राह्मण
कोई खीरखाने ब्राम्हण
कोई वेद पत्तर ब्राम्हण,
कोई धन पोत्रे, कोई भोज-पोत्रे
कोई सिन्धू पोत्रे।"

कुन्दन चिड़े ने उठकर कहा, "आर्यजी, यह क्या ले बैठे! सुनानी है तो काम की सुनाओ, नहीं तो आपाँ चलें।"

"मैं आपको पाखण्डियों की कारस्तानियाँ बताता हूँ। मन्त्र-उच्चारण की वैदिक रीति को त्यागकर जजमानों को सुझाया—जाप करो माला के। पर अलग-अलग देवी-देवताओं की मूर्तियों की तरह अलग-अलग मालाएँ निश्चित कर दीं—

"शैव्य भद्राक्ष की माला फेरें
वैष्णव तुलसी माला फेरें या चन्दन माला फेरें।
शक्ति की पूजा करनेवाला नरद्रिश की माला फेरें।
साधारण हिन्दू कदम की माला फेरें।
धनाढ्य ब्राम्हण, खत्री और बनिया-बक्काल मुक्त-माला फेर सकता है।

"याद रहे, पण्डित-ब्राम्हणों ने यह भी विधान कर दिया कि निर्धन कमल डोडे की माला फेरे।

"माताओ-बहनो, इन पड़ियाली पण्डित-गुंसाइयों से सदा सावधान रहो!

जनानियाँ बुड़बुड़ाने लगीं—"यह क्या री, खाली बाम्हणों की ब खोइयाँ!"

पग पर गुरु का दूसरा पग आ गया।

"चेले ने आव देखा न ताव। उठा के डण्डा पग पर दे मारा।

"गुरुजी चीखे—'अरे दुष्ट, तूने यह क्या किया?'

"चेला बोला, 'मेरे सेव्य पग पर दूसरे का पग क्यों आ चढ़ा!'

"इतने में दूसरा चेला आन पहुँचा। अपने सेव्य पग की सेवा करने ल तो देखा—पग सूजा पड़ा है। पूछा—'गुरुजी, यह मेरे सेव्य पग में क्या हुआ! गुरु ने जब वृत्तान्त सुनाया तो दूसरा चेला भी चुपचाप उठा और डण्डा उ ज़ोर से गुरु के दूसरे पग का भुड़था बना दिया।

"आसपास कोलाहल मच गया। गुरुजी रोये-चिल्लाये। लोग जमा ह गये। पूछा, 'क्या हुआ बाबा!'

"बाबा ने शिष्यों की हरकतें बतायीं तो एक बुद्धिमान बोला, 'अज्ञानियो मूर्खो, तुम्हें यह तक नहीं पता कि दोनों लातें एक ही गुरु की हैं!'"

बड़ा हास्सा पड़ा।

आर्य-प्रचारक गम्भीर हो गये—"मौलवी ज़काउल्लाह ने आर्य की परिभाषा की है। उनके कहने के अनुसार आर्य के लफ़्ज़ों के मायने हैं—मुअज़्ज़ज, मुमताज़ और बरगज़ीदा।

"चलो री बहना, चलो। आर्य शुरू हुआ है तो बोलता ही जायेगा।"

"उठो, चलके चौके-चूल्हे लगें।"

"अरी, अगियारी ठण्डी हो गयी, तो दूध के नीचे उपला कैसे लगाऊँगी!"

सभा तितर-बितर होते देख महाशयजी ने एक नया प्रसंग छू लिया—"एक बार ब्रह्मा, विष्णु तथा महादेव ने अत्रि की पत्नी सती अनुसूइया से ज़बर-दस्ती की चेष्टा की। मुझे साफ़-साफ़ कहने की आवश्यकता नहीं। इतना समझ लो कि ताज़ीरात हिन्द की दफ़ा ४९७ में ज़िन-बिल-जब्र के मुताबिक इन तीनों देवताओं पर बाकायदा अदालत में मुक़द्दमा चलाया जा सकता है।"

"उठो री उठो, यह कोई चंगी बातें नहीं। किस देखे देवते और किस देखी

ऋषि-वधूटी।"

भगवान पान्दा बड़ा-सा पग्गड़ सिर पर उठाये आ खड़ा हुआ।

तमतमाते मुख इधर-उधर देखा, फिर शाहजी से कहा, "इस पापी समाजी के मुख से आप क्या सुन रहे है! देवताओ पर लाछन लगाना ही क्या आर्य धर्म है!"

शाहजी गम्भीर बने रहे। सिर हिलाकर कहा, "यहां लड़ाई-झगड़ा नहीं, खण्डन-मण्डन हो रहा है। सुनो भी और सुनाओ भी।"

भगवान पान्दा बिफरने लगा—"इस समाजी का मुंह बन्द कर दीजिए। मेरे मियानी में भी दयानन्दियो ने शिवलिंग का अपमान किया था। ये आर्य-प्रचारक हिन्दुओं के लिए आस्तीन के सांप है।"

छोटे शाह ने बीच-बचाव किया—"महाशयजी, कुछ ज्ञान-ध्यान, मन्त्र-हवन की बात करिए। वाद-विवाद खण्डन-मण्डन छोड़ दें!"

आर्य ने भजन शुरू कर लिया—

शरण प्रभु की आओ के यही समय है प्यारे
मकर फरेब और झूठ को त्यागो
सत्य में चित्त लगाओ रे
यही समय है प्यारे।
उदय हुआ ओ३म नाम का भानू आके दरश दिखाओ रे
पान करो इस अमृत रस को उत्तम पदवी पाओ रे
यही समय है प्यारे।

कृपाराम भुनभुनाते उठ खड़े हुए—"भजनीकजी, आपने क्या समझा इस ग्रां में सब अज्ञानी मूर्ख है!"

"माताओ, बहनो, भ्राताओ, आज इतना ही। कल आपको मैं वेदों की कथा सुनाऊंगा। मेरे साथ बोलिए—

"बेहकीकत एक कागज बेहकीकत एक रंग
क्या है यह तस्वीर मुझमे चश्मे हैरत क्यों है दंग
देखती हैं क्यों ज़माने की निग़ाहों के फ़रेब
आ रहा है क्यो ख्यालाते-हकीकत में नशेब
बुत है तू एक दस्ते इन्सां ने बनाया है तुझे
बुत-शिकन लोगों ने फिर क्यो सिर चढ़ाया है तुझे।
खाके गजनी ही से उठते हैं फ़क़त महम्मूद क्या।
बुत-शिकन भारत में कोई भी नहीं माजूद क्या!
मैं बनूंगा बुत-शिकन पुर्ज़े उड़ा दूंगा तेरे
मेरी ताक़त देखना टुकड़े उड़ा दूंगा तेरे।

तोड़े बुत अगियार के महमूद ने घर छोड़कर
और मैं छोड़ूंगा इन अपने बुतों को तोड़कर !

"शेष कल—बोल स्वामी दयानन्द की जय ! बोल आर्य समाज की जय !"

बोद्दे ने बिना समझे-बूझे जोड़ा—"बोल बुतशिकनी की जय !"

"वाह बालक, तू ऊंचा चढ़ेगा ! तू आगे बढ़ेगा !"

बेटे के लिए आशीष वचन सुन बोद्दे की मां बड़ी खुश हुई। पास जा आर्य के आगे हाथ जोड़ दिये—"महाराज, रूखा-सूखा जो भी है, आज का भोजन मेरे घर।"

पीछे से शानो की मां ने आवाज़ दी—"मैंने कहा सुबह की कड़ाही और काले मोठ पड़े हुए हैं। लड़के के हत्थ मँगवा ले।"

भगवान पान्दे का जी जल गया—"इस दयानन्दी को काले-काले भट्टे-बैंगन खिलाओ, इसका कलेजा जल-फुंक जाये। इसे बवासीर फूटे···"

जनानियां हंसने लगीं—"पान्दाजी, विचारे भजनीक से इतनी खार। आपके दूध-खीर तो सात जन्मों तक पक्के। ब्राह्मण की जून इतनी जल्दी नहीं बदलती। श्राद्ध जीम-जीम अभी तो हज़्म भी कहां हुए होंगे ! आर्या को भी कुछ खा लेने दो।"

शाहनी की भिम्भरवाली मौसी के पुत्र मिट्ठचन्द और रूपचन्द अपनी बहन् शाहनी को मिलने आन पहुंचे तो भाइयों का रियासती बाना देख लोग अश-अश कर उठे।

जम्मू फ़ौज के बांके ऐसे बन-ठन फबें मानों महलों के राजकुमार हों। रियासत की जागीरदारी टुकड़ी के लश-लश करते सवार घोड़ों पर से उतरे तो गांव में धूम मच गयी।

मुंह-माथा गोभी के फुल्ल-सा गुटा हुआ। सिर पर डोगरी पागें और बांकी चालें। यूं जापें ज्यों यूसुफों की जोड़ी हो।

"मल्लाजी, शाहों के घर जम्मू फ़ौज उतरी है।"

"छोड़ री छोड़, यह तो मुल्क अंग्रेज़ का है। यहां देसी फ़ौज का क्या काम !"

"सुनते हैं शाहनी के मौसेरे भाई हैं।"

बलैयां ले-ले शाहनी ने चौके में थालियां परसीं तो ताक-झांककर गांव के

बच्चों-बच्चियों ने अन्त मचा दी।

एक आये, झांक जाये। दूजा आये, बिट-बिट तके। तीसरा हंसकर भित्त के पीछे हो जाये। छोटे भाई-बहिनों को गोदियों में उठाये कुड़ियां एड़ियां चुक-चुक ताकें और चुन्नियां मुंह पर रख पले-पले शरमायें।

चाची महरी ने घुड़की दी—"जाओ री जाओ, निकालां को कुटिया की तरफ़ गेड़ा-फेरा लगायेंगे तो इन्हें जम्म-जम्म देखना। तुम्हारे तो मामे लगे कुड़ियो!"

चाची चौके में बैठ मिट्ठचन्द और रूपचन्द से ठट्ठा करने लगी "पुत्रो, तुम्हारी फबन देखकर लड़कियों का यह कौड़ीफेरा। तुम्हारे पहाड़ की लड़कियां तो हाथ लगे मैली हों, पर रे कोई देस्सन मन भा जाये तो बहन के कान में कह देना!"

शाहनी ने तवे पर रोटी डाली, हंसते-हंसते भाइयों की ओर देखा। तस्वीर की तरह बैठे रहे। न कुछ कहा, न आंख ही झपकी।

रोटी पीछे खांड-मलाई खा दोनों भाई हाथ धो बाहर आये। राबयां की गोद में लाली को देखा!

मिट्ठी-चन्नी-डोडो-कम्मो पास ढुकी बैठी थी।

मीड़ियों-गूंथे सिर पर मैली-कुचैली दुपट्टी में से चन्नी का सुडौल मुखड़ा! मिट्ठी की अंखियां ऐसी ज्यों किसी ने फांकड़ियां सजा रखी हों!

लड़की मरजानी ने ऐसी दिठवन दी कि हुस्न-चिराग डोगरे फीके पड़ गये।

चन्नी ने मिट्ठी की बांह पर चकोटी काटी और उसकी चूनर खींचकर कहा, "होश कर री! कहां देखे चली जाती है!"

लाली को सगुण दे दोनो भाई नीचे उतर गये तो भी मिट्ठी की अंखियां पैड़ियों पर ठिठकी रहीं।

कम्मो ने धप्पा मारा—"अरी मोरनी, पांव देख अपने पांव!"

मिट्ठी सचमुच अपने पांव देखने लगी तो मांबीबी पास आन खड़ी हुई, "क्यों री, तेरे पांवों को क्या हुआ! क्या देखती है!"

"कुछ नहीं मांबीबी।"

"तो री, मुखड़े पर हैरानियां कैसी!"

शानो हंस-हंस दोहरी हुई—"मांबीबी, इसका तो हेटलो सांस हेटो और ऊपरो सांस ऊपर।"

"क्यों री, चित्त-मन तो ठिकाने है न!"

कम्मो ने आंखें मटकायी—

"रानी को राव प्यारा
कव्वी को कांव प्यारा।"

मांबीबी ने झूठ-मूठ के तेवर चढ़ा लिये—"कुछ राह कर री, यह क्या मस-करी-मजाक है! चन्द पब्बा बन के चहक रही हो!"

राबयां पहले चुप बनी रही, फिर आंखें उठा बोली, "नर डोगरो का जामा-बाना देख मचल रही है।"

"क्यों री हंसारानी, तू कहां की आयी सयानी! देखो, तू भी इन्हीं की गोटठ की है।"

राबयां कुछ कहने जाती थी कि शाहनी की हांक पड़ गयी—"मांबीबी, दो सुथरी बिछाइयां निकाल दे बाग को। टंगने पर दो कोरे खेस पड़े हैं पिड़ियो-दार!"

चाची खुश हो-हो गयी—"मैंने कहा बच्ची, तेरे इन रियासती भाइयों के तुल कौन! मेरी मेहनत सफल हुई। मेरे पराहुनो का आना कब रोज-रोज।"

"चाची, वीर मेरे स्यालकोट उतरे थे किसी पड़ताली मामले में। मौसी ने कहा लाली की बधाइयां जरूर दे के आना। चाची, ढंग-पज्ज पर ही मेल है न!"

"खैर मेहर, समय-समय लाली बच्चड़े के सगुण-शास्त्र होते रहे।"

"तेरा मुंह मुबारक चाची! नौबत बाजे कर्मों से!"

चाची ने झट मीठे-मीठे सुरोंवाली घोड़ी छू ली—

भरनी आं हीरे मोतियों दे थाल
देनी आं नाते काम्मियां दे लाग
लाड़े दे मन मिट्ठड़ी दा चाव
वे जीवें, अम्बड़ी नू देखने दा चाव।

छोटी शाहनी चाची के साथ आ मिली—

जे तू चढ़या घोड़ी वे
तेरे संग भ्रावां जोड़ी वे।

"बधाइयां, बधाइयां जिठानी! अब मुंह मीठा करवा!"

शाहनी घोड़ियों के चाव में भीज-भीज गयी—"सदके जाऊं लाली की दादी पर, चाची पर! हैं री, तुमसे कौन-सी शह अच्छी! लो मुंह मीठा करो। लाली-शाह के मामे लाये हैं।"

देवरानी ठट्ठा-मखौल करने लगी—"सोहणी पीढ़ी पांगें डोगरो की और नुगदो निरी सूखी मकई!"

शाहनी के तेवर चढ़ गये—"मुंह में तो डाल के देख पहले। निरा भुना हुआ खोया है।"

छोटी शाहनी मुंह में डाल हंस-हंस दोहरी हुई—"मेवे-बादामों के भण्डार रियासत में और तुमने मेरे कहे को सच्च मान लिया! कभी मजाक भी समझा

: जिठानी !"

शाहनी झेंप गयी—"हुआ री हुआ मिज़ाजो, बातों में कोई जीता है तेरे आज तक !"

ा दीवटों की लौ हवेली में मजलिस सज गयी।

कृपाराम ने चिलम भरवा हौला-सा सकेत दिया पराहुनों को—"बादशाहो, को। धुर क़ाबुल का तम्बाकू है।"

दोनों भाइयों ने बड़े-सयानों का इज्जत-मान रखा। हाथ जोड़ दिये—मा !"

मन-ही-मन शाहों ने बड़ा सराहा—"कपुत्र-सपुत्र कोसों से पहचाने जाते। रस्म-रिवाज अपने देशी दरबारों के सोहणे सलीकेवाले हैं।"

मुहम्मदीन ने पहल कर ली बात छेड़ने की—"बादशाहो, अपने डोगर-ह जम्मू-कश्मीर के किन रगों मे !"

मिट्ठचन्द की राग माशा-भर फड़की—"महाराज के सोहणे रग और र्थ ढग !"

कर्मइलाहीजी ने सिर हिलाया—"देसी दरबार किन चढ़तलो मे !"

रूपचन्द के मस्तक पर माड़ा-सा तेवर उभरा—"बहिश्त तुल दरबार के दर वे, रियाया के सिर झुके हुए !"

मीरांबख़्श को खांसी छिड गयी तो चौधरी फ़तेहअली हँसने लगे—"शाह हिब, आपको तो पता है मीरांबख़्श के वड्डे-वड्डेरे खालसा भाज्जडों मे कश्मीर नीचे उतरे थे। दिल इसका वही लगा रहता है। इसे कौन समझाये कि दादे-दादेवाली कुल्ली-झुग्गी कोई फतेह मीनार तो नही थी जो अब भी अखनूर में ड़ी होगी। अगर है भी कोई बचा-खुचा छत्त-छप्पर तो खबरे कितने सवार-घोड़े ा गये होंगे।"

हँस-हँस मंजियाँ हिलने लगी।

गुरुदित्तसिंह दाढ़ी खुजाने लगे। पगड़ी खोल लपेटी, फिर खोलकर लट टुंगा ' मौलादादजी ने टोका—"प्यारे खालसाजी, यह क्या टूना-टोटका है! पहले ढ़ी हाथ लगाया। फिर साफा कसा। अब रणजोतसिंही तलवार निकालने की यारी तो नही !"

कृपाराम ने गर्माया—"बादशाहो, कृपाणें-तलवारें तो खैरों से खालसाओं के स ! अलबत्ता तोपों के नाम लो तो कोई बात बने !"

शाहजी ने बारी हाथ में ले ली—"मशहूर तोप तो है जमजमा। आख्यान है क जिसकी ज़मज़मा उसका पंजाब।"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"बादशाहो, तोप क्या हुई शहंशाही भभकी हो गयी !"

मुंशी इल्मदीन शुरू हो गये—"ख्वाजा सैयद के पास शाह अब्दाली की तोप दरिया चनाव में डूब गयी थी। सरदार हरीसिंह भंगी ने तरकीब से निकलवा दी। बस जी, भंगियों की तोप के नाम से मशहूर हो गयी !"

शाहजी ने अपने खजाने की चाबी घुमा दी—"तोपें हर लश्कर और हर फ़ौज के पास। मुग़ल बादशाहों ने ऐसे चुन-चुनकर नाम रखे कि छोटा-मोटा तो नाम सुनकर ही किनारे हो जाये।"

मौलादादजी को रस आने लगा—"दो-चार नाम हमें भी बता छोड़ो। मुग़लों के रुआब का हम भी मजा ले लें।"

"मुग़ल फुल्ल-फैलाव और रौब-दाब रखने में बड़े माहिर। तोपों के नाम ऐसे ज्यों शाही खानदान के शाहज़ादे हों—शेरदहान, गाज़ीख्वान, गढ़भंजन, फ़तेह लश्कर !"

कर्मइलाहीजी को सुन-सुनकर सरूर चढ़ने लगा—"वाह-वाह ! शाबाश भई शाबाश ! बाबर के पोत्रों-पड़पोत्रों, तुमने भी क्या हकूमती अक्लें पायी। करने-वाले कर गये हकूमत हिन्दोस्तान पर !"

कृपाराम की नाक पर जैसे कोई मक्खी आन बैठी हो—"चौधरी साहिब, वक़्त की बात है। चढ़तलें थीं हकूमत की जब खानदाने-मुग़लिया जवानी पर था ! ढलती पर आया तो फिरंगी के आगे पटाखे की तरह भू-भस्स हो गया !"

अपने-अपने खून के पसीने आते देख शाहजी ने बड़ी दानाई से बात बदल दी—"सुनने-पढ़ने में आता है कि बादशाह जहाँगीर कुछ नहीं तो आठ बार कश्मीर पहुँचा। और आखीरी स्वास भी उसने भिम्भर में लिया।"

"शाह साहिब, उन दिनों दिल्ली से श्रीनगर पहुँचने में कितने दिन लगते होंगे !"

छोटे शाह बोले, "भ्राजी, क़ाबुल से लाहौर घोड़ों पर दस-ग्यारह दिन और दिल्ली से लाहौर महीना-डेढ़ क्यों !"

कर्मइलाहीजी बोले, "साले बड्डे ने बताया था कि जब वह कश्मीर गये थे तो तांगे चलते थे गुजरात से श्रीनगर। यह समझ लो, पूरे पन्दरह दिन का सफ़र था। सिर्फ़ गुजरात से श्रीनगर पन्दरह दिन।"

नजीबा बोला, "तो बादशाहो, शहंशाह जहाँगीर पहुँचा कश्मीर आठ बार सिर्फ़ नजारे देखने कि कुछ लड़ाई-झगड़े की वजह थी !"

"कश्मीर की बाग़-बहारें और बहिश्ती नजारे। शाहज़ादे-शाहज़ादियाँ न

पहुँचें कश्मीर की वादियों में तो और क्या हम जट्ट-बूट जायेंगे केसर-क्यारियाँ सूंघने !"

."जहाँगीर पहुँचा कश्मीर आठ बार और शाहजहाँ सिर्फ़ चार बार।"

मुंशी इल्मदीन बोले, "शाहजहाँ वक़्तों में ही भिम्भरवाले राजे ने इस्लाम क़बूल किया और शाहजहाँ ने उसे राजा-ए दौलतमन्द का खिताब अता किया।"

शाहजी ने अपना दहला निकाल फेंका—"जहाँगीरी वक़्तों की बात है। राजपूत सरदार धर्मचन्द यूनानी हिक़मत में बड़ा माहिर। उसकी बड़ी शोहरत। जहाँगीर बादशाह बीमार हुआ तो उसको फ़रमान मिला दिल्ली पहुँचो। बीमारी-रोग बादशाह के कुछ ऐसे नाकस कि बड़े-बड़े वैद्य-हक़ीम रह गये। शर्त दरबार-दिल्ली ने यह रखी कि जो बादशाह सलामत को राजी कर देगा, निक़ाह में उसे शाहज़ादी मिल जायेगी।

"हुक्म पा पहुँचे धर्मचन्द दिल्ली। रब्ब का भाना, खमीर-कुश्तों से बादशाह को ठीक कर दिया। फ़िर क्या था, शाहज़ादी ब्याहने को धर्मचन्द शादीख़ाँ बन गये।"

जहाँदादखाँ के फौजी मिज़ाज को बड़ा रस आया। टोककर कहा, "पहले तो बादशाह-शहंशाह का हक़ीम ही मात नहीं। फिर खैरों से वह जिसके सिर दामादी पग्ग बँध गयी हो! क्या कहने! शाही दरबार में रसूख वड्डा और अमलों में अमल शाहज़ादी का! बन्दा बहिश्ती बरकतों का तो मालिक बन गया न!"

"जहाँदादजी, यही टण्टा पड़ गया। दिल्ली जाकर राजपूत मियें का दिल न लगे। न पहाड़, न बर्फ़, न ठण्डी हवाएँ। अपने घर सें ऐसे उदास हुए कि रातों-रात दिल्ली छोड़ वतनों को लौट आये। शाहज़ादी बड़ी नाराज़। शहंशाह को शिकायत की। उसने उठकर फौजें भेज दीं। शादीख़ाँ बहादुरी से लड़ा, पर लड़ाई में मारा गया।"

रूपचन्द ने सिर हिलाया—"नौशहरा तहसील में शादीख़ाँ का थान बना हुआ है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "कहनेवाले कहते हैं कि डोगरे-चिब्ब एक ही मुंह की दो शाखाएँ है। एक अल धर्मचन्द की और दूसरी शादीख़ाँ की।"

मैंयासिंह चौंककर उठे—"मैंने कहा एक और भी साक-सम्बन्ध हुआ था। राजौरी के राजा की धी औरंगज़ेब से ब्याही गयी थी।"

शाहजी ने मिट्ठचन्द-रूपचन्द को बातचीत में शरीक़ होने के लिए कहा, "अपने मेहमानों से भला क्या भूला हुआ है! जम्मूराज के बाशिन्दे हुए! हाँ जहाँ-दादजी, औरंगज़ेब कश्मीर पहुँचा सिर्फ़ एक बार। शाही लाम-लश्कर और साथ रोशनआरा बेगम। शाही कारवाँ पीर पंजाल पार करने को हुआ कि खबरें कैसे हाथियों के झुण्ड में हड़बो-हड़बी मच गयी। बेगम का तो बचाव हो गया, पर कई हाथी जनाना सवारियों के साथ खड्ड में जा गिरे।''

गुरुदित्तसिंह खूब हँसे—"बुरा हुआ शाहजी ! आप ही बताओ कि औरंगजेब दुबारा कश्मीर क्यों जाता ! जनाना माल का नुक़सान कोई छोटी सी बात तो नहीं !"

"ये तो हुईं न शाही अलामतें। लश्कर-फ़ौज क़दम न भर के दे जब तक गागरें भरी-भराई साथ न हों। फिट्टे मुँह !"

मंर्यासिंह ने थापड़ा दिया—"गण्डासिंह, तेरा जवाब नहीं। तीवियों को गागरें बना छोड़ा। दम्म तो है तेरी बात में। गागरें ही हुईं न ! होली-होली अपने खाली होती जाती है !"

काशीशाह ने मजबून बदल दिया—"सुनते हैं गद्दी पर बहाल होने के बाद जम्मूशाह की अंग्रेजों से चंगी सुर हो गयी है।"

हाजीजी ने बड़ी मोहतबिरी दिखायी—"सुलहनामे रास्ते के और बढ़े हुए हाथ दोस्ती के ! एक की औकड़-जरूरत दूसरे का हुक्म-हासल !"

रूपचन्द ने मुँह खोला—"रियाया न कर बैठी सुलहनामे अंग्रेजों से ! सुलहनामे बराबरी के !"

मुंशी इल्मदीन न जर सके—"बुरा तो मानना न मेहमानो, दस-पन्दरह बरस तो जम्मू दरबार पलसेटे-पलटनियाँ मारता रहा। कहीं बूढ़े वेले जाकर करजन लाट की इमदाद से गद्दीनशीनी हुई बूढ़े शेर की !"

दोनों भाई मिट्ठचन्द और रूपचन्द ऐसे उठ गये मंजियों से ज्यों छावनी में बिगुल बजा हो—"जयदेव ! महाराजा का लूण खाकर उनकी शान के खिलाफ़ बात सुनना हमारे लिए अधर्म ! भाइयाजी, हमें आज्ञा हो, ऊपर चलकर मौसी से बात करें !"

सुनते ही मंजियों पर मुण्डियाँ ढीली पड़ गयीं। कर्मइलाहीजी ने झटापट बात सँवार ली—'माफी जागीरदारो, हत्थ-बँधी माफ़ी। शाहजादेयो, हम तो आपका दिल लगाने को बैठे है। बादशाहो, दुनिया में कौन पैदा हुआ है जो कश्मीर शाह पर फब्ती कस सके !"

मौलदादजी मदद पर हो गये—"सौंह अल्लाह पाक की, जिसकी पगड़ी पर खुदा ने बहिश्त की कलगी लगा रखी हो वह तो साक्खयात नरपति हुआ न ! उसे किस लाट भड़वे की इमदाद की जरूरत है !"

शाहजी की आवां-जावी लगी रहती थी रियासत में।

"लाट करजन जब जम्मू दरबार के तिलक पर गया तो उसने खास ऐलान किया था कि सरकार अंग्रेजी की मंशा कश्मीर को दूसरे सूबों के साथ मिलाने की नहीं। मतलब मुद्दा यह था कि दोनों सरकारों के बीच रिश्ता बराबरी का है। फिर क्या था ! मुखालफ़ीन चुप होकर बैठ गये।"

दीनमुहम्मद बोले—"बादशाहो, सलामी तो तोप की एक मान नहीं। जम्मू

दरबार को तो खैरों से इक्कीस तोपों की सलामी लगी हुई है।"

मिट्ठचन्द-रूपचन्द के माथे परखरे होते देख कक्कूखां बोले, "बादश हो, रियासती लश्कर के क्या डेरे-डंके हैं!"

"कृपा जयदेव की! डोगरा फौज अव्वल और आला। चौदह रसाले मुस्तैद जागीरदारी। ये

।"

... ड़ी की खासियत क्या है!"

"भाइयाजी, रियासत के ठिकानेदारों के पुत्र-पौत्रों की पल्टन कहलाती है यह! हर माना-परवाना कुनबा-क़बीला एक-न-एक फ़रजन्द ज़रूर भेजता है इस टुकड़ी में।"

हाजीजी का पोत्रा कुरबान अली हागकाग पुलिस रसाले में भरती था। पूछा, "पुत्तरजी, खर्च-भत्ते का क्या हिसाब-किताब है!"

रूपचन्द ने अहंकारी अदा दिखा दी—"घोड़ा अपना, पोशाक अपनी, और सेवा-टहल अपने महाराज की!"

"यह तो दूसरी फौजों से सवाई बात न हुई!"

जम्मूवालों को यह तन्न पसन्द न आयी। सिर हिलाकर कहा, "इंगलिस्तान का शाही दरबार भी खानदानी जागीरदारों के दस्ते तैनात करता है। जैसा चलन वहां, वैसा चलन यहां।"

जवाब से डेरा जट्ट के अक्खड़ों की पीठ लग गयी, सो दबादब हुक्के गुड़गुड़ाने लगे।

"दूसरी रियासतों के तो हाल नर्म-गर्म ही बरखुरदारो! यह बताओ कि जम्मू-कश्मीर में रियाया की सुनवाई कैसी!"

"बराबर सुनवाई। खुले दरबार कोई खड़ा हो के कह दे—'महाराज, अर्ज है!' तो सुनवाई पक्की।"

शाहजी हँसने लगे—"सुनवाई बेशक पक्की, पर 'नज़र' भेंट पहले। ग़लत तो नहीं है मिट्ठचन्द!"

मिट्ठचन्द बड़ी मोहक हँसी हँसा—"भाइयाजी, सोलह आने सच्च! महाराज से नज़र-भेंट नहीं छोड़ी जाती।"

रूपचन्द ने मन-ही-मन डेरा जट्ट पर चढ़ाई करने की ठान ली—"इनसे बड़े महाराज ने ले-ले नज़रें जम्मू में अनेकों मन्दिर-शिवालय बनवा डाले। बस, वृत्ति महाराज के चित्त में यही कि जम्मू को काशी-बनारस बना दें। संस्कृत पाठशालाएं चला दें।"

मुंशीजी न पचा सके—"हां जी, मियें राजपूत जो न कर लें सो थोड़ा। शाहजी, वह अपना बारामूलेवाला खानदार मुझे गुजरात सर्राफे मिल गया। शालों की गांठें लेकर अमृतसर जा रहा था। बताने लगा कि कश्मीरी ब्राह्मण जो का जो करे, उन्हें राज की तरफ़ से पूरी छुट्टी। बाकी रियाया से सलूक हकूमत का मुस्सल्लियों से गया-बीता !"

चौधरी फ़तेहअलीजी ने बात वाजिब न समझी—"सहजे से। इलमदीन, खबरे क्या बात है कि हुक्के की चिलम की तरह भखते ही रहते हो ! असल बात तो यह कि रियासत देसी जो भी हो, अंग्रेज के राज के तुल नहीं। झूठ क्यों कहें, अँग्रेज के क़ानून मे शेर-बकरी एक घाट पानी पीते हैं।"

मुंशीजी डटे रहे—"चौधरीजी, असल बात पर आने दो मुझे। कश्मीर शाह बुरा नहीं, वहां के पण्डित पीरजादों ने अन्त मचा रखी है। वहां कोई एक मामला-कर है ! औरंगजेब का तो जजिया हुआ न मशहूर, वहां जर्रे-निकाह, जर्रे-चोपान, जर्रे-चोबफरोशी, जाफ़रानफरोशी, पश्मफरोशी, पम्बफरोशी—"

मुंशी इलमदीन यकायक ऐसे भड़के कि मजलिस की लिहाजदारी भूल ताबड़-तोड़ बोलते चले—"और तो और, मुसलमीनों को हथियार रखने की इजाजत नहीं।"

चौधरी फ़तेहअली और जहांदादजी ने अपने-अपने हुक्के उठाये और उठ खड़े हुए—"चलें शाहजी, मुंशीजी ने आज ऐसी खट्टी डकार मारी है कि सिर को चढ़ गयी है।"

शाहजी सिर हिला-हिला हँसे—"भरम न करो चौधरीजी ! मुंशीजी, ये तो फेर तवारीखों के ! जजियें लगे, कर्मा लगी, पर रियाया हिन्दुस्तान की क्या अपने वतन छोड़कर कहीं और चली गयी ! रब्ब आपका भला करे, खानदाने-मुगलिया में भी सभी तरह के शाह-बादशाह हो गुजरे हैं। बाबर जैसा पुज्ज के बीबा, अकबर जैसा नेक-दिल और औरंगजेब जैसा संगदिल—"

सुनकर गण्डासिंह रौ में आ गये, "मैंने कहा जहांगीर की तो जद्दी पुश्त बदल गयी ! बाप खैरों से अकबर जैसा सच्चा मुगल और मां सुच्ची रजपूतनी। खून की तासीर तो बदलनी ही थी न, बदली ! अब बताओ मुंशी इलमदीनजी, है कुछ जवाब आपके पास !"

"लो बादशाहो, अपने पिण्ड के बरखुरदारों ने खोदा भी तो सीधा कोह सुलेमान ही खोद डाला। दुनिया पहुंची अबादान, अफ्रीका, कनाडा और ये नालायक़ जा पहुंचे हैं लाहोर टेशन! सारी वर्दियां छोड़ के पहनी तो वर्दी लाल पहनी!

शाहजी के माथे पर बल पड़ गये—"मुहम्मदीन, किसकी बात करते हो!"

"वही जी अपना मेहरअली और मल्लाहों का खुदिया। दोनो नालायको ने मिलकर मता पकाया और दोनों जा पहुंचे है लाहोर। नाई रमज़ान ने चोरीं-वाली के दीने के हाथ रुक्का भिजवाया है कि दोनों सामान ढोने पर लगे हैं टेशन पर!"

फ़तेहअलीजी कई देर खांसते रहे—"देखो, दोनो तगडे जवान। घर-खेत ही छोड़ने थे तो फौज की भरती बुरी थी! जाना ही था तो नालायक हांगकांग-शंघाई जाते। मार दुनिया अफ्रीका पहुंची है। अहमकों ने पंतरा डाला तो वह भी लाहोर टेशन का। ओ कनाड़े रेल पड़ रही थी—राहदारी ले के उधर ही मुंह कर लेते। चंगा कमाते-खाते!"

कृपाराम नालायकों की हरक़तें हंगालने लगे—"लाहोर किसी मार पर गये है। नाई रमज़ान इन्हे कही सब्ज़ बाग दिखा गया है। एक शाम खेत से मैं लौटा था तो खट्टे वाले खू पर खड़े तीनों बातें कर रहे थे। मैं उधर से लंघ पड़ा। नाई रमज़ान लडको को हँस-हँस बता क्या रहा था—गुल-गुलाब और केतकी-शराब! अब आप समझ लो कि मामला यह शुरू हुआ तो कहां से हुआ! फ़रमान अली, तुम्हारा लड़का है, आखिर कुछ तो पता तुम्हें भी होगा ही।"

फ़रमान अली बड़ी सोच मे—"शाहजी, मेरी तो अक्ल-बुद्ध ठिकाने नही। दिल बड़ा उदास है। जिसका पुत्तर घोडे की सवारी करने के काबिल हो वह टेशन का टट्टू जा बने तो बाप का दिल हँसेगा तो नहीं। रोयेगा ही न!"

नजीबे ने हमदर्दी जतायी—"चाचा, सुनकर मेरा अपना दिल बड़ा खट्टा हुआ। मेहरअली का क्या चेहरा-मोहरा! तरह से पहन-पचर के निकले तो नवाब-ज़ादा लगे। देखो, लड़कों की मत ही मारी गयी नही तो यहां कमी क्या थी!"

जहांदादजी बोले, "एक बार सोच भी लिया जाये कि जवान-जहान लड़के हैं, पिण्ड से बाहर निकलना चाहते हैं। यह तो कोई नुक्सवाली बात नहीं। बाक़ी बात बुरी तो सामान ढोने की है।"

कर्मइलाहीजी ने सिर हिलाया—"रेलगड्डियो ने भी तो अन्त मचा दी। उठे बन्दे किसी-न-किसी तरह टेशन तक पहुंच गये। जा बैठे डिब्बे में।"

"चौधरीजी, भाड़ा तो भरना पडता है न सफ़र करने का! मेरी आंखो-देखी नहीं पर सुनने में है कि रमज़ान लड़कों को पनपड-नांवा दिखा-गिना गया है।"

"बादशाहो, रेलों के जाल बिछा दिये अंग्रेज ने। जितनी गाड़ियां उतने टेशन,

जितने टेशन उतना आदम उतरेगा। चढ़ेगा। साथ पण्ड-पोटली भी लायेगा।"

फ़रमान के साथ अल्लाह् रक्खा भी आन बैठा था। कहा, "टेशन गुजरात का मेरा भी देखा हुआ है। एक बात समझ नहीं आयी कि मुसाफ़िर आप उतरें गड्डी से और भार-असबाब कोई दूसरा उठाये। अपने पिण्डों के लोक उतरें, कोई गण्ड-पोटली हो तो सिर पर रखी और बाहर निकल आये। शहरियों की दूसरी ही चालें। ढोइयों ने सामान ढोया हुआ है सिर पर और शहरिये खच्चर खाली हाथ पीछे-पीछे चले आते हैं ज्यों दिवाला निकला हुआ हो।"

कर्मइलाहीजी बोले, "फ़रमान अली, लड़का तुम्हारा शुरू से ही तेज-तर्रार है। दिमाग में कुछ कणी तो है न उसके। हर फ़सल पर यही कि करेंगे खेती तो मालकी पर! फ़रमान अली ने बांधकर रखा हुआ था। मौक़ा लगते ही निकल पड़ा।"

"शाह् साहिब, पुत्तर तो मेरा है पर मुझे किसी और का लगता है। या मैं इसका बाप नहीं या यह मेरा पुत्र नहीं।"

"सहजे से फ़रमान अली, उसका लाहौर जाना कोई इतनी दोखवाली बात नहीं। वह पुत्तर क्या जो बाप से आगे न निकल जाये!"

"शाह् साहिब, अब क्या बताऊँ आपको! उसकी तरफ़ से मैं माफ़ी मांग लूंगा। लड़के के दिमाग में बस हुज्जत फ़ितूर बैठ गया है कि कर्ज़ में पड़ी जिमियों की मालकी हमारी है। लाख समझाता हूँ—पुत्तर, हम शाहों के देनदार हैं। उसकी एक ही रट्ट कि खानी है तो मैंने पूरी तऊन ही खानी है, नहीं तो मैं भूखा ही चंगा!"

मौलादाद कुछ सोचते रहे। बोले, "शाह् साहिब, ऐसे जातक को पांच-दस जमातें टपवा देते तो चंगा था। अक़्ल-बुद्ध में तेज है।"

"बराबर चौधरीजी, बताता हूँ बात क्या हुई है। बैठा-बैठा हवेली की ओर देख एक दिन कहने लगा—अब्बू, घर ऊंचा पक्का हो, तबेले में माल-डंगर हो और खूंटे पर एक घोड़ा हो, जिमियाँ अपनी हों, फिर और क्या चाहिए बन्दे को!

"मैं इस बिगड़ैल बरज़ोरी से बड़ा त्रबका। मैंने हवाई घोड़े की लगाम खींच दी—पुत्रा, तू चाहता है तो जुड़ क्यों न जायेगा! पर चन्ना, समय तो लगेगा न! मैं नहीं देखूंगा, मेरे पुत्र-पौत्रे देखेंगे। मेहरअली, अल्लाह् बेली ने नज़ारा य तेरे लिए जोड़ भी दिया पुत्रजी, तो फिर तुम्हें गुलडोडी भी चाहिए होगी! वह ‹ गयी तो फिर गुल-फुल्ल! बनते-बनते नवाब मेहरअली भी हो गया तू तो फि एक रियासत चाहिए होगी! पुत्तरा, अरमानों की हदें नहीं। आज यह, कल व बन्दे का सब्र ख़त्म हो जाता है!

"शाहजी, लड़के पर जिन्न सवार हो गया। बिफर के पड़ा—'बन्धे' प जिमियाँ तुम ही बाहो-गाहो। फ़सल कटे तो ढेरियाँ लगाओ-बनाओ। आज पं

मैंने न यह काम करना, न इस उधार के खोबे से लंघना है !'

"बहुतेरा समझाया कि बरखुरदार, तेरी यह तिलमिलाहट-तल्खी मेरी समझ मे नही आयी। आखीर को शाहों से रुपया हमीं ने मांगा-उठाया। उनकी तरफ से कोई बदसलूकी नहीं ! पुत्तरजी, हम गये मांगने और उन्होंने हमारी मदद को दिया। बस इतना ही न !

"शाहजी, इसके बाद तो लड़का हुदबद-हुदबद करता ही गया। मां ने भी समझाया कि मेहरा, सब्र से खा-हंडा। ऊंची अक्कड़ें-यक्कड़ें मार के जट्ट न नवाब बने, न शाह !"

काशीशाह ने छिपी-दबी नजर बड़े भाई पर डाली। माथे का तेवर हौले-हौले गहराता रहा।

जहांदादजी ने पूछा, "इस हिसाब से तो तुमसे पूछकर ही गया है न !"

"यही समझ लो। रात-भर भुनभुनाता रहा।"

फरमान अली भुंजे बैठे-बैठे शाहजी की मंजी के पास आ ढुका और कहा, "शाहजी, पुत्त जो कहता है वह मुझे गलत ही गलत लगता है, पर एक बात कहता हूं कि जवान लड़का है। जवानी की बात तो मच्छरी घोड़ी जैसी हुई कि पहुंचना है तो मैंने कोह-काश ही पहुंचना है नहीं तो मैं खाई मे जा गिरूंगी। नालायक़ ने बाप की ज़िद से लाल वरदी पहन ली।"

मुंशी इल्मदीन को जाने क्या सूझा। चमककर कहा, "असल कुढन तो लड़के के दिमाग़ मे यही कि ज़मीन की मालकी हाथ मे नही ! बाबे-दादे ने कर्ज़ उठाया तो उसका क्या कसूर ! इन्ही तहक़ीकों से लड़-झगड़कर गया है !"

फ़तेहअलीजी ने हाथ से इशारा किया—"चला ही गया है तो खैर सदके देखने दो लाहौर के भी मौसम-बहारें।"

"मुझसे पूछे कोई तो इन दोनों जोड़ीदारों को बीबी अनारकली खीच के ले गयी है। चक्कर सारा रमज़ान का चलाया हुआ है। बयान करता रहा वहां की हसरतें-बरक़तें। बन्दा हो प्यासा-तिरहाया तो आप दौड़-दौड़ जाता है पानी के पास। ये तो गबरू जवान ठहरे। पीने को दरिया भी कम !"

मौलादादजी बडी लिहाज़दारी से शाहजी से नजर चुराये रहे।

शाहजी ने नजीबे और कक्कूखां से पूछा, "कूएं की क्या रंग-बहारें हैं। माल-टिण्डे अच्छे डलवाये हैं न !"

"जी। शाहजी, डिब्ब की माल डाली है। टिण्डे अपने फत्ते ने दे दी। चंगी पकी हुई हैं।"

नजीबे ने शाहजी की शुक्रगुज़ारी करनी चाही—"एक बात कहता हूं शाहजी, कि कूओं को भूल-भाल नहरें ही सरकार के ख्याल पड़ गयीं। अपने रहट लू क्या बुरे ! अल्लाह के फ़ज़ल से एक लू से कई एकड़ ज़मीन सिंच जाती है। मार

सैंकड़े खू वीरान कर सरकार ने नहरें बिछा दीं। बैठे-बिठाये बखेड़े डाल दिये न!"

"बखेड़ा क्यों, करामात कहो! ऐसा कमाल तो आदम के हाथों आज तक न हुआ। मार बरानी बरेती ज़मीन में सब्ज़े उगा दिये।"

"लो जी, खड़के से तो अपने ढोंकलसिंह लगते हैं। जूती यह उन्हीं की है। आओ पटवारीजी, आओ। पटवारीजी, नहरों की वजह से अपने दरियाओं की बड़ी महिमा-मशहूरी।"

"सही है जी। अपने चनाव की नहरों ने मिश्र के दरियाये-नील को पछाड़ दिया है। खाली चनाव की नहरें ही कुल तीन लाख एकड़ ज़मीन की सिंचाई करने के काबिल हैं।"

"हैयी शाबाश ऐ! पानी ही पानी! बरकतें हो गयीं न!"

मैयासिंह सजग हो बैठे—"बरकतें ये तो खुदाई हुईं। लगा छोड़ी रब्ब ने सूबा पंजाब को। दरिया न बहते होते इस धरती पर तो सरकार फिरंगी क्या रेती से पानी खींच सकती थी!"

शाहजी बोले, "इससे जुड़ा एक और राज़ है। सरकार अंग्रेज़ी ने जब नहरें *निकालने की ठानी तो अर्ज़ी-परचे पर चनाब और जेहलम की ठन गयी।* दोनों का मुकाबला हो गया।

"चनाब अपना बड़ा रौबीला दरिया मगर माहिरीन ने कहा—दरिया के पैंदे में मज़बूती नही। उधर जेहलम भी भारा-गौहरा ज़ोरावर, पर आखिर को फ़ैसला चनाब के हक मे ही हुआ!"

कर्मइलाहीजी ने खुशनुमाई की—"हकूमत की सिफ़तें तो कम नहीं। दरिया चनाब पर आठ मील लम्बा पुल बना के रख दिया।"

दीन मुहम्मद बोले, "नहरें तो सरकार ने इसलिए दी न कि जट्ट किसान के हालात बेहतर हों। नहीं तो बड़े-बड़े दरिया-पुल हकूमत ने सिर पर उठाकर लन्दन तो ले नहीं जाने!"

शाहजी ने कुछ गहरी डुबकी मारी—"इसकी एक वजह और भी थी कि सरकार काश्तकारों को शाहों के चंगुल से बचाना चाहती थी। ज़मीनों की मालकी-वाला कानून इसी की पेशकदा थी।"

जट्ट आसामियों के दिलों में खुसपुसी होने लगी पर शाहों का मुंह-मुलाहज़ा रखने को मौलादादजी बोले, "शाहजी, यह तो चंगा है सरकार ने अपने सूबे के लिए नहरों के पानी मोड़-जोड़ दिये, पर यह कोई अंग्रेज़ की अनोखी प्राप्त नहीं। पहली हकूमतें भी कूएं-नहरें खुदवाती रहीं।"

काशीशाह ने कहा, "शाहजहां वक़्तों में अली मरदान ने कई नहरें निकलवायीं-बनवायीं।"

और तो और, लाहौर के शालीमार बाग को सींचने के लिए उसने रावी से नहर निकाल दी थी !"

शाहजी ने तार पकड़ा—"हाजीवाह नहर ले लो। दिवान सावनमल के कारदार गुलाम मुस्तफा खाँ ने बनवायी थी अपनी जिमियों की सिंचाई के लिए ! दूसरे भी पानी लगा लिया करते थे।

"गुलाम मुस्तफा के फौत होने के बाद नहर सरकार ने सँभाल ली। टब्बर पीछे पड़ गया। उठाके सारे लड़कों ने सरकार पर मुक़द्दमा दायर कर दिया। कई साल झगड़ा चला। आला अदालत लन्दन में जा पहुँचा। कुछ साल हो गये हैं, खबर निकली थी कि गुलाम मुस्तफा के टब्बर ने मुक़द्दमा जीत लिया है।"

फ़तेह अलीजी चिमटी से चिलम फलोरते रहे, फिर कश खींचकर कहा, "कुछ भी कहो, इन्साफ सरकार का बुरा नहीं !"

गुरदित्तसिंह अपनी रौ में शुरू हो गये—"लाहौर के शालामार बाग को महाराजा रणजीतसिंह ने शाला बाग का नाम दे दिया। फ़रमाया—शालामार क्यों ? सीधा-सादा शाला बाग क्यों नहीं ! और सुनो, महाराजा के हुक्म मुताबिक हँसली नहर को अमृतसर तक खींचा गया। वजह यह कि हरमन्दिर साहिब का सरोवर बारहों महीनों भरा रहे।"

मीरांबख़्श का ध्यान गण्डासिंह की ओर मुड़ा—"क्या बात है खालसाजी, आज चुप्प-चुप्प नज़र आते हैं !"

"सुन रहा हूँ, सुन रहा हूँ। अपनी बादशाहतों की शान-बान के लिए बादशाहों को भी कई कुछ ऊपर-हेठ करना पड़ता है ! किसी ने मक़बरे बनवा दिये, किसी ने दरवाज़े बुलन्द, किसी ने किले उठवा दिये, किसी ने महल-सरोवर—हुकूमतों का यह कर्म-कारज तो चलता रहता है न !"

ढोंकलसिंहजी ने सिर हिलाया—"यह तो हुई न हकूमती धमक-धमक, बाकी जट्ट किसान को बीज-पानी की सहूलियत न हों तो बताओ कौन खेती करेगा ! और कौन मामले भरेगा !"

कर्मइलाहीजी बड़े खुश हुए—"बात तो खरी है। सच पूछो पटवारीजी, तो हकूमत के साज-बाज और ताज सभी कुछ रहा-गमामा जट्ट किसान की कमा-कारी से।"

गण्डासिंह बोल उठे—"मैंने कहा ज़रा थोड़ा-सा राह-रास्ता खोलो ... डालो। मान लिया जाये कि काश्तकार सरकार के हाथ हैं तो मुँह ... का फ़र्ज़ें।"

जहाँदादजी बहुत खुश हुए—"ओर-गलटन हकूमत के ...

पलड़ा दोनों का भारी है।"
काश्त मुल्क की खाद-खुराक । मौलादादजी ने ग़ौर कर नयी बात निकाल ली—"ढोंकलसिहजी, सरकार ने
इतनी नहरें निकाली, दरियाओं पर बांध बांधे, पर अपनी जहाजरानी का का
क्यो ढिल्ला कर दिया ! सरकारी वेड़ा माल-असबाब ढोता रहता था !"
"बराबर बादशाहो । सरकारी वेड़ा लाहोर से सामान लदाकर करां
पहुंचाने का लेता था एक रुपया मन । और मुल्तान से करांची आठ आने मन
लाहोर से करांची पहुंचने के लगते थे पूरे ३५ दिन । और तो और, माल पेशा
से करांची भी उतरता था । अटक से छोटी वेड़ियों मे मखद, कालाबाग़ अ
कालाबाग़ से सक्खर। सक्खर से सामान फिर चढ़े सरकारी वेड़ियों मे । वहां
कोटरी, फिर कोटरी से रेल मे करांची ।"
छोटे शाह बोले, "लाला वड्डे बताया करते हैं कि उन दिनो माल-अस
की राहदारी मिठन-कोट बना करती थी । और जहाजरानी की मशहूर
किश्तियां थीं—जेहलम, चनाब, नेपियर, रावी और व्यास ।
"रावी वेड़ी खास पंजाब लाट के इस्तेमाल के लिए रखी गयी थी। पहली
बार रावी चला है मखद से सक्खर और फिर वापिस सक्खर से मखद पूरे ५८
दिनों मे ।"
"दो महीने ही हुए न !" फ़कीरे ने पूछा—"शाहजी, वेड़ियां तो जेहलम की
भी बड़ी मशहूर हैं।"
"सही है । अबू अली बू अली ने बेशुमार वेड़ियां बना डाली । बड़ा नाम
कमाया है।"
अल्लाहरक्खा पूछ बैठा, "जेहलमी वेड़ी की क़ीमत कितनी पड़ जाती होगी?"
"यही कोई पांच-छः सौ ।"
"एक वेड़ी कितना भार-बोझ उठा लेती है ?"
"चार-पांच सौ मन ! अपने दरिया मे जो पडती है वेड़ियां, वे ज़रा छोटी हैं।
माड़ी खोखरियां कुल्लूवाल, भक्खरायली, सोदरा, खानके, सादुल्लापुर, कादिराबाद
आती-जाती रहती हैं । किराया भी बड़ा वाजिब है जी । बन्दे बच्चे का तीन पाई,
काठीवाला घोड़ा एक आना तीन पाई, गाय-भैंस छ:-छः पाई और भेड़-बकरी तीन-
तीन पाई । यह तो हुई न वेडी की बहार, चढ़े और पार । जाना हो स्यालकोट या
जम्मू, पार उतरो और थोड़ा पैण्डा-पैदल मार लिया और दिन ढलते अपने पहुंचे
बनो । जाये मनुक्ख रेल से तो आज का चला-चला कल से पहलें न पहुंचे !"
शाहजी ने छोटे भाई से कहा, "काशीरामा, एक और वेड़ी बनवा डालो जेह
लम से । लगी रहेगी कण्डे । वेले-कुवेले काम आयेगी । क्यों जहांदादजी !"
"शाहजी, नेक इरादा है। बारात-जंज की अगवानी के लिए ज़रा दस
दिखावा तो हो न अपने पिण्ड का भी !"

कृपाराम बड़े शोर-शराबे से हँसे—"मैंने कहा हवा में बन्दूक दागने गण्डासिंह और जहाँदादखाँ अपने हुए ही मौजूद ! फिर कमी किस बात की !"

"चलो, यह भी देख लेंगे ! लाले दड्डे की निक्की पोतरी का ब्याह सुदनेवाल है। देखते है क्या रंग लगाते हो उसके ब्याह मे !"

मैंयासिंह शुरू हुए—"लाले दड्डे से सुनी-सुनायी सुनाऊँगा।

"जेहलम बेड़े का कमाण्डर था पैंक साहिब। गोरा-चिट्टा और मुँह पर मूँछे सुनहरी। एक जट्ट खलासी भरती हुआ बेड़े पर। इत्तफाक ऐसा हुआ कि कप्तान जब सामने आयें, खलासी खड़ा-खड़ा तकता रहे। न हाथ हिलाये, न बन्दगी, न सलाम।

"साहब कुछ दिन तो देखता रहा। एक दिन पूछ ही लिया—'क्या बात है, तुम्हें सलाम करने की आदत नहीं !'

"जट्ट अपनी जात का फट्ट। बोला—'साहबा, यह कसूर आपकी मूँछों का है। निक्की-निक्की बेमालूमी, न रौबदाब, न दबख मरदाना। बुरा न मनाना साहब, आपकी मूँछें ऐसी हैं कि किसी ने छल्लियों से निकाल बुढ़िया का झाटा लगा लिया है।'

"पैंक साहिब बड़ा हँसा।

"जट्ट खलासी और चढ़ गया ! साहबजी, जेकर हों मूँछें काली तो हाथ अपने-आप उठता है सलाम को—जो हों खिचड़ी तो सिर रत्ती-भर झुक जाता है। पर इस बुढ़िया के झाटे का कोई क्या करे ! मूँछें ही मुँह की बच्चा लगने लगती हैं।' "

बड़ा हास्सा पड़ा !

"ताया मैंयासिंह के पास एक-न-एक बात गुत्थली मे छिपी रहती ही है !"

शाहजी ने फरमान अली और अल्लाह रक्खे को उठते देखा तो पूछा, "पिछले हिसाब पर लकीर फिर जाये तो मेहरअली सँभाल लेगा न जिवियाँ अपनी ?"

फरमान को कुछ न समझ में आया।

"फ़रमान अली, लड़के को लाहौर से वापस बुला लो। जिवियों की मालकी ही चाहता है न, तो यही सही ! वह अड़ के बैठा है अपनी जिद पर तो इस बार उसको मान लेते है !"

मौलादाद और फ़तेहअलीजी बड़े खुश हुए—"वाह-वाह, रब्ब सलामत रखे आपको शाहजी ! क्या फ़ैसला दिया है !"

फ़रमान अली का मुँह न खुला। हाथ उठा शाहजी को सलाम किया, गीली आँखों से दोनों शाहों की ओर देखा और हवेली से क़दम उठा लिया।

कर्मइलाहीजी अपना हुक्का हाथ में ले उठ खड़े हुए—"शाह साहिब, बड़ा मुबारक फ़ैसला किया है आपने ! लड़का मेहरअली अपनी धुरी से थिड़का हुआ

है। फरमान के बस में न लड़का और न लड़के की अक्ल। बरकतोंवाला दि
आपका, उठा के हौले से बख़्श दिया ! वाह, बात हुई न!”

•

एक दुपहरी कुटिया के पाठी भाई भागसिंह के नाम इकोत्तर सौ का आर्डर आन पहुँचा तो पिण्ड में रौला पड़ गया। सरनावाँ मुल्क व का और भेजनेवाले बजाजी भाई गज्जनसिंह और दर्शनसिंह।

“देखो लोको, भाइयों ने कैसा सोहणा काम किया ! परदेस पहुँच के र के दरबार में भेंटा भेजा है।”

“खट्टी कमाई चंगी हो गयी होगी। तभी कुटिया में चहबच्चे बनाने को भेजा है एक-सौ एक।”

“है री, धन्य है मा जम्मनवाली। कुछ भी कहो, ताया रुढ़सिंह का टब्बर चंगा वाह-वाह निकला है।”

“ताया रुढ़सिंह और चाचा देवीसिंह कन्घे-परान्दों की फेरी लगाते थे ग्रां-ग्रां। गज्जन और दर्शन बड़े हुए तो लुंगी फ़कीरी और अनारदानी बेचने लगे। खबरें किसी के कहे-सुने मुलतान जा पहुँचे। जल्लाखोरी और लुंगी चौटाली की गाँठें ले आये। बस फिर क्या था, भाग लग गये ! बजाजी की चंगी हट्टी डाली। छींटें, बून्दरी मूसी, सतकणी गुमटी—इलाके-भर के लोग खरीदारी करने आने लगे।”

“उन्हें यहाँ क्या कोई कमी थी ! पर देखो, दोनों भाई खट्टने-कमाने पहुँचे भी तो विलायत के विलायत !”

सुबह-सवेरे शाहों की कूईं पर नहाती जनानियों के मुँह पर यही बात—

“सन्तो-बन्तो की बधाइयाँ तो पक्की। कोई छोटी-सी बात नहीं। मैं तो गिरी-छुहारे का सगुण डाल आऊँगी।”

“खैर सदके, मुबारकें तो देवरानी-जिठानी की पक्की, पर कोई पूछे, जने समुद्रों-पार गये तो सबसे आसीसें ले के जाते।”

“यह तो सच कहती हो। घरवालियों से जब पूछा, यही जवाब कि माल लेने दिसावर गये हैं।”

“मल्ला दोनों बड़ी चुप्पड़ियाँ हैं। किसी को कानो-कान खबर नहीं होने दी।”

हाथ से निक्की पीठ मलते-मलते चन्नी की भाभी बोली, "बन्दा दिसावर को निकला तो लाहौर नहीं तो पिशौर। कोई आगे चला गया तो काबुल-कन्धार। ये सीधे ही जा पहुँचे विलायत !"

"अपने ताये भागसिंह के पुत्तर बरसों से शंघाई गये हुए हैं। परते ही नहीं। दरवाज़े घर के ऐसे बन्द हुए कि खुले ही नहीं।"

"सिहों की घरवालियाँ पहले ही चूड़े छनकाती फिरती हैं, और गलबा चढ़ आयेगा !"

"हाँ जी, घरवाले बुटकी अशरफ़ियों की पण्ड समेट के ले आयेंगे तो क़दम सरदारनियों के कोई थल्ले-थल्ले थोड़े रहेंगे !"

कुईं के आगे से लाहबीबी निकल पड़ी। चबूतरे के हेठ खड़े-खड़े कहा, "पानी की मछलियो, आज तुम्हारे नहान-स्नान में देर कैसे हो गयी !"

मेहंदी-लगे बाल, सिर पर काला दुपट्टा, गोरे-चिट्टे पके चेहरे पर बिल्लौरी अँखियाँ !

"धियो, आँख मलते-मलते पानी-तले आ बैठती हो। रात-की-रात तुम्हारे पिण्डे मैले हो जाते हैं क्या !"

हिन्दुआनियाँ हँस-हँस गयीं—"माँ, तुम हमारी वड्डी-वड्डेरी ! आप ही बता, है हमारा मुँह कुछ कहने का !"

लाहबीबी ने खुलासा कर दिया—"माहिया, शर्म आती हो तो न बताओ अपने छल-छिद्र। तुम्हारे गबरुओं से तो पूछने से रही !"

जनानियाँ हल्की फुल्ल हो मुखड़ों पर छींटे मारने लगीं।

लाहबीबी ने छोटी शाहनी को बताया—"ऊपर हो के आयी हूँ। शाहनी और चाचो धर्मशाला गयी होंगी। बरकती को पकड़ा आयी हूँ घी की झाबरी।"

"माँ, निक्के-न्यानेयों के लिए थोड़ा-सा घी रख लेना था। अभी तो पिछले हफ़्ते देकर गयी हो ! चलो, मैं दाने तो दूँ तुम्हें !"

लाहबीबी टकार से बोली, "इस बार दाने नहीं मैं लेती। हँडिया लाती हूँ घी की किसी मार पर ही। मैंने कहा पुत्तर से कह छोड़ना, सौ सैकड़ा लेकर ही हिलूँगी। उसके बिना मेरा काम नहीं सरता।"

लसूढ़ेवालों की प्यारी अपने ध्यान में ही कोच्छड़ों की धनदयी के पास ढुक बुड़बुड़ाती रही—"हैं री, इन अरोड़ों का न पूछ ! दाँत से दमड़ा पकड़ते हैं। सात समुद्रों के पार को भी कोई 'दस्स' डाल दे तो जा पहुँचेंगे ! पैसे के तो पीर। आख्यान है न—कमर कसी अरोड़ेयाँ और पौना कोह लाहौर।"

बेबे किच्छी की मँझली बहू ने घड़ा भर सिर पर रखा। दो छोटी गागरें दोनों ओर बाँहों में टिकायीं और पाँव उठाकर बोली, "यह चोली-ठोली किस काम की ! बन्दा गोला बन के कमाये और राजा बन के खाये। फिर, सच पूछो तो ये

ही दोनों भाई अनोखे परदेस नहीं गये। शाहों की बहन बजोरो का घरवाला अफ़ीका पहुंचा हुआ है।"

छोटी शाहनी ने बड़ी क़द्र से नन्दोई की तरफ़दारी की—"हैं री लाजकौरे, लज्ज बांध घड़े को कूएँ में न डालें तो पानी का घूंट मुंह में कैसे पड़ेगा! फिर जो जिगरा कर समुद्रों पार जाने की सोचे, वह खैर सदके जाये। किसी के हाथ माया लगे तो हम क्यों झीखें-झुरें!"

लाजकौर कूईं से नीचे उतर गयी तो मोहरे की बेबे हाथ मलने लगी—"लो देखो हुम्मा वधूटी का! खजूरी की पक्छियों में खट्टी कमाई चंगी हो गयी लगती है!"

लाहबीबी ने मोहरे की बेबे को लताया—"व्यापारियों-हटवानियों के यही तो रफड़। एक बार नावां हाथ आया तो फिर हुड़क—और आये! और आया—अब और आये! और आया—अब और आये! और भी आ गया तो खसमाखाना और आये! दौलत-दमड़ों की बड़ी तृष्णा!"

मो

लगी!

बरक़त,

लाहबीबी छोटी शाहनी को देखकर हंसने लगी—"माहिया, यह हमें क्यों बताती है! यह धनाढ़ बैठी है शाहों की घरवाली—"

छोटी शाहनी मुंह पर उबटन मलती थी। झूठमूठ के तेवर चढ़ाकर कहा, "जिवियां तो सरकार ने जट्टों के हाथ में दे दीं। अब मेहनत करो और दानों से कोठे भरो।"

लाहबीबी हंसकर बोली, "सरकार ने दीं तो जिवियां जट्टों को, पर धिये! जट्टों की जिवियों में तो कल्लर पड़ा हुआ है सूद-ब्याज का। तुम ही बताओ, मेहनत-मजूरियां क्या काम आयेंगी! हर किसी का लेखा-जोखा फरमान अली जैसा

बराबर

लाहबीबी खुश हो गयी—"क़ुर्बान तेरी अक़्ल पर धिये, चज्ज-सलीके की बात करनी कोई तुमसे सीखे! माहिया, पैसे-धेले की गरमाई बड़ी! जट्ट-पुत्रों में क्या हौंसला नहीं! चोखा है, पर धिये, बिना हथियार क्या करें! इनके पास न वल्ल-बुखारे की खट्टी और न घर की मरजाद! फ़सल आयी और जट्ट ने खायी-चबायी।"

छोटी शाहनी से न रहा गया—"बुरा न मानना मां, दीनिये तुम्हारे मौज-

मजा नहीं छोड़ते ! आया, खा-पी डाला। झूठ कहती होऊँ तो बता !"

"दिये, सोलह आने सच्च ! बात ऐसी है कि खुदा-बन्दा ने भी हिन्दू-मुसलमानों को एक-न-एक रोग-मन्नामत लगा ही छोड़े हैं। दीनिये अपने जन के पीछे और पूजापाठिये ज़र के। पर माहिया, दमड़ों से भूखे पेट नहीं भरते। पेट भरते है दानों से। चगा धिये, मैं चली !"

लाहबीबी के पीठ मोड़ते ही मोहरे की बेबे बोली, "बड़ी मारखान जट्टी है। मैं जिस साल ब्याह के आयी हूँ, घरवाला इसका शेरू खेत में था। साथ का खेत इनके शरीक खेरू का था। उसने उठाकर आवाज़ दे दी—'मेरे खेत का बन्ना तोड़नेवाला तू कौन !'

"बस, इसके घरवाले ने आव देखा न ताव, मारी डाग खेरू के सिर और वह वहीं ढेर हो गया ! जब सुनायी गयी उमर क़ैद तो लाहबीबी कोठे जा चढ़ी और ज़ोर-शोर से बोलने लगी—'हुई क़ैद तो क्या हुआ ! पहलवान निकला ! आप गया है अन्दर, तीन शेर छोड़ गया है मेरे पास !' जट्टों के दिमाग़ों में तल्खी की फिरकी घूमती ही रहती है !"

गीले बदन पर झग्गा डालते प्यारी बोली, "छोड़ बेबे इन्हें। अपनी बात कर। दौलत-माया की ख़ातिर घर सुजे छोड़ घर के खसम पराये मुल्कों जा बसें, हमें तो नहीं यह सरता ! न चूल्हे-परांत का वक़्त-वेला, न हँडिया-तन्दूर का नियम। सरदी-गरमी घरवालियाँ उडीकों में बैठी रहें।"

शानो की भाभी को न भायी यह बात—"अरी, जाती ही है न दुनिया ! निरंजनसिंह अपना हागकाग पहुँचा हुआ है। मार शंघाई और चमकी के थान गुजरावालियों को भेज-भेज मालामाल हो गया है। जनानी को भी ले गया हुआ है साथ !"

सत्तो को अपने पीहर की याद आयी। बड़ी तन्न से कहा, "नहरोंवाले नौदौलतिये भी कम राजी नहीं। कच्चे कोठे-झुग्गियाँ छोड़ पक्के बँगले बना बैठे। औरतों की तो बात ही छोड़, मर्द बीस-बीस तोले के पीडे कण्ठे पहने फिरते है।"

छोटी शाहनी ने कपड़े निचोड़कर डोल में रखे और बोली, "जो मेहनत से जी-जान मार के कमाये, वह खैरों से क्यों न खाये-हँडाये। मनुक्ख की कम्म योनि है। उद्दम-हौसले से काम करे। कगला बन के झूरता रहे दिन-रात तो ऊपरवाला भी खुश नहीं होता। रब्ब भी कहता है—मनुक्खा, मैंने तुझे लाखों की तो जून दी, हाथ-पैर दिये और तू दलिद्री का दलिद्री बना रहा ! जा, तुझे मेरी तरफ़ से भी फ़ारखती !"

शानो की माँ पले-पले सिर हिलाती रही—"सच कहती हो शाहनी, सच कहती हो !"

"शानो की माँ, तू क्यों न सराहेगी बिन्द्रादयी के कहने को ! तेरा घरवाला

भी तो साल में दस महीने बाहर रहता है !"

"शानो के भाइयों ने चार-चार तोले के गोखड़ू बनवा दिये हैं, चलो किसी ढग-पज्ज काम आयेंगे ! बेबे, लम्बे बिछोड़े भी तो हमीं काटती हैं !"

खैराती की वहूटी का अन्दर-बाहर जल गया। ठीकरी से पैरों को रगड़ने लगी और मीठा सुर निकाल लिया—

"घर खावि रुखड़ी परदेस चुपड़ी
लाल मेरे, घर रुखड़ी खावीं।
दम्मा दे लोभिया परदेस न जावीं।"

मोहरे की बेबे बोली, "खैराती की बहूटिये, एक डोल तो निकाल दो, मैं ? पिण्डे पर पानी डाल लूं।"

बेबे की सूखी छातियां नीचे ढिलक आयी थीं, पर बहू-बेटियां लिहाज से आंखें चुराये रहीं। छोटी-सी जूडी बांध पानी डाला तो सबको सुनाकर कहा, "सन्तो-वन्तो के लच्छन देखो। गबरुओं के गये पीछे ऐसी बनी-ठनी रहती हैं ज्यों शहरनें हों। हाय-हाय, जिन्हें बिछोड़े पड़े हों, सांई जिनके परदेस गये हों, वे सतवन्ती नारें सूखकर कांटा न हो जायें ! कहते हैं न—

रणां चंचल हारियां
चंचल कम्म करन
दिने डरन बलाइयां
राती नदियां तरन।"

शानो की मां मच गयी—"बेबे, तेरे चित्त का कोई ठिकाना ! सन्तो-वन्तो ब्याही-परणायी है। रांगला दातुन न करें, या अंखियों में सुरमा न डालें, आप ही बता वे क्यों अपनी जिन्द तपाने-खपाने लगीं !"

मोहरे की बेबे ने आंखें सिकोड़ लीं—"धिए, मैंने बात की है भोले भाव ! मेरी तरफ़ से दिन-रात पोशाकें बदलती फिरें ! कंजरियों की तरह।"

बेबे के मुंह से कोई और भागी-भरा कथन न निकला।

बेबे ने कुएं से उतर घर की तरफ़ क़दम बढ़ाये। इधर केसरो बोली, "बुड्ढे वेले कप्पत्तखाना ! अपनी बहूटी का हाल देखे। ब्याही आयी थी तो ये लख-लख की आंख उसकी, अब देखो हड्डें निकल आयी हैं। निचुड़ गयी है लड़की।"

प्यारी आवाज़ धीमी कर बोली, "वधूटी को पानी की बीमारी है। खोखली हो गयी है। मैं एक दिन बेबे से कह बैठी—'गोंद की पंजीरी बनाकर खिला बहू को। इस रोग के लिए अकसीर है।' बहना, मेरे कहने की देर ! इस ज़ुल्मी ससि-योडी ने बहू का आगा-पीछा पुन डाला। बस बोलती जाये—'अरी नासहोनिये पड़ोसियों ने तुझे वर्क-मुरब्बे खिलाने थे जो उन्हें अपना रोग बताने गयी।'

"बहूटी डुसक-डुसक करती मंजी पर जा औंधी पड़ी। मेरे मन बड़ा पछोताव

लगा। पास जा बेबे से मनुहार की—'मुझे मेरे धी-पुत्रों की सौह चुका ले जो तुम्हारी वधूटी ने मुझसे बात भी की हो। कुंई पर बैठी कपड़े धोती थी तो उसके लत्तों पर नजर पड गयी। इसलिए कह बैठी!' तब कहीं जाकर बेबे ठण्डी पड़ी।"

इतने में बेबे फिर दबे पांव कुंई पर लौट आयी—"मैने कहा मेरे गले की छिगमाला कहीं नहाते गिर तो नहीं गयी!"

केसरो और प्यारी ने ओठों को मरोर दे आंखें मटकायी और बेबे की जूड़ी में उलझी माला देखकर कहा, "बेबे, तुम्हारे बालो मे फँसी है, निकाल लो!"

बेबे ने पोले मुंह पूछा, "किसकी बात करती हो बहूटियो!"

छोटी शाहनी ने नुकीला नाक ऊपर किया और बेबे को तड़पाने को कहा, "बेबे, तुम्हारी और तुम्हारी बहूटी की!"

बेबे सन्तनी बन गयी—"सत्तनाम, सत्तनाम! धियो, माया-दमड़ा भेजा गज्जासिंह ने बाबे के दरबार और तुमने मेरे घर 'तक्क' मार ली। मलला यह कोई बात चंगी तो नहीं न!"

धनदयी हँसने लगी—"बेबे, जिन्द-जहान के हिसाबों का निपटारा यहीं हो जाता है। ज़रा बहूटी की लगाम ढीली कर दे। सच्चे पातशाह के आगे सबकी पेशी होनी है।"

बेबे ने बुड़बुडाते-बुडबुड़ाते पाँव उठा लिये—"पेशी हो दुश्मन-वैरियों की। हमने कोई डाका मारा है या सेंध लगायी है!"

बेबे ने ऐसी वाक-वाणी निकाली कि बजाजी भाइयो की सच्ची-मुच्ची पेशी हो गयी हो!

सन्तो-वन्तो चाव-चाव अपने मरदों की शोभा से भारी-गौहरी, सुच्चे कपड़े पहने कुटिया माथा टेकने जा पहुंची। महमूदी मलमलो के किंगरी लगे दुपट्टों मे से गोरे-चिट्टे मुखड़े फब-फब पड़े। ठुड्डियों के तन्दोले ऐसे जाने ज्यो भागवन्तियो के मुखड़ों पर सगुणो के टिमके लगे हों!

आगे जा माथा टेका। दाता तेरी महरों के प्रताप, उनके मन की इच्छया पूर्ण हो। तुम्हारे सेवक बन कमाते रहें और आप जी के दरबार मे सीस नवाते रहें।

भाईजी ने भर-भर मूठ जातकों को प्रशादा दिया। कड़ाह प्रशाद मुंह लगा माथा टेका और खुशी-खुशी घरो को चली सन्तो और वन्तो।

छप्पड़ के पास शाहों का काम्मा बाग्गा आन मिला—"पैरीपोना भरजाई!"

"क्यों रे वीरा, माथा टेकने जाते हो?"

"न, तुम्हें बुलाने आया हूं। कोठे-कोठे शाहो के घर पहुंचती बनो!"

वन्तो ने मुंह का कपड़ा ऊपर किया—"क्यों रे, खैर तो है!"

"भरजाई, तुम्हारे सिहों ने मनीआर्डर भेजकर आप ही रफड़ डाल दिया है!"

"होश कर रे बागेया, कुछ होश कर! मरद अपने हाट-व्यापार करने गये हैं, कोई कत्ल-जुर्म करके नहीं भागे हुए!"

बाग्गा पास आ खड़ा हुआ—"मैंने कहा वरदीवाली पुलिस नहीं, खुफ़िया गारद आयी है!"

"हाय···हाय···" देवरानी सन्तो कुनमुन-कुनमुन रोने लगी, तो बन्तो निशंक हो बोली, "चुप री! रण्डी सरकार फिरंगी हमें क्या बेजुर्म ही सूली चढ़ा देगी!"

"मुक़द्दमे का मुँह-माथा पीछे, उसकी पीठ की छानबीन पहले। आख़ीर को तो अदालत के आगे पेशी-परचा होना है। खेल तो नहीं न कि मुकद्दमा भी चलता रहे और बन्दा तोड़-तोड़ बेर या ममोले खाता रहे।"

"पर बादशाहो, मर गये और मुकर गये का क्या इलाज! बात यह है कि फ़ौजदारी मामलों में स्वांग-नाटक में तेज़ी होती है पर यह दबादब का खेल थोड़े ही वक़्त चलता है। दूसरी तरफ़ दिवानी मुकद्दमों में मुवक्किल ढीला पड़ जाये, गवाह मर-खप जाये, पर मुक़दमे की मिस्ल आगे से आगे।"

"शाह साहिब, हम जैसे माहतड़-साथ यह कहें तो बात है, आप तो खैरों से यह खेल खिलानेवाले हुए!"

शाहजी हँसने लगे—"बात तो यह है चौधरीजी, कि पहली फ़ीस पहुँची मुवक्किल की वकील के पास तो वकील आगे-आगे और मुवक्किल पीछे-पीछे। बस ताना-फेरा शुरू हो गया कचहरी का।

"एक बार उस घर पहुँच जाओ तो फिर मुकद्दमे में शहादतें और शहादतों के जोड़-बन्द। पुलिस की तफ़तीश, वारदात की जिमनी, फौजदारी में चोटें ज़र-बात, दिवानी में सच्चे-झूठे दस्तावेज़ भीड़ लगाये रहते हैं। एक छोटी-सी घुण्डी इरादा-ए-क़त्ल को मामूली झगड़ा और मामूली झगड़े को सगीन जुर्म बना दे। सारा ताना-बाना तजुरबे का। पूरी शतरंज बिछ जाती है। गोटियाँ कभी सच्ची और कभी झूठी। कभी सच्ची बनायी जाती हैं और कभी झूठी करके दिखायी जाती हैं। बाक़ी रहे असल झगड़े-मुकद्दमे, क़ानून पर पूरे उतर जायें तो फ़ैसला

सही और खरा !"

चौधरी फ़तेहअली छोटा-छोटा हँसने लगे—"रब्ब आपका भला करे, खैरों से आपने अब तक कितने मामले भुगता लिये होंगे !"

शाहजी बड़ी आसूदगी से कुछ सोचते रहे, फिर हँसकर कहा, "यह हिसाब-किताब मुझ तक ही रहे तो चंगा ! बाकी यह समझ लो कि हर हफ़्ते कचहरी मे अपनी हाज़री-पेशी होती ज़रूर है।"

"शाहजी, कुछ मुकद्दमे तो जल्दी भी भुगत जाते होंगे !"

"मामला हो सीधा-सादा तो अदालत भी लम्बी-चौड़ी तराश-खराश नही करती। गुमान बनाम मुस्समात मुगलानी का मामला ले लो। मुगलानी का तलाक हुआ गुमान से और उसने पन्दरह दिन के अन्दर वज़ीरे से निकाह पढ़ा लिया। निकाह क्योंकि 'इद्दत' मे *पढ़ा गया था* इसलिए अदालत ने इसे गैर-कानूनी करार दिया और मुगलानी पर ५८ रुपया जुरमाना कर दिया।

"ज़काखान की तरफ से मुकद्दमा दायर किया गया कि हयातखां वल्द बोजा खां के पास उसकी वालिदा ने उसके पैदा होने से पहले और उसके वालिद के फौत होने के बाद ज़मीन बन्धे रखी थी। अदालत ने ज़मीन पर लड़के का हक बहाल कर दिया।"

नजीबे ने मुण्डी उठा शाहजी की ओर देखा—"शाहजी, इस हिसाब से मेहर अली के कागदों पर लीक मारकर आपने सही ही किया !"

शाहजी चौधरी फ़तेहअली की ओर देखकर हँसे—"नजीबे, ऐसा करने की वजह क्या थी यह चौधरीजी से पूछना—तुम्हें खोलकर बता देंगे।"

जहांदादजी ने पूछा, "शाह साहिब, फ़ज़लनूरवाले मुद्दकमे के बड़े चरचे हैं इन दिनो।"

कर्मइलाहीजी ने मुंह से हुक्का निकाला—"बड़ी कोजी वारदात है वह। सज़ा होगी नूर के बाप को ही !"

कृपाराम उचक के बैठ गये—"मामला क्या है बादशाहो !"

कंग गांव का गूजर शेरा, उम्र चालीस-पचास।

उसकी सगाई हुई साहबखान पिण्ड के खैरना की लड़की फज़ल नूर से।

कंग ग्रां से साहबखान कोई दस-बारह कोस था।

शेरा अक्सर वहां आता-जाता रहता। उस शाम भी आया। पोह-माह की रात। खैरना के घर से रोटी-पानी खा के निकला होगा।

शनीचर की रात पिण्ड के लम्बड़दार मुहम्मद नूर ने थाने जाकर दर्ज करवाया कि ग्रां में शेरे की नंगी लाश मिली है।

लाश को सबसे पहले देखा हाशिम ने। उसी ने चौकीदार और लम्बड़दार को बताया। थाना मौका पर पहुंच गया। लाश अलफ़ नंगी और थोड़ी दूर पर

ही उसकी जूती और चद्दर पड़ी हुई थी।

डाक्टरी हुई। डाक्टर ने लिख के दिया—हो सकता है सिर पर गुज्झी चोट लगी हो। शायद साफ़े से मुँह बांध दिया गया हो। हां, गर्दन पर ज़रूर कोई निशान नहीं था।

लगता यह था कि क़ातिल ने शायद मुंह पर साफ़ा बांध दम घोंट दिया हो।

पुलिस का शुबह था खैरना, खैरना की बीवी जिऊनी और मुस्समात जिऊनी के भाई मेहरदीन और हाशिम पर।

हाशिम खैरना का रिश्तेदार था और कुछ ही महीने पहले उसकी बीवी जाती रही थी।

लम्बड़दार को शक था हाशिम और मेहरदीन पर, जिहोंने सबसे पहले लाश देखी थी।

फ़ज़ल नूर ने कहा, उसने क़त्ल की रात साथवाले घर में कुछ शोर सुना। उसने शोर से यही• अन्दाज़ लगाया कि हाशिम उसके मंगेतर को क़त्ल कर रहा है।

फ़ज़ल नूर ने पुलिस को दो चाँदी की अँगूठियाँ दी और कहा, 'ये शेरे की अमानत हैं।' उसने बताया कि एक तीसरी अँगूठी और है जो उसे हाशिम ने पहनाकर कहा कि उसने शेरे को मार दिया है! अँगूठी वह खो गयी है मगर पुलिस ने उसे मुस्समात जिऊनी से बरामद कर लिया।

हाशिम पुलिस को खेत में ले गया जहाँ शेरे के कपड़ों की पोटली पड़ी थी। उसके साथ एक कम्बल भी था जो खैरना ने उसे दिया था।

हाशिम ने बयान दिया कि खैरना ने मेरे सामने क़बूल किया कि शेरे को उसने अपनी बीवी के साथ देखा और अपने भाई रशीद के साथ शेरे का पीछा किया और उसका खून कर दिया।

खैरना इन्कार करता रहा लेकिन उसकी बीवी मुस्समात जिऊनी सरकारी गवाह बन गयी। कहा, हाशिम और मेरे खाविन्द खैरना ने मिलकर शेरे का गला घोंट दिया।

मुस्समात फ़ज़ल नूर ने कहा कि उसने रात को आवाज़ें सुनी। उसने माँ को जगाया। माँ-बेटी दोनों ने दरवाज़े में से देखा—हाशिम लाश को उठाये हुए था। साथ था खैरना।

आगे बात साफ हुई कि खैरना को शुबह था कि शेरा उसकी बीवी के साथ फँसा था।

लम्बड़दार ने अपने बयान में कहा कि यह बात सारे गांव को मालूम थी।

मुल्ज़िमात फ़ज़ल नूर से पूछा गया तो उसने कहा कि उसे यह मालूम
था।

मुल्ज़िमात ज़िन्नी ने कहा कि यह उसके ख़ाविन्द का शक था।

मुल्ज़िमात ज़िन्नी के भाई मेहरदीन ने कहा कि उसने बहन को कई बार
समझाया था!

क़त्ल में हाशिम के शामिल होने का सबब था कि वह फ़ज़ल नूर से शादी
करना चाहता था।

मुल्ज़िम नम्बर एक ने गवाह पेश किया कि क़त्ल की रात वह अपने घर
पर सोया हुआ था।

मुल्ज़िम नम्बर दो ने गवाह पेश किया कि वह अपने गाँव में ही नहीं था।

खैरना ने बयान दिया कि सिर्फ़ उसने अकेले शेरे का क़त्ल किया है।

उसने कहा, वह शाम से ही हुजरे से ग़ैर-हाज़िर था।

जब वह घर आया तो उसने अपनी बीवी के साथ किसी ग़ैर मर्द को देखा।

उसने उठा के सिर पर लाठी मारी तो शेरा नीचे गिर पड़ा। पड़ोसी उठ
आये।

सबने फ़ैसला किया कि ख़ामोश रहा जाये!

लाश मेहरदीन और हाशिम ने उठायी। खैरना ने कहा कि यह गलत है
कि हाशिम ने शेरे का गला घोंटा। तीन अँगूठियों की बात भी गलत है!

खैरना ने कहा—यह सच है कि हाशिम फ़ज़ल नूर से शादी करना चाहता
था। लेकिन जब हमने हामी न भरी तो उसने लम्बड़दार को ख़बर कर दी।

हाशिम ने अपने बयान में कहा कि यह सब सच है।

"बादशाहो, यह तो हो गयी न पेश-बन्दी पुलिस-थाने की। कचहरी में देखें
क्या होता है।"

शाहजी सोचते रहे, सिर हिलाते रहे—"जहाँ तक अपनी नज़र जाती है,
फ़ज़ल नूर का बाप खैरना आ जायेगा चपेट में।"

"और बाक़ी मुजरिम!"

"मुमकिन है उनको दफ़ा २०२-२०३ के तहत धर लिया जाय।"

मौलादादजी बोले, "शाहजी, आपको तो वकील होना चाहिए था। ख़ैर,
कसर तो अब भी कोई नहीं। रब्ब आपका भला करे—इन पुड़ियों से आपका
दिमाग़ और रोशन होता है।"

फ़तेहअली को कोई बात याद आ गयी। बोले, "एक बार शाहजी निकले
जलालपुर से तो पता लगा तहसीलदार की कचहरी लगी हुई है। दो टब्बरों का
बड़ा पुराना झगड़ा तहसीलदार निबटाने के लिए बैठे थे। कई मुकद्दमे-फ़
दारियाँ हो चुकी थीं।

"किसी ने जा तहसीलदार साहिब को खबर दी कि शाहजी का घोड़ा अड्डे पर देखा गया है।

"तहसीलदार का आदमी आन पहुंचा—तहसीलदार ने याद फ़रमाया है।

"शाहजी पहुँचे, दुआ-बन्दगी की और पूछा—'हुक्म !'

" 'शाह साहिब, इन दोनों टब्बरों पर आपका रसूख है। इनका टंटा रफ़ा-दफ़ा हो जाये तो अच्छा है। सारे इलाक़े को तपा रखा है।'

"शाहजी ने एक गहरी नज़र डाली और सारी सभा को सुनाकर कहा, 'अपना वक़्त न जाया कीजिए तहसीलदार साहिब ! दुनिया में ऐसा एक भी झगड़ा नहीं जिसे बैठकर न सुलझाया जा सके। पर इसे कैसे सुलझाइएगा ! क्योंकि यह झगड़ा नहीं, रगड़ा है। दोनों तरफ़ें एक-दूसरे को रगड़ने पर लगी है !'

"दोनों कबीले ऐसे शर्मिन्दा हुए कि हाथ जोड़कर कहा, 'तहसीलदार साहिब, आप और शाहजी जो फ़ैसला दे दें वह हमें मंजूर।' "

"वाह-वाह···!"

शाहजी को दादा साहिब की याद आ गयी—"एक दिन शाम दादाजी ने बुलाकर हाथ में एक रुक्का पकड़ा दिया। कहा, 'कल कचहरी में तारीख है। इसे तुम भुगता आओ। पौ फटने से पहले निकल जाना और हाँ, इसकी अगली-पिछली मुझसे समझ जाना।'

"सुबह उठ हस्ब-मामूल पहले दरिया गया, घोड़े पर जिवियों का चक्कर लगाया और छाँह वेले घर परत आया।

" 'दादा साहिब हवेली में ही बैठे थे। देखकर बड़ी सख़्त नज़र दी, 'बरखुरदार, तुम्हें तो आज कचहरी हाज़िर होना था ! क्या गये नहीं ?'

" 'दादा साहिब, बात यह है कि रुक्का वह कचहरी से चला ही नहीं। किसी अनाड़ी ने आप ही लिख दिया है !'

"इसके पहले कि दादा साहिब कुछ कहें, मैंने नीचे झुक पैरीपौना किया—'गुस्ताख़ी माफ़ दादाजी, इस इम्तिहान में से निकलना मेरे लिए भी ज़रूरी था !'

"दादा साहिब बड़े खुश हुए पोते से। बोले, 'चाहता मैं देखना यह था कि कितने चौकन्ने और चतुर हो !'

"चौधरी साहिब, मुठ रुपयों की मेरे हाथ पकड़ायी और कहा, 'बुजुर्गों के कन्धों तक पहुँच गये हो—आज जाकर शहर मौज-मज़ा कर आओ।' "

जहाँदादजी ने पूछा, "बादशाहो, पता लगा तो आपको कैसे लगा कि परवाना कचहरी का नहीं !"

"इबारत सूँघकर। लिखा हुआ था—'आपको हुक्म दिया जाता है कि आप असालतन या माफ़र्त वकील के जो मुक़द्दमा के हालात से क़रार वाक़ई वाक़िफ़

किया गया हो और कुल उमुरात अहम मुतालिलका मुकद्मा का जवाब दे सके या जिसके पास कोई और शख्स हो कि उसके दस्तावेज़ात पेश करे जिन पर आप बताईद अपनी जवाबदेही के हस्तकलाल करना चाहते हो !

"आपको इत्तिला दी जाती है कि अगर बरोज़ मजकुर आप हाज़िर न होंगे तो मुक़द्मा बग़ैर हाज़िरी आपके मसमुअ और फ़ैसला होगा।'

"इबारत तो पूरी कचहरीवाली, पर न मुकद्मा नम्बर, न कचहरी का नाम-पता, न तारीख, न नीचे किसी के दस्तख़्त—सही करना था न कि पोत्रा कहाँ तक चोकस है !"

फकीरे का ध्यान दादा साहिब की मूठ पर लगा था—"शाहजी, इनाम लेकर आप पहुँचे शहर। भला क्या किया वहाँ जाकर !"

शाहजी छोटे भाई की ओर देख मुस्कराने लगे—"दादा साहिब से इनाम लेने की देर कि अपने सिर पर क़ानून सवार हो गया। घोड़ा अड्डे पर छोड़ा, रेल में सवार हो लाहोर पहुंचा और कानून की किताब खरीद लाया।"

"बस शाहजी !"

गण्डासिह यकायक ऊँचा-ऊँचा बोलने लगे—"पूछता जाता है—बस शाहजी, बस शाहजी ! ओ तुम्हे फ़रक नही पता इन टोडरमलियों और जट्टों की औलादों मे ! इनाम लेकर पहुँचे कहाँ है बरखुरदार ? क़ानून की किताब खरीदने ! कोई गाना-मुजरा भी…!"

"न !"

गण्डासिह पहले शाहजी को घूर-घूर देखते रहे—"लो देख लो, यह फ़र्क है टोडरमलिये खत्रियों में और जट्टो में। इनाम लिया जवानी का पहला और पहुंचते कहाँ हैं शाह साहिब ? कानूनी किताब के पास ! जट्ट की भी सुन लो। कही से मूठ आ गयी। पहुँचे सीधे कुंजावाली के ठिकाने। क्या घुंघरू और क्या पैर ! जी करे बन्दा चूम ले और वही ढेर हो जाय।"

जहाँदादखाँ जी की अपनी आँखों के आगे बहार आ उतरी। लेते रहे हुक्के का मजा।

दीन मुहम्मदजी से न रहा गया—"खालसाजी, फिर सीढी-पौड़ी चढ़ी वहाँ की !"

"न, मजबूरी थी। लड़की नयी-नकोर। हरी गन्दल। दिल न माना। खुश होकर इनाम दिया जी-भर और घोड़ी को मार दोलत्ती, अपने घर आन पहुँचा।"

मौलादादजी हँसते-हँसते आप ही दस-बीस साल छोटे हो गये—"खालसा-जी, यह कोई बहादुरी तो न हुई। उस डोडी की भी कोई कीमत तो पड़ती !"

"बराबर पड़ी बादशाहो, अमल अपना पूरा रखा—साल मे एक दिन। हर नयी फ़सल पर आपाँ गये हसीनो के पास !"

गुरदित्तसिंह बोले, "मुझसे पूछो तो सौदा यह महँगे का रहा ! नशा दबादब चढ़ जाये तो उतरनेवाला भी बनता है। यह तो खरगोश के पीछे भागनेवाली बात हुई न ! न देनेवाला दिल परचा, न लेनेवाला हाथ !"

गण्डासिंह अंगुल-भर और ऊँचे हो गये—"लो सुनो ! पार के साल की बात है। वैसाखी के मेले वज़ीराबाद जा पहुँचा। मेले में बड़ी रौनकें। कुश्ती, सौंची कौडियाँ—सारी राह-रस्म मेलों की। माढ़ीवाला कबूल मिल गया। पहले तो खायीं जलेबियाँ। ऊपर से तत्ता-तत्ता दूध। फिर तालीमवालियों के शामियानों की ओर निकल गये !

"बादशाहो, कबूल इलाक़े की हर नचौनी का मुजरा देखे हुए। एक तम्बू के पास पहुँचे तो अठवारा सुन पड़ा—

बुद्ध सुद्ध रही महबूब की
सुद्ध अपनी रही न और
मैं बलिहारी साहिब पर
जो खींचे मेरी डोर।
बुद्ध सुद्ध आ गया बुद्धवार
मेरी खबर लये दिलदार।

"मैंने कहा, हो-न-हो नूरा की छोटी बहन आयशाँ है।

"अन्दर पहुँचे। चान्नना ही चान्नना। एक कमसिन-सी कवार छनकारों में। साथ अठवारा गा-गा दिलों को दरदाती-तरसाती आयशाँ ! मैंने क़बूल को तो कुछ न कहा पर कभी मासूम घुँघरूवाली की ओर देखूँ, कभी आयशाँ की ओर। चित्त में कोई भुलेवखा-सा पड़ गया।

"लड़की ने सलाम किया तो गिन के रुपये ग्यारह दिये।

"आयशाँ भी सलाम करने चली आयी। मेरी नज़र ऐसी जुड़ी उस मुखड़े पर कि परतने का नाम न ले ! ग्यारह रुपये और निकाले और उसे दे दिये।

"अब सुनो आगे की दास्तान। नाचनेवाली आयशाँ क्या कहती है।

"रुपये लेकर माथे से लगाये और कहा, 'सिंहजी, आज मेरा हक़ तो नहीं बनता पर खैर सदके आपका इनाम मेरी झोली। अब से यह लड़की आपकी खिदमत में।'

"मौलादादजी, मेरा चित्त बड़ा उदास हुआ। सोचा—समय के रंग। मैं पहुंचा पहली बार जब उस चवारे तो आयशाँ छोटी-सी थी। आज इसकी लड़की छोटी-सी। मैंने कहा, 'आयशाँ, हिसाब-किताब तो ज़िन्दगी का चलता ही रहता है, पर मेरे लिए तुम दोनों एक ही हो !'

"आयशाँ ने नज़र नीची कर ली और सलाम करके कहा, 'आपके दमड़े बड़ी बरकतोंवाले। रब्ब आपको सलामत रखे।' "

"वाह···वाह···क्या बात की है बीबी ने सजी हुई।"

जहाँदादजी ने भी सराहना में सिर हिलाया—"बेशक उस चबारे पहुँचकर आदमी बन्दा बन जाता है। इनके यहाँ शक्लो-शबाहत, तहज़ीब-तरन्नुम और अख्लाक की क्या कमी! बोलनेवाले लब तो शीरीं हुए ही!"

शाहजी ऐसे हँसे ज्यों सारे खेल के वाकिफ माहिर हों—"कमी तो वहाँ एक ही चीज की—गृहस्थी की गुज्जी छिपी बरकतों की! बाकी तो दिलजोई का साज-समान सजा ही हुआ है!"

चौधरी फतेहअली बड़ी दानाई से शाहजी की ओर देखते रहे। हुक्का मुहम्मदीन की ओर सरका दिया—"शाह साहिब, मजलिसों के मालिक हो। है कोई पढ़ाई जो आपने न पढ़ डाली हो! स्यालकोटी इदारे मदरसे की ही खूबी समझो। मुजरे से लेकर आला अदालत-कचहरी-दरबार तक पहुँचने की तौफ़ीक एक साथ हो!"

काशीशाह ने नजीबे की आँखों में हसरत और मुरादों के साये देखे तो समझाकर कहा, "नजीबे, ये सारी बरकतें धन-दौलत की नहीं, तालीम की हैं!"

हाड़ की डाडी गर्मी। डाडी तपश। धम्मदेव की महासत्या देखो। सारी धरती को नखशिख तक तपा छोड़ा। संक्रान्त-से पहले अपने-अपने सेपिये कुम्हार घर-घर घड़े-घड़ियाँ घट्ट-मट्ट पहुँचाने लगे।

सुच्चे कोरे घड़ों पर घर-गृहस्थनें मौलियाँ बाँधने लगीं। छूनियों पर गुड़-आटा और कवड़ियाँ रख हाथ में पखियाँ ले ब्राह्मणों के घर पहुँचाने चलीं।

"जय धम्मदेव! तेरी करणी से किरणों के ताप-तप। आँख शीतल कर देवता। जल से तृप्ति पा और तृप्ति दे। भरे घड़े-घटक तेरे चरणों में। त्रिहाई सृष्टि जल-बुन्दियों से शान्त कर।"

शाहनी, छोटी शाहनी और चाची महरी बिशनो बाह्मणी को महीने-भर की रसद गुड़-आटा-वस्त्र पहुँचाकर लौटीं तो हट्टियों के सामने चाची ने कुटिया की ओर मुँह मोड़ लिया!

जाते-जाते कहा, "धियो, जाकर रोटी-टुक्कर लगो। मैं झट-का-झट माथा टेककर लौटी। हाँ री, गुड़वाले चावलों की देग ताव न खा जाये। नीचे ताव

मट्ठा-मट्ठा रखना।"

देवरानी-जिठानी हँसने लगी—"तुम्हारी ग़ैर-हाजरी में कुछ तो करेंगी!"

हट्टियों के आगे शाहनियों ने माथे पर छोटे-छोटे घूँघटे खींच लिये। नाली से बचने के लिए शाहनी ने देवरानी की ओर देखा तो वह निक्का-निक्का हँसती थी।

"क्यों बिन्द्रदइये, काहे को हँसती हो! कोई दीख गया है क्या! यह न हो किसी को परीपोना बनता हो करना और हम सीधी ही चलती चलें।"

"न जिठानी। जिऊन हलवाई की हट्टी देख के हँसी हूँ। कोई भूली-बिसरी पुरानी याद आ गयी है!"

"बता री, तुम्हें सौंह है मेरी जो मुझसे छिपायी।"

"जिठानी, अभी मेरा गुरुदास न पेट पड़ा था। एक दिन शाह मेरी कुलेलों से खुश हुए। लम्बे छन तक मेरी ओर तकते रहे। मैं उठने को हुई तो बोले, 'किसी चीज़ पर दिल हो बिन्द्री, तो मांग।'

"और री, मैं सुभानकौर बेअक्ल निरी।

"साईं से कोई गहना-गट्टा मांगती या कपड़ा-लीड़ा। जिठानी, नजूम लगा मैंने क्या मांगा होगा तेरे देवर से?"

"अरी, कोई चूड़ी-छल्ला या धी-पुत्र!"

"न, अब हँसना तो मत जिठानी, मैं मांग बैठी जिऊन हलवाई की बरफी का डोना!"

शाहनी हँस-हँस दोहरी हुई—"अरी, मेरा देवर क्या बोला?"

"सिर पर धप्पा दे लाड़ से कहा, 'बिन्द्रा, ससुराल चली आयी पर अभी बचपना न गया।'"

"बिन्द्रादइये, वैसे तो तुम बड़ी पारख चौक्कनी पर आप ही सोच, यह चीज़ मांगने की थी भला! दूध-मलाई से भरा अपना घर! वेवे से कहती तो खोवा भरवा घड़ा न भरवा देती। तुम तो खैरों से उसकी लाड़ली वधूटी! चल, आज वह पुराना भागी-भरा दिन तेरे ख्याल पड़ा—ला, आज मैं खिलाती हूँ तुम्हें बरफ़ी!"

शाहनी ने इधर-उधर तक्क मारी, फिर जरा-सा कपड़ा ऊँचा किया और बरफ़ी के थाल की ओर हाथ कर कहा, "पाव पक्का बरफ़ी का डोना तो देना।"

और पल्लू के छोर बँधा पनघड़ निकाल आगे कर दिया।

बिन्द्रादयी जाने क्यों उदास हो गयी—"तुम्हारे दिल की खुशी बहना, तुमने पूछा और मैंने बताया। चल, मैंने भी बरस-बरस के दिन तुम्हारे हाथ का मंसा पुजाया ले लिया। आज की संक्रान्ति को तो मुझे भी बाम्हणी ही समझ।"

शाहनी खीझ गयी—"मुड़ री, आज बरस-बरस के दिन यह क्या ले बैठी! क्षत्राणी की जून में बाम्हणी। पुण्य-फल हमारे इतने कम हो गये कि नकर्म हो

दूसरों पर जीते रहें !"

"क्या कहूँ जिठानी, तेरी देवरानी के रंग-संग तो सारे मुक गये !"

"चुप री, ज़बान को फन्द दे देवरानी ! बुरे बोल मुँह से नहीं निकालते।"

"जिठानी, तेरे देवर को ऐसी लग्न लगी है रब्ब के नाम की कि इस अभागी के तो संग-सोहबत सब खत्म हो गये।"

शाहनी का कलेजा धक्क रह गया—"अक्ल-बुद्ध तो ठिकाने है री। देवर से लड़कर तो नहीं बैठी हुई !"

"सौंह गुरुओं की, तुम्हारे आगे क्या झूठ ! बड़ी भरजाई मियाँ मस्त के पास ले गयी थी पार के साल। जिठानी, मलवाने ने ऐसा नक्खिद टोटका बताया कि इस बुरी का दिल न माना। साईं मेरा देवता पुरुख। मैं पापन अपने ऋतुआरे की विस्टा उस सन्त के मुँह लगवा दूं कि मेरे रंग रँगा रहे, न री ! न !"

"हाय मैं मर जाऊँ विन्द्रादइये, तेरी छाती पर इतना बड़ा पत्थर ! श्री राम ···श्री···राम। देवर अपना तो कोई उच्च आत्मा है। जाने किसके पुण्य का फल कि काशीशाह साक्खयात हमारे कुल-घर में आन मिला। सातों खैरें, हमारी उम्रें उसे लग जायें पर देवरानी, दाते ने यह क्या खेल रचाया !"

छोटी शाहनी हौले से बोली, "कभी-कभी तो बड़ी रोती-कलपती हूँ।"

"विन्द्रादइये, मनुक्ख के तन-मन की अगन-लगन तो लप्प-लप्प ऊँची। धम्म-देव के आगे हाथ जोड़, वह शीतल झोंका छोटा देता रहे और समय हरियाला मनुक्खों के संग सजा-बना रहे !"

सीढ़ियाँ चढ़ विन्द्रादयी फिर से बच्चों की लाड़ली माँ बन गयी—'जिठानी, गुरुदास तेरा मीठे का बडा चसकोरा। रात को टोह-टाह के देखो तो बिछाई में कहीं-न-कहीं गुड़ की भेली लुका के ज़रूर रखी होगी। टुकड़ी ले के बड़ा खुश होगा।"

शाहनी चौके की दलहीज़ पर खड़ी-खड़ी सोचती रही—रब्बा, हिरस-इच्छाओं से मनुक्ख बेवक़्त ही प्यासा क्यों हो जाय ! मेहरोंवाले, इस घर पर नज़र सीधी रखना !

चाची महरी माथा टेक कुटिया से परती तो राह में गोमा चिड़ों की आन मिली।

सिर पर भत्ता रखे सामने से आती फतेह को देखा तो चाची ने लाड़ से घुड़का —"क्यों री धिया मटक्कनी, अब तो राज़ी हो न ! जिस पर मन था, अपना हो गया ! कैसा है री जवाँई हमारा ?"

फ़तेह मरगयी आँकी-बाँकी हो हस्स-हस्स जाय।

"अरी, ज़रा ढंग से निकला कर। खिल-खिल मटकती रहेगी तो पिण्ड आँखों से खा जायेगा। तन पर कहीं काली थिगली खोस डाल।"

फ़तेह ने दुपट्टी में हाथ डाल परान्दा छाती पर लहरा लिया—"अब तो ठीक है न चाची !"

"सुन कुड़े, तू ही अनोखी इस सवारी पर नहीं चढ़ी। जरा सँभल के। दिन-रात आग जलाये रहेगी तो ढल जायेगी जल्दी !"

फ़तेह ने एक हाथ से सिर का इन्नू सँभाला। दूसरा लस्सी की झावरी पर टिका लिया और गोमा की ओर पीठ कर होले से कहा, "चाची, वैरी मुझे छोड़ता ही नहीं ! बता, क्या करूँ ?"

चाची की ठण्डी आँखों में कोसी-कोसी हँसी फैल गयी।

"चुप री, सारा दोख उसके सिर न रख ! वह मरद बच्चा और तू धी-ध्यानी धरती ! तेरी ही वाही-बोआई होगी। आप सँभल के रहा कर।"

फ़तेह शरमा गयी।

"बन्ना, ब्याह-परणा गयी है सो तो भला, पर अपने बब्ब को न भूलना। तुम दोनों बेरियोंवाले खू पर ही न ! अलिया कौन-सा दूर है—कभी सांझ-सवेरे उसे भी दो गर्म-गर्म रोटियाँ उतार दो।"

"फिटे मुंह मेरा चाची, कई दिनों से उधर झांका तक नहीं। चाची, राबयाँ कैसी ?"

"राबयाँ वाह-वाह चंगी ! अरी, बेटियाँ अपने घरों चंगी। उसका भरम न करना। तुम्हें याद दिलाती थी कि कभी संग-सोहबत को मन न हो तो रात-दो रात अलिये के पास गुजार लो।"

फ़तेह निक्का-निक्का हँसने लगी और पाँव उठा लिये—"हल्ला चाची।"

फ़तेह आगे बढ़ गयी तो गोमा चाची से बोली, "यह लड़की चंगी रही। जिससे आंखें चार की उसी के लड़ लग गयी। रह गयी राबयाँ, सो लालीशाह की खलावी बनी भटकती है।"

"बड़ी सुचज्जी लडकी है री। सयानी ऐसी कि बन्दा देख-देख सराहे।"

"चाची, मेरे से पूछो तो लड़की खबरे किसकी लौ मे सिकती रहती है। फांकड़ियाँ मदमाती ऐसे उठाती है ज्यों किसी महबूब को छेड़ना हो।"

चाची महरी का क़दम जहाँ था वहीं थिर हो गया। घूरकर गोमा की ओर देखा और फटकार दिया—"हैं री, तेरे होश ठिकाने हैं ! जल-सी निर्मल लड़की, उसे रब्ब की दात ! उसके अन्दर सरस्ती विराजती है, सरस्ती। बोलती है तो सुननेवाले के आगे चान्नन-ही-चान्नन !"

गोमा शट्टल्लो टस-से-मस न हुई—"चाची, ऐसे कहती हो कि हाड़-मास की काया न हो ! तुम लाख सयानी पर मेरी एक पल्ले बाँध लो कि जिन्द की माया हर देह को नचाती है !"

चाची सुनकर विरक्त हो गयी। पाँव उठाकर कहा, "चुप कर री। तू चल

घरों को, मैं धर्मशाला माथा टेककर आती हूँ।"

गोमा नासहोनी को बात का तार न भूला। चाची के कान में कहा, "मेरे कहे-सुने का भरम न करना चाची, पर तू ही बता कशिश की कुव्वत किस रब्ब के बन्दे को नहीं घेरती! राबयाँ कुडी जुग-जुग खिलाये लाली शाह को, जम्म-जम्म सजाये दोहरे काफ़ियाँ, पर इतना जान रख चाची, कोई साधनी-सन्तनी नहीं!"

"खसम के हाथों मार-कुट्ट खा-खा तेरी अक्ल-बुद्ध मारी गयी है री! कहाँ वह काची, कँवारबालडी, कहाँ तेरे भरमी चलित्तर!"

गोमा न मुड़ी, न डरी। ज़हर-भरी निशंक आवाज़ में कहा, "चाची, तेरी अँखियों पर मोतियाबिन्द तो नहीं उतरा! देखती नहीं, बड़े शाह को निरखते-निरखते लडकी गुल सनोवर बन जाती है।"

"जा री, मेरी अँखियो से दूर हो जा।"

"मैंने जो कहना था कह दिया चाची। मेरे कहे को उठा के परे न फेंक देना।"

चाची के पाँवो में हिम्मत आँगस खत्म हो गयी। गहरी सोचों में होली-होली धर्मशाला की पौड़ियाँ चढने लगी।

आँखें मूँद वाहे-गुरु के दरबार में माथा टेका तो एकाएक शाहजी के गोरे-चिट्टे मुखड़े पर टिकटिकी बाँधे राबयाँ दीख गयी।

चाची थर-थर काँपने लगी। हाथ जोड़ अर्ज़ की—'मेरे दाता, यह संग-सम्बन्ध किसी तरह नहीं जुड़ता-बनता। जानी जान, एक सजरी माँ, दूजी काची बालड़ी। यह खेल न खिलाना रब्बजी। शाहों के नाम-धाम को कभी मैल नहीं लगी!"

इधर बहोकी के गुसाईं वाकपति शाहों के घर पधारे, उधर त्रिकालाँ से पहले पिण्ड के खत्रेटों को कथा का बुलावा चला गया।

रोटी-टुक्कर से फारिग हो जनानियाँ बच्चों को गोदियों में लिये शाहों के घर बिछी जाजम पर आ-आ बैठने लगी।

गुसाईंजी का गहर-गम्भीर मुहान्दरा। सिर पर रेशमी पग्गड़ और कन्धों पर धुस्सा। नीचे लाँगड़वाली धोती।

मंजी पर बिछे चारखाने खेस पर गुसाईंजी चौकड़ी मार विराजे तो जनानियाँ भक्ति-भाव से माथे टेकने लगी। गुसाईंजी आशीष वचन बोलते चले।

फतेह ने दुपट्टे में हाथ डाल परान्दा छाती पर लहरा लिया—"अब तो ठीक है न चाची !"

"सुन कुड़े, तू ही अनोखी इस सवारी पर नहीं चढ़ी। ज़रा सँभल के। दिन-रात आग जलाये रहेगी तो ढल जायेगी जल्दी !"

फ़तेह ने एक हाथ से सिर का इन्नू सँभाला। दूसरा लस्सी की झाबरी पर टिका लिया और गोमा की ओर पीठ कर होले से कहा, "चाची, वैरी मुझे छोड़ता ही नहीं ! बता, क्या करूँ ?"

चाची की ठण्डी आँखों में कोसी-कोसी हँसी फैल गयी।

"चुप री, सारा दोख उसके सिर न रख ! वह मरद बच्चा और तू धी-ध्यानी धरती ! तेरी ही वाही-बोआई होगी। आप सँभल के रहा कर।"

फतेह शरमा गयी।

"चन्ना, ब्याह-परणा गयी है सो तो भला, पर अपने बब्ब को न भूलना। तुम दोनों वेरियोंवाले खू पर ही न ! अलिया कौन-सा दूर है—कभी साँझ-सवेरे उसे भी दो गर्म-गर्म रोटियाँ उतार दी।"

"फिटे मुँह मेरा चाची, कई दिनों से उधर झाँका तक नहीं। चाची, राबयाँ कैसी ?"

"राबयाँ वाह-वाह चंगी ! अरी, बेटियाँ अपने घरों चंगी। उसका भरम न करना। तुम्हे याद दिलाती थी कि कभी संग-सोहबत को मन न हो तो रात-दो रात अलिये के पास गुज़ार ली।"

फतेह निक्का-निक्का हँसने लगी और पाँव उठा लिये—"हल्ला चाची।"

फतेह आगे बढ गयी तो गोमा चाची से बोली, "यह लड़की चंगी रही। जिससे आँखें चार की उसी के लड़ लग गयी। रह गयी राबयाँ, सो लालीशाह की खलावी बनी मटकती है।"

"बडी सुचज्जी लडकी है री। सयानी ऐसी कि बन्दा देख-देख सराहे।"

"चाची, मेरे से पूछो तो लडकी खबरें किसकी लौ में सिकती रहती है। फाँकडियाँ मदमाती ऐसे उठाती है ज्यों किसी महबूब को छेड़ना हो।"

चाची महरी का कदम जहाँ था वहीं थिर हो गया। घूरकर गोमा की ओर देखा और फटकार दिया—"हैं री, तेरे होश ठिकाने हैं ! जल-सी निर्मल लड़की, उसे रब्ब की दात ! उसके अन्दर सरस्ती विराजती है, सरस्ती। बोलती है तो सुननेवाले के आगे चान्नन-ही-चान्नन !"

गोमा शट्टल्लो टस-से-मस न हुई—"चाची, ऐसे कहती हो कि हाड-मास की गया न हो ! तुम लाख सयानी पर मेरी एक पल्ले बांध लो कि जिन्द की माया हर देह को नचाती है !"

चाची सुनकर विरक्त हो गयी। पांव उठाकर कहा, "चुप कर री। तू चल

घरों को, मैं धर्मशाला माथा टेककर आती हूँ।"

गोमा नासहोनी को बात का तार न भूला। चाची के कान में कहा, "मेरे कहे-सुने का भरम न करना चाची, पर तू ही बता कशिश की कुव्वत किस रब्ब के बन्दे को नहीं घेरती! राबयाँ कुड़ी जुग-जुग खिलाये लाली शाह को, जम्म-जम्म सजाये दोहरे काफ़ियाँ, पर इतना जान रख चाची, कोई साधनी-सन्तनी नहीं!"

"खसम के हाथों मार-कुट्ट खा-खा तेरी अक्ल-बुद्ध मारी गयी है री! कहाँ वह काची, कँवारबालड़ी, कहाँ तेरे भरमी चलित्तर!"

गोमा न मुड़ी, न डरी। ज़हर-भरी निशक आवाज़ में कहा, "चाची, तेरी अँखियों पर मोतियाबिन्द तो नहीं उतरा! देखती नहीं, बड़े शाह को निरखते-निरखते लड़की गुल सनोबर बन जाती है।"

"जा री, मेरी अँखियों से दूर हो जा।"

"मैंने जो कहना था कह दिया चाची। मेरे कहे को उठा के परे न फेंक देना।"

चाची के पाँवों में हिम्मत आंगस खत्म हो गयी। गहरी सोचों में होली-होली धर्मशाला की पौड़ियाँ चढ़ने लगी।

आँखें मूँद वाहे-गुरु के दरबार में माथा टेका तो एकाएक शाहजी के गोरे-चिट्टे मुखड़े पर टिकटिकी बाँधे राबयाँ दीख गयी।

चाची थर-थर काँपने लगी। हाथ जोड़ अर्ज़ की—'मेरे दाता, यह सग-सम्बन्ध किसी तरह नहीं जुड़ता-बनता। जानी जान, एक सजरी माँ, दूजी काची बालड़ी। यह खेल न खिलाना रब्बजी। शाहों के नाम-धाम को कभी मैल नहीं लगी!"

इधर बद्दोकी के गुसाईं वाकपति शाहों के घर पधारे, उधर त्रिकालाँ से पहले पिण्ड के खत्रेटों को कथा का बुलावा चला गया।

रोटी-टुक्कर से फ़ारिग हो जनानियाँ बच्चों को गोदियों में लिये शाहों के घर बिछी जाजम पर आ-आ बैठने लगीं।

गुसाईंजी का गहर-गम्भीर मुहान्दरा। सिर पर रेशमी पग्गड़ और कन्धों पर धुस्सा। नीचे लांगड़वाली धोती।

मंजी पर बिछे चारखाने खेस पर गुसाईंजी चौकड़ी मार विराजे तो जनानियाँ भक्ति-भाव से माथे टेकने लगीं। गुसाईंजी आशीष वचन बोलते चले।

गुसाईंजी के आगे काठ की पेटी पर चौकी। चौकी पर बिछी सच्ची फुल्कारी की चोहर। उस पर दिये की लौ प्रकाशती पोथी। गुसाईंजी ने ज्ञान-भण्डार खोला तो पत्रों पर बड़े-बड़े अक्खर चमकने लगे।

शाहनी ने दूधारने मे अंगारे लगा सामग्री-धूप धुखा दी तो गगा-जमुनी पवित्र गन्ध से दिल-मन सबके सराबोर हो-हो गये।

श्री राम···श्री राम···सिर ढके मांयें-बहनें पत्थल्ले मारे बैठी। कोई गोदी में लिटा बच्चे को मम्मा चुंघाये, कोई थपकी दे सुलाये, कोई रोते जातक को धप्पा मार दादी के कुच्छड़ में डाल दे।

"मांओ-बहनो, ध्यान से! गृहस्थियों के कानों में हर दिन प्रभु का नाम नहीं पड़ता। नाम की डाडी महिमा है। सो चित्त की वृत्ति इधर लगाओ। इस छन-भंगुर जगत मे नाम ही कमाई है।"

गुसाईंजी ने सिर नँवा मां संस्कृत का श्लोक उच्चार दिया—

"चन्दनं शीतल लोके चन्दनादपि चन्द्रमाः
चन्द्रच्च चन्दनाच्चैव शीतला साधु संगतिः।"

"धन्य है, धन्य है, देवताओ की पवित्र वाणी!"

"मांओ-बहनो, हज़ार विच इक्कु कोई पण्डित, लाखा विच इक्कु दाता। लो सुनो ध्यान से कथा गौरा-महादेव की—

एक समय कैलास परवत उपरि महादेव अरु पारबती की आपस में गोस्ट भई। गौरा ने महादेवजी से पूछिया—'हे श्री महादेव, आप म्रिग-छाला ओढ़े, अंग विषै-विभूत लगाये, गले सरप पाये हैं जी। अरु मुण्डियों की माला पहिरे हुए। उनमे तउ कोई पवित्रता नाही जी। तुम मुझको गियान कर सुणावहु जी। किस गियान-ध्यान से आप अन्तरजामी हो जी। आप अन्तहकर मन में गियान से पवित्र हो जी। जिस गियान करि संसार के जीव तुम कऊ पूजते हैं जी। अरु बाहर तुम्हारे एड्डे करम दिखायी देते है जी।'

महादेवजी बोले, 'गौरजा, धियान से गियान की बात सुनि। जिस गियान करि बाहर के करम मुझे व्यापते नाहीं। सो पारवती, यही गीता का ज्ञान है जिसका मैं रिदे विषै धियान कर हो है। गौरजा, जैसे कुम्हार का चक्र होता है अरु फिरता जाता है। तिस ते बासन उतपति होते हैं। तैसे ही मनरूप चक्र है। [illegible] र सति

[illegible] फुरन-

[illegible]

पारवती बोलीं, 'हे महादेवजी, यह कैसी माया है आप जी की। मनुष्य लोक में शरीर उपजते भी हैं। अरु मिट भी जाते हैं। देखना मात्र है। जैसे रात आवती है। नहीं जनीती जो कहाँ गयी। हे भगवन, इस संसार कउ असार जान के मैं

दोनों शाह भाई ऊपर आये तो बारी-बारी लाले-बेबे के पाँव छूए और हाथ बाँधकर अर्ज़ की—"लालाजी, जो इच्छया हो मन में सेवकों को हुकुम करें! आज पहले नवरात्रे कथा का शुभारम्भ आपके भाव से!"

लाला बड्डे ने सिर हिलाया—"पुत्तरजी, अष्टमी के दिन सारे पिण्ड हलवा-पूरी कर देना। इतना ही!"

सुनकर खबरें क्या हुआ कि दोनों भाइयों की आँखें भर आयीं—"जो आज्ञा, लालाजी!"

गुसाईंजी ने सिर हिलाया—"जहाँ लालाजी जैसे मनुक्ख विराजें वहाँ तो यज्ञ-ही-यज्ञ!"

काशीशाह ने हाथ जोड़ अर्ज़ की—"गुसाईंजी नौरात्रों में कथा करेंगे, आप और बेबेजी चबारेवाली बैठक विराजिए।"

"पुत्तरजी, इस पके पात को अपने ठिये पर ही रहने दो। क्या पता कब झोंका आन हिलाये!"

दिवटे के आलोक में बड्डे लाला और छोटी बेबे के झुरियों पड़े मुखड़े चिर-पहाड़ और चिर-वती नदिया से जापने लगे।

निक्की बेबे के हाथ से छुआ प्रसाद का थाल शाहनी ने गुसाईंजी के आगे रख दिया।

बच्चे-बलूंगड़े प्रसाद के लिए आगे-आगे ढुकने लगे।

निक्की बेबे और बड्डे लाला उठ खड़े हुए। गुसाईंजी ने श्लोक उच्चारा—

"शैले शैले न माणिक्यं मौक्तिकं न गजे गजे
सज्जना नहि सर्वत्र चन्दनं न वने वने

"पधारो-पधारो!" हाथ में लौ लिये दोनों भाई बड्डे लाला और बेबे को लिवा ले चले तो जगानियाँ-टाबर पीछे-पीछे हो लिये।

भगवान पान्दे के छोटे पुत्र बिरजू को जाने क्या सूझा कि बन्द जोड़ लिया—

चलो पधारो देवता आप आगे-आगे
चढ़ो सुरग की सीढ़ियाँ हम पीछे-पीछे।

सबके कलेजे धक्क रह गये। हाय रे, बाम्हण-पुत्र को यह क्या सूझी!

तारों-भरी रात में लाला बड्डे के पाँव यूँ थिड़के ज्यों आँधी के झोंके से पारस पीपल हिल-हिल गया हो।

अपनी ड्योढ़ी पर पहुँच बड्डे लाला रुके। बारी-बारी दोनों शाह भाइयों की पीठ पर हाथ फेरा, कुछ कहना चाहा पर बोल न निकले।

काशीशाह ने मदद की—"लालाजी, सेवकों को कोई हुकुम-हिदायत!"

लाला बड्डे कई देर सिर हिलाते रहे, जैसे कुछ याद करते हों! फिर सिर

हिलाया—"अब मेरी संज्ञा काया काम नहीं करती। आँखों के आगे माँ और चाचा उतर आये हैं। अब यात्रा खत्म हुई समझो। पुत्रो, मेरे पीछे टब्बर को अक़्ल देना। मेरे-तेरे से अकल-बुद्ध भ्रष्ट हो जाती है। कुनबे-कबीलों की मूठें बिखर जाती हैं।"

दोनों भाइयों ने सिर झुकाया—"सत्तवचन। और आज्ञा!"

"पुत्रजी, मेरा विमान सतियों के चबूतरे के आगे नमन हो!"

"जो हुक्म।"

राह में दोनों भाई कुछ न बोले। ड्योढ़ी में क़दम रखा तो छोटे शाह ने कहा, "वड्डे लाले ने दुनिया से अब रूह फेर ली है। कुछ ही दिनों का दर्शन-मेला समझो!"

"बख़्शना महाराज, बख़्शना!

निक्किये, सो गयी हो गया!"

हाथ बढ़ा बेबे निक्की ने लाले वड्डे को रज़ाई ओढ़ा दी।

बेबे ने आँख मूँदी ही थी कि लाले वड्डे ने फिर आवाज़ दी—"मैंने कहा निक्किये, याद तो कर हम कटासराज कब गये थे भला!"

"लो, भूल गये! सुखी सान्दी सबसे बड़े चन्नमल्ल का जब त्रिखल जम्मा है तब पहली बार गये थे कटासराज। फिर दूजी बार पहुँचे हैं जब छोटे विक्रम का ब्याह किया है। तभी गये थे न कटासराज, दूनी साहिब, पंजा साहिब..."

"निक्किये, कटासराज धरती का त्रिनेत्र है। सुच्चे गुलाबों की महक मनुक्ख-आत्मा में सुगन्ध-भरी धूप-दीप धुखा देती है।"

वड्डे लाले ने बड़ा लम्बा स्वास खींचा ज्यों कटासराज से कोई सुच्ची हवा का झोंका आया हो।

"निक्किये, जो भी कहो रब्ब की यह दुनिया बड़ी सुहानी। याद है न, रघुनाथजी के मन्दिर के आगे सरोवर अमरकुण्ड! पाण्डव जब चलते-चलते इस स्थल पर पहुँचे तो बिन पानी त्रिहा गये थे। अमरकुण्ड देखते ही प्यास बुझाने को पानी मुँह लगा लिया। धर्मराज युधिष्ठिर को छोड़ और सब भाइयों ने पीया और मूर्च्छित हो-हो गिरते गये। युधिष्ठिर राज ने त्रिनेत्र का ध्यान किया और कुण्ड से पानी ले भाइयों को झोंके दिये। हँसते-खेलते पाण्डव उठ बैठे।"

बेबे निक्की ने पलक झपकी ही थी कि जैनियों का मूरत-मन्दिर आँखों में लहराने लगा !

"चन्नमल्ल के भाइया, चम-चम करता जैन-मन्दिर कई बार सपने में देखती हूँ। रब्ब खैर रखे, एक बार जाना जरूर है। याद है न, रघुनाथजी के मन्दिर गये थे तो प्राणमल मेले में निखड़ गया था।

"मन्दिर में तीन स्थापन हैं। विष्णु नारायण, विष्णु नरसिंह और विष्णु वाराह ! क्या सोहणी तराश देवों के मुहान्दरों की ! और हर हाथ में कमल !

"कटास में कमलों की क्या कमी ! सरोवर झलमल-झलमल करता है। हरे पात और गुलाबी नीले कमल।

"बच्चों के भाइया, चिर हुआ देखा था पर वह ऊँचा टोप संघाराम वाला, दस ताल-तालाब तो उसी के साथ लगे हैं। बनवाया होगा किसी चक्रवरती राजे ने।"

लालाजी को जाने क्या ख्याल गुजरा। सिर हिलाया—"रब्बा, वेपरवाहियाँ तुम्हारी, गारे-पत्थर की इमारतें खड़ी रहें जमानों तक और प्राण की सत्यावाला बन्दा गैरहाजिर !"

बेबे ने ध्यान पलटाने को कहा, "रणमल के पुत्तर की जब झण्ड उतरी है तो टिल्ले गोरखनाथ भी तो गये थे। कहते हैं राजा भरथरी पर्वत-गुफाएँ उठाकर झंगमघियाने ले गया था। जप-तप की बड़ी महिमा। देह में सत्या उग आती है !"

बेबे निक्की ने कुछ देर हुंकारा न भरा तो लाले वड्डे ने आवाज दी—"सुन रही है कि सो गयी ?"

"साईंया, सो सकूँ तो चैन न पड़े इस काया को ! इस बूढ़ी देह अब कौन-सी गरमी-खुमारी बची है कि लेटते ही नींद आ जाय !"

"मैंने कहा तत्ते-तत्ते दूध मे वहू से घी डलवा लिया कर।"

बेबे छिड़ गयी। उठकर कहा, "यह क्या छेड़ लिया ! तुम्हारे भाने मैं क्या बहूटियों की निन्दा-चुगली ले के बैठ जाऊँगी ! चन्नमल्ल के भाइया, कर्मों के बिना दूध-दही नहीं वरताया जाता।"

"साथिने, घर गाय-भैंस हैं, लवेरा बँधा है, पर तेरे भागों मे झुरना। बड़ी, विच्चली, छुटकी, निक्कड़ी, चाहे जिसके चौके से पी।"

निक्की बेबे बुड़बुड़ाने लगी—"यह बात न हिला साईंया। कभी घूँट-दो-घूँट से मुंह-मुलाहजा करती भी हैं तो मैं कह देती हूँ—बहूटियो, बालड़ों के लिए रहने दो। हम बुड्ढे-ठेरों के जिम्मे कौन-सी मेहनत कमाई है जो दूध-मलाइयाँ खायें।"

लाला वड्डे उठ के बैठ गये। "निक्किये, यह क्या ! तू इस घर की राज-महीपी है।"

बेबे निक्की जाने कैसी आनाकानी में हँसी—"मेरे भोले मालिका, चढ़ती राजेश्वरी और ढलती राजमाता में ऊपर-थल्ले का फ़रक। एक के हाथ में हुक्म हासिल और दूजी के पास न हक न अख्तियार।"

"निक्किये, दिल से यह धोक्खा निकाल छोड़। निरा भरम भुलेवा है!"

"एक बात कहती हूँ, सारी नियामतें-बरक़तें चढतलों की। साइँया, तुमने इतना भण्डारा कुल-कबीला चलाया, आप ही बताओ, अब है कोई जोर-जबर किसी पर!"

लाले ने लाड़ से धमकाया—"लाढिये, यह चित्त का विक्खोभन चंगा नहीं। मेरे-तेरे, हमारे वेले पीछे जा पडे। जहाँ तक बना, तेरे पुत्र-पोत्रों ने तो कमी नहीं रखी।"

बेबे निक्की सिर हिलाने लगी—"साइँया, यह जिन्द बड़ी पापन। पिछली उम्रे बड़ी कलपती-तडपती है। न कहे मुँह से, पर दिल-ही-दिल आत्मा बड़ा सन्ताप पाती है।

"यह क्या पछोत्तावे ले बैठी! चल छोड़ दे! मैंने कहा बद्दोकी वाले गुसाईं चंगी कथा करते हैं। घर में कोई खुशी हो तो कथा करवा लेना!"

"खैर सदके शुभ दिहाड़ा आय! महीने दो में विक्रम की वधूटी को व्यम पडनेवाला है!"

बेबे निक्की ने करवट ले पीठ मोड़ ली—"सतनाम, सतनाम।"

दिल-ही-दिल सोचा—शरीर ढोकरे का थक जाय पर चित्त-चेता हमेशा अगली-पिछलियों मे भटकता है।

बेबे को छोटी-सी झोंक आयी होगी कि बाहर तन्दूर की ओर से बिल्लियों के लडने की आवाज आयी तो ताकी पर हाथ मार लेटे-लेटे ही कहा, "दुर्रे-दुर्रे-दुर्रे बाह्मणियों, दिन-रात दूध-मलाई पर आँख।"

लाले बड्डे ने आवाज़ दी—"निक्किये, जेकर लारेन्स साहिबवाला कागद न बह जाता कांग में तो आज तेरे टब्बर को तगड़ी जागीरें लगी होती।"

बेबे निक्की ने ऐसे घुडका ज्यों लाला उसका साँईं न हो, उसका पुत्तर हो—"सोने की कोशिश करो। शाहों के घर तक जाकर तुम्हें थकान चढ़ गयी है। चन्न मल्ल के भाइया, इस बुड्ढे वेले जागीरों की तृष्णा क्या जाग पड़ी! साहबड़े के कागज गये कूएँ में। रब्ब ने हमें क्या कम दिया! ऊपरवाला सुनता है साइँया, उस दाते ने तुम्हे ग्यारह जागीरें लगा दीं।"

"कहती तो सच्च हो चन्ने की बेबे।"

बेबे ने पासा परत लाले की ओर मुँह कर लिया और हँसने लगी। फिर हाथ से लाले को टोहकर कहा, "साइँया, मुझसे तो तुम्हे कोई उलाम्भा नहीं न! ग्यारह बार गिनकर व्यम पाये और ग्यारह बार तुमने गोदी पुत्र खिलाये।"

लाले वड्डे ने बेबे के बिछौने की ओर हाथ फैलाया—"निक्किये, यह मनुक्ख की करनी नहीं, यह सामर्थ उस दाते की !"

तीसरा पहर होगा। अभी पीपलवाला खू न गिड़ा था। बेबे की आँख खुली तो लाला वड्डे आप ही पड़े-पड़े बोलते थे—"ब्याह हुआ विश्वकर्मा का प्रभूति से। पुत्र जन्मे मालाकार, कर्णकार, संकोकार, कुबानदक···कुबानदक···कुबानदक ···ओ रे मेरे रब्बा, अगला नाम ही चेते नहीं आता।"

बेबे निक्की ने हर गर्मी सयाले अनेक बार रातों में ये नाम सुने थे, खीजकर कहा, "लो मैं बताती हूँ। कुम्भकार और कंसकार, पर एक बात तो बताओ भागमल्ल के भाइया, विश्वकर्मा और प्रभूति के पुत्रों का क्या प्रसंग ! अपने पुत्रों के नाम लो। कलेजे ठण्ड भी पड़े। चन्नमल, भागमल, रणमल, बिक्रममल, लाब्बामल।"

"बस निक्किये, अगले नालायक का नाम मत लेना। अपनी घर-गृहस्थी छोड शीदो कुंजावाली के कोठे जा डेरा जमाया।"

बेबे नरम पड़ गयी—"पड़ा रहने दो गर्कजाने को, जहां पड़ा है। खैरों से टब्बर हो बड़ा तो एक-न-एक नजर बट्टू भी चंगा ही होता है। औलाद को नज़र नहीं लगती।"

"बस-बस, सुन लिया है मैंने।"

वड्डे लाले का साँस चलने लगा और खांसी छिड़ गयी।

बेबे ने छाती सहलायी—"घूंट-भर दूध लाती हूँ !"

लाले वड्डे ने सिर हिलाया—"ले आओ।"

बेबे उठ खड़ी हुई कि लाले वड्डे ने हाथ से रोक लिया—"मेरी बात सुन जा निक्किये। थल खण्ड के साथ मनुक्ख का पाताल खण्ड भी स्वास-स्वास उसके साथ चलता रहता है। जापता है अब इस काया के तीनों खण्ड मिलनेवाले हैं। आकाश-खण्ड से मेरा घोडा चल पड़ा लगता है। पहुँचा ही समझो। रब्ब जी, मैं भी तैयार हूँ···"

निक्की बेबे कांपने लगी, फिर भी सिदक से बोली, "खैरें मेहरें हैं साईंया, अभी तो आप जी ने अष्टमी पुजानी है !"

लालाजी की छाती घरघराने लगी। बेबे ने झटापट पट खोले और दूधारने तक पहुँचते-पहुँचते वडे बेटे की कुण्डी खड़का दी—"भागमल्ला, सारे भाई लाले के पास पहुँचते बनो। तिखा पाँव उठाना। मैं दूध ले के आयी।"

जितने बेबे निक्की दूध का कटोरा लायी, सारा टब्बर लाले के आस-पास जा ढुका।

दिवटे की लौ लाले ने बेबे को पहचान लिया और नित की तरह रुक-रुक कर कहा, "दिन की टिक्की तो निकल आयी न ! चल, आज तो सूरज उगने की बधाई ले ले। कल की मालिक जानता है—"

निक्की बेबे की बूढी काया थरथर कांपने लगी—"हाय ओ मेरे रब्बा, यह डाडी घडी आज मेरे सिर पर क्यों आन पहुंची !"

बेबे ने लाले वड्डे के पांव पकड़ लिये—"साईंया, ऐसी बेकौली न कर। मेरे साथ जुल्म न कमा। अपनी निक्कड़ी को अकेली न छोड जा !"

वड्डे लाले ने पलक झपकी। दस ऊपर सौ बरस पुरानी सांस उखड़ गयी और पुत्रों ने लाले को भुंजे उतार दिया।

बड़े ने गंगाजल मुंह में डाला। मंझले ने धान-गऊ मंसा दिये। चन्नमल ने हाथ पर दीवा रखा। बुझती अंखियों में जोत झिलमिलायी और मनुक्ख की आत्मा अंधेरे से पार हो गयी।

बेबे निक्की रो-रो लाले के सिर पर हाथ फेरने लगी—"हाय ओ मेरे बादशाह दूल्हो, मुझे अकेले क्यों छोड़ गया !"

चन्नमल ने ढाह मार दी और रो-रोकर पिण्ड जगा दिया—"ओ लोको, घर से देवते मुड़ गये—बादशाही चली गयी !"

ढोल पर थाप पडी—लाम लग गयी।

दूजी थाप पडी—भरती खुल गयी।

ऐलान होते ही कच्ची-पक्की उमरों के वारे-न्यारे होने लगे। चाचे-ताये-बाप-भाई छिपी-छिपी नज़रों बेटे-भतीजों के डौले-छातियां देखते और जातकड़ों की खैर मना आसीसें देते।

झुयरों की भट्ठियों, कुंइयों, तन्दूरों पर माँएँ-बहनें-चाचियां-दादियां हाथ मल-मल कहें—

"मल्ला यह क्या सूझी अंग्रेज़ को ! बैठे-बिठाये-जंग छेड़ दी। इनसे चंगी तो इनकी वड्डी-वड्डेरी थी। तख्त-ताज भी चलाया सिदक से और चैन-अमन भी कमाया। रियाया से जस्स भी चोखा पाया।"

"जनानी थी न बाल-बच्चेदार ! सुनते हैं आप ही मलका थी। गबरू तो हुकुम के हेठ था। वह कोई शाह-बादशाह नहीं था।"

"बहना, मलका हो, महिषी-महारानी हो, मर्द का साया तो उसके लिए भी लाज़िम।"

"कर गयी सोहणी कमाइयाँ और बाँट गयी बरक़तें रियाया को भी! अब देखें नासहोने पुत्र-पोत्रे क्या करते हैं!"

"हैं री, मरदों की मत्त बुरी। आदि-अदन्त से करते आये मार-काट, कत्ल-ज़िबह। इन लूठे अंशवालों को जुद्ध-लडाइयों के बिना चैन नही पड़ता। गर्क गये लाख मौज-मज़ा करें, पर जब तक खून-खराबा न कर लें इन डौलेवालों की ज़िन्द नही पुरती।"

"सच कहती हो। इनकी तो मूँछ का बाल न गिरे, खुलता है ढिढ तो जनानी का ही। जिस धरती बीज पड़े, वह अपने रूख-फलों को बेफायद नष्ट क्यों होने दे!"

"मल्ला रब्ब ने भी कुछ सोचकर ही मर्द-जनानी का काम बाँटा था। ज़ोरावरी लाख आदम की, पर रब्ब ने औलाद लगायी तो हव्वा को ही न! जेकर लग जाती कहीं अल-औलाद की परवरिश मनुक्ख को तो उसे फाड़-फाड़ खाते। इन्हे सब्र नही। इन्हे तो अपना मौज-मज़ा चाहिए।

"ऊपरवाला भी आखिर को सुच्ची समझ रखता है। जोड़े भी बनाये और काम-धन्धे भी बाँट दिये। जनानी से कहा—धिये, तू मामता की गाही-वाही कर और टब्बरों की देख-भाल कर। जनेया, तू खेती कर फसलें पका और खिला-पिला।"

"सुनो री सुनो, निक्के का भाइया कल शहर से लौटा है। कहता है हर पिण्ड से टाबरों की उम्रें लिख-लिखकर ले जा रहे हैं।"

"रब्ब रक्खया करे अपने जातकों की। शाही हुक्म निकल गया, अब सब क से रस्से बँध जायेंगे।"

"खैर सदके, गौहर तुम्हारा है तो छोटा पर लगता बड़ा है!"

"और जलाल मेरा!"

"वही अगड़-पिच्छड के हैं। दो-चार महीने इधर-उधर!"

"चल माहिया, दुचित्ताई न रख। बरखुरदारों की बढी-चढी होने दो। र तो इन्हें या सुहागा-सहाड फेरना या फिर कन्धे बन्दूक। इन्होंने कौन-से -खाते रखने-रखाने हिन्दुओं की तरह। अल्लाह बेली की रहमत हो, गज्ज-के लश्कर-छावनी पहुँचें।"

हमीदा री, सिकन्दरे के करतब सुनती है न! जाता है, डाका मार परत। चल, लाम लगी है तो लड़के अपने इन बातों से तो मुड़ेंगे।"

ने कहा साईं दित्ती की तन्न देखी है इन दिनों! जट्टी शाहनी बन-बन। कचहरी-परचा कर शरीक़ों की जिवियाँ हथिया लीं। रब्ब-रसूल आप

देखेगा इस बेइन्साफी को !"

"मिये खाँ की बेगम बी कान में कह गयी थी कि मुकद्दमे के लिए शाहों से और रुपया उठाया है।"

"शाहों की भली पूछी ! गुत्थी भरी हो दमड़ों से तो बन्दा या आप उठ-उठ नाचे या दूसरों को नचाये। मुकद्दमे लड़ाये। हिन्दुआनी सिदक-सब्र मियें लोगो की तरह खा-उजाड़ नही देता। शाह सोच-समझ के पैसा लगाते है और दूना बनाते हैं।"

"चलती हूँ री, माल-डंगर को छप्पर ले जाना है।"

"हाँ री, एक बात तो सुन ! जुलाहो के घर जो मियाँ-बीबी उतरे हुए हैं, मुझे तो कुछ ऊपर-हेठ नजर आता है। ईद को रकाबी-भर पुलाव भेजा। मैं तो देखकर त्रबक गयी।

"जलाल के चाचे ने देखा तो बोला, 'कुछ भी कह लो, ऐसा पुलाव सैयदानी के अलावा और कोई नही बना सकता !' "

"कही से भागे-भगाये होगे। जनानी को तो दिन चढ़े लगते है। एक-न-दिन तमाशा खुलेगा ज़रूर।"

लाहबीबी सिर पर वड़ेवों की गठरी उठाये पास से गुज़री—"क्यों धियो, आज कैसे गोशे !"

"माँ, सुनते हैं जंग छिड़ी है। लड़कों को जाये बिना चैन थोड़े ही आयेगा। उठ-उठ भरती को जायेंगे।"

लाहबीबी बड़े लाड़ से हँसी—"फत्तू मेरा तड़के ही डण्ड निकाल रहा था। वरदी का बड़ा चाव !"

"बोद्दे के लिए मेरा तो कलेजा धक्-धक् करने लगा है।"

लाहबीबी के दो पुत्तर पहले ही फौज मे भरती। सहजे से बोली—"बोद्दे की माँ, खैरें-मेहरें हैं। फ़िक्र न कर। जिस पुत्र-जवातरे ने वरदी में सजना है उसने सजना ही सजना है। मौला किये जिसके काँधे पट्टी फ़ौज की फबनी है उसके ज़रूर फबनी है। भरम न करो।"

लाहबीबी के गये पीछे कोच्छड़ों की वधूटी बोली—"ले, मल्ला लाहबीबी की बात सुन ! इसके भाने जंग न हुई सौंची कब्बडी हो गयी !"

"जट्टी है न, जट्टी। पुत्तर-पोतरे खेती करें या भरती हो नायक बनें, इसे दोनों सरते हैं।"

अरोड़ों की बन्तो ने खत्राणियों को बोली मारी—"हम तो हुए हटवानिये बहना, पर खत्राणियों की रूह क्यों अड़ती है ! खत्री का तो कर्म-कम्म ही जुद्ध-लड़ाई। अब करें न पुत्रों को आगे !"

खुल्लरों की पारो मच गयी—"क्यों री, खत्री-बाम्हण के ज़िक्र क्यों ले बैठी !

कौन माँ है जो अपने पेट के लिए न कतरायेगी ! पुत्तरों की छातियों पर लाम ढुकी है और तू करने चली कुल-गोत्रों के वारे-न्यारे ! फिटे मुंह री !"

ग्राँ-ग्राँ में ढोल बजने लगे और सरकारी ऐलान हो गये—

पुत्र निशान
जिवियाँ जहान
सुनो शाही फरमान
जवानो, लाम रोज़-रोज़ नहीं लगती
तकदीरें रोज़-रोज़ नहीं खुलती !

जट्टो, सिहो, लबाणयो, राजपूतो, अवानो, पठानो, जंग क्या छिड़ी, जवाँमर्दों के मेले लग गये ! बहादुरो, पहुंचते बनो मैदान में ! सरकार तुम्हारे कुनबों की सलामती देखगी । साहबज़ादड़ो, बहादुरी दिखाओ जा के मैदाने-जंग में । खिल्लतें पाओ । घरों में सनदें सजाओ !

बरखुरदारो, एक बार लग गये मुरब्बे तुम्हारे टब्बरों को तो फिर कोई कमी नहीं ! गाय-भैंसें, माल-डंगर, घोड़े-घोडियाँ, दौलत के ढेर !

ओ जवाना बन रंगरूट
नयी पोशाकें वढिया बूट ।

माँओ, बहनो, घरवालियो, दो इजाजत टब्बरों को—आला फौज पंजाब में भरती हों, जवाँमर्दी दिखलायें मैदाने-जंग में और हँसते-खेलते घरों को परतें कन्धे सजाकर । याद रहे, विलायत के शहंशाह बहादुर टिवाणा-लान्सर्ज की वरदी में लैस होकर शाही फौजों की रौनक बढाते हैं ।

भरती-अफसर के इशारे पर सरकारी ढोलियों ने जिन्दाबादियाँ बुला दीं—

सरकार बहादुर ज़िन्दाबाद
बहादुरी पंजाब जिन्दाबाद
टिवाणा लान्सर्ज़ ज़िन्दाबाद
ज़िन्दाबाद भाई जिन्दाबाद
फ़ौजें अपनी ज़िन्दाबाद ।

निक्के-निक्के बच्चों के झुण्ड आ ढुके ।

भरतीवालों ने छोटे बच्चों के सिरों पर थापड़ दिये और मदरसे जानेवालों

इंगलिस्तान उन सब वालदैन के अहसानमन्द हैं जो अपने पुत्रों को जंग में हिस्
लेने के लिए भरती करवा चुके हैं या करवा रहे है। अपनी हिन्दुस्तानी रियाय
और बहादुर फ़ौजों की सलामती उन्हें उतनी ही प्यारी है जितनी उन्हें अपन
इंगलिस्तानी फौजें।

"गौर करो, गोरी पल्टनों के सिरों पर टोप सजते हैं और अपनी नक्क-दक्ख
वाली क़ौमों के सिरो पर साफ़े। साफ़ा-पगड़ी वन्दे की इज्ज़त-आबरू है।"

तहसीलदार ने नायब को टोक दिया—"पहले डोगरा पाग बयान हो!"

"जनाब, डोगरा पाग सवा सात गज की। सिक्खी साफा सात गज। पंजाबी मुसलमान साढ़े-पांच गज। पठानी साफ़ा साढ़े-पांच।"

दूसरे साफ़ो के मुक़ाबले मुसलमानी साफे की छोटी लम्बाई मांओं-बहनों को पसन्द न आयी।

"अरे भरती अफ़सरा, यह दुरंगी कैसी! सिक्खी साफा सात गज, डोगरी सवा-सात, पंजाबी मुसलमान और पठान की पग्ग पर ही सरकार ने सारी कंजूसी-किड़सकारी करनी थी!"

नायब बडे अदब से बोला, "बेबे, बात वेशक तुम्हारी ठीक है, पर गज-डेढ़-गज कपड़े से सरकार के खज़ाने खाली नही होते। जैसा हर कौम-क़बीले का रिवाज-चलन हो बिल्कुल वैसा ही साफ़ा सरकार अपने फ़ौजियों के लिए मंज़ूर करती है।"

करमइलाहीजी ने हाथ से इशारा किया—"भरम न करो, रिवाज की बात है। जट्टियों का काम दो हाथ की दुपट्टियों से चल जाता है। हिन्दुआनियों को जोड़वाले ढाई-गजे भोच्छन चाहिए होते हैं।"

मां करभरी ने साथ खड़ी हुसैना से कहा, "अरी, हिन्दुओं को वहुता पैसा, वहुती वरतन। वहुता फुल्ल फैलाव।"

"लो सुनो मांओ-बहनो! हर साफ़े की अल्हदा शान। अल्हदा बान। पठानी साफा—लम्बे कुल्ले पर आठ बल। बायीं तरफ़ तीन बल और पीछे का लड़ अन्दर टुंगा हुआ। सिक्खी साफा—एक पमाव दायीं तरफ़, आठ लपेटनियां बायीं तरफ़ इकसार, बीच में पग्ग का तिकोण नजर आता रहे।"

"पुत्तरा, डेरा जट्टी साफ़े की बात सुना!"

"लो सुनो, पंजाबी मुसलमान का कुल्ला बड़ी मरजादावाला। न छोटा, न बडा। चार अंगुल चौडे बल। एक लपेटनी पहले दायीं तरफ़, फिर बायीं तरफ़ से कुल्ले पर। शमला पीछे से लाकर टुंगना ऊपर।"

ख्यालों में ही मांओं को अपने-अपने पुत्तरों के सिरों पर सोहणी पागें नज़र आने लगी।

मां हाको ने दुपट्टी के छोर से धेला निकाल नायब के सिर पर से सिरवारना

बोली, "हाक़मो, सारे मुरब्बे उल्टे बालोंवाले नहरियों को ही न लगा मारना। उनके पास पहले ही बहुतेरे। पुत्र-पोत्रे लाम पर है और हम दोनों सास-बहू आप ही खेती की वाही-गाही करती हैं। साहबा, माँएँ और सवानियाँ जिगरा न करें तो बताओ अंग्रेज की फ़ौज कैसे सजती है! जिला लाट को कह देना हमारी तरफ़ से दो पहले ही थे फ़ौज में, अब सैरों से दो और को छावनी चढ़ाया है।"

हवेली में मंजियाँ सरकारी रौब-रुआब से सज गयीं। गर्म-गर्म दूध के कटोरे और साथ खस्ता, नानखताई और पीडी गोल मिठाई।

तहसीलदार ने खताई का टुकड़ा मुंह में डाला ही था कि मजलिस में हास्सा पड़ गया।

"बादशाहो, आधी अंगुल की खताई और उसका भी छोटा-सा टोटा! आज जो सरकार के तेवर हैं उस मुताबिक़ तो सरकारी अहलकार बन्दों को कच्चा चबा जायें।"

जहाँदादजी गण्डासिंह की ओर देखकर मुस्कराये—"साहब बहादुर, फ़ौजें अपनी दुश्मन की पीठ लगाकर गोल मिठाई ही खायेंगी। बाकी नानखताई तो हुई न आप जैसे बारीक़ अमले के लिए।"

कृपाराम भी अपनी आदत से बाज न आये, कुद्दक्का लगा ही लिया—*"बादशाहो, इतना तो बताते जाओ कि आखीर यह जंग छिड़ी तो क्यों छिड़ी!"*

गण्डासिंह छिड़ गये—"कृपारामा, यह भी क्या सवाल कर डाला! कोई टुकड़ा-इलाक़ा हड़पना होगा सरकार ने। नहीं तो जंग-लड़ाइयाँ कोई दोस्ताने बढ़ाने के लिए तो नहीं की जातीं!"

गुरुदित्तसिंह ने टीडा दिया—"आँख लगायी जमरूद के क़िले पर और फौजों को छावनियों से निकलने का हुक्म दे दिया। बस, एक रणजीतसिंही झटके ने इलाक़ा समेट लिया अपनी तरफ़।"

मुंशी इल्मदीन खीझ गये—"खालसाजी, कहाँ की कहाँ मिलायी, हिकमत अपने को समझ में नहीं आयी।"

"समझ में क्या आनी है! बात तो साफ़ है न! की चढ़ाई और इलाका जीत लिया।"

"सवाल तो यह है कि अंग्रेज का क्या थुड़ गया जो जंग का ऐलान कर दिया! फौजें वैसे भी तो कुछ-न-कुछ करती रहती है!"

"बात यह है बादशाहो, कि हकूमत को बीच-बीच में यह ठेसरे-मेसरे करने पड़ते हैं। आखिर तोपखाने हकूमत ने मक्खियाँ मारने के लिए तो नहीं रखे हुए! किसी से आपने छेड़-छाड़ की, किसी ने आपसे करवायी। अपना वज़न भारी देखा तो भभकी दे दी। दाँव लग गया तो गिच्ची कपड़ ली।"

शाहजी ने फ़तेहअलीजी की हाँ-में-हाँ मिलायी—"बराबर चौधरी साहिब,

हकूमत के ये ही दो जरूरी काम हुए—जहांगीरी और जहांदारी।"

"नायबजी, गिनती के हिसाब से भरती में कौन-से जिला-तहसील अव्वल चल रहे हैं?"

"बादशाहो, गिनती के हिसाब से इस वक़्त सारे हिन्दोस्तान से आगे और अव्वल सूबा पंजाब और पंजाब में सबसे आगे हमारे चार जिले—शाहपुर, गुजरात, जेहलम, रावलपिण्डी।"

तहसीलदारजी ने अपना दबदबा क़ायम किया—"बात ऐसी है कि लड़ाई छिड़ने के वक़्त एक लाख पंजाबी अपनी फ़ौजों में भरती था। शाह साहिब, मतलब यह कि हर २८ जनों के पीछे एकजना फ़ौजी पंजाब में और डेढ़ सौ के पीछे एक जना बाक़ी हिन्दोस्तान में।"

"हैयी शाबाश ए!"

"लो, और सुनो—गुजरात चार हज़ार, शाहपुर पांच हज़ार, रावलपिण्डी पन्द्रह हज़ार, जेहलम बारह हज़ार।"

कर्मइलाहीजी का जोश जरा ठण्डा हो गया—"इस हिसाब से तो अपना जिला उन्नीस-इक्कीस ही हुआ।"

भरती अफ़सर ने बड़ी सयानफ जतायी—"न चौधरीजी, औसत के हिसाब से अपने जिला गुजरात की तहसील खारियां अव्वल नम्बर पर है।"

कुन्दन चिड़े ने पूछ लिया—"सुनने में आया है मोहर की क़ीमत फिर गिरी है।"

"कोई नुक़्स वाली बात नहीं। सर्राफ़े-मण्डियों में तो यह ऊपर-हेठ होता ही रहता है।"

"यह न कहो बादशाहो, सरकारी बैंकों का दिवाला निकलनेवाला था जिस दिन जंग का ऐलान हुआ है।"

तहसीलदार बोले, "हवा थी, उड़ गयी। समझा दिया लोगों को कि आपकी मरज़ी के बिना आपका पैसा इस्तेमाल नहीं होगा।"

गण्डासिंह यूं ही ताव खा गये—"यह सरासर झूठ था। सरकार ने लाहौर गुजरावालियों हिन्दू धनाढो से कहा—रातों-रात बैंकों में पैसा डालो ताकि दिन का भुगतान चालू रहे। मेरे साले का साला पंजाब नेशनल में रोकड़ पर लगा हुआ है। दस जमातें की हुई हैं उसने।"

तहसीलदार की त्योड़ियां चढ़ गयीं—"जरा नाम तो बताओ उस लड़के का!"

गण्डासिंह बीस साल छोटा हो गया। फुरती से कहा, "नाम जानकर क्या करोगे! वह तो कब का भरती हो चुका!"

सरकारी मण्डली को यह तेवर पसन्द न आया।

'लालसाजी, कहीं ग़दरियो-इन्क़लाबियों से तो मेल-जोल नहीं !"

"न जी, पर एक बात तो बताओ ! सरकार ने कनाडा की राहदारियां क्यों बन्द कर दीं ! अपने बन्दों की ऐसी खज्जलख्वारी की, भला क्यों ! यह ज़ुल्मत नहीं चलनी—सरकार इतना जान रखे।"

तहसीलदार बड़ा ज़िच्च हुआ—"शाह साहिब, यह क्या माजरा है ! कहीं ग़लत लोगों से रब्तो-ज़ब्त तो नहीं किया हुआ ?"

"न जनाब, आप बिल्कुल बेफ़िक्र हों। फ़ौजियों का पुराना टब्बर है। बड़ा लड़का फ़ौज में था—अफ़ीका में काम आ गया। छोटा भी लाम से पहले का भरती है। खुद आप गण्डासिंह फ़ौज के पेंशनी हैं।"

"अपनी पुरानी पल्टन ३३ पंजाब है।"

"वाह !" तहसीलदार ने आगे बढ़ हाथ मिलाया—"फ़ौजी पेंशनियों की फ़ेहरिस्त मेरी नज़र से गुज़री ज़रूर है—".

"बेशक सही करो बादशाहो, नाम ज़रूर होगा—नायक गण्डासिंह नम्बर ६६८५ !"

बाबो मिरासिन ऊपर से उतर हवेली के आगे आन खड़ी हुई। भरतीवालों की भीड़ देख नयी ब्याही की तरह मुंह पर घूंघटा खींच लिया और टल्लीदार तालियां बजा दीं—

हुक्म हुआ सरकारो
कि पुत्रवाली कम्म न करे
हुक्म हुआ सरकारो
कि धी वाली छोले दले।

तहसीलदार को यह तुक्कड़ बड़ा पसन्द आया। आंख से नायब को इशारा किया तो उसने जेब से पनपड निकाल बाबो को दिया।

बाबो ने खुश होकर फ़तेह बुला दी—

ओ मुच्छड़ बादशाह तेरी फतेह
ओ रोडे बादशाह तेरी फ़तेह
ओ मलका मोटड़ी तेरी फतेह
ओ जंगी लाटड़े तेरी फतेह।

"लो सुनो सहेलियो, लाम-घोड़ी —
शाही हुक्म हुआ
जंग का बिगुल बजा
बांका बसरे गया
जीत आ रण का
बन के, तू सिरमौर जी
तेरी छाती सजे
तेरे कांधे सजें
तेरे माथे पे
सनदों का है शोर जी।
मां की झोली भरे
घर की जिवियां सजें
मिल गये हैं मुरब्बे
पड़ा शोर जी।

"जियो मेरी बच्ची, जियो। मैं सदके जाऊँ—एक बार और गा। कलेजे ठण्ड पड़ेगी।"

"धिये राबयां, ऐसी सुर्खा-लट्टी लाम-घोड़ी जोड़ दी!"

रेशमा ने राबयां को कन्धे से घेर लिया—"माहिया, वह दूसरी सुना जो जगतार की बहन को सुनायी थी।"

चाची मह
सजद बीब
याद करने दे।

शीरी बोली, "अरी, वही हीरे-नगीनेवाली —
अम्बड़ी
के
लाड़ले
बाबुल
के
लालड़े
बहनों के
बांकड़े
भाइयों
के
सांझड़े

मिट्ठड़ी
के
माहिया
ओ
तेरे
माथे पे
जीतों
के
सेहरे
बंधें
मोती
हीरे
नगीनों
से
ताजे
लल्ला
तेरे
सेहरे
गुंथें
तेरे
कुनबे
बढ़ें।
तेरे
बच्चड़ों
के
बच्चड़ों
के
बच्चड़ों
तलक
तेरी
बेलें
बढ़ें
तेरी
जिवियां

खिलें
तेरी
फसलें
पकें
तेरे
कोठे
भरें।

माएँ, बहनें, घरवालियाँ और उदास पड़ी कुड़ियों की टोली रब्ब का नाम ले-ले अपने आँचलों से अँखियाँ पोंछने लगी।

सजद बीबी ने सिर पर प्यार फेरा—"पीर फकीरों की खैर थिये, तेरी ग़ज़ल-घोड़ियाँ सुनती रहें और पुत्र-प्यारेयों की उडीकें सहल करती रहें!"

पीढ़ी पर बैठी शाहनी ने हुसैना से पूछा, "माँ सदके, निक्के का रुक्का-पत्र तो आया है न!"

"आया है शाहनी, देखो अब चिट्ठी-रसैन कब पहुँचता है!"

मंजी पर बैठी चाची महरी चावलों की कणियाँ चुनती थी, बोली, "वारी बलिहारी हरकारे पर री, जो पार समुद्रों से पुत्रों की सुख-सान्द लाता है!"

रसूली की माँ बडे हुंकार से बोली, "लाट ने हुक़म निकाला है कि ज़िमीदारों के पुत्तर अपनी पलटनों से ही जिवियों के मामले-सरकारे जमा करवा सकते हैं।"

"अरी बहना, अंग्रेज हाक़मों की अक्ल-बुद्ध माड़ी नहीं। शुरली की माँ, मैंने कहा तेरा काका तो पुलिस में भरती है न!"

"फौज ही समझो। सरकार ने दो-चार टुकड़ियाँ पुलिस की भी लाम में भेजी हैं। उसी में गया है खैरों से शुरली।"

फकीरे की माँ करभरी ने मुण्डी हिलायी—"हे री, गोला-बारूद से लड़ने को लाम-लश्कर बहुतेरे, पर दुश्मन-वैरी को जंग के मैदान में गालियाँ कौन दे! अपनी पुलिस पंजाब की तो गालियाँ देने में बड़ी अव्वल और आला हुई न!"

"सच कहती हो बेबे, लड़ाइयाँ-जंग सिर्फ़ नेजे-बन्दूकों से ही थोड़े लड़ी जाती हैं। जब तक वैरी-दुश्मन को मन-भर पक्की गालियाँ न पड़ें, ग़र्कजाने वैरी का कैसे तो कालजा फुंके और कैसे लून जले!"

लड़कियाँ बेबे करभरी को देख-देख हँसें।

चाची महरी ने पोले मुँह कहा, "मैंने कहा री, गालियों की अपनी ताक़त-सत्या जो पत्थर को फाड़ दे। बेबे करभरी के पास तो गालियों की पोटली नहीं, पण्ड है पण्ड। भेजना तो सरकार को तुम्हें चाहिए लाम पर। उधर से चलें बारूद-गोले और इधर से सेर-सेर पक्की गाली। फिर देख तमाशा वैरी-दुश्मन का!"

बेबे करभरी हँसने लगी—"माहिया, बेफ़िक्र कर लो मशकरी मुर्के, पर, री,

[illegible]

"[illegible]"

"खुदाबन्दा [illegible] नज़र रखे लोगो—अब तक [illegible] आ चुके। चाचो, लस्सी की [illegible] लगाव करके [illegible] है [illegible]! [illegible] पर चढ़ने से पहले [illegible] के रजो शाहदौला पीर के बड़े दरबार में भी [illegible] करके रखा है!"

"साईं मेहर करे।"

लस्सी का बर्तन उठाने शाहबीबी आन खड़ी हुई। छोटी पुरोहतानी [illegible]। बोली, "छोटी रंगरूट को पन्द्रह की तो तनख्वाह तरक्की और पन्द्रह का भत्ता मैदाने जंग का। फिर, भला कितने का रुक्का था मोहर का!"

"बेबे, दस कम सौ। बच्चड़ों ने कुछ आप भी तो खाना-पीना हुआ! रखे ही होंगे न पाँच-दस तो अपने पास भी!"

"खाना-पीना चंगा देती है सरकार। हर जवान को दूध-बादाम-फल खाये हुए हैं। रोटी-सालन भी चंगा।"

सजद बीबी को यक़ीन न आया—"बेबे, लश्करों में कौन इतना ख़रचा करने लगा!"

"न री न, सर [illegible] को पालती है! ओ [illegible]"

"अरी बहना, [illegible] पी पड़े रहेंगे।"

"न री, फौज में जेलों से ज्यादा मुशक्कत। ढम्मर लड़ाई-जंग में घूँट भर भी लेंगे तो क्या!"

नज़ाम बीबी पौड़ियाँ चढ़ आयी—"कोई दवा-दारू पूछने आयी हूँ शाहनी। मेफू के निक्के का पेट चल गया है। मैंने कहा शाही शाह के लिए तुमने ज़रूर कोई घुट्टी-घाट्टी रखी होगी!"

शाहनी ने उठकर मिट्टी के कूजे में रियोंद, हरड़, जहरमोहरा, माजू, कपूर, निरमसी डाल हत्थ पकड़ाया, "रगड़ के दो-एक बार दो। बराबर आराम आयेगा।"

"शारदूले की भाभी, काका अपना तो मेरठ छावनी पहुँचा हुआ है न!"

"हाँ शाहनी, अभी तक तो यहीं है। कब हुक्म आ जाय आगे जाने का!"

सजद बीबी बोली, "सुनते हैं पल्टन में ऊँटों को बीमारी पड़ गयी है माता-घोंटू की।"

"पिछले जन्म सौदागर होगा घोड़ों का !"

रावयाँ पैड़ियों से नीचे उतर गयी तो देवरानी से कहा, "जेठ तुम्हारा लड़की के सवैये-काफिये ऐसे मग्न होकर सुनता है ज्यों लड़की के मुँह से फूल झरते हों।"

"जिठानी, यही हाल तुम्हारे देवर का ! लड़की मरजानी में रोशनाई भी तो बहुत। जो पोथी उठाती है, पढ़ लेती है। लाली से ही सुन, ऐसी-ऐसी कहानियाँ सुनाता-कहता है ! यही सिरमुन्नी सिखाती है उसे।"

जिठानी के माथे पर चिन्ता की झूँझल देखी तो सहजे से कहा, "भरम न कर। इन अराइयों को तो रब्ब की देन। कोमल कूली साग-सब्जी उगाते-उगाते अन्दर-बाहर भी हरियाला उग आता है। लड़कियाँ तो और भी छन्द-टप्पे जोड़ती रहती हैं, पर इसकी तो कुछ बात ही अनोखी। जो चाहे जोड़ ले और गले की सुच्ची हूँग ऐसी कि बन्दा पानियों में तैरने लगे।"

"बिन्द्रादइये, देवर से कहना इसका कहीं साक-सम्बन्ध कराने की करे। अब छोटी तो नहीं न !"

बैठे-बिठाये मिट्ठो के संजोग खुल गये। एक त्रिकालाँ मिट्ठी की मौसेरी बहन गुणकौराँ घोड़े से उतरी। सबसे रामसत्त की। बच्चों के सिरों पर प्यार फेरा।

"मौसी, सब खैर सुख है न !"

"हाँ धिये। गुणकौराँ, न चिट्ठी न रुक्का-पत्री। आज कैसे इधर मुँह कर लिया ! सास-ससुर तो ठीक ! जवाँई राजा हमारा कैसा ! घोड़ी के साथ बन्दा आया है न !"

"मौसी, खैर मेहर है। घरवालों से बिना पूछे नहीं आयी। जरा साँस लेने दे। फिर बताती हूँ सारी बात।"

मिट्ठी की माँ ने अपनी बहनेवी को मंजी पर बिठाया—"मैं सदके गयी। लारी मिट्ठिये, बहनू के लिए लस्सी-पानी ला।"

"मौसी, जरा ठहर। मेरी जिठानी-सास की नसीहत है कि जब तक बात न कर लूँ तुम सबसे, मुँह जूठा न करूँ !"

"हाय री, सुखी-सान्दी यह क्या !"

गुणकौराँ मंजी पर बैठ अपनी गठरी-पोटली फलोरने लगी। लाल गुत्थली से

गरी-छुहारा निकाला --"ले मौसी, ज़रा करना झोली।"

"बुझारतें न बुझा, बता तो सही।"

गुणकौरां हँस-हँस बोली, "बेबे को भी बुला लो। बेबेजी, ज़रा आना। आप ही से कुछ कहना-सुनना है।"

गुणकौरां ने उठकर बेबे से रामसत की तो बेबे ने आसीसें बरसा दीं --"गुणकौरां, राजी हो न! सास-ससुर राजी! मेरा जवांई राजा राजी! आज कैसे पहुँची मेरी धी इस पिण्ड!"

"बेबे, बधाइयां! मैं आयी हूँ मिट्ठी का रिश्ता लेकर।"

"रक्ख साईं की।"

वन्तो चमक उठी—"यह क्या गुणकौरां, न पहले बताया, न पूछा-गाछा!"

"मौसी, यह सगुणों के काम तुरत-फुरत। जिठानी मेरी ने बैठे-बैठे बात छेड़ी। जेठजी ने सिर हिला हामी भरी और जितने में मैंने थाली झुकायी, जेठ राजे ने घोड़ी और बन्दा घर भेज दिया। मौसी, सगुण-शास्त्र के काम में देर कैसी!"

वन्तो ने हाथ से रोका— 'ठहर री गुणकौरां, बता तो सही रिश्ता लायी किसका है! अपने देवर का!"

"न, जेठ के पुत्र का!"

"हैं री धिये, एक ही पुत्र उसका। गंजी नहायेगी क्या और धोयेगी क्या! घर तो भरा हुआ हो। गुणकौरां, तेरा टब्बर तो मुंडवाला है।"

"बेबे, यह बात फेंकनेवाली नहीं—लड़का भावें एक है पर सोहणा सालड़ा। ऊँचा तगड़ा। देख के भूख उतरे। फिर दस जमातें पढ़ा हुआ। मौसी, मासड़जी को बुला ले। जेठजी का हुक्म है कि सगुण मिले तो मुँह जूठा करूँ नहीं तो—"

"ठहर री, अभी 'हां' 'न' न कर। मेरे पुत्र को तो आने दे।"

दादी को अपनी पौत्री पर भर-भर लाड़ आया—"गुणकौरां, लड़की भी देख। सारा काम करती-धरती है। बाकी, री, शक्ल-सूरत की मैं अपने मुँह क्या कहूँ! जन्म देते हैं मां-बाप और रूप देता है रब्ब!"

"बेबे, मेरी बहन है मिट्ठी। मेरे ससुरालवालों ने भी किस्म ही देखी न! जिठानी मेरी बोली कि गुणकौरां, तुम्हारे टब्बर की मुण्ड-जड़ बड़ी सोहणी। धी मिल जाये तुम्हारी मौसी की तो इस घर सोहणी रौनकें चल जायें।"

बेबे हँसने लगी—"बुरा न मानना गुणकौरां, टब्बर तुम्हारा बड़ा लड़ाका। अरी, उनसे निभ जायेगी!"

"बेबे, दिल के माड़े नहीं। बड़बोले हैं। दिमाग में आ गयी तो तुरत-फुरत। देखो, थाली अभी मेरे हाथ और घोड़ी भेज दी।"

मिट्ठी के भाइये जिऊनदास ने सुना तो झटापट शाहों के यहाँ जा पहुँचा।

शाहजी से सलाह-सूत्र किया और घर आ बधाई बुला दी—"गुणकौरां, ब
हो !"

"बधाइयां ! बधाइयां !"

मिट्ठी पसार में जा लुकी । बेबे ने सबको गुड मुंह लगवाया । अन्दर
शालू निकाला, उस पर रुपये रखे और गुणकौरां की झोली मे डाल दिये ।

"लो धिये, रब्ब ने मेल मिलाया । बैठे-बिठाये संजोग जुड गये !"

अगली सुबह आस-पास की आ जुडी । सुहाग छू लिये । गुणकौरां ने मिट्ठी
का माथा चूमा । लाड से हथेली पर थूका । बेबे और वन्ती से रामसत्त की ।
वन्ती को हौले से कहा, "जो रिश्ते को 'हां' न होती तो ससुराल में मेरी
शामत थी ! मेरी रब्ब ने रख ली !"

मिट्ठी के भाइयों ने कूजों की पोटली में सगुण के रुपये रखे और गुणकौरां
को पकड़ाकर कहा, "हम उनके किस तुल ! दौलत-माया के लशकारे उनके बहुत,
इज्जत-मान की उनके घर कोई कमी नहीं । हाथ जोडकर कहना समधियों से, इस
दिशा मुंह करके उन्होंने हम माहतड-साथों को उबार लिया ।"

गुणकौरां ने मिट्ठी को बांह में भर ठुड्डी पकडी—"मासडजी, ऐसी रुपली-
सोहणी धियें घर में चाहे दरजनों में हों । जहां पहुँचे चिराग जल उठें ।"

घोड़े पर चढ सबको हाथ जोडे तो हँसकर कहा, "ब्याह की तैयारी शुरू कर
लो । मेरे घरवाले ब्याह जल्दी मांगेंगे ।"

"इतनी जल्दी क्या ! लड़की का ब्याह सौ ढक-साल है !"

'बेबे, मां-यों के सिर से जितनी जल्दी भार उतरे उतना चंगा । लड़के को
खैरों से फौज की परची मिल गयी है ।"

घरवालों को भागदौड़ पड़ गयी । त्रियोंरों के दुपट्टो पर किनारी टँकने लगी ।
मिट्ठी की दादी को फुलकारी की चिन्ता लग गयी ।

"मैंने कहा वन्तिये, पल्लू के लहरिये बाक़ी है और खैर सदके एक चौथाई
कोडियां । चरखा थोडे दिन रहने देती हूँ, भर लूंगी जल्दी-जल्दी !"

मिट्ठी को सहेलियां घेर बैठी ।

"बता री बता, कुछ तो बता !"

"क्या बताऊँ—मुझे कुछ पता ही नही !"

"छोड़ री, हमें न चरा । तुम्हारी मौसी की धी लगती है । भला बता न गयी
होगी !"

"बेबे, नाम तो बता दो न लड़के का । हम सिट्ठ जोड़ेंगी ऐसी कि शाहरिये
मुंह लुका लेंगे ।"

"अरी, नाम लडके का बड़ा सोहणा मिट्ठा—महतावचन्द ।"

भन्नी ने गलवांही दी—"मिट्ठिये, ससुराल का नाम तेरा महतावकौर

पक्का। वेबे, भला ससुराल इसके कहाँ !"

"लखनवालवाले दुग्गलों के घर।"

"ले री मिट्ठिये, तुम तो शहरन बन जाओगी। फिर भला कहाँ पहचानोगी अपनी सखी-सहेलियों को !"

मिट्ठी की मँगनी-कुड़माई की बधाइयाँ-मुबारकें अभी ताज़ी ही थीं कि टेवा मिला और ब्याह सुद गया। घर मे सुहागों के सगुणी सुर गूँजने लगे।

वन्ती आँखें भर-भर लाये तो मिट्ठी की दादी समझाये—"मैंने कहा वन्तिये, धियाँ पेट में समाती हैं पर तऊन मे नहीं। इनका अन्न-जल तो निखड़ना ही हुआ !"

घर में कड़ाही चढ़ गयी। मेले आना शुरू हो गया !

मिट्ठी माइयाँ पड़ी। मैले-कुचैले कपड़ों में कोई सूरत-मूरत उघड़-उघड़ पड़े।

सगुण शास्त्र मे दादी बड़ी पक्की—"आओ री आओ सात सुहागनो, आकर लड़की को उबटन-वटना मलो ! बहन-भरजाई, मौसी-फूफी, चाची-ताई—एक ओर आ जाओ।"

बरकती हँस-हँस के बोली, "मैं आ जाऊँ !"

शाहनी-चाची साँस रोके खड़ी रही—हैं री, इस चंचला ने यह क्या पूछ लिया, कि मिट्ठी की दादी बोली, "आ री आ, तुमसे बड़ी सुहागन कौन ! तारेशाह का पुत्र तेरी गोद ! आ।"

जनानियाँ सुहाग गा-गा मिट्ठा-मिट्ठा रोने लगी—

आले दवाले मेरी गुड्डियाँ
मैंनू नही खेलन दा चाव रे
मेरी सखी सहेली बाबुल बिछुड़ी
मेरे सासरे घर चाव रे
माँ रोती का आँचल भिज गया
मेरा बाप रोये दरिया रे
मेरा वीर रोवे सारा जग रोये
मेरी भाभियाँ दिल चाव रे।

सहेलियाँ भर-भर अँखियाँ रोयें। ज्ञानो ने चन्नी को गलबाँही दी—"अरी अरमान न लगा, तू भी चली जायेगी।" मिट्ठी ने पूछा, "डोडो को धोड़ी भेजी है न ? आ जाये तो चंगा, तेरी पक्की सहेली है !"

बड़ी सयानियों की भीड़ से अलग मिट्ठी सहेलियों के संग पसार में आ बैठी।

मिट्ठी ने हाथों में मुँह छिपा लिया।

"वह मेरे दिल मे लुका हुआ है। जाती बेर चुपके-से रुमाल दे गया!

"हाय री, मैं मर जाऊं! मिट्ठिये, इतनी देर मुझसे छिपाये रखा!"

चन्नी आप उन डोगरो पर डुल पड़ी थी। सोच-सोचकर बोली, "सहे
आज पीछे नाम न लेना। कहीं भी छिपाये रखेगी दिल मे तो वह जान जाये
मरदो के पास ऐसे जन्त्र-मन्त्र बहुतेरे। मरगये हाथ लगाते ही बूझ लेते हैं।"

शानो पास आ ढुकी—"जरूर तुम्हे हरवंसो ने बताया होगा।"

चन्नी शरारतों पर उतर आयी—"मल्ला तू तो अब हो गयी किसी अ
को। एक काम कर। उस हुस्न-कमाल की मूरत अपने दिल से निकाल मु
रखनी दे जा। जब-जब फेरा डालने आओगी तो मैं तुम्हें निकालकर दिखा दिय
करूँगी! हुआ कौल-क़रार!"

मिट्ठी के ब्याह का साहा ऐसा कि मेंह कहे आज ही बरसना है।

चूड़ा चढ़ाने को बैठे-बैठे आधा दिन बीत गया। दुग्गलों के नाई-पुरोहित छुहारा लेकर न पहुँचे। होली-होली खुसपुस होने लगी—समधी किसी बात का बुरा तो नहीं मना गये।

बरसते पानी में भीगते-भागते समधियों के पुरोहितजी आन पहुँचे तो घर-वालों की जान में जान आयी। मामियां-चाचियां बधाइयां देने लगी—"बन्तो, बधाइयां, छुहारा थान पहुंचा! अब जंज की चढ़ाई पक्की।"

कुडमों के नाई-पुरोहित की खातिरें होने लगी। पूरी-कड़ाह, खीर-खोया। इनके सब लाजिमे जरूरी।

साहा ऐसा कि बराबर दो दिन से धिम्मी झड़ी लग गयी। बारातियों की शामत आ गयी। कच्ची राहों पर तिलकन। चोह घप्प में पानी। टांगे राह में छूट गये। घोड़ों पर बारात पहुँची पिण्ड तो हर बाराती गीला गुड़च्च!

सयानों ने जनानियों को हिदायत दे दी कि बारात बड़ी मुश्किलों से पहुँची है। खबरदार, पेशकारे से पहले कोई सिठनियां न दे।

सारा पिण्ड मिट्ठी की बारात की हिफाजत-खिदमत में लग गया।

जंजघर में बिछी मंजियों पर बिछाइयां बिछ गयीं। एक दालान में जाजियों के कपड़े सुखाने को आग सुलगने लगी।

बादाम-पिस्तेवाला कहवा बरतने लगा तो छिपे-दबे लड़के के यार मिट्ठी के भाइयों से पूछने लगे—"क्यों जी, इतने मींह-पानी के बाद कहवे पर ही परचावा!"

बारात के लिए हुक्के भर दिये गये। मंजियों पर बाराती ऐसे पसरे ज्यों कोई

शाही डेरा हो। कोई पैर दबवाये। कोई मुक्कियाँ मरवाये। कोई नाइयों से सिर की चम्पी करवाये।

हलवाइयों के चूल्हों-सेंकों को जरा ठण्डा देख शाहजी ने मिरास बुला दी। मौलू को इशारे से कहा, "चित्त में रहना। बारात बड़ी तंग हो के आयी है!"

मौलू ने डफली बजायी—

"सुनो ओ लोको
राजों की चक्रतलें
जिऊन शाह के घर
धड़केदार
धड़ल्लेदार
कुल कबीला दुग्गलों का
शाह रामचन्द
शाह किशनचन्द
शाह बिशनचन्द
शाह करमचन्द
शाह धरमचन्द
शाह दिवानचन्द
शाह ध्यानचन्द
शाह महताबचन्द
सजा के लाये बारात
दो सौ घोड़ों की
अपना माड़ा-सा पिण्ड
कैसे करे खातिरें शाही पुरोहनों की।

"इनके नाम ऊँचे। इनके काम ऊँचे। इनकी पग्ग सोहणी। इनकी टश्श सोहणी। नक्क तीखा। रंग गोरा। अक्ल तेज। जबान तीखी। गुत्थली रीति—"

"ओए मिरासिया, जबान सँभाल के!"

"जी, गलती माफ। भुलेखे से दूसरे का जिक्र हो गया। पहले भी एक चढ़तल हुई थी बारात की। थे वे आप ही के शरीक दुग्गल। पर क़सम है मिरास को एक धेला भी दिया हो।"

"भला कहाँ के थे दुग्गल?"

"यही, आपके शरीक़ हाफजाबादवाले।"

लड़के का चाचा मचने लगा—"दो जी दो, इसे दो-चार टके दो। इसका दिल ठण्डा हो!"

मिरास ने जय बुला दी!

"दुगलों के बाग सावे
ऊँचे दरबारवाले
लो सुनो लोको
नीलकोट
कच्चकोट
वसन्तकोट
शाहकोट
जालीवाहन
राजघाट
रंगीलपुर

'जोरकोट पार करके आन पहुंचे लखनवाल खालसा वक़्तों में। आकर सँभाली दिवानी महाराजा की। अक़्लमन्दी-दानिशमन्दी से जागीरें लग गयी!"

तारीफ सुन बारात रौ में आ गयी! लड़के के दादा साहिब ने साफ़े पर पाँच टके रखकर फ़रमाया—"दिल खुश किया है। इनाम बनता है।"

जवान मिरासी के इर्द-गिर्द हो गये—"कोई मज़ेदार क़िस्सा-स्वांग हो जाये।

"जो हुक्म बादशाहो!

"शहंशाहो, इस खादिम को अम्लों में अम्ल अफीम का। हुआ यह कि वेध्यान होकर कुछ ज्यादा खा गया और जी, बिना घोड़े आसमानी उड़ने लगा। न पता लगे ज़िन्दा हूं, न पता लगे नहीं जिन्दा हूं! अपने मस्त था कि जानी दरवेश ने आवाज मार दी—'ओ मौलू मिरासिया, मुझे राजा इन्द्र ने इन्द्रपुरी के नज़ारों-अखाड़ों के दावत-जश्न पर बुलाया है। देखने हों जल्वे इन्द्र-सभा के तो मेरे साथ तैयार हो जाओ।' बादशाहो, मिरासी की तयारी क्या! गला-सुर अपना साथ, चल पड़े दरवेश के पीछे-पीछे।

"चलते-चलते, चलते-चलते, चलते पहुंचे गये टिल्ला गोरखनाथ।

"किसी ने आवाज मारी—'जानी दरवेश, किधर की तैयारियां हैं!'

"मैंने दरवेश से पूछा, 'किसकी आवाज है!'

"राजा भरथरी। महाराज, ज़रा इन्द्रसभा तक जा रहे हैं। कोई सन्देशा देना हो इन्द्र महाराज के लिए तो दे छोड़ो।'

"'न···न···न···मेरा नाम न लेना। इन्द्र मेरे पीछे अप्सराएँ लगा देगा तो कहां छिपता फिरूँगा!'

"'जैसी आपकी इच्छा। वैसे चार-छः महीने के लिए कोई आ भी निकलतीं तो राजन, हर्ज कोई नहीं था। इस बुड्ढे वेले आपको रौनक रहती'।'

"न ओ न, अब ऐसा काम नहीं। यहां कौन-सी जान पड़ी हुई है! बेकार

पहुँचना जाता है।'

" 'वाह, हम जानकर खुश हुए। हाँ, यह सरकार अंग्रेज़ी कैसी है?'

" 'महाराज, इन दिनों लड़ाई पर है। पहले तो सिर्फ तुर्कों से ही ठानी थी, अब दूसरे पंचों से भी छेड़ ली है।'

"सुनकर इन्द्र महाराज उचाट हो गये। कहा, 'गाना हो।'

"बस, शुरू हो गये वही रास-रंग। वही नाच-तमाशे।

"जानी दरवेश के कान में कहा, 'यहाँ तो सारी अप्सराएँ महाराज इन्द्र को ही लिपटी हुई हैं। काहे को दिल तरसायें अपना! यहाँ आये ही हुए हैं तो चलो, अल्लाह ताला से भी मिलते जायें।'

"महाराजा इन्द्र ने हमारे मन की भाँप ली। हुक्म दिया—'प्रतिहारी, इन्हें अल्लाह मियाँ के दरवाज़े तक छोड़ आओ। हाँ, उन्हे मेरा सलाम देना और कहना इन्द्र आपकी कुशल-क्षेम पूछते थे।'

" 'जी महाराज।'

"बरातियो, इस मिरास को खुड़क गयी। हो-न-हो जबसे हिन्दुस्तान का नया लाट आया है तब से परमपिता परमात्मा और अल्लाह तआला के ताल्लुकात दो नये-नये समधियों की तरह खुश सलीक़ा हो गये हैं।

"इन्द्र-दरबार से निकलकर हम चलते गये। चलते गये। चलते गये। सब फल-फूल-सब्ज़ा-हरियाला खत्म हो गया। आँखों के आगे विराना-ही-विराना। बड़े परेशान। जानी दरवेश बोला, 'जहाँ हूरें नज़र आयीं, समझो अल्लाह तआला की हकूमत आ गयी।'

"चलते-चलते-चलते एक मसीत नज़र आयी। साथ एक छोटा-सा कूआँ। ऊपर चरखड़ी पड़ी हुई। लज के साथ डोल लटका हुआ। पहरेदार रुक गया—'जाइए, यही वह जगह है जहाँ आप पहुँचना चाहते थे।'

"आगे बढ़े। देखा मजी पर बैठे एक बुज़ुर्ग हुक्का पी रहे हैं। आँखों में चील के अण्डों का सुरमा लगाये हुए।

"पास जाकर पूछा, 'जनाब, हम पंजाब की सरज़मीं से अल्लाह तआला को मिलने आये हैं!'

" 'आओ-आओ।'

" 'जी उन्हीं से मुलाक़ात करवा दें तो आपका अहसान न भूलेंगे।'

"बुज़ुर्गवान बोले, 'कहिए, इस नाम से तो मैं ही...।'

"इस मिरासी से न रहा गया। कहा, 'ऐ मेरे रब्ब, कहाँ महाराज इन्द्र की इन्द्रपुरी! कहाँ वे साज-बाज, हीरे-जवाहरात और रंग-रलियाँ। और एक यह आपकी हकूमत! बादशाहों के बादशाह, आपकी कुव्वते-मर्दानगी और कुव्वते-रुहानी के होते हुए यहाँ की यह हालत!'

" देखो बेटा, परेशान होने की जरूरत नहीं। यहाँ का सब साज-सामान, कुछ देर पहले बुलाक़ी शाह कुर्की करवा के ले गया है।'

" 'ओह मेरे मौला! आपकी, और कुर्की! परवरदिगार, ये अलामतें-मलामतें तो बिचारे जट्ट किसान की! मेरे मालिक, आपने उसे ऐसा क्यों करने दिया?'

" 'मौलू बेटा, बुलाकी शाह का मुकदमा झूठा और कागज फरज़ी। पर अदालत में मुकदमा लड़ने के लिए भी नावाँ शाह से ही उठाना पड़ता। इसलिए हमने फ़ैसला दे दिया कि होती है कुर्की तो हो।

" 'बेटे, उदास न हो। एक-न-एक दिन इसका भी कोई रास्ता निकल आयेगा। इन्द्र महाराज की कौम दौलत-दमड़े ऐसे बाँध के रखती है कि हमारी हदों को छूने नहीं देती!'

"जानी दरवेश ने सजदा किया—'ग़रीबपरवर, अपने बन्दों के लिए नयी हदें क़ायम कर दीजिए।' "

सुनकर बाराती हँस-हँस दोहरे हुए। मौलू की झोली भरने लगी।

पंच-सयानों ने आ-आकर बारातियों के आगे हाथ जोड़े—"महाराज, जो रूखी-सूखी तैयार है उसे स्वीकार करें।"

भाँति-भाँति की लपटें-खुशबुएँ ऐसी कि जंजघर महकने लगा।

पाँतें खाने बैठीं तो पंच चौधरी ऐसे आदर-मान से वरताने लगे ज्यों उनकी बारात में देवता पधारे हों!

मौलू ने आवाज उठायी—"लोको, इन्द्रपुरी के देवते हमारे जजमानों के घर—जीवें जोड़ियाँ। घी मिट्ठी रानी और दूल्हा राजा महताबचन्द!"

पत्री-बेत्री पिण्ड पर रात उतर आयी। सूरज की लाली पेड़ों की गहराती कलिक्खन के पीछे जा लुकी। ऊपर आसमान की गुमटी पर चाँद तैर आया। निक्के-निक्के चान्नने झिलमिलाने लगे। कहीं दिवटे, कहीं गुल, कहीं चूल्हों में झम्म-झम्म जलती लक[illegible]

गिड़ते कूओं के सुर [illegible]
किलकारियों पर झूम-झूम [illegible]
लगी। और रात-रतियारी दम्म-दम्म दमकने लगी।

बड़ी बहनेलियाँ छोटे वीरों को रोटी खिला सुलाने लगीं। कोई बुझारतें डाले। कोई कहानी सुनायें। राबयाँ बोली, "सुन लाली, सुन!"

"राबी बहन, कहानी सुनाओ बूजोवाली।"

"एक था तो एक था बूजो।"

"बूजो क्या राबी बहन ?"

"बूजो था तो बूजो एक नटखट बन्दर था।

"बूजो चलता-चलता एक ग्राँ मे जा पहुँचा।

"वहाँ कीकर हेठ बैठा था एक नाई। एक जाट की हजामत बनाने।

"बूजो ने मारी टपोसी और नाई का उस्तरा छीन लिया।

"नाई ने आवाज़ दी—'यह क्या बूजो, यह क्या बूजो—कर ले लेखा। कर ले लेखा।'

"दँतुले बूजो ने दाँत दिखा दिये—

जट्ट के बाल नाई के पास
नाई का उस्तरा मेरे पास
उस्तरा मेरा घाई के पास
घाई का भूरा मेरा पास

"जट्ट बोला—

कर ले लेखा
कर ले लेखा।
मेरे बाल नाई के पास
उस्तरा मेरा घाई के पास
घाई का भूरा मेरे पास
भूरा मेरा घड़वाई के पास
घड़वाई का गुड़ मेरे पास
मेरा गुड़ बुड्ढी के पास
बुड्ढी के पूड़े मेरे पास
मेरे पूड़े जंज पास
जंज का डोला मेरे पास।"

"फिर क्या हुआ राबयाँ बहन ?"

"होना क्या था लाली शाह—

बूजो ले गया
दुल्हन का डोला
अब तू भी
राजा बन सो जा।

जल्दी से सो जा।"

"मदरसेवाले लड़के इतनी देर गये रेत पर कब्बडी-कब्बडी क्यों खेल रहे हैं?"

"खेलने दो। तुम्हें क्या!"

"राबयाँ बहन, कोठे पर कम्मो-बिम्बो कीकली डाल रही हैं।"

शाहनी ने आवाज़ दी—"सुला री इसे जल्दी से!"

माँ की आवाज़ सुन लाली रोने लगा—"मैं नहीं, मैं माँ से सोऊँगा।"

चाची बोली, "बच्ची, बार-बार न रुलाया कर, ढीठ हो जायगा! दो-चार थपकियों की बात है। सुला दे।"

लाली राबयाँ की चुन्नी खींच-खींच तङ्ग करने लगा।

राबयाँ झूठ-मूठ ठुसकने लगी—"ऊँ···ऊँ···मुझे लाली शाह मारता है शाहनी···"

शाहनी ने तरेरा—"मुड़ रे मुड़। दूध के बर्तन-भांडे रख के आती हूँ।"

"बच्ची, दूध रत पहचानता है। बर्तन में ज़रा ठण्डा छींटा मार लेना।"

राबयाँ ने खटोले पर बिछौना बिछाया और लाली शाह को सुलाने लगी—

"आठ पत्तन नौ बेड़ियाँ
चौदह घुम्मन घेर
जो तू राजा जती सती
तो पानी कित्ने सेर।"

चाची ने आवाज़ दी—"राबयाँ धिये, रसालू ही गाने लगी है तो, री, ज़रा ऊँचे सुर निकाल। खैरों से दूजों के कान में भी पड़े!"

"आठ पत्तन नौ बेड़ियाँ
चौदह घुम्मन घेर
अम्बर तारे गिन दस्सी
मैं दस्साँ पानी उन्ने सेर
रे जितनी जंगल लकड़ी
मेरे दिल की उन्नी लो!"

दरिया किनारे की ठण्डी हवा बच्चड़ों को झुलाने-सुलाने लगी। रोटी-टुक्कर से खाली हो जनानियाँ मंजियों पर आ बैठीं।

शाहनी लाली के सिरहाने आयी और बिन्द्रादई को आवाज़ दी—"खैरों से भाई अभी नहीं परते।"

राबयाँ ने सिर उठा आँखें अँधेरे में गड़ा दीं। कानों से जैसे कोई आहट सुनी हो। फिर सिर हिलाकर कहा, "आये ही समझो!"

छोटी शाहनी ठट्ठा करने लगी—"क्यों री राबयाँ, तेरे पास कोई ग़ैबी गुल है

। मीठा गाया करती

अब तो गृहस्थी लग गयी जान को। अब क्या अपना छिड्ढ और अपना-अपना निड्ढ।"

वीरांवाली आन पहुँची—"मैंने कहा री खुल्लरों की, जेम-तेम वक़्त ही काटना है। ये सुर क़ाफ़ियां चैन बाज़ियों से!"

शाहनी को न भाया—"उस दाते का पुण्य-प्रताप है, नहीं तो झटदिशी मैं और तुम क्यों नहीं जोड़ लेतीं कवित्त-काफ़िये!"

गोमा मुँहफट चांदनी रात में संगेमरमरी मूरत को तकती रही, फिर नगोड़ी ने कांकरी मार दी—"अरी दरदों बाझ न जुड़ती है क़ाफ़ियां!"

चाची ने झिड़क दिया—"फिटे मुँह री, कौन है यह कान भरेरनी। भोले-भाले दिलों में दर्द-पीड़ें जगाने लगी!"

चाची से शह पा शाहनी लाड़ से बोली, "सुना री राबी। गोमा को भी चान्नना हो।"

"जी शाहनीजी, क्या सुनाऊँ!"

चाची ने अपना हुक्म चला दिया—"धिये, वह सुना जो इस बार रमज़ान में जोड़ी थी!"

तारों की छांह मंजी पर बैठी राबयां आप ही चनाब की कोलक लहर बन आयी। चांद की चान्ननी में गुँथे सिर की मीढ़ियां नुकीले नाक को अनूठी फबन दें। सिर पर की नटखटी दुपट्टी ऐसी अल्हड़ बन टंगी रही जैसे मुँडेर पर कोई कूँज आ बैठी हो।

हाय रे
डाची किस ओर हांकूँ!
चार दिशाएँ
चार दिवड़े
कैसे झेलूँ लो
चार चान्नने।
इक दिवड़ा
मेरा माही
इक दिवड़ा
मेरा सांईं

इक दिवड़ा
मेरा हिया
जल-जल अँखियाँ
लौ बनी
हाय रे मैं
कैसे न लौ
मिलन को जाऊँ !
जित देखूं लौ जले
जित देखूं लौ उठे
मेरी अँखियाँ
मेरा हियरा
तन-मन सब
जल-जल
लौ भया
हाय रे
डाची किस ओर हांकूं !

सुननेवालियों के कालजे फरफराने लगे।

राबयां की थरथराती आवाज़ खामोश हो गयी कि काशीशाह का स्वर सुन पड़ा—"वाह-वाह रावी, रब्ब सांई तुझे और रोशनी दे, और चान्नन करे।"

ज़नानियों ने दुपट्टे माथों तक खींच लिये।

छोटे शाह पास आये, राबयां के सिर पर हाथ रखा—"बीबी रानी को मालिक की दात। दिल तुम्हारा पाक-साफ़ सरोवर है।"

राबयां सिर का कपड़ा सहेजने लगी।

सहसा सामने निगाह उठी—शाहजी अँधेरे में थिर खड़े थे।

"राबयां—" शाहनी शाहजी को देख थिड़क गयी।

चाची ने आंख उठायी, 'बच्ची, हाथ-पांव धुला। खाना परस। हां री राबयां, आज अब्बू को सजरी रोटी खिला आ। न आने को मन किया तो वहीं सो जाना।"

"हला चाची।" राबयां ने पलकें उठायीं और ऐसे क़दम उठाया जैसे दस बरस और सयानी हो गयी हो।

पिण्ड पर तैरते पतले-घने रौले बच्चों की नींद में घुलघुल गये। पहरुए की हाग खड़कने लगी—जागते रहो !

अलिये की झुग्गी से राबयां का घना ऊँचा सुर उठकर दरिया किनारे फैल गया—

तनु सुद्दी, मनु हुजरो,

कीम चालीहा रखु
कोहु न पूजियो पूजिएँ,
अठई पहर अलखु ?
तां तूं पाण परख,
सभ कहि ढाईं सामुहां ।

थाली आगे रख घिर बैठे दोनों भाइयों को राबयां के सुरों में खोये देखा तो कालजा मुंह को आ गया। हे जिन्दगानी के पीर ख्वाजा खिजर, दरियाओं के कण्डे मिलानेवाली समर्था मिट्टी के पुतलों में कहां ! एक पत्तन पर पहुंचकर फिर बेड़ी ! न...न...दरिया पीर, मेरे साईं के आगे यह मृगया-हिरन न दौड़ाना !

॥

पौथे लद्दे का पहला रुक्का-रुपया आया तो दादी हस्सा ने टके चूम हस्सा को पकड़ा दिये—"खुदावन्दा करीम, तेरी मेहरें । लाम से ठण्डी हवा आती रहे !"

महीना पार न हुआ और तत्ती खबर आन पहुंची। रोना-करलाना मच गया—"हाय रे दुश्मना, तूने हमसे बैर कमाया ! लाम सजी पड़ी है जवानों से और तूने चुनकर अपना शेर बच्चड़ा हलाक कर दिया ! हाय ओ रब्बा !"

सुनकर मांओं के कलेजे दहल गये । पास-पड़ोस ने चूल्हे ठण्डे कर दिये ।

जुम्मन की माँ जो जुम्मन की खबर आने के पीछे पुत्रोंवालियों से कतराकर निकल जाती थी, आगे बढ़ फातमा के गले जा लगी ।

"हाय ओ, खिलन्दड़े यारों की जोड़ी बहिश्ती जा मिली । बच्चड़ो, तुम्हारी टूटी-भज्जी माँएं अब कैसे पहाड़ जैसी उमरें निकालेंगी ! हाय ओ रब्बा, यह दिन देखने से पहले इन बुड्ढियों को मौत क्यों न आ गयी !"

आस-उम्मीदोंवाली माँएं दिल-ही-दिल सहमकर मालिक का नाम लेने लगी ।

"रब्बजी, बच्चड़ों को आपकी ओट । तेरी नज़र सीधी रहे !"

मर्द अनमने उदास हुक्को में लगे रहे । किसी को कोई बात न सूझे ।

हारकर मुहम्मदीन बोले, "जहाँदादजी, अपने निक्के बाल लाम में पहुंचे हुए हैं, सलामत रह । आप ही कुछ छावनी-लश्कर की सुना डालो ।"

कर्मइलाहीजी ने हुंकारा भरा—"चौधरीजी, कुछ ऐसी सुनाओ कि रंज-उदासी कम हो ।"

जहाँदादजी ने हुक्का छोड़ पुराना क़िस्सा छू लिया—"बात यह उन दिनों की है जब १४ पंजाब का तबादला हुआ पेशावर से झाँसी। झाँसी में तैनात थी उन दिनों छठी मद्रास। बादशाहो इत्तफ़ाक़, इधर पल्टनगाड़ी पंजाब से निकली, उधर रास्ते-भर बारिश। गाड़ी पहुँची झाँसी टेशन तो वहाँ भी मौलाधार पानी। आप जानो १४ पंजाब खैरों से पंजाबी मुसलमान और पठानों की पल्टन।

"इधर तगड़े ऊँचे-लम्बे क़द, उधर मद्रास पल्टन बड़ी क़ायदे-क़रीनेवाली। बन्दे ऐसे लगें ज्यों नहाये-धोये हुए हों। वर्दियाँ साफ़-शफ़ाफ़। अपने बन्दे उतरे गाड़ी से तो मार हो-हल्ला मच गया। मद्रास पल्टन बड़ी गम्भीर, चुपचाप और मिज़ाजी। पठानों को देख-देख उन्हें हैरानी हो कि कमान-कप्तान साथ है और इतना हो-हुल्लड। हुकुम मिला पंजाबी को कि अपना सामान हाथियों पर रखो। घोड़ों की जगह हाथी। *बादशाहो, ज़रा सोचो नज़ारा।* कहाँ तो गाज़ी घोड़े मुस्तैद टिच्च और कहाँ फस्का-का-फस्का हाथी ढिल-मट्ठ। बड़े-बड़े कान और यह लटकी हुई सूँड। इधर के लोग घोड़ों के सधे हुए। हाथियों का तजुरबा कोई न! फिर आप जानो हाथी दरशनी जानवर। वजूद और कार-कर्तब दोनों ही ठस्सक-फस्सक। भला हाथी की घोड़े से क्या तुलना! खूबसूरत घड़त और चाल मरदाना।"

शाहजी बोले, "ठीक है जहाँदादजी, कहने में आता है कि रब्ब ने सबसे पहले घोड़े को ही वजूद दिया था। क्या तराश हुई है घोड़े की काठी! कहने को जनावर, पर भोले भाव भी खड़ा हो गाज़ी तो मनुक्ख को लुण्डा करके रख दे।"

गण्डासिंह ने हुंकारा भरा—"बादशाहो, घोड़े पर सवार हो बन्दा तो शाही तस्वीर तो आप ही कायम हो गयी आलम में।"

नजीबे का भी दिमाग परखरा हुआ—"शाहजी, सोचने की बात है। मनुक्ख बैठा हो गधे पर तो या धोबी या कंजर। बाकी कहने को बेशक़ साहिबे-आलम कहता फिरे। किसी ने नहीं मानना।"

दब के हास्से-खाँसियाँ खड़के।

गुरुदित्तसिंह छिड़ गये—"महाराजा रणजीतसिंह का घोड़ा लाली। दुनिया में मशहूर। घोड़ा शाही। रंग नीला। काली टाँगें और सोलह हत्थ लम्बा। पाँव में सोने की कड़ियाँ।"

"वाह-वाह!"

फकीरा बोला, "बात यह है कि शहंशाहों-बादशाहों के पास लूट-मार का सोना-ज़ेवर, सजाते रहे घोड़े को। यह तो समझो कि जानवर की खाल सोने में नहीं मढ सकती, नहीं तो कौन कम करता!"

शाहजी ने बात और खींची—"शहंशाह-सम्राटों की तरह उनके घोड़ों की भी बड़ी मशहूरी हुई! शाह दुर्रानी के घोड़े तरलान और हमदम ने बड़ा नाम

कमाया।"

फतेहअलीजी ने हामी भरी—"शाहजी, बात तो यह हुई कि बन्दे को उसकी सवारी ही सजाती-बनाती है।"

कक्कूखाँ से न रहा गया—"सवारियोंवाले बहुतेरे, पर, जी, बिना सवारी के भी आदम खलकत बड़ी। वैसे बात है मनुक्ख अपने दो पैरों पर चल रहा हो तो सच पूछो तो इसकी भी कोई रीस नहीं। जीते-जागते इन्सानी वजूद की बरक़त ही समझो न! अपनी सवारी सालम-सबूता, बन्दा आप ही चलाये जा रहा है।"

"वाह-वाह, तबीयत खुश की है कक्कूखाँ!"

चौधरी फतेहअली बोले, "शाहजी, कक्कूखाँ और नजीबे के दादा साहिब की दरिया पार तक मशहूरी थी। बात करनी मोटी पर पुर-असर।"

मैयासिंह छोटी-सी ऊँघ लेकर जागे—"जहाँदाद, झाँसी टेशन पर पहुँची थी न पठान पलटन। अब आगे भी हो जाये!"

"लो जी सुनो। देख के इधर-उधर के शोर-शराबे को मद्रासी टुकड़ी ने त्यौ-ड़ियाँ चढ़ा लीं और बड़े ऐड्ड-बाबे बनकर घूरने लगे। उनका कप्तान-कमान ऐसे देखे ज्यों पाँचवीं जमात कच्ची-पक्की को देखती है।"

जहाँदादजी ने आप ही खुलासा किया—"मद्रासी मनुक्ख निस्बतन स्वभाव से ही ठण्डा है। कद-बुत्त भी छोटा संजम-मरजादावाला। इधर अपनी पलटन का फुल्ल-फैलाव ज्यादा। शोर-शराबा ज्यादा, धक्का-मुक्की ज्यादा।"

गण्डासिंह हँसे, "गज-गज के बाजू-बाँहें उठें बुनेखाल, गिलज़ई, दुर्रानी, पठानों के तो देखनेवाले को लगे बन्दे हाथापाई कर रहे हैं। चलो जहाँदाद, आगे चलो।"

"तो जी, उस दिन झाँसी टेशन पर समझो भाँगड़ा पड़ गया। पर अपनी पंजाबी पल्टन का हवलदार मेजर गुल बादशाह झाँसी टेशन पर ऐसे सजा रहा ज्यों पठान ब्लोच दरों पर सजते हैं। पीठी काठी, रंग विलायती। माँ ग़ालिबन अंग्रेज़ थी उसकी। बड़ा दबख अंग्रेज पठान का। खड़ा-खड़ा मुस्कराता रहा। अपनी पल्टन तो उस पर फ़िदा थी न! मद्रासी पलटन ने मुँह-माँह बहुतेरे चढ़ाये पर हवलदार मेजर अपने रौबदाब में मस्त।"

मौलादादजी ने पूछा, "हाथियों का क्या हुआ?"

"हाथियों को महावत बिठायें नीचे। मुंह से करें—धक्क···धक्क···धक्क··· तो पठान हँसें। उन मुहान्दरों पर दाँत ऐसे चमकें ज्यों बिजलियाँ। हड़बा-दड़बी में हाथियों पर सामान चढ़ाया जाने लगा। रस्से बँधने लगे तो सामने गड्डों की लाइन पर हड़-हड-धड़-धड़ करता इंजिन निकल गया। बस जी, टेशन पर तो नादरगरदी पड़ गयी। दबड़-दबड़ हाथी दौड़ें और पठान रंक हँसें और रस्सियाँ पकड़-पकड़ हाथियों के साथ झूलें! ऊपर से मीह! अगले दिन पूरी बँह-बिठाई हो गयी तो त्रिकालाँ वेले सरनाई और ढोल पर पठानों ने 'ज़ख्मी-दिल' छेड़ दिया।

छावनी में समय बँध गया। हेक ऐसी दर्दनाक़ कि आँखें नम हो जायें।

कृपाराम ने पूछा, "भला 'ज़ख्मी-दिल' क्या चीज़ हुई!"

"ज्यों अपने गीत, टप्पे, काफ़ियाँ, वैसी ही कोई पठान बन्दिश समझो। बोल समझ आयें-न-आयें, पर सुर उसके रूह तड़पा देते हैं।"

गुरुदित्तसिंह का ध्यान कहीं और था—"उस मद्रास पल्टन का क्या हुआ?"

"होना क्या था! बैठकर उसी गड्डी में पल्टन अपनी छावनी की ओर चलती बनी।"

जहाँदादजी का फ़ौजी दिल कुछ देर के लिए अपनी पलटन टुकड़ी में जा बसा।

"बादशाहो, अपनी १४ पंजाब को देखकर जंगीलाट डाडा खुश हुआ। दौरे पर झांसी आया तो पल्टन को अव्वल क़रार दिया! गण्डासिंहजी, यह तभी की बात है जब सिपाही रहीम अली ने बड़े-बड़े इनाम जीते थे। साथ थे सिपाही दित्तू डोगरा और पजावा सिंह।"

खबरे क्या हुआ कि मजलिस में जवान लद्दा आन खड़ा हुआ। कद-काठी तगड़ी। जट्टी मुहान्दरे पर सजी हुई मूँछें।

गुरुदित्तसिंह बोले, "रह-रह ख्याल आता है लद्दे का। अपनी आँखों के आगे जन्मा-खेला-पला और आज उसके पूरे होने की खबर भी कानों से सुन ली। नसीब भरजाई फ़ातमा और बेबे हस्सा के! एक दिहाड़ी में मुँह पीले फट्टक हो गये हैं।"

"बड़ा बरखुरदार था। भरती की परची मिली तो खुशी-खुशी सबको सलाम करने आया।"

करमइलाहीजी ने सिर हिलाया—"रब्ब के रंग। लिखी हुई थी, आन पहुँची। नहीं तो लाम-जंग में बेहिसाब गोलियाँ। मौत जिसकी आ गयी, गोली उसी की छाती में जा लगेगी।"

मीरबख्श बोले, "बादशाहो, अपने पिण्ड के कई छोटे-बड़े पलटनों में। छोटी-मोटी लड़ाइयों में भी शरीक तो होते रहे न! मरनेवाले मरे भी, पर बचने वाले बचे भी।"

"ये सारे अख्तियार रब्ब रसूल ने अपने ही हाथ में रखे हुए हैं।"

"जी हाँ, गण्डासिंहजी अपने अफ्रीका भी पहुँचे थे। क्यों खालसाजी!"

गण्डासिंहजी ने आँखें मींटी हुई थीं, न खोलीं।

शाहजी ने बात फिर जहाँदादखाँ जी की ओर मोड़ दी—"जब आप पहुँचे तिब्बत तो भी वक़्त तो बड़ा ज़ुल्मी था।"

"बादशाहो, तिब्बत में तो बस दरिया और पानी। रोटी का टुकड़ा देखने को न नसीब हो! कूच मार्च करके लाहसा पहुँचे।"

मुंशी इल्मदीनजी रौब में न आये—"जहांदादजी, कितना पैंडा होगा लाहसा और तिब्बत के बीच ?"

"होगा करीब चार सौ कोस। शाहजी, पानी वहाँ का बड़ा नाकस, न पीया जाये, न उबाला जाये। आबहवा इतनी खराब कि पुट्ठ पीडे डोगरे नमूनिये से मर गये। सरदी खा गये। यह समझ लो कि आठ तो मरे गोरे अफसर और कोई दो-ढाई सौ देसी बन्दे। हस्पताल भर गये।"

गण्डासिंह उब्बड़ वाहे उठे—"सयाले में अंग्रेज़ का वड्डा दिन किशमिश होता है। एक बार अण्डों की फिरनी खा-खा जवानों के पेट चल गये। बस, कमान में हुक्म निकल गया कि मैस में न फिरनी बने, न खायी जाये !"

"हां जी, फौजों की सलामती तो सरकार को पहले। शाहजी, वहाँ की जोकें बड़ी ज़ालिम। लग जाये तो जब तक सारा-का-सारा खून न चूस लें, बदन से अलग न हों। इलाका भावें पहाड़ी है पर पानी नाकस। मनुक्ख की बडी हुई हो तभी इसको सहार जाता है ! अपने सिर पर से भी चंगे-बुरे सब गुज़र ही गये न !"

गण्डासिंह बोले, "तिब्बती लोगों की काठी छोटी और तलवारें बड़ी। उनकी दाढ़ी-मूंछें भी नदारद !"

"गण्डासिंहजी, ठण्डा मुल्क है। बन्दों का उभार-उठान कम। लो, और सुनो, तिब्बती बन्दा जेकर आपका शुक्रिया करे तो जीभ बाहर निकाल हाथों के अंगूठे दिखाये।"

"तौबा-तौबा···यह तो कोई रस्मवाली बात न हुई !"

"बादशाहो, वहाँ एक हादसा हो गया। एक पठान ने किसी तिब्बती को फ़ौजी यक्के से उतारा। बन्दे ने नीचे उतरकर पहले तो जीभ निकाली, फिर अंगूठे दिखा दिये। बस जी, पठान हो गया लाल-पीला। मारने को पिस्तौल निकाल ली। सूबेदार मेजर कहीं से आन निकला। पठान को समझाया कि अपने रिवाज़ मुताबिक़ यह तुम्हारी इज्ज़त कर रहा है।"

किस्सा यह कई बार सुनाया जा चुका था, पर शाहजी ने जहांदादखां जी को गरमाना ज़रूरी समझा—"काशीराम, अपना टांडेवाला काबुलसिंह बताया करता है न कि तिब्बत में फौजें अपनी बड़ी बहादुरी से लड़ी थीं। लन्दन के अखबारों में चरचे हो गये। बड़ी तारीफें की गयीं।"

पल्टन के रुआब से जहांदादजी की मूंछें माशा-भर फड़क गयीं—"सूबेदार शब्बीबुलाह, हवलदार, शरीफ़, सिपाही अकबरशाह, सूबेदार मेजर जमालअली, लासनायक पयायो को बहादुरी के तमगे दिये गये थे !"

गण्डासिंह बोले, "ईश्वरसिंह कोटलीवाला, नाम उसने भी चंगा कमाया था। डाडा तगड़ा और सोहणा। उसे बाद में सोमालीलैण्ड भेजा गया।"

मुंशी इल्मदीन इस गल-बात से खीज गये—"बादशाहो, एक बात तो बताओ।

आपके ज़रिये एक छोटी-मोटी तमगी अपने पिण्ड को भी मिल जाती तो हर्ज कोई नहीं था। आखीर को आप सजे हुए ही थे फ़ौज में !"

इस छींटाकशी पर हास्सा पड़ गया।

जहाँदादजी बोले, "बात तो बराबर खरी है इल्मदीनजी, पर मैंदाने-जंग में शोहरत हाथ लगने की भी कई शर्तें। अव्वल आप कुछ करें और ऐन वक्त पर कमान-कप्तान की आँख पर चढ़ जायें, दोयम अल्लाह ताला भी आपको शोहरत-इनाम दिलवाने पर राज़ी हों। तीसरे आप बेखौफी से जान हथेली पर रख मर-कट जाने पर तैयार हों !"

गण्डासिंह को यह बात न मन लगी—"जहाँदाद, मैंदाने-जंग में जान-प्राण कोई खीसे-बटुए में बन्द नहीं होती। जान तो हमेशा ही हाथ में होती है, बाकी आगे बढ़कर जो उछाल ले वह सूरमा !"

काशीशाह को कोई बन्द याद आ गया—"बादशाहो, सुनो शाह लतीफ क्या कहते हैं—

सिरु ढूंढियां धड़ न लहां,
धड़ ढूंढियां सिरु नांहि,
हथ करायूं आंडियूं
विया कपिजी कांहि
वह दत जे विहांइ,
जे विया से वढिया।

फतेहअलीजी बोले—"भाखा कुछ मुश्किल है। काशीराम, ज़रा सहल करके बताओ।"

[illegible]

दिये जाते हैं !"

"वाह-वाह, सुभानअल्लाह, कंवारी कन्या के ब्याह का क्या प्रसंग बांधा है ! शाह सांई, तेरे नाम को सलामें !"

काशीशाह विभोर हो बोले, "चौधरीजी, शाह लतीफ कोई छोटी-सी हस्ती नहीं। बाबा फरीद जैसे वड्डे-वड्डेरों की पांत में। उनके वचनों में या हीरे या सुच्चे मोती। किसी दूसरी धातु का काम नहीं वहां। उन्हीं का मशहूर है—

साईं सूरत ऐन की,
साईं सूरत गैन,
समन नुकता दूर कर,
तउ ऐन की ऐन।

मदरसे बैठने से पहले काँछ मे मरगान ले हाथ मे भिच्छया का पात्र ले, शाहों का बेटा सात घरो से भिक्षा माँगने निकला तो जनानियाँ रल-मिल सगुणों के गीत गाने लगी।

"वधाइयाँ शाहनी, वधाइयाँ ! खैर सदके लाली पुत्तर मदरसे बैठने चला है।"

शाहनी भरी-भरी अँखियों बेटे को देखने लगी और मन-ही-मन दाते के आगे नमन हुई—"रब्बजी, मेहरें तुम्हारी।"

काले सीम्मम के फुम्मन, गर्दन के पीछे बँधी गलीती, काजल लगी अँखियाँ, लाली जातक सचमुच का ऋषिकुमार लगे।

ड्योढ़ी से निकलते ही लाली ने हाथ छुड़ा लिया और फ़कीरे लुहार के थड़े पर जा खड़ा हुआ।

"आगे बढ रे, आगे बढ़।"

राबी बहन !'"

दे राबयाँ का !"

चाची पास आयी। समझाकर कहा, "पुत्तरजी, लड़कियाँ सुखी सान्दी भिक्षा नहीं माँगती। वे देती है, लेती नही।"

लाली अड़ गया—"मैं नही मानता। मैं राबी बहन के साथ जाऊँगा।"

शाहनी ने देवरानी को आवाज़ दी—"विन्द्रादइये, समझा अपने कुछ-लगने को। खरुद करने लगा तो खायेगा मार मुझसे।"

छोटी शाहनी ने आगे बढ़ सिर पर हाथ रखा—"माँ रज्ज गयी—पुत्र लाली, रीति-नीति की बातों में क्यों-क्यों नही करते। यह नही चंगी बात !"

लाली ने राबयाँ की चुन्नी न छोड़ी—"मदरसे तो जायेगी न राबयाँ बहन मेरे साथ !"

"बराबर जायेगी ! चल हाँक दे बेबे करभरी को।"

"बेबे, दर पर फकीर खड़ा है, भिच्छया डाल दे !"

जनानियाँ लाड़-चाव से हँस-हँस दोहरी हुई।

बेबे करभरी कुच्छड मे पोत्रे को उठाये बाहर आयी—"सदके री सदके लाली शाह पर ! रब्ब बड़ी-बड़ी उम्र करे।"

बेबे ने लाली की झोली में गुड़ की टिक्की डाल दी।

लाली ने बेबे को पैरीपौना किया और सुनारों के घर के आगे जा खड़ा हुआ। आवाज दी—"चाची, सन्त आये हैं। डाल कुछ झोली में !"

वीरांवाली दानो की मूठ ले बाहर निकली और लाली की झोली में डाल बच्चे का माथा चूम लिया—"मेरा लाली पुत्र चंगा-चगा पढ़े।"

लाली ने ज़िद पकड़ ली! माँ को झुमका देकर कहा, "चाची ने क्यो मेरा

मुँह जूठा किया ! सन्तों को भी कोई चूमता है !"

बीरांवाली निहोरे करने लगी—"पुत्तरजी, हो गयी न गलती मुझसे !"

जनानियाँ हँसें। लाली और मच्छरे।

चाची महरी बोली, "धिये रावयाँ, समझा इसे !"

रावयाँ ने नीचे झुक कान मे कहा, "तू सचमुच का सन्त थोड़ी है ! चूम लिया तो क्या हुआ !"

लाली न माना—"सन्त फकीर नहीं तो मैं माँगने क्यों निकला हूँ !"

"यह मदरसे जाने से पहले की रीति है। फकीर ऐसे थोड़े ही बन जाते हैं !"

लाली ने झट अगले घर की ओर पांव उठा लिया और गली में खुलते झरोखे के आगे आवाज़ लगा दी—"माता, सन्त आये हैं, कुछ खाने को दो।"

अन्दर से कोई जवाब न आया तो लाली ने अपने दोस्त जग्गे को आवाज़ दे दी—"जग्गे ओए, अपनी बेबे से कह—फ़कीर आये हैं, फकीर !"

जग्गा अपनी माँ का भोच्छन खींच बाहर ले आया—"माँ, लाली को दाने डाल। लाली मेरा यार है !"

"देती हूँ रे, देती हूँ। खैर सदके दोनों की जोड़ी बनी रहे।"

जग्गे की माँ मूठ-भर शक्कर ले आयी—"बलिहारी मैं, क़ुर्बान री अपने लाली शाह पर। अपना सत्त-धम्म निंबाहे। बधाइयाँ शाहनी, बधाइयाँ। पुत्तर मदरसे बैठने जाता है।"

"राबी बहन, अब तीन घर हो गये। चलो मदरसे।"

"अभी सात करने है, सात।"

लाली हाथ छुड़ा दौड़ पड़ा—"मैं चला बेबे किच्छी के घर !"

जनानियाँ लाड़ से हँसे—"मैंने कहा शरारतें देख इसकी, शरारतें ! निरा गोला है गोला !"

बेबे किच्छी के थड़े पर खड़े हो लाली ने हाँक दी—

मेरे चम्बल में आटा
तुम्हें कभी न पड़े घाटा
मेरा चम्बल भर दे !

बेबे किच्छी समझ गयी, लालीशाह है। बहूटी को आवाज़ दी—"निरलेप कौरे, लाली शाह मदरसे बैठने चला है। मिश्री-छुहारा डाल दे झोली में।"

माँई किच्छी झुकी कमर पर हाथ रख दलहीज़ तक आयी। लाली शाह का हाथ पकड़ 'थू' किया और शाहनी को मुबारकें देकर कहा, "मैं वारी-बलिहारी, पुत्तर मदरसे बैठने लगा है। बड़ी-बड़ी रोशनाइयाँ हों।"

लाली ने बेबे के दोनों पैर छूकर ऐसा सुहावना पैरीपौना किया कि जनानियों के मन उमड़ आये। रब्बा ऐसा समय सबको दिखाये।

अगला घर ढूंढ़ा लालीशाह ने चिडो का। हांक लगायी—"फकीर आये हैं जी, खैर डालो!"

चिड़ों के घर की सारी धियें-बहूटियां बाहर निकल आयी। सिरवारने कर बच्चड़े की बलैयां ली और झोली मे गुड़ डाल आसीसें दी।

चाची ने टनोका लगाया—"पांव छू रे। पैरीपौना कर। तेरी चाचियां-ताइयां हैं।"

लाली अड़ गया—"न, मैं नही करता।"

"क्यों रे क्यो! तेरी बड़ी-सयानियां है।"

"भले हो। इनका मंझला भाई हमारे खेत से रुख क्यों उठाके ले गया!"

जनानियां हंस-हंस दोहरी हुईं—"लो री, यह जम्म पड़ा वड्डा निशंक शाह। बहना, शाह से कहो मदरसे बैठाने से पहले ही जिवियों की मीरी दे दे लाली शाह को।"

छोटी शाहनी ने, आगे बढ़कर लड़के के सिर पर धप्पा दिया—"चुप्प, बड़-बोला! चल राबयां, अक्ल सिखा इसे कुछ।"

लाली ने परतने को पांव उठा लिया—"बस, अब और नही।"

राबयां ने समझाया—"अभी दो घर और। चंगे बच्चे अडी नहीं करते।"

लाली राबयां को समझाने लगा—"राबीं बहन, चिड़ों के घर तीन चूल्हे है। हो गये न तीन घर!"

जनानियां ठुड्डियों पर हाथ रख-रख बोलीं—"बुजुर्ग सच कहता है। सच कहता है।"

सामने की गली से लाहबीबी चली आयी। देखकर लाली चहकने लगा—"सलाम मां, सलाम कहता हूं।"

'क़ुर्बान मल्ला कुर्बान अपने लालीशाह पर। क्यों लालीशाह, आज किधर चढ़ाई है!"

"मां, अलिफ बे की पट्टी
मियां घर और बीबी हट्टी।"

"ठहर रे लालीशाह, ठहर, मुझे बात करने दे शाहनी से। मैंने कहा शाहनी, तुम्हारा पुत्र तो मेरे मन भा गया है। मैं तो ब्याह करके रहूंगी। क्यो रे, कर लेगा न पसन्द मुझे।"

कुड़ियां-चिडियां हंस-हंस लाली से कहे—"जवाब दे रे, जवाब दे। मदरसे चढ़ा पीछे और लालीशाह को रिश्ता पहले आ गया।"

लाली ने पहले राबयां की ओर देखा, फिर मां की ओर और झटापट लाह बीबी के पांव पकड़ लिये।

"यह क्या रे, यह क्या!"

लालीशाह की अँखियाँ हँसने लगीं—"अब तो पैरीपौना हो गया माँ, अब पुत्र से शादी कैसे करोगी !"

"लाहबीबी हँस-हँस वलैयाँ लेने लगी—"हाय री, मैं सदके जाऊँ। देखो लड़के को। पैरीपौना करके इस बुड्ढी को सौंह खिला दी। अरे, मैं तुमसे ही ब्याह करके रहूँगी।"

लाली मच गया—"न-न, मैं तो ब्याह करूँगा राबी बहन के साथ।"

राबयाँ ने आगे बढ़ एक धप्पा लगाया—"कमली बातें।"

चाची महरी हँसने लगी—"करेगा तो करेगा, पर अभी से जहान पर नश्र क्यों कर रहा है !"

लालीशाह जमघटे-जमावड़े के साथ घरों से भिक्खा लेकर घर लौटे तो पान्दाजी ने वस्त्र बदलवा माथे पर तिलक किया। आशीष वचन कहकर आज्ञा दी—"जाओ गुरु के चरणों में। विद्या पढो। गुणवान बनो। यशवान बनो।"

बताशों-भरी चंगेर में मौलवीजी के लिए पाग-जोड़ा रख शाहनी ने ऊपर टके रख दिये।

लाली के गले में बस्ता, हाथ में तख्ती और दूसरे में कलम-दवात।

चाची ने पीठ पर प्यार फेरा—"पुत्रा, लड़कों से लड़ना मत। बड़े लड़कों से कभी छेड़छाड़ नहीं करनी !"

"पता है चाची, पता है !"

पण्डितजी बोले, "लाली पुत्र, हवेली में पिताजी और चाचाजी को प्रणाम कर मदरसे पहुँचते बनो।"

हवेली की दलहीज पर राबयाँ ने हाथ छुड़ाया, पर लाली न माना। अन्दर खींच ले गया !

लाली ने बारी-बारी दोनो शाहों को पैरीपौना किया तो राबयाँ ने बाँह से घेरकर कहा, "जाकर नवाब चाचा और चाचा मुहम्मदीन को भी पैरीपौना करो।"

"उन्हें मैं सलाम करूँगा ! चाचा बाग्गा को सलाम करूँ कि पैरीपौना !"

पान्दाजी अपने निक्के यजमान की अक्ल-बुद्ध पर बड़े खुश हुए। "जियो बेटा, जियो !"

लाली ने भूरी गाय को प्यार फेरा। भैंस को थापी दी। घोड़ों को छू-छू हेल-मेल करने लगा।

"राबयाँ बहन, मैं तो शहबाज़ पर मदरसे जाऊँगा।"

"न, मदरसे पैरों पर जाते हैं। नहीं तो पढ़ना नहीं आता। चलो, अब मदरसे चलो।"

दोनों भाई तख्त पर बैठे-बैठे लाली को देखते रहे।

पान्दाजी ने हाथ से संकेत किया—"अब मदरसे की ओर महूर्त खड़ा है !"

लाली बड़े-सयानों की तरह पण्डितजी के आगे झुका—"प्रणाम करता हूँ पण्डितजी !"

"आयुष्मान, यशवान, धनवान—जियो पुत्र, जियो !"

"सलाम करता हूँ नवाब चाचा ! सलाम करता हूँ मुहम्मदीन चाचा !"

बड़े शाहजी ने बेटे को घूरा, "तुम्हारे भाई गुरुदास और केशोलाल कहाँ हैं ?"

"जी, वे कड़ाही के पास बैठे बताशे चख रहे हैं। चाचा साहिब, उन्हें रात को चमूने जरूर लड़ेंगे।"

शाहजी इस मुँहज़ोरी के लिए लड़के को घूरने लगे। काशीशाह ने खुश हो एक टका निकाल आगे किया—पुत्रजी, मौलवीजी को सलाम के वक़्त यह नज़र करना है ! समझे ?"

"जी चाचा साहिब, वैसे ही करूँगा जैसे आपने कहा है। अब ठीक है न राबो बहन !"

शाहजी ने दोनों को हवेली से बाहर जाते देखा और आँखें मींट लीं। सबरे कहाँ से बन्द आँखों के आगे दुक्ख की झलक उठ आयी कि राबयाँ मदरसे से परती है और घर के चौके में जा बैठी है। सिर दुपट्टे से ढका है और थाली की ओर बढ़ते हाथ की कलाई में सोने का कंगन झिलमिलाता है।

शाहजी ने चौंककर आँखें खोल दीं।

काशीशाह जाने किस रौ में थे—"भाजी, राबयाँ सयानी हुई। अलिये से कहो, इसके लिए कोई साक-सम्बन्ध आस-पास ही ढूँढ़े। हम कैसे दूर करेंगे लड़की को !"

शाहजी कुछ बोले नहीं। उठे और शहबाज को थापड़ा दिया। नवाब ने मुस्तैदी से काठी डाली और घोड़े पर सवार हो शाहजी गाँव के बाहर निकल चले।

एक बार अलिये के घर की ओर नज़र मारी और घोड़े की रासें दूसरी दिशा को मोड़ लीं। रब्ब साइयाँ, मेरे 'आज' के आगे तेरी मालकी है। मेरी नहीं।

"लो शाहजी, इस बार सूबा लाट ने अपनी हेक भी बदली दरबार में कि नहीं !"

"चौधरीजी, क़ाफ़िया जो एक ही हुआ तो हेक कैसे बदले ! वही भरती,

तुर्फ़ैलसिंह बोले, "लाट को कौन समझाये कि बंगाली की भरती चंगी नहीं !"

काशीशाह बोले, "ताया तुर्फ़ैलसिंह, यह तो बरख़िलाफ़ी बात हो गयी। आख़ीर इन्क़लाबियों की बहादुरी तो बंगाले से ही चली। जान पर खेल जाते हैं।"

"मेरी बात ध्यान से सुनो काशीरामा। बंगाली के मुंह चढ़ा हुआ है—यह क्यों ! वह क्यों ! आगे क्यों ! पीछे क्यों ! कितना चलना है ! कितना बढ़ना है ! लिखत में क़ानून बताओ। मैदाने-जंग में जो क़ानून का सयापा छिड़ जाये तो हो चुकी लड़ाई में जीत !"

जहांदादजी ने सिर हिलाया—"यह तो बात ठीक है कि फ़ौज में 'क्यों' करने की देर और मुंह बन्द ! अदालत-मुक़दमे की बातें तो नहीं न ! बहस होती रहे। जिरह होती रहे। यहां तो करो चाहे मरो।"

शाहजी ने पहला तार पकड़ लिया—"इधर तालियां बजीं, उधर सूबा लाट ऊंचे चढ़ गये। इशारा किया अहलकारों को और चन्दे लिखे जाने लगे। आप समझो शुरू हुआ पांच लाख से और खत्म हुआ पांच हज़ार पर।"

फ़कीरे ने घुल्कल निकाली—"हां जी, कुछ लड़ाई पर खर्चा कर देंगे, कुछ आप खा-पी जायेंगे। आख़ीर को तो सबको घर-बाहर और टब्बर लगे हुए हैं।"

"ज़िला हाक़म ने कई टब्बर-क़बीलों के नाम लिये—करोर के सूबेदार टिक्का खां। सैयद के हवलदार फ़ज़ल हुसैन। मायरा शमस के नायक गुलाब खान। ढोक के सिपाही अब्दुल क़रीम। कुंड्या के बुरहान अली। मायरा मोर के गेब्वा खां। चक अमरा के लम्बड़दार खुदादाद खान ने चार लड़कों में से तीन को लाम में भेज दिया।

"स्यालकोटिये मेजर हाशिम खां ने गिनकर एक हज़ार सलाहरिया रजपूत भरती करवाये हैं। हाशिम खां की जागीर तो पक्की। शाहजी, एक और ऐलान किया गया है सरकार की तरफ़ से, कि दस हज़ार ड्राइवरों की भरती खोलेगी सरकार।

"लाट ने पहला विक्टोरिया क्रास पानेवाले नायक खुदादाद खां का ज़िक्र किया तो जी, पूरे दरबार में ज़िन्दाबादी बुलायी गयी। खलकत हिल गयी। माई का लाल ज़िन्दा ही ज़िन्दा है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बादशाहो, यह तो मलका क्रास मिल गया, नहीं तो, जी, बन्दा जो भी लड़ाई में खेत हो वह तो अमर ही अमर है। हां, ज़िन्दाबादियां ज़रूर किस्मतों से।"

मुंशी इल्मदीन आ डटे मैदान में—"फ़कीर सुहरी का नाम तो सुना होगा शाह साहब। पुराने वक़्तों की बात है। दुश्मन ने लड़ाई के मैदान में फ़कीर सुहरी का सिर काट दिया तो वह बहादुर अपने हाथों में अपना सिर पकड़कर खड़ा हो गया। बस देखने की देर थी, दुश्मन की फ़ौजें उखड़ गयीं।"

वही जंग-फण्ड और खिल्लत-वज़ीफ़ों के ऐलान।"

"कुछ भी कहो, इस बार लाट ने अपने ज़िले की बड़ी तारीफ की। कहा, इस शहर पर हकूमत को बड़ा नाज़ है। लाट ने जी खोल के अपने लोगों की खुशनुमाई की। कहने लगा कि गुजरात के लोग पहले-पहल हांगकांग पुलिस में भरती हुए थे। गुजरातिये ही पहले नील नहर, अवादान और लन्दन जा पहुंचे थे। मशहूर है जो मिलनसार यारबाश बन्दा आपको बाहर के मुल्कों में मिल जाये, समझो जेहलम, गुजरात या स्यालकोट !"

मौलादादजी बड़े खुश हुए—"वाह-वाह, वतनियों के बारे क्या सोहणी सही बात की गयी है। अपने बन्दों की गर्मजोशी तो जग-ज़ाहिर हुई न !"

"चौधरीजी, लाट ने दरबार में पिण्ड और पिण्डवालों के नाम ले-लेकर बखान किया। पहले ज़िक्र किया जँडियालावाले लम्बड़दार बख्शशखान का कि उसने तीन पुत्र और तीन भतीजे भरती करवाये हैं। सरकार इसे काबिले-तारीफ़ समझती है। फिर ज़िक्र किया मुरीदकीवाली मुस्समात शरीफन का। तीनों पुत्र लाम में भेजकर आप हल चलाती है।"

फ़तेहअलीजी बोले, "काशीशाह, एक रुक्का लाहबीबी के बारे ज़िला लाट को डाल दो। नज़र चढ़ गया तो टब्बर को कुछ मिल-मिला जायेगा। बड़ी हिम्मत से खेतों की गाही-वाही देखती है !"

"जो हुक्म। कल ही लिख के भेजते हैं।"

"शाहजी, जलालपुर में खबर थी कि लाट ने अपने गुजरावालियों को बड़ा धमकाया था। कहा, धनाढियो, तुम पुत्र तो रखो सँभाल के और चन्दे दे-दे सरकार से खिल्लतें खरीदना चाहो—यह बात हकूमत को हरगिज़-हरगिज़ पसन्द नहीं।"

चौधरी फतेहअली भी दरबार में माजूद थे, कहा, "बादशाहो, जापता कुछ ऐसा है कि लाट ने दरबार का यह अमल ही बना लिया है। पहले तारीफ़, फिर चन्दे की उगराई और फिर भभकी।"

गण्डासिंह ऐसे छिड़े ज्यों सरकार से उनकी शरीक़दारी हो—"लड़ाई लगे कौन-से इतने ज़माने हो गये कि अभी से हकूमत की फटकरी फुल्ल होने लगी। असल में अंग्रेज़ बड़ी डण्डीमार क़ौम है और पैसा पालू।"

नजीबा बड़ा हँसा, कहा, "लालसाजी, इस हिसाब से तो अंग्रेज़ की साकादारी खत्री-अरोड़ों से भी हुई। रुपये एक को खत्रीशाह जब तक सौ न बना ले, बात न बने।"

शाहजी बोले, "लाट बहादुर वज़ीराबादियों को कुछ और कहता है। उन्हें धमकाया कि तुम अभी सोये हुए हो। उधर एक हज़ार बगानी और नौ सौ पठावी मसीही भरती हो चुका है।"

तुर्फ़ैलसिंह बोले, "लाट को कौन समझाये कि बंगाली की भरती चंगी नहीं !"

काशीशाह बोले, "ताया तुर्फ़ैलसिंह, यह तो बरखिलाफी बात हो गयी। आखीर इन्क़लाबियों की बहादुरी तो बंगाले से ही चली। जान पर खेल जाते हैं।"

"मेरी बात ध्यान से सुनो काशीरामा। बंगाली के मुंह चढा हुआ है—यह क्यों ! वह क्यों ! आगे क्यों ! पीछे क्यों ! कितना चलना है ! कितना बढ़ना है ! लिखत में क़ानून बताओ। मैदाने-जंग में जो कानून का सयापा छिड़ जाये तो हो चुकी लड़ाई में जीत !"

जहांदादजी ने सिर हिलाया—"यह तो बात ठीक है कि फौज में 'क्यों' करने की देर और मुंह बन्द ! अदालत-मुकदमे की बातें तो नहीं न ! बहस होती रहे। जिरह होती रहे। यहां तो करो चाहे मरो।"

शाहजी ने पहला तार पकड़ लिया—"इधर तालियां बजी, उधर सूबा लाट ऊंचे चढ गये। इशारा किया अहलकारों को और चन्दे लिखे जाने लगे। आप समझो शुरू हुआ पांच लाख से और खत्म हुआ पांच हज़ार पर।"

फकीरे ने चुटकल निकाली—"हां जी, कुछ लडाई पर खर्चा कर देंगे, कुछ आप खा-पी जायेंगे। आखीर को तो सबको घर-बाहर और टब्बर लगे हुए हैं।"

"जिला हाकम ने कई टब्बर-कबीलों के नाम लिये—करोर के सूबेदार टिक्का खां। सैयद के हवलदार फज़ल हुसैन। मायरा शमस के नायक गुलाब खान। ढोक के सिपाही अब्दुल क़रीम। कुंइया के बुरहान अली। मायरा मोर के गेब्बा खां। चक अमरा के लम्बड़दार खुदादाद खान ने चार लड़कों में से तीन को लाम में भेज दिया।

"स्यालकोटिये मेजर हाशिम खां ने गिनकर एक हज़ार सलाहरिया रजपूत भरती करवाये हैं। हाशिम खां की जागीर तो पक्की। शाहजी, एक और ऐलान किया गया है सरकार की तरफ से, कि दस हज़ार ड्राइवरों की भरती खोलेगी सरकार।

"लाट ने पहला विक्टोरिया क्रास पानेवाले नायक खुदादाद खां का ज़िक्र किया तो जी, पूरे दरबार में ज़िन्दाबादी बुलायी गयी। खलकत हिल गयी। माई का लाल ज़िन्दा ही ज़िन्दा है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बादशाहो, यह तो मलका क्रास मिल गया, नहीं तो, जी, बन्दा जो भी लड़ाई में खेत हो वह तो अमर ही अमर है। हां, ज़िन्दाबादियां ज़रूर किस्मतों से।"

मुंशी इल्मदीन आ डटे मैदान में—"फकीर सुहरी का नाम तो सुना होगा शाह साहब। पुराने वक़्तों की बात है। दुश्मन ने लड़ाई के मैदान में फ़कीर सुहरी का सिर काट दिया तो वह बहादुर अपने हाथों में अपना सिर पकड़कर खड़ा हो गया। बस देखने की देर थी, दुश्मन की फौजें उखड़ गयीं।"

वही जंग-फण्ड और खिल्लत-वजीफों के

"कुछ भी कहो, इस बार लाट ने अ
शहर पर हकूमत को बड़ा नाज़ है। लाट
को। कहने लगा कि गुजरात के लोग पहले
गुजरातिये ही पहले नील नहर, अबादान
मिलनसार यारबाश बन्दा आपको बाहर के
गुजरात या स्यालकोट !"

मौलादादजी बड़े खुश हुए—"वाह-वा
सही बात की गयी है। अपने बन्दों की गर्मजोशी

"चौधरीजी, लाट ने दरबार में पिण्ड और
किया। पहले जिक्र किया जँडियालावाले लम्बड़
पुत्र और तीन भतीजे भरती करवाये हैं। सरक
है। फिर जिक्र किया मुरीदकीवाली मुस्समात शरी
कर आप हल चलाती है।"

फ़तेहअलीजी बोले, "काशीशाह, एक रुक्का
को डाल दो। नज़र चढ़ गया तो टब्बर को कुछ मिल
से खेतों की गाही-वाही देखती है !"

"जो हुक्म। कल ही लिख के भेजते हैं।"

"शाहजी, जलालपुर में खबर थी कि लाट ने
धमकाया था। कहा, धनाढियो, तुम पुत्र तो रखो सँभ
कार से खिल्लतें खरीदना चाहो—यह बात हकूमत
नहीं।"

चौधरी फ़तेहअली भी दरबार में मौजूद थे, कहा
ऐसा है कि लाट ने दरबार का यह अमल ही बना लि
चन्दे की उगराई और फिर भभकी।"

गण्डासिंह ऐसे छिड़े ज्यों सरकार से उनकी शरीक
कौन-से इतने ज़माने हो गये कि अभी से हकूमत को फ
असल में अंग्रेज बड़ी डण्डीमार क़ौम है और पैसा पालू।'

नजीबा बड़ा हँसा, कहा, "लालाजी, इस हि
साकादारी खत्री-अरोड़ों से भी हुई। रुपये एक को खत्री
ले, बात न बने।"

शाहजी बोले, "लाट बहादुर वजीराबादियों को कुछ
धमकाया कि तुम अभी सोये हुए हो। उधर एक हजार बगाल
मसीही भरती हो चुका है।"

तुर्फैलसिंह बोले, "लाट को कौन समझाये कि बंगाली की भरती चंगी नह

काशीशाह बोले, "ताया तुर्फैलसिंह, यह तो बरखिलाफ़ी बात हो ग आखीर इन्क़लाबियों की बहादुरी तो बंगाले से ही चली। जान पर खेल जाते

"मेरी बात ध्यान से सुनो काशीरामा। बंगाली के मुँह चढ़ा हुआ है— क्यों! वह क्यों! आगे क्यों! पीछे क्यों! कितना चलना है! कितना बढ़ना है लिखत में क़ानून बताओ। मैदाने-जंग में जो क़ानून का सयापा छिड़ जाये तो चुकी लड़ाई में जीत!"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"यह तो बात ठीक है कि फ़ौज में 'क्यों' कर की देर और मुँह बन्द! अदालत-मुक़दमे की बातें तो नहीं न! बहस होती रहे जिरह होती रहे। यहाँ तो करो चाहे मरो।"

शाहजी ने पहला तार पकड़ लिया—"इधर तालियाँ बजीं, उधर सूबा लाट ऊँचे चढ़ गये। इशारा किया अहलकारों को और चन्दे लिखे जाने लगे। आप समझो शुरू हुआ पांच लाख से और खत्म हुआ पांच हजार पर।"

फकीरे ने धुत्कल निकाली—"हाँ जी, कुछ लड़ाई पर खर्चा कर देंगे, कुछ आप खा-पी जायेंगे। आखीर को तो सबको घर-बाहर और टब्बर लगे हुए हैं।"

"ज़िला हाक़म ने कई टब्बर-क़बीलों के नाम लिये—करोर के सूबेदार टिक्का खाँ। सैयद के हवलदार फ़ज़ल हुसैन। मायरा शमस के नायक गुलाब खान। ढोक के सिपाही अब्दुल क़रीम। कुंइया के बुरहान अली। मायरा मोर के गेब्बा खाँ। चक अमरा के लम्बड़दार खुदादाद खान ने चार लड़कों में से तीन को लाम में भेज दिया।

"स्यालकोटिये मेजर हाशिम खाँ ने गिनकर एक हज़ार सलाहरिया रजपूत भरती करवाये हैं। हाशिम खाँ की जागीर तो पक्की। शाहजी, एक और ऐलान किया गया है सरकार की तरफ़ से, कि दस हज़ार ड्राइवरों की भरती खोलेगी सरकार।

"लाट ने पहला विक्टोरिया क्रास पानेवाले नायक खुदादाद खाँ का ज़िक्र किया तो जी, पूरे दरबार में ज़िन्दाबादी बुलायी गयी। खलकत हिल गयी। माई का लाल ज़िन्दा ही ज़िन्दा है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बादशाहो, यह तो मलका क्रास मिल गया, नहीं तो, जी, बन्दा जो भी लड़ाई में खेत हो वह तो अमर ही अमर है। हाँ, ज़िन्दाबादियाँ ज़रूर क़िस्मतों से।"

मुंशी इल्मदीन था डटे मैदान में—"फकीर मुहरी का नाम तो सुना होगा शाह साहब। पुराने वक़्तों की बात है। दुश्मन ने लड़ाई के मैदान में फकीर मुहरी का सिर काट दिया तो वह बहादुर अपने हाथों में अपना सिर पकड़कर खड़ा हो गया। बस देखने की देर थी, दुश्मन की फ़ौजें उखड़ गयीं।"

वही जंग-फण्ड और खिल्लत-वज़ीफ़ों के ऐलान।"

"कुछ भी कहो, इस बार लाट ने अपने ज़िले की बड़ी तारीफ की। कहा, शहर पर हकूमत को बड़ा नाज़ है। लाट ने जी खोल के अपने लोगों की खुशनु की। कहने लगा कि गुजरात के लोग पहले-पहल हांगकाग पुलिस मे भरती हुए गुजरातिये ही पहले नील नहर, अबादान और लन्दन जा पहुंचे थे। मशहूर है मिलनसार यारबाश बन्दा आपको बाहर के मुल्को मे मिल जाये, समझो जेहल गुजरात या स्यालकोट!"

मौलादादजी बड़े खुश हुए—"वाह-वाह, वतनियों के बारे क्या सोह सही बात की गयी है। अपने बन्दों की गर्मजोशी तो जग-ज़ाहिर हुई न!"

"चौधरीजी, लाट ने दरबार मे पिण्ड और पिण्डवालों के नाम ले-लेकर बख किया। पहले जिक्र किया जंडियालावाले लम्बड़दार बख्शशखान का कि उसने ती पुत्र और तीन भतीजे भरती करवाये है। सरकार इसे क़ाबिले-तारीफ़ समझ है। फिर ज़िक्र किया मुरीदकीवाली मुस्ममात शरीफ़न का। तीनों पुत्र लाम मे भेन कर आप हल चलाती है।"

फ़तेहअलीजी बोले, "काशीशाह, एक रुक्का लाहबीबी के बारे ज़िला ला को डाल दो। नजर चढ़ गया तो टब्बर को कुछ मिल-मिला जायेगा। बड़ी हिम्म से खेतो की गाही-वाही देखती है!"

"जो हुक्म। कल ही लिख के भेजते हैं।"

"शाहजी, जलालपुर में खबर थी कि लाट ने अपने गुजरावालियों को बड़ा धमकाया था। कहा, धनाढियो, तुम पुत्र तो रखो सॅभाल के और चन्दे दे-दे सरकार से खिल्लतें खरीदना चाहो—यह बात हकूमत को हरगिज़-हरगिज़ पसन्द नहीं।"

चौधरी फतेहअली भी दरबार में माजूद थे, कहा, "बादशाहो, जापता कुछ ऐसा है कि लाट ने दरबार का यह अमल ही बना लिया है। पहले तारीफ़, फिर चन्दे की उगराई और फिर भभकी।"

गण्डासिंह ऐसे छिड़े ज्यो सरकार से उनकी शरीक़दारी हो—"लड़ाई लगे कौन-से इतने ज़माने हो गये कि अभी से हकूमत की फटकरी फुल्ल होने लगी। असल में अंग्रेज बड़ी डण्डीमार क़ौम है और पैसा पालू।"

नजीबा बड़ा हॅसा, कहा, "खालसाजी, इस हिसाब से तो अंग्रेज की साकादारी खत्री-अरोड़ों से भी हुई। रुपये एक को खत्रीशाह जब तक सौ न बना ले, बात न बने।"

शाहजी बोले, "लाट बहादुर वज़ीराबादियों को कुछ और कहता है। उन्हें धमकाया कि तुम अभी सोये हुए हो। उधर एक हज़ार बंगाली और नौ सौ पंजाबी मसीही भरती हो चुका है।"

तुर्फैलसिंह बोले, "लाट को कौन समझाये कि बंगाली की भरती चंगी नहीं!"

काशीशाह बोले, "ताया तुर्फैलसिंह, यह तो बरख़िलाफ़ी बात हो गयी। आख़ीर इन्क़लाबियों की बहादुरी तो बंगाले से ही चली। जान पर खेल जाते हैं।"

"मेरी बात ध्यान से सुनो काशीरामा। बंगाली के मुंह चढ़ा हुआ है—यह क्यों! वह क्यों! आगे क्यों! पीछे क्यों! कितना चलना है! कितना बढ़ना है! लिखत में कानून बताओ। मैदाने-जंग में जो क़ानून का सयापा छिड़ जाये तो हो चुकी लड़ाई में जीत!"

जहांदादजी ने सिर हिलाया—"यह तो बात ठीक है कि फ़ौज में 'क्यों' करने की देर और मुंह बन्द! अदालत-मुकदमे की बातें तो नहीं न! बहस होती रहे। जिरह होती रहे। यहां तो करो चाहे मरो।"

शाहजी ने पहला तार पकड़ लिया—"इधर तालियां बजीं, उधर सूबा लाट ऊँचे चढ़ गये। इशारा किया अहलकारों को और चन्दे लिखे जाने लगे। आप समझो शुरू हुआ पांच लाख से और ख़त्म हुआ पांच हज़ार पर।"

फ़क़ीरे ने चुटकल निकाली—"हां जी, कुछ लड़ाई पर खर्चा कर देंगे, कुछ आप खा-पी जायेंगे। आख़ीर को तो सबको घर-बाहर और टब्बर लगे हुए हैं।"

"ज़िला हाकम ने कई टब्बर-कबीलों के नाम लिये—करोर के सूबेदार टिक्का ख़ां। सैयद के हवलदार फ़ज़ल हुसैन। मायरा शमस के नायक गुलाब ख़ान। ढोक के सिपाही अब्दुल करीम। कुंड्या के बुरहान अली। मायरा मीर के गेब्बा ख़ां। चक अमरा के लम्बड़दार ख़ुदादाद ख़ान ने चार लड़कों में से तीन को लाम में भेज दिया।

"स्यालकोटिये मेजर हाशिम ख़ां ने गिनकर एक हज़ार सलाहरिया रजपूत भरती करवाये हैं। हाशिम ख़ां की जागीर तो पक्की। शाहजी, एक और ऐलान किया गया है सरकार की तरफ़ से, कि दस हज़ार ड्राइवरों की भरती खोलेगी सरकार।

"लाट ने पहला विक्टोरिया क्रास पानेवाले नायक ख़ुदादाद ख़ां का ज़िक्र किया तो जी, पूरे दरबार में ज़िन्दाबादी बुलायी गयी। ख़लकत हिल गयी। माई का लाल ज़िन्दा ही ज़िन्दा है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बादशाहो, यह तो मलका क्रास मिल गया, नहीं तो, जी, बन्दा जो भी लड़ाई में खेत हो वह तो अमर ही अमर है। हां, ज़िन्दाबादियां ज़रूर किस्मतों से।"

मुंशी इल्मदीन आ डटे मैदान में—"फ़क़ीर सुहरी का नाम तो सुना होगा शाह साहब। पुराने वक़्तों की बात है। दुश्मन ने लड़ाई के मैदान में फ़क़ीर सुहरी का सिर काट दिया तो वह बहादुर अपने हाथों में अपना सिर पकड़कर खड़ा हो गया। बस देखने की देर थी, दुश्मन की फ़ौजें उखड़ गयीं।"

कर्मइलाहीजी का ध्यान पोतरे अखिये पर जा लगा। बोले, "शाहजी, अखि अपना है तो बहादुर पर ज्यादा बारीक़ बुद्ध नहीं !"

"खैर मेहर है चौधरीजी, लड़ाई के मैदान में तो बहादुरी की ही जरूरत रह है। सोचने-सचाने के लिए फ़ौज के आला अफ़सर। वैसे झूठ क्यों कहें, अप लश्करों का दम्म-खम चंगा तरतीब-तरक़ीबवाला है !"

"जहाँदादजी, यह तो आप जानें।"

कर्मइलाहीजी ने गण्डासिंह को आँखें मूँदे-मूँदे सिर हिलाते देखा तो जहाँदा जी से बोले, "कल अपना बरखुरदार ज़ोरावरसिंह पिण्ड पहुँचा है। जरूर जहा पर चढ़ने की परची मिल गयी होगी।"

कक्कूखाँ बोले, "न जी, कहते हैं छावनी से बिना छुट्टी किये घर लौट आय है। यह भी सुना है कि 'फरलो' हो गयी है काके की।"

मुंशी इलमदीनजी बोले, "चढ़तल ज़ोरावरसिंह की कुछ तोला-माशा कम ह जापती है !"

गण्डासिंह उब्बड़वाहे उठ बैठे। धमकाकर कहा, "न काके अपने को को बिमारी और न ही वह छुट्टी पर। वह फ़ौज की फ़ीतियाँ वापस कर आया है। गो कप्तान के आगे रख दी—अपनी वरदी सँभालो, आप्पाँ चले।"

जहाँदादजी परेशान—"कुछ खोल के बात बताओ। बादशाहो, यह बड़ी संगीन बात है।"

गण्डासिंह ने अपना साफ़ा छुआ, फिर बोले, "ज़ोरावर बेवर्दी हो के आया है। इनकी पलटन में तीस-चालीस बन्दे थे। पुरानी भरती। सूबेदारी फ़ेहरिस्त निकली तो उसमें देशी नाम एक भी न। खलबली मच गयी। सबने मिलकर कमान अफ़सर के सामने अपनी शिकायत पेश की कि साहब बताया जाये कि देशी बन्दे किस चीज में कम हैं ! उनको तरक्की क्यों न मिले !

"बस जी, अगले दिन परेड में ही हुक्म सुना दिया गया कि डिग-विग करनेवाली टोली अपनी बन्दूकें जमा करवा दे ! और इनके कन्धों से फ़ीते उतार लिये जायें !"

"यह तो मुअत्तल कर छोड़ा न लड़कों को ! क्यों जहाँदादखाँ जी ?"

जहाँदादखाँ ने गण्डासिंह से पूछा, "यह मामला कोई छोटा-मोटा नहीं। कोई संगीन वजह मालूम देती है !"

"वजह बस यही कि फ़ौज-पल्टन हिन्दुस्तानी है तो उन्हें भी तरक़्क़ी का मौक़ा बराबर मिलना चाहिए।

"कप्तान ने लड़कों को समझाया—'तुम्हारे कसूर की सज़ा यही है। तुम लोग इन्क़लाबियों से साज़िश करके ऐसे काम करोगे तो खता खाओगे।' जहाँदादजी, ज़ोरावर बताता है कि लड़का था एक साहीवाल का—रोशन अली।

ड़ा आला खिलाडी। उसने बड़ा रौबीला जवाब दिया—'कप्तान साहिब, मारी भी बात पल्ले बांध लो। जेकर फौज में बरावरी न वरती गयी तो हर देसी आदमी का दिल पिंजरे से बाहर निकलकर इन्क़लावी हो जायेगा।' "

शाहजी कुछ सोचते रहे, फिर आवाज हौली कर कहा, "ज़ोरावर को कुछ दिन ननिहाल भेज दो। अपने पिण्ड में पुलिस-फ़ौज की आवा-जावी जरा ज्यादा ही। चंगा है थोड़े दिन बाहर लगा आये तो।"

गुरुदित्तसिंह शरदूलसिंह का रुक्का-चिट्ठी ले बैठे—"शाहजी, शरदूलसिंह लिखता है कि मुल्क फ़ान्स की खल्कत अपने फौजियों को देखकर बडी खुश होती है। खासकर जनानियां वहाँ की। सड़कों पर निकल जायें हिन्दोस्तानी टुकड़ी तो ऐसी हँस-हँस हाथ मिलाती है कि बन्दा मजबूर हो के बाँहों मे भर ले।"

मीरांबक़्श बोले, "बरकतें फ़ौज की अपने फरजन्दो को। ये तो मुँहमांगी मिठाइयां हुई न ! चलो जी, गोला-बारूद की ऊँच-हेठ भी तो इन्हीं लड़को ने सहारनी-सँभालनी हैं। मिलती है ख़ुशी तो क्यो न कर लें !"

"बादशाहो, अपने गौहर की भी चिठ्ठी-पत्री आयी !"

"आयी। मुझसे तो जरा संगता है। पर अपने भरा की तरफ चिट्ठी थी उसकी। लिखता है कि एक शाम पांच-सात की टुकडी अपनी छावनी को लौट रही थी। रास्ते में एक बड़ी खूबसूरत गुलाबां ने पहले तो हाथ मिलाया। फिर चुम्मी दे दी। साथ चलते गोरे ने देखा तो हँसने लगा। गौहर ने पूछा—'आप ही बढ-बढकर गले लग रही है। बताओ क्या करूँ ?'

"गोरा वोला, 'खुशकिस्मत हो जवान। जाओ, इस प्यारी अगना को जरा सैर करवा लाओ।' "

"फिर क्या हुआ मीरांबक़्शजी ?"

गुरुदित्तसिंह बीच में कूद पड़े—"ओहो, होना क्या था ! आयी-गयी में घूंट भर लिया होगा ! और कोई झुग्गी तो नही डाल देनी थी लड़के ने कि आ बीबी, बच्चे बना और रोटी पका !"

मैयांसिंह हँस-हँस दोहरे हुए। गुरुदित्तसिंह को आँख मारकर कहा, "क्यों मेरे पुत्रा, है मरजी फ़ान्सी जायका लेने की ! चलो आप्पां चलिये फ़ान्स। क्या हुआ बूढ़े है तो, कुछ तो बची-खुची चूल्हे में अभी बाकी होगी !"

फ़कीरे ने हँसकर कहा, "हद मुकायी है ताया मैयांसिंह, शेर बूढ़ा होते-होते ही होता है।"

मैयांसिंह की जैसे जवानी लौट आयी। हँस-हँसकर कहा, "ओ मादरचोद लड्डुआ, मशकरी करता है ! ओए, ताया तुम्हारा कफ़न की तैयारी में। अब कहाँ मिलेगा यह झूटा। नहीं मिलता रब्बा, अब नही मिलता।"

मजलिस ऐसी हँस-हँस दोहरी हुई कि खाँसियाँ छिड़ गयी।

आँखें पोंछते-पोंछते लोग सकते में आ गये—हँसते-हँसते ताया मंर्यासिंह का साफे-सजा सिर मंजी की पाटी पर जा लगा था।

काशीशाह ने हाथ से उठाया। आँखें थिर हो गयीं। नब्ज़ देखी—ग़ायब। बूढ़ा शेर झटापटी में ही मैदाने-जंग की खन्दक पार कर गया था।

हाय-हाय री फफ्फेकुट्टन, मामोठगनी, दिवारों के अन्दर खेल रचा लिये। टके-टके की तोलकर घर ढेर लगा लिये। हमने भी लगाये होते पेड़ हराम के अपने वेहड़े में तो दिन-रात डालों पर बुगतियाँ फूटतीं और औलाद हराम की बढ़ती! अरी, खसम किये दो तो पानी गर्कजाना कण्डे तोड़ने लगा। जर के दित्तिये, जर के। मरजादा में न रही तो ढह लग जायेगी ढह!

साँई दित्ती की छाती पर भम्भड़ बल उठे। कोठे पर से आवाज़ दी—"ढह लगे तेरे टब्बर को।"

"कौन है माँ-प्यो पिट्टी बकारा करनेवाली सवेरे-सवेरे!"

"चुप री, जिवियाँ हज़म करके इस घर उंगल उठाने लगी!"

"फिटे मुँह! अरी दित्तिये, यहाँ तो पहले ही थुड़ है। खैरों से एक जने का क़बीला है। तेरी तरह अपने जने को मोहरा नहीं दिया मोहरा।"

"तुझे दोजख मिले। झूठी तोहमतें। सरताज मेरे को सरसाम हुआ था। होता न ज़िन्दा तो गिच्ची घुट्ट देता बोलनेवालों की।"

"तू तो ज़िन्दा है, तू उठा ले हाथ। अरी, तू चाहे भी तो हाथ न उठेगा। खुदावन्दा क़रीम तेरे गुनाह जानता है। उसे तूने अपने हाथों जहर पिलाया।"

"चुप्प री, चुप!"

"क्यों न बोलूँ! जो मेहनत-मजूरी के सिर राख डाले और बटमार कमाइयों से घी के तड़के लगाये—"

"तड़के लगते हैं खुदा के फ़ज़ल से। तेरा क्यों कालजा जलता है! छटांक-छटांक जोड़ते नहीं, खाते हैं।"

शाहनी ने कान दिया—"मैंने कहा बिन्द्रादइये, यह क्या अँगियारी जल उठी सुबह-सवेरे!"

छोटी शाहनी हँसने लगी—"निकाल लेने दे गुबार शरीकनियों को। बरस-छमाही इन्हें दौरा पड़ता है। जिसके पल्ले पैसे थे उसने जिवियाँ सँभाल लीं।

दूसरों ने तो मनछिट्टी-सा जलना है।"

चाची महरी कुटिया से लौटी थी। आवाज़ धीमी करके कहा, "दित्ती का बड़ा पुत्तर लोडेखाँ आया है कल। जहाज़ी बेड़े पर खलासी लगा हुआ है। जमीला बेसब्री कुछ तो अक़्ल करती! लड़का बड़ा चुप-चपीता है। ऐसा बन्दा भख जाये तो तन्दूर है तन्दूर! कहीं और गुल न खिला बैठे!"

दोनों मामे-फूफी की दुपहर तक बकारा करती रहीं।

भत्ते वेला खिलाकर लौटी तो साँई दित्ती ने पहल कर ली—"कुचज्जी दूसरों की गूं-छीछी करे। बन्दा सुचज्जा हो, सोक्खा हो तो अपने साथ-साथ दूसरों की भी आबरू रखे।"

जमालो छिड़ गयी—"बड़े छनकने छनका रही है। क्या तू ही जन्मी है इज्ज़त-आबरूवाली! चाँदी के डण्डिया छल्ले और पाव-पाव के कड़े देखे हैं किसी ने भला! अरी, दौलत कजरियों के पास भी कम नहीं। देख आ ज़नान-मण्डी। हर कंजरी लदी-फदी है गहने-गट्टे से!"

जवाब की जगह जमीला ने दित्ती के चिट्टे रंग पर गुमान के ऐसे चमकार-टनकार देखे कि मुँह पर छित्तर फेंक दिया—"कजरियाँ तुमसे चंगी। पैसा-धेला बटोरती हैं, पर, री, ज़हर नहीं पिलाती शरबतों में!"

साँई दित्ती ने गुस्सा-गुब्बार थूक डाला और जाकर अपना तन्दूर लीपने लगी।

जमीला और मची—"अड़िये, बदगुमानियाँ तेरी तभी तक जब तक जना तेरा दिवार बनकर खड़ा है। ख़ुदा के कारिन्दे नहीं छोड़ते गुनहगारों को। उधड़ जायेंगी लग्गियाँ-बट्टियाँ, उधड़ जायेंगी।"

साँई दित्ती ने हँडिया उठा चूल्हे पर रखी—"खैरों से पुत्तर मेरा फरमा-बरदार। मेरी तरफ़ से लटूनी भड़वी जले-खपे।"

"अगेतरे-पछेतरे मुरदे उठ आयेंगे कब्रों से। मेरी पल्ले बाँध ले।"

"बाँधने को तो तेरा नक्का बाँधूंगी। मार बोल-बोल के दिल-पिण्डा जला मारा।"

साँई दित्ती ने मूठ-भर सेंवइयाँ निकालीं और धी रेशमा को आवाज़ दी—"रेशमी, जा टुक हट्टियों से दो मूठ बूरा तो ले आ। भाई तेरे के लिए सेंवइयाँ राँध दूं।"

जमीला हँसने लगी—"माँ बनके लाख करले सेखन, आखीर को तो दोज़ख ही मिलना है। कत्ल-करतूतें नहीं छिपतीं।"

घर के सामने से चौधरी फतेहअली निकल पड़े। सुनकर धमकाया—"बीबी, ज़बान पर फन्द डाल। पाँव सराहँदी हों या पवान्दी, पीठ बीच में ही लगेगी।"

जमालो ने दुपट्टी सिर पर डाल ली—"सलाम पचों की पगड़ियों को। किसे

पता नहीं कि शरवत था कि मोहरा। चौधरहट्टा तो धोखा खा गया न !"

चौधरी फ़तेहअली के गोरे रंग पर मेहदी-लगी मूँछें भभकने लगीं। सिर उठाकर कहा, "धिये, गुज़र गये को नपोड़ना चंगा नहीं। नगेजी आज भी बुरी और कल भी।"

चौधरीजी ने पांव उठा लिये तो जमीला मुंह-ही-मुंह बुड़बुड़ाने लगी—

"चोर उच्चके चौधरी
और लुण्डी रण प्रधान।"

सांई दित्ती की बन आयी—"मुझे भावे सो छित्तर मार, पर, री, चौधरहट्टे से तो हया-लाजिमा कर। पंचों की पगड़ियों को हाथ डालने लगी। दुर फिटे मुंह !"

"हां री हां, जिमियां हमारी हड़प्प कर लीं और चौधरहट्टे के कानों में जूं तक न रेंगी। वे तुम्हारे इमदादी हैं, हमारे नहीं !"

दिन-ढले सांई दित्ती ने पुत्तर के लिए बटेर भून कुन्नी मे डाले। बास्मती उबलने रखी तो खुशबूएँ जमालों के सिर जा चढ़ी।

कोठे से लगी लकड़ी की पौड़ी पर पांव रख शरीकों के वेहड़े में झांका और छिड़ गयी—"खिला री, खिला। तेरा ही पहलौठी का खट्ट कमा के घर नहीं आया। जो भी खट्टने-कमाने जाते हैं, बरस-छमाही परत घरों को आते हैं।"

सांई दित्ती ने अपने जने की ओर देखा। कमाल ने दिवार पर से मंजी उतार बिछायी और कुत्ता दुतकारने के बहाने जमीला को खबरदार किया—"दुरे··· दुरे···"

जमीला मुंहफट्ट न रुकी—"कड़ाहियां चढ़ा रोज-रोज पुलाव बना, पर री, खबरदार रहना पुत्तर से। बाप-सा भोला नहीं है कि तेरे हाथ से शरबत पी सोता ही सो जायेगा।"

दित्ती के हाथ से डोई थिड़ककर नीचे जा गिरी। सहमकर ऊपर बन्ने की ओर देखा। फिर कन्ध के पास जाकर कहा, "खुदातरसी, कुछ तो ख्याल कर। पुत्तर के सामने मां को इतना जलील तो न कर। कभी तो मैंने तेरे साथ कुछ चंगा भी किया होगा।"

सांई दित्ती ने सिर नीचा किये-किये ही बर्त्तन-भाण्डे रखे। कनाली उठा तन्दूर पर रखी और दिल-ही-दिल खुदावन्दा क़रीम के आगे अर्ज़ की—"रब्बा, इस बेलज्जी का ध्यान हटा दे इस बात से। इस बूढ़े वेले कोई तमाशा न खड़ा कर दे।"

मेस की खुरली के पास कमाल ने मंजी बिछायी और बांहें सिर के नीचे रख सीधा लेट गया और आसमान की ओर टिकटिकी लगा दी। कान जैसे लोडेखां के क़दमों का इन्तज़ार करने लगे। आंखों के आगे नजारा चलने लगा—

लड़का द्वारे से चला। अलड़ियों के पास पहुंचा। होठों पर से उलांघ भरी। अब इधर मुड़ा—

कमाल ने आंख झपक के देखा तो कहीं आसमानों से उड़ बशीर का शोला-सा पड़ा और लौडेखां के चौड़े मुहान्दरे से घुल-मिल गया। या अल्लाह, चाल तक वही! इतने बरसों के बाद यह घड़ी भी क्या परती।

सांईं दित्ती ने हंडिया उतार एक कनाली में चावल डाले, दूसरे में रखी रोटियां और भुने हुए बटेर।

"आओ, पुत्तरजी आओ। बैठो!"

फिर कमाल को हांक मारी—"मैंने कहा उठ आओ, खा-पी लेंगा।"

लौडेखां और कमाल ने बुरकी तोड़ी ही थी कि सामने बनेरे पर जमालो आ बैठी, "पुत्तर लौडेखां, तेरे होते इस घर में क्या कमी, पर टिक्का जी, भला हमारा हिस्सा क्यों मार लिया! तुम्हारे शरीक हैं, तुम्हारे दुश्मन-वैरी तो नहीं।"

सांईं दित्ती को पुत्तर के सामने शह मिल गयी—"झूठ कहती हो री जमालो, झूठ कहती हो। हम शरीक नहीं, वैरी हैं।"

लौडेखां ने आंखें उठा ऊपर देखा, सलाम किया जमालो को और हंसकर कहा—"खाला, मामला तो कचहरी तय हो चुका। अब दुनिया-जहान को सुनाने-भड़काने से क्या फ़ायदा।"

जमालो नरम पड़ गयी। आखीर को जवान-जहान लड़का—"पुत्तर, तू सयाना है। आप ही बता, है कोई जट्ट के औलाद-अंश जिन्हें जिमियां प्यारी न हों। मल्ला मेरे कलेजे की न पूछ! मेरी कच्ची दिवारें भी फूंक रही हैं। पुत्तर, इन्साफ कर, आखीर को मैंने भी तुझे झोली में खिलाया-झुलाया है। सौंह है रब्ब रसूल की जो मैंने तुम्हें अपने फज्जू से कम समझा हो।"

लौडेखां ने पहले मां की ओर देखा, फिर चाचा कमाल की ओर। संजीदगी से कहा, "खाला, मैं उसे कभी नहीं भूला। पर ये लड़ाई-झगड़े एक तरफ़ और प्यार-मुहब्बत एक तरफ। इतने बरसों बाद घर आया हूं, तुम भी कुछ गान-मल्हार करो। नीचे उतर आओ और आकर कनाली से हाथ भरो। किन-मिन किया तो आज मैं रोटी नहीं खाता!"

कमाल ने ऊपर देखा और सहजे से आवाज़ दी—"सिकन्दरा, बाहर निकल। क्या हंडिया की खुशबू तुझ तक नहीं पहुंची!"

चावलों और बटेरों की खुशबू पर जमालो का अपना दिल पिघल आया, "देखो मेरे बहनूजे की बातें! खाली समझो तो भी, खालिहाज समझो तो भी। अरे, मैं क्या तुम्हारी कुछ नहीं लगती! कचहरी चढ़ के रिश्ते नहीं बदलते।"

सांईं दित्ती ने सौ-सौ खैरें मनायीं। लाड़ से कहा, "आरी बकबोलिये, उतर आ कोठे से। मियां को साथ ले आ।"

जमालो हँसने लगी—"सुन री, तुमने तो जीता है मुकद्दमा और हम ग़रीब मसकीन ज़ख्मी हुए तुम्हारे हाथों। तुम्हारे घर बैठकर खाते अच्छे लगेंगे!"

लोडेखाँ ने रोबीली आवाज़ दी—"माँ, उठा के कनाली मेंस की खुरली में डाल दे। अगर खाला और चाचा नहीं आते तो मेरे लिए एक बुरकी भी हराम है।"

जमालो के गोरे रंग पर काली दुपट्टी और कानों मे चाँदी के बाले। हँस-हँस दोहरी हुई, फिर सिकन्दरे को आवाज़ दी—"जनेया, पहले शरीक नहीं थे जान, अब शरीक बड़ा एक और जम्म पड़ा। दावत छोड़ने का हुक्म नहीं है सो पहुँचता बन।"

कनाली के आस-पास रौनकें लग गयी। जमालो ने लोडेखाँ को बुरकी भन्नते देखा तो बशीर ज़िन्दा हो आया। वही चौड़ा हाथ, वही रोटी को दोहरा कर चार टुकड़े करने की जल्दी!

दित्ती ने हाथ देखा पुत्तर का, कलेजे भँवर पड़ गया। उठकर घड़े से प्याला भरा और मुँह को लगा लिया।

देखकर लोडेखाँ हँस दिया—"माँ, पहली बुरकी पर ही पानी!"

दित्ती ने बेटे से आँख न मिलायी। दिल के खप्पे में लुकी-छिपी हूक उठकर गले मे आ अटकी।

कमाल को कुछ न सूझा तो जमालो से कहा, "लौंडे को जट्ट जवाँई की सुना जो सास के साथ कनाली में घी-चावल खाने बैठा था।"

जमालो कानों के बाले मटकाने लगी—"लो और सुनो, कनाली पर बैठे मैं आख्यान में क्यों वक़्त गँवाऊँ। न मल्ला, यह नहीं सरता!"

साँई दित्ती ने दिल की चिन्ता-फ़िकर छिपाने को कहा, "माहिया मेरी फूफी की धी है, जमालो किसी से नहीं हारती।"

जमालो चहकने लगी—"लोडेखाँ पुत्तरा, तुम्हें भानजा कहूँ भतीजा, दोनो साक बनते हैं। अब आगे चल। मैं हूँ फ़रियादी तुम्हारे सामने। कचहरी मे पीठ लगा दी हमारी और हमीं को तोहमतें!"

"खाला, दिल से मैल निकाल दे। हुक्म कर मुझे, पूरा न करूँ तो बाप का नहीं!"

सुनकर कमाल और साँई दित्ती ऐसे अलग पड़े ज्यों कनाली के ही दो टुकड़े हो गये हों।

"हुक्म कर खाला!"

जमालो ने दित्ती की ओर देखा जैसे उसका पुत्तर जीत लिया हो और लाड़ से कहा "जिये जागे पुत्तर लोडेखाँ, तेरी लम्बी सलामती। शाह से काग़द कलवा के देख कल, जो हाथ रखनेवाली बात होगी तो टालियाँवाली ज़मीन

छुड़ा दें! तेरे छोटे भाई तेरी आवाज़ पर चलेंगे।"

"हुआ कौल-क़रार खाला।"

कमाल और दित्ती ने लौडेखां को कुछ सैनत करनी चाही, पर वह चाव-चाव खाला से रुझा रहा।

सिकन्दरे ने बोटी मुंह में रखते-रखते एक नज़र कमाल को देखा और आंख चुरा ली। जमालो घोड़े-खोलनी जिनकी कनाली मे खायेगी, उन्ही के पुत्तर को सिखाये-पढ़ायेगी।

जमालो ने जैसे नज़रों को पढ़ लिया। मिट्ठा-मिट्ठा हंसकर कहा, "मल्ला क्यों न हो, बेटा किस बाप का है! पुज्ज के रहमदिली!"

लौडेखां का अब्बू लौडेखां के अपने दिल मे धड़कने लगा। हाथ की रोटी हाथ मे ही रह गयी। मां से पूछा, "भला क्या हुआ था चाचे को। याद करता हूँ तो कुछ भोला-सा पडता है। यही इसी वेहड़े मे अब्बू लेटे है। ऊपर चादर पड़ी है। मां ज़ोर-ज़ोर से करला रही है और आसपास पिण्ड झुक आया है।"

दित्ती के गले में फांस अटक गयी। सांस खींचा तो आंखे भर आयीं।

जमालो की बन आयी—"लौडे पुत्तर, बाकी तो रोना-करलाना ही रह गया था। वह सिद्द जवान तेरा अब्बा। त्रिकालां वेले खेत से लौटा। बस मां तुम्हारी शर्बत बनाकर लायी है। एक ही डीक में पीया और आंखे मूंद ली। हाय अल्लाह, क्या मौत थी। कहर था क़हर।"

लौडेखां कमाल की ओर मुड़ा—"दूर के सिलसिले चाचा। यहां से दो-चार सपारे पढ़कर निकला था। मामू के साथ मां ने नहरों पर भेज दिया। एक-दो बार आया भी तो दो-चार दिन रहकर चला गया। फिर कदम उठा तो कराची जा पहुंचा। अपना घर क्या होता है यह तो जाना ही नही। यह तो कहो जहाज़ियों के दिलों में बन्दरगाहे देख अपने-अपने जिवियां-पिण्ड ज़िन्दा होने लगते हैं। एक जहाज़ी यार मेरा साहीवाल का कहा करता है—लौडेखां, दुनिया-जहान घूम के आ जाओ, अपने कच्चे कोठे नहीं भूलते।

"मां, उठो न! ज़रा बैठी रहो। सुननेवाली बात है! एक बार एक सहाबी ने प्यारे नबी से पूछा—'मैं सबसे ज्यादा किसके साथ भलाई करूं!' हुज़ूर ने फरमाया—'अपनी मां से।' सहाबी ने फिर पूछा—'उसके बाद?' हुज़ूर ने फ़रमाया—'अपनी मां से।' फिर पूछा—'उसके बाद!' हुज़ूर ने फ़रमाया—'अपनी मां से।' तीन बार प्यारे नबी ने यही जवाब दिया। चौथी बार पूछने पर फ़रमाया—'अपने बाप से।'"

मांई दित्ती सामने से बर्तन उठाने लगी तो लौडेखां बोला, "मां, सोचकर आया था, इस बार तुमसे अब्बू की बातें सुनूंगा।"

दित्ती ने मुर्ग़ियों की झलानी की ओर मुंह कर लिया। पट खोला, बन्द किया,

फिर आवाज़ दी—"ठहर पुत्तरा, मैं आयी।"

दित्ती की आवाज़ ने कमाल को थरथरा दिया ! डरी सहमी-कांपती हुई आवाज़।

सिकन्दरा उठ खड़ा हुआ। उबासी लेकर कहा, "बटेरों की दावत तो ऐसी थी कि बन्दा खा के जुम्मे से जुम्मे तक सोया रहे।"

लोडे ने घुटनों पर हाथ लगा रोक लिया—"मेरी सौंह है चाचा, आज ज़रा बैठक जमने दे ! आप्पां कौन रोज़-रोज़ गांव आते हैं।"

दोनों मंजियां आमने-सामने सज गयी। एक पर तीनों जने और दूसरी पर सांई दित्ती और जमालो।

जमालो ने पूछा, "निक्के-न्यानों को रोटी-टुक्कर तो खिला दिया है न !"

"खा-पीके कब के सो गये !"

लोडेखां ने अंधेरे में ही मां का चेहरा लीप दिया—"मां, जिस दिन अब्बू अल्लाह को प्यारे हुए, याद तो कर उस रात घर में किससे टाकरा हुआ था !"

"पुत्तरजी, उस रात तो न कोई आया, न गया। गोद में बिठा तुझे तेरा अब्बा बुरकियां देता रहा।"

सांई दित्ती की आवाज़ लरज गयी—"जेठ हाड़ की रातें डाडी गरम। पर अब्बू तेरा सारी रात तुझे अपने साथ लगाये सोया रहा !"

"फिर क्या हुआ मां !"

दित्ती कुछ बोले कि बोले, जमालो छिड़ गयी—"पुत्रा, रोज़ की तरह मुंह अंधेरे उठा है तेरा अब्बा। रात ज़रूर कोठे पर रौला पड़ा—चोर है, चोर है। लोडेखां, तुम तो छोटे थे, पर दूसरों के कहे-सुने तुम भी यही कहो चोर कि कोठरी में है—"

लोडेखां ने पहले मां की ओर देखा, फिर कमाल चाचा की ओर—"चोर था क्या कोठरी में !"

"न रे, कोठरी में तो तेरी मां सोयी हुई थी !"

लोडेखां उठकर पैरों के भार बैठ गया—"मां, याद तो कर तुझे कोई भोला पडा हो अंधेरे में, खड़का आया हो।"

सांई दित्ती की जबान तालू से लग गयी। सिर हिलाया—"न !"

लोडेखां ने बांहें फैला अंगड़ाई ली। देखकर दो दिल दहल गये ! सामने वसीर आ खड़ा हुआ अपने क़द-काठी के साथ।

लोडेखां ने बांहें फैला हाथों के कड़ाके निकाले, फिर उबासी ले जमालो और सिकन्दर से कहा, "चंगा चाचा। नींद आ गयी लगती है। खाला, कल तुम्हारे हाथ की मुनी खिचड़ी हो जाये !"

"सदके ज़ाऊं, एक बार छोड़ सौ बार। मैं आज रात ही तैयारी शुरू कर

दूंगी। मैंने कहा बहना, लौंग-इलायची तो है न तुम्हारे पास। दो-चार दाने दे छोड़, पल्ले बांध लेती हूं!"

दित्ती ने जमालो की हथेली पर लौंग-इलायची रखी तो उसने दुपट्टे के छोर बांध ली—"चंगा जी, कल खिचड़ी-गोश्त हमारी तरफ़!"

सिकन्दर, जमालो उठ अपने कोठे जा चढ़े।

लोडेखां भैंस की खुरली के पास जा टुक-भर को रुका, फिर बाहर चला गया।

कमाल मंजी पर बैठे-बैठे कभी आंखें मींटे, कभी खोले। छाती में उमड़-घुमड़ ऐसी ज्यों कोई वा-वरोला आना हो।

दित्ती पास आ खड़ी हुई और फुसफुसाकर कहा, "शरीकों ने लड़के को लशा दिया है। दो-चार दिन बाहर लगा आओ!"

कमाल ने हाथ से रोक दिया—"बस बस, कुछ न कह! मेरे ओढ़ने के लिए दोतही ले आ!"

सांईं दित्ती ने अन्दर बांस पर से खेस उठाया। झाड़ा। बांह पर डाले-डाले बाहर आयी कि लोडेखां का गंडासा कमाल की गर्दन के पार हो गया था—

"हाय ओ मेरेया रब्बा! पुत्तरा, यह जुल्म!"

"चंगा है मां, खलासी हो गयी। अब्बू का पुत्तर तो जिन्दा था न हिसाब-किताब चुकाने को! रूह अब्बा की मेरे चार-चौफेरे घूमती रहती थी। मां, मंजी बिछा दे कोठरी में। मैं ज़रा ठोंका लगा लूं। फिर थाना-परचा होना है!"

थानेदार को बैठक में सोता छोड़ शाहजी चुपचाप नीचे उतरे। नवाब को हिदायत दी। ऊपर आ काशीशाह को जगाया—"नवाब जोरावर को घोड़े पर रियासत की हद तक पहुंचा [illegible] येगा। बाकी आप मुंह अंधेरे ज़रा खालसा [illegible] थानेदार की बातों से मालूम होता है [illegible] तरफ से है। दूसरा मामला गज्जनसिंह- [illegible] ड़ावाले जहाज़ से उतर दोनों भाई ज़ख्मी हो गये थे। सरकार को उन्हीं की ढूंढ़ है। आंख लगाये हुए हैं कि एक-न-एक दिन तो पिण्ड को पहुंचेंगे ही! तड़के ज़रा सरदारनियों को चौकस कर आना!"

"चंगा जी!"

खेत-पानी से फ़ारिग हो शाहजी और थानेदार संसारचन्द छांह वेल
बैठे। लस्सी, मट्ठा, मक्खन और बेसनी दुप्पड़ !

थानेदार को स्वाद-आनन्द में देख शाहजी बोले, "संसारचन्दजी, हम
भाई खेती-जमीन से टंके रहे और देखो न आप बड़ी पढ़ाइयाँ करके कहीं
हो ! पुलिस की अहलकारी तो बादशाही हुई न !"

संसारचन्द का तीखे नक़्श-नैनवाला चेहरा अपनी हैसियत हालात सुन
खिल पड़ा। हँसकर कहा, "कुछ वक़्त की बात ही समझो। क़िस्मत
निकली !"

थानेदार को खुश देख शाहजी ने बारी ले ली—"परचे-अखबारों में
निकलता-निकलाता रहता है। कनाडावाले जहाज़ पर सरकार ने ज़रा ज़्याद
सख़्ती-ज़ुल्म ढाह दिया है। मुसाफ़िरों से कहा—जहाज़ से उतरो ! और पु
फ़ौज को इशारा किया—गोलियाँ चलाओ !"

थानेदार संसारचन्द अपने मदरसी यार शाहजी के सामने खुद ही सर
बन गये—"इन ग़दरियों को सीधा करना ज़रूरी था। आपको मालूम नहीं
कनाडावाले ग़दरियों ने बड़े पैमाने पर सरकार के खिलाफ़ साज़िश की कि हु
का तख़्ता पलट देंगे। एक दिन मुकर्रर कर लिया कि सूबा पंजाब की हु
अपने हाथ में ले लेंगे।"

शाहजी ने सिर हिलाया—"ली तो नहीं न !"

"नहीं ली, पर अपनी तरफ़ से कुछ कमी भी नहीं की। कनाडे में इन
राहदारियाँ खत्म हुईं, उधर जहाज़ में चढ़ कलकत्ता आ पहुँचे !"

"और कर भी क्या सकते थे ! मुट्ठी-भर आदमी, संसारचन्दजी, क्या हुकू
को हिला सकते हैं !"

"अन्दर-ही-अन्दर सरकार को खतरा तो पैदा हो गया न !"

"अपनी दबदबेवाली सरकार को हर्ज़ा पहुँचा सकने का दम रखना कोई छो
सी बात तो नहीं।"

"बात यह है कि सरकार सौ-सैकड़ा या हज़ार-लाख बन्दों से नहीं डरती
खतरा खाती है तो बग़ावत के बीज से !"

शाहजी हँसे—'बीज तो, बादशाहो, उगते-उगते ही उगेगा !"

मदरसे में हमेशा अपने से आगे रहनेवाले शाह को पछाड़ने में संसारचन्द क
मज़ा आया—"झाड़-झंखाड़ नाकस होगा तो ज़रूर उखाड़ के फेंक दिया जायेगा
इधर ग़दर पार्टी, उधर इन्क़लाबी बंगाली—इन दोनों का बीज नष्ट करके रहेग
सरकार !"

खा-पीकर कुल्ला-साफ़ा सिर पर सजाया और थानेदार साहिब ने अपने
वजूद से कचहरी लगा ली। पिण्ड इकट्ठा हो गया ! पहली हाँक गण्डासिंह क

पड़ गयी—"सरदार साहिब, आपका पुत्र जोरावरसिंह फ़ौज से दाग़ी होकर निकला है। भला, आजकल किस काम-धन्धे मे !"

"जनाव, जट्ट के लिए तो या फौज या खेत ! किसान खेत छोडे तो फ़ौज और फ़ौज छोड़े तो खेत !"

"ज़रा जोरावर को बुला भेजो घर से !"

गण्डासिंह बडे खचचरपन से मर्जी पर डट गये। सिर हिलाया—"न ठानेदारजी, आपका काम बनता नही दिखता। बात यह है कि जोरावर इन दिनों अपने ननिहाल गया हुआ है नहरो पर !"

संसारचन्द की नाक और कुल्ला एक ही सीध में हो गये—"ज़ोरावर के जोड़ीदार पकड़े जा चुके है, छिपाने की कोशिश बेकार है !"

"ठानेदारजी, घर-पिण्ड आपके आगे हाज़र है, वेशक देखो ! तलाशी लो ! ज़ोरावर खैरों से जवान-जहान लड़का है, कोई कुच्छड़ खेलनेवाला वावा गुड्डा तो नही कि किसी मंजी के हेठ या किसी घड़े-भड़ोले मे लुका-छिपा दिया जाये !"

कर्मइलाहीजी ने टोका—"गण्डासिंह, आदत न गयी तुम्हारी मशकरी-मज़ाक करने की। थानेदारजी, ख्याल न करना खालसा की बातों का। स्वभाव से ही हँसोड़ है। फ़ौजी टब्बर ठहरा। वर्दी मे हुए तो सरकारो के लिए लड़ छोड़ा, खेत पर हुए तो काम-धन्धे से फारिग हो हँस-हँसा छोड़ा।"

थानेदार की त्योड़ियाँ चढ़ गयी—"त्रिकालां तक आ जायेगा !"

"न जी। अब तक मामे के साथ तो ख्योड़ा जा पहुँचा होगा।"

थानेदार ने नाक फुलाया तो मूँछें चौड़ी होकर पसर गयी—"क्यों, वहाँ क्या नमक का ठेका लेने का इरादा है !"

"न जी। बादशाहो, वह बड़ा लूण-हरामी है। कमाकर चार पैसे बाप के हाथ पर रख सके, ऐसा कम्म उसने कभी नहीं करना !"

शाहजी ने थानेदार की खरमस्ती कम करने को कहा, "आ जायेगा थानेदारजी, आपके अगले दौरे तक तो माजूद होगा ही।"

थानेदार बड़ी दिलचस्पी से गण्डासिंह को घूरते रहे, फिर सिर हिलाकर कहा, "जोरावर को वापिस बुला भेजो। सरकारी पूछताछ गोगा-गोगी का खेल नही।"

"क्या कहूँ थानेदारजी, फौजी जवान की अक़ल-बुद्ध मुझसे पूछो। खुद मुख्तियारी और मग़रूरी दोनों ही।"

चौधरी फतेहअली ने सयानफ बरती—"जनाबे-आला, इस पिण्ड के तो जवान ज्यादातर फ़ौज में ही। बड़े चावों से भरती हुए हैं ! अपने काका जोरावर की क्या खोज-बीन है ! हमारे जाने तो आजकल उसे 'फ़रलो' लगी हुई। तभी छुट्टी पर है !"

थानेदार संसारचन्द ने सारे पिण्ड को एक बार ही चित करना ज़रूरी

समझा—"चौधरीजी, अपने लड़के-वालों पर ज़रा निगरानी रखिए। मोगा खज़ाना लूटनेवालों का जोड़ीदार आपके पिण्ड का लड़का हो, यह गाँव के हक़ में अच्छा नहीं!"

शाहजी ने तह परतायी—"थानेदार साहिब, कहीं कुछ गड़बड़ मालूम देती है। आप मालिक हैं, पर कहाँ मोगा खज़ाना लूटनेवाले और कहाँ तीन पीढ़ियों का फ़ौजी टब्बर! कहाँ मोगा फ़िरोज़पुर, कहाँ यह पिण्ड!"

थानेदार गण्डासिंह पर नज़र गड़ाये रहे—"जो अपने कन्धे की पट्टी उतार कप्तान के आगे फेंक दे, उसका इलाज सरकार के पास है। बाक़ी मोगावाला जुर्म—"

गण्डासिंह ने पगड़ी उठा ली—"ठानेदारजी, जब लूटा गया था मोगा खज़ाना, उस वक़्त ज़ोरावर अपनी पलटन में तैनात था। बेशक़ उसकी पलटन से सही करो!"

थानेदार संसारचन्द की आँख बँध गयी। भृकुटी तन गयी। देखनेवालों ने जान लिया कि भब्भड़ मचने को है। मचेगा!

शाहजी ने चुपचाप ही हाथ से इशारा किया और बिना किसी गल्ल-बात के मंजियाँ खाली हो गयीं।

शाहजी ने लस्सी-पानी के लिए आवाज़ दे दी। ठानेदार कुछ सोचते रहे, फिर हकूमती अदा से कहा, "जिस पिण्ड में दो-चार घर ग़दरियों के हों उसे सरकार शक़ से देखती है। गज्जनसिंह-दर्शनसिंह दोनों भाई गोली से ज़ख्मी हो कितनी देर पुलिस को चकमा दे सकेंगे! शाह साहिब, दोनों की घरवालियों में कुछ उगलवाया जा सकता है क्या!"

शाहजी ने हाथ से इशारा किया—"जनाब, यह फ़ौजी पिण्ड है। इस वक़्त हर घर का बच्चा पलटन में। आपका सरदारनियों से बात करना कुछ अच्छा असर न डालेगा।"

"आप सरकार के खैर-ख्वाह हैं। इन सब ग़दरियों-झगड़ियों पर आँख रखें! मेरी खबर मुताबिक़ ज़ोरावरसिंह अपने पिण्ड में माजूद है!"

शाहजी के ओठों पर अजीब-अनोखी हँसी उभरी। सिर हिलाकर कहा, "अर्ज़ यह है कि पिण्ड शहर नहीं होता। एक पत्ता भी खड़क जाये तो वह भी सबकी जानकारी में। सरकार सात खून माफ़ कर दे पर ग़दरियों की अफ़वाह पर भी पुलिस-चौकी तैनात कर दे!"

थानेदार उठकर जाने को तैयार हुए! नवाब ने घोड़ा खोल उनका बाहर खड़ा कर दिया। शाहजी ने हाथ मिलाया तो थानेदार दोस्ताना निभाने को बोले, "गण्डासिंह और गज्जनसिंह-दर्शनसिंह के टब्बर पर आँख रखियेगा। सरकार आपसे इतनी उम्मीद ज़रूर रखती है!"

छोटेशाह थानेदार संसारचन्द को नौशहरेवाली राह पर डालकर हवेली पहुंचे तो मजलिस पूरी-की-पूरी जमी थी।

चौधरी फतेहअली बडे फिक्रमन्द—"शाह साहिब, जो भी कहो, यह शुरुआत चंगी नही। हुआ कोई डाके-क़त्ल मे ठानेदार-दरोगा आन पहुंचा, पर इन्क़लाबी-गदरी मामलों की खोज-बीन आज तक तो अपने पिण्ड मे की नहीं गयी!"

मौलादादजी ने सिर हिलाया—"देखा जाये तो इधर मुंह करके किसी को हांक मारनी कोई अच्छे आसार नही।"

जहांदादजी बोले, "जोरावरसिंह का फ़ौज से अलग होना तो हकीकत है ही। राक़-शुवह मे ही—"

"वादशाहो, इसलिए नही कहता कि लड़के का वाप हूं, पर सोचनेवाली बात यह है कि मोगा खजाना कव तो लूटा गया और थानेदार की चोह-म-चोह अब शुरू हुई है।"

मीरांवक्श बोले, "शाह साहिब, याद तो कुछ पड़ता है कि आपने परचे से पढ़कर यह खवर सुनायी थी।"

"गालिवन यह पिण्ड मिश्रीवाल वाला क़िस्सा है। पांच-छः गदरियों ने मिलकर सरकारी खज़ाना लूटने की कोशिश की थी।"

मुंशी इलमदीन चमक उठे—"गदरियों ने मोगा अड्डे से तीन टांगे किये और बैठकर मिश्रीवाल पिण्ड की ओर बढ चले। पिण्ड मे बशारत अली, ज्वालासिंह जैलदार और कुछ दूसरे लोग पुलिस कप्तान का इन्तज़ार कर रहे थे। उसका दौरा लगा हुआ था उस दिन! गदरियों के टांगे पहुंचे तो वशारत अली ने रुकने को आवाज दी। इधर पहला टांगा रुका, उधर आगे बैठे जगतसिंह ने बशारत अली को गोली मार दी।

"गोलियां चलती देख जैलदार और दूसरे लोग भज्ज पड़े। जगतसिंह ने उठाकर जैलदार को भी गोली मार दी। गिनकर छ. बहादुरों की टोली थी—जगतसिंह, बक्शीशसिंह, लालसिंह, घ्यानसिंह, जयवारेसिंह और काशीराम जोशी।

"पिण्डवालों ने आवाज़ सुनी तो समझा डाकू हैं। बस इकट्ठे होकर घेरा डाल लिया। सुनने में आता है जगतसिंह पकड़ा गया, वाकी अब तक फरार हैं।"

मौलादादजी ने एक लम्बी नजर शाहजी तक पहुंचायी और सिर हिलाकर कहा, "शाह साहिब, पुलिस ने मोगा फिरोजपुर छोड़कर मुंह इधर कर लिया है, कुछ तो वजह होगी।"

गण्डासिंह हंसने लगे—"मुशीजी, इवारत तो आपको मूजवानी याद है। सवाल अब यह है कि गये तो मुजरिम कहां गये!"

मजलिस फीकी पड़ गयी।

मुंशी इल्मदीन भड़क उठे—"खालसाजी, न मैं थानेदार, न सिपाही। जो परचे में पढ़ा वह सुना दिया।"

ताया तुर्फैलसिंह ऊँघ रहे थे। साक्खयात अखबार बनके उठ खड़े हुए—"बादशाहो, पिछली बार बंगाले से आते हुए लाहौर रुका तो जिधर सुनो चर्चा गदरवालों की। दिवारों पर गदरियों ने इश्तहार लगाये हुए—

तुम्हारा नाम क्या—ग़दर !
तुम्हारा काम क्या—गदर !
तुम्हारा पेशा क्या—गदर !
तुम्हारा ईमान क्या—गदर !"

मुहम्मदीन बोले, "बादशाहो, यह तो बड़ा खरुदी काम हुआ। इस वक़्त सरकार अपनी जंग में रुकी हुई है। अपनी फ़ौजें ज़ोरों-शोरों से लड़ रही हैं। ऐसे वक़्त यह नारा इन्क़लाबियों का ठीक नहीं।"

"ग़दरवालों का नारा यह कनाडा से ही चला है!"

"बादशाहो, सोचनेवाली बात है। हकूमत दिल्ली में बैठी हो और लड़ाई-बग़ावत छेड़ लो आप कनाडा से तो बात कहाँ तक बन आयेगी।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "बात यह है बादशाहो, कि बाहरी मुल्कों में हिन्दुस्तानी रियाया की हुण्डी बोली ज़रा नीवी पड़ती है।"

दीनमुहम्मद ने सिर हिलाया—"हुआ जो अँग्रेज़ के हेठ मुल्क अपना। बेशक हो, पर बन्दे अपनों से सहन नहीं होना। कहीं कुछ खराबा न कर बैठें।"

शाहजी की आँखों के आगे अखबार की सुर्खी घूम गयी—"यहाँ के रहनेवालों को अफ़्रीका में घटिया मनुक्ख समझा जाता है। बरस-छमाही रुक्का-पत्री अपने बहनोई साहिब की आती रहती है न!"

कर्मइलाहीजी ने पूछा, "कौन, अपने सावनमल जी!"

शाहजी ने सिर हिलाया—"हाँ। कोटला रब्बली खाँ से पाँच-सात आदमी इकट्ठे जहाज़ चढ़े थे!"

"पैसा-धेला तो चंगा पर सलूक हिन्दोस्तानियों से मुसल्लियोंवाला ही समझो। टोका-टाकी। आप यहाँ नज़र न आओ। आप इस मुहल्ले में न जाओ। यहाँ न देखे जाओ! रात को सड़क पर न चलो।"

"बादशाहो, यह तो बड़ी ज़लालत हुई न बाहर जाकर!"

मौलादादजी तपने लगे—"मतलब यह कि बन्दा गया मेहनत करने, कमाने और आगे से यह सलूक। मुल्कों की संभाली भरापरी फिर कैसी!"

"छापे में भी खबरें तो आती रहती हैं कि हालात अफ़्रीका में चंगे नहीं। एक गुजराती वकील मोहनदास कर्मचन्द गांधी अफ़्रीका पहुँचे हुए हैं। बन्दा ज़िद्दी

देता है ! बैठ जाये पथल्ला मार के कि सरकार करती रहे जुल्म-ज्यादतियाँ,
ने अन्न-पानी मुंह नही लगाना !”

“शाह साहिब, भला यह क्या मस्त-मलगी हुई !”

“वकील हुआ—उसको अपनी जिरह। बेइन्साफ़ी आपकी, पर सज़ा मैं अपने
दूंगा।”

चौधरी फ़तेहअली सिर हिलाने लगे तो हिलाते ही चले गये—“बादशाहो,
ह भी कोई नयी ही तर्ज़-तबह है !”

कर्मइलाहीजी को खांसी छिड गयी—“शाहजी, यह जिदबाज़ी घरों मे भी
चलती है न अक्सर ! छाप छल्ला बनवाना हो तो सवानी अपना रोटी-पानी बन्द
कर दे। यही कि घड़वा के दो, नही तो भूखी ही मरूँगी !”

नजीबा हँसने लगा—“बादशाहो, बात तो कुत्ता फँसने की है, जिसका भी
फँस जाये। जेकर सरकार का फँस गया कुत्ता तो गुजराती वकील की सुनवायी
पक्की !”

मीरांबख्श बोले, “शाहजी, भला कौन-से टब्बर का है यह वकील ! गुजरात
जेहलम मे भी है तो सही गांधियो के घर-टब्बर !”

शाहजी ने सिर हिलाया—“नही मीरांबख्शजी, यह बन्दा अपने गुजरात का
नही। एक दूसरा भी बम्बईवाला गुजरात है।”

मुंशी इल्मदीन ने सिर हिलाया—“जी, बोहरो और खोजों का वतन पड़ता
है उधर। वही के होंगे वकील साहिब !”

गण्डासिंह शुरू हुए—“कनाडावालों का कहना है कि अगर सरकार अंग्रेज़ी
एक है सारी रियाया के लिए तो मुल्क कनाडा में हमारे लिए दुर्जगी कैसी। वहाँ
पन्द्रह-बीस हज़ार पहुँचा है अपना पंजाबी। आगे खैरों से टब्बर होंगे ! बढ़ेगी
गिनती प्रजा की !”

शाहजी बोले, “जो कुछ हालात पता लगते है इसमे एक वजह खारबाज़ी भी
है !”

कर्मइलाहीजी ने हुक्का छोड़ पूछा, “वह कैसे बादशाहो !”

“मेहनत करने में पंजाबी बन्दा चीनी-जापानियो से ज़्यादा मेहनती। दूसरे
ज़रा माड़े। बस खुड़बा-खुड़बी हो गयी।”

“पर जी, सरकार तो इन्साफ़ करे !”

“सरकार ने राहदारियों बारे क़ानून लागू कर दिया। दो सौ पाउन्ड तो हो
गये जाने के और जेकर साथ जा रही हो घरवाली तो दो सौ और गिनो ! बड़ी
सख्ती हुई न ! इस मारे कई हज़ार बन्दे छोड़ आये हैं मुल्क कनाडा।”

काशीशाह बोले, “रेल पड़ने लगी कनाडे तो बन्दा अपना तो काफ़ी गया था
न ! पार के साल में गुजरांवाला गया खरीदारी करने तो दुकान पर सरदार

हरवंससिंह से टाकरा हो गया। गल्ल-बात होती रही।

"कहने लगे कि पहले डाक्टरी होती थी अपने बन्दों की हांगकाग। हुक्म सरकारी यह कि उन्नीस-इक्कीस देखो तो पास न करो।"

"अपने लोकों ने कहा—बेशक ठोक-बजा के देखो। अपने बन्दों की मशीन बुरी नहीं।

"यहां ज़रा ढिलाई हुई तो वहां पहुँच के लोकों की और बुरी हुई।"

गण्डासिंह खबरें अब तक क्यों चुप थे। गुरुदित्तसिंह से कहा, "आपजी के साले का टब्बर पहुँचा हुआ लम्बिया, भला बोलते क्यों नहीं।"

छोटे शाह ने सही किया—"लम्बिया नहीं, मुल्क का नाम कोलम्बिया है।"

"चलो वही सही। हुआ यह शाहजी, कि मेरा साला और सालेहाज दोनों तैयार हुए जाने को। किसी ने इत्तफाक से मेल करवा दिया भाई भागसिंह और भाई बलवन्तसिंह से। दोनों कनाडा गुरुद्वारे के ग्रन्थी और प्रधान थे। साथ थी उनकी सरदारनियां। मेरा साला और सालेहाज भी उनके साथ लग गये।"

फ़तेहअलीजी ने सिर हिलाया—"होता ही है न, देस-परदेस का मामला! साथ-संग हो तो चंगा।"

"जी, पहले तो हांगकांग कई टण्टे पड़े। कर-करा के पहुँचे कनाडा तो देखो गोराशाही क्या करती है। भाई भागसिंह और बलवन्तसिंह को तो जहाज से उतरने दिया और उनकी घरवालियों को क़ैद कर लिया!"

"गुरुदित्तसिंह, तुम्हारे साले-सालेहाज का क्या हुआ!"

"मियेखां, वही जो दूसरों का हुआ। इन दोनों को हिरासत में ले लिया गया।"

कक्कूखां ने पूछा, "बादशाहो, यह पता लगाना था कि अंग्रेज़ी हवालातें कैसी हैं!"

फ़कीरा हँसने लगा—"जो हो ही हवालात तो उसकी क्या चंगिआई और क्या बुराई!"

शाहजी समझ गये। सिर हिलाया—"नहीं फकीरेया, यह बात ऐसी नहीं! देखो, अपने मुल्क की सारी जेल-हवालातों से कालेपानी की जेल सबसे नाकस और क़ैदियों के लिए बड़ी डाडी!"

मौलादादजी खुश हुए—"क्यों न हो कक्कूखां, आखिर तो भाई का दिल है न! तार जा बजी वज़ीरे के पास! वैसे बात करता हूँ जेल गुजरात की भी बड़ी डाडी मशहूर है।"

कृपाराम ने सोच-सोच के बात निकाली—"खालसाजी, जेकर कनाडा में बन गया गुरुद्वारा तो भू-ज़मीन तो आख़ीर सरकार ने ही दी होगी न! यह तो बात बुरी नहीं। चंगी ही है।"

चौधरी फ़तेहअली बोले, "सुनने में आता है कि शहर लन्दन में भी बड़े रौब-

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

[illegible]

काशीशाह कुछ कहने ही जाते थे कि ताया तुफ़ैलसिंह अपनी जानकारी और बंगाले का डंका बजाने लगे—"कुछ भी कहो, इन्कलाबी बन्दे बंगाल के बड़े बहादुर। इनके नाम-काम से अँग्रेज की माँ मरती है। वहाँ घर-घर में इन्क़लाब बिरादरी। सुबह-सवेरे उठो और दिवारों पर इश्तहार लगे हुए हैं—मर जायेंगे या मार डालेंगे !

"कभी किसी इन्कलाबी के सिर पर इनाम की पेशकश, कभी किसी का हुलिया। इनाम पाँच हजार। मजबूत काठी। रंग गन्धमी। न ज्यादा गोरा, न काला। बन्दा बंगाली लगाता है। कपड़े दूसरे पहन ले तो पंजाबी भी लग सकता है। हाथ की तीसरी उँगली पर जख्म का निशान है।"

[illegible]

वालों [illegible]

चौक [illegible]

[illegible]

थी। [illegible] में ही तैनात हैं न ! यह तो नहीं कि किसी राजे-महाराजे की फौज है। कुछ तो दरगुज़र हमें भी करना चाहिए न।"

कक्कूख़ाँ ने हामी भरी—"बादशाहो, बात तो कुछ दिल-मन लगती है।"

गण्डासिंह चिढ़ गये—"क्यों जी, हम दिल के इतने पीले हो गये कि मार इन्कलाबिये फाँसियों के तख्तों पर झूलें और हम अपने ज्ञान-चक्खु बन्द कर सरकार का गुनगाण करें ! बादशाहो, यह नहीं होना—"

दीन मुहम्मद अभी आकर ही बैठे थे मंजी पर—"रियाया उठ-उठ सरकारी बन्दों पर गोलियाँ-बम चलाने लगे—यह भी तो वाजिब नहीं ! अपनी गुजरात वाली फूफी के जवाँई मुहम्मद मूसा इसी खेल में बुरी तरह ज़ख्मी हो गये !"

शाहजी ने पूछना जरूरी समझा, "दीनमुहम्मद, यह क्या मामला था भला !"

"शाह साहिब, हुआ यह कि तीन सरदार लाहौर अनारकली से टाँगे में गुजर रहे थे। दरोगा मुहम्मद मूसा ने सोचा, हो-न-हो इनके पास तलवारें हैं। शक-ही-शक़ में हाथ दे टाँगा रोक लिया।

"टाँगा रुकते ही सज्जनसिंह ने पुलिस पर गोली चला दी। मुहम्मद मूसा के साथ खड़ा था सिपाही मासूमसिंह। वहीं ढेर हो गया और मूसाख़ाँ दरोग़ा ज़ख्मी होकर हस्पताल पड़ा रहा। यह खबर छापे में जरूर आयी होगी !"

काशीशाह बोले, "हाँ, ख़बर में था कि सज्जनसिंह कचहरी में पेश हुआ तो उसने डंके की चोट कहा, 'जो भी कोई मेरी आँखों के आगे हिन्दोस्तान के ख़िलाफ़ काम करेगा, मैं उसे छोड़ता नहीं। उसकी खलासी मेरे हाथों होकर ही रहेगी।'

"नागल-कलाँ हुशियारपुर का जैलदार चन्दनसिंह ख़ुफ़िया तौर पर इन्कला-

वियों की खबरें सरकारे पहुंचाया करे। लालच यही कि खिल्लत-खिताब मिल जायेगा कुछ सरकार से तो चंगा ही है।

"इधर इन्कलाबी मजलिस ने फ़ैसला किया कि चन्दनसिंह का काम तमाम कर दिया जाये! काम यह सौंपा गया वन्तासिंह और बूटासिंह को।"

फतेहअलीजी पूछ बैठे—"देखा नहीं अपना बूटासिंह! गया तो था न भरती में!"

गुरुदित्तसिंह बोले, 'बराबर बादशाहो। सुनने में ऐसा आया है कि कम्पनी अभी उसकी कानपुर या कलकत्ता पड़ी है। हुक्म होगा तो जहाज़ चढ़ जायेंगे।"

मुंशी इलमदीन ने सचमुच में ही नयी सुना दी—"यह सुनो बादशाहो, ज़रा पुरानी बात है। द्वाबे के रहनेवाले एक बूटासिंह ने बैठे-बैठे फ़ैसला कर लिया कि नहीं मानती हकूमत किसी की! और लाहोर-अमृतसर के रास्ते पर अपनी चुंगी-चौकी जमा-सजा ली। सरकारों की तरह दर मुकर्रर कर ली।

'गड्डा छकडा लांघ के जाये तो दो आने। घोडा दो आने। गधा एक पैसा। बाक़ी जो भी निकल जाये, सब दो पैसे।"

बैठक को वडा मजा आया—'बादशाहो, ख्याल तो वाह-वाह है। न चोरी-चकारी, न ठगमारी। अपने चौकी-चुंगी पर बैठ गये और मेहनत की खट्टी कमाई।"

"खबर पहुंची सूबेदार जकरिया खाँ को। उसने चुंगी पर कब्ज़ा करने को सिपाही भेज दिये। बूटासिंह तड गया। कहे, ज़िन्दा-जी सलामी देनी नहीं, लेनी है! ज़करिया ने टुकड़ी भेज दी सवारों की! बूटासिंह ने पैसा-धेला गरीबों में बाँट आप हथियार उठा लिया और लड़ते-लड़ते खेत हो गया!"

"बादशाहो, बन्दा मिजाज से हो बहादुर तो भला बहादुरी भी कहीं छिपी-ढकी रह सकती है!"

कृपाराम कहीं से कुछ और निकाल लाये—"सावनमल के पास तो थी दिवानी मुल्तान की और जालन्धर द्वाब की मिश्रा रूपलाल के पास! मिश्रा रूपलाल मामला लगाये ज़रा हल्का और जिमियोंवाले वडे खुश। चस्का उसको यह कि पूरी-की-पूरी ज़नाना रियाया को वह सीधा अपने हेठ समझे। सुनो मिश्रा रूपलाल क़ाबू कैसे आया।

"एक शाम मिश्राजी एक खूबसूरत खत्राणी के पास जा पहुँचे। खत्राणी का घरवाला गया हुआ था दूसरे शहर, सो दिवानजी अपने बेफ़िक्री से बैठे। इत्तफ़ाक, हाट-व्यापारी खत्री जल्दी पलट आया। मिश्रा को देखा अपने पसार में तो उठा के मारा तेसा खब्बे मोडे पर। दिवान साहिब ज़ख्मी हो गये। ठीक हुए तो जिधर से निकलें आवाज़ें पड़ें—दिवान साहिब, बड़ा ज़ुल्म हुआ। सूझी भी तो उस भड़ुवे खत्री को यह क्या सूझी!"

कक्कूखाँ, नजीबा, फ़कीरा हँस-हँस दोहरे हुए।

मौलादादजी ने दिल-ही-दिल खूब मज़ा लिया, फिर एक लम्बा सूटा मारा और दाना आवाज़ में कहा, "हो गयी न ज़रा बेइहतियाती ! वह पड़ी खैर से निकल जाती तो निकल ही जाती।"

काशीशाह ने मज़मून बदल दिया—"कनक कमेटी लन्दन में बैठी-बैठी हर फसल के भाव मुकर्रर करती रहती है। पहले कनक की दर चार रुपये मानी। फिर भाव चढ़ा साढ़े पाँच। छः तक भी हो गया। मोहर सोलह से हो गयी बीस। हां, कपाह और रुई सस्ती ज़रूर हो गयी है।"

मियेखां बोले, "चलो चंगा है—लोगों की रज़ाइयां बन जायेंगी।"

फ़तेहअलीजी ने कहा, "बादशाहो, माड़ी बात यह है कि सिक्के की जगह सरकार ने रुपये की पर्ची निकाल दी है। निरा कागज़, और क्या !"

"चौधरीजी, बात तो बीच में से इतनी ही है कि सरकार चाहे तो मिट्टी को सोना और सोने को मिट्टी बना दे।"

गण्डासिंह ने पूरी मंजियों को हँसा-हँसा मारा—"बादशाहो, आजकल तो सरकार अपनी गुलटरिया कुत्ता बनी हुई है।"

जहांदादजी बड़ा हँसे। कहा, "जिनकी आंखों का रंग जड़-मुड़ से ही लाल हो वे कैसे न गुलटरिया नज़र आयें !"

काशीशाह ने परचा निकाल ऊंचा-ऊंचा पढ़ना शुरू कर दिया, "अब्दुल्लाखान चक नम्बर १२, दलीपसिंह चक नम्बर ११६, दिलबागसिंह चक नम्बर ६६, हाशिम अली चक नम्बर १२८, हयात मुहम्मद चक नम्बर ३०८, नौरंगसिंह ठाकुर चक नम्बर २४७, सुन्दरसिंह हवलदार चक नम्बर ५०१। बादशाहो, यह लायलपुर इलाके की इनामी फेहरिस्त है।"

गण्डासिंह चौकस हो पैरों के भार बैठे, फिर मंजी ढीली देख पथल्ला मार लिया और बोले, "परचे बहुतेरे पढ़ छोड़े होंगे आपने भी। एक बात याद करो। कोई खबर नज़र से गुज़री हो ऐसी जिसमें अपने चार फ़ौजी सिपाहियों का भी जिक्र हो। नाम बताता हूं—लैन्स दफादार ईश्वरसिंह नम्बर ५७२, सवार हज़ारासिंह नम्बर ३१०, सिपाही फूलासिंह नम्बर २६७०, क्वाटर मास्टर बीबासिंह नम्बर २८४८।"

जहांदादखां जी ने कान खड़े किये। आंखों से एक लम्बी तक्क गण्डासिंह के चेहरे पर जमाये रहे, फिर गला खंखार कर कहा, "मैंने कहा खालसाजी, किस रजमन्ट के नाम ले रहे हो खैरों से ! क्या काका ज़ोरावर की !"

'न। यह अपने मुल्क की शहीदी रजमन्ट है। इन बहादुरों को बग़ावत करने के लिए सज़ाए-मौत दी गयी मेरठ छावनी में ! कोर्ट मारशल। गोली सीधी छाती पर।"

मजलिस सहम के कुछ खामोश-सी हो गयी तो गण्डासिंह ने हँसकर कहा,

"सदक़े इन बहादुरियों पर। मौतों के जयकारे। फ़ौजी बन्दे अपने मुल्क की ख़ातिर क़ुर्बान हो गये !"

ताया तुफ़ैलसिंह ने शाहजी का गम्भीर चेहरा देखा तो समझाकर कहा, "गण्डासिंह, कलजुग बरता हुआ है। सत्त-कुसत्त को इकट्ठा न कर। नुकसान होने का अन्देशा है ! ज़रा सम्भल कर !"

"खुड्ड से निकलकर साँप चढ़ जाये दिल पर तो बिना क़त्ल खलासी मुश्किल है।

"यही समझो बादशाहो, कि लौडेखाँ ने अपने हाथों से बस माँ बचा ली और कमाल को कर दिया पार !

"कमाल की उसी के हाथो आयी हुई थी। नही तो इतने बरसों बाद बाप का बदला लेने आ पहुंचता पिण्ड !"

"बात यह है कि हिसाब-किताब यह मुकने के बिना नहीं रहता !"

"सुना हुआ है न माई देस्साँवाला किस्सा ! अपने हाथों महासिंह ने मौत के घाट उतार दिया।"

कर्मइलाहीजी चौकन्ने हो बैठे—"शाहजी, ज़रा बात ताज़ी कर डालो।"

"हुआ यह कि जलालपुर जट्टाँ का एक खुदादादखाँ महासिंह के रसाले मे जा दाखिल हुआ। खुदादाद बड़ा दरशनी जवान। चढ़ गया सरदार साहिब की आँखों मे। कुछ दिन गैरहाज़िर रहा। वापिस आया तो महासिंह ने वजह पूछी। बस नशे की झोंक में सारी बात खोल दी—'सिंहजी, एक काम मेरे ज़िम्मे बड़ा ज़रूरी लगा हुआ था। होता-होता यह बाजुओं की राहों मेरे सिर को जा चढ़ा। रोग-मलामत यहाँ तक पहुंचा कि इससे सुरखरू होना ज़रूरी हो गया। बस माँ को दूसरी दरगाहे पहुंचाना था—पहुंचा आया हूँ।'

"महासिंह ने चौकन्ने हो पूछा, 'ज़रूरी था क्या ?'

" 'था। सिंह साहिब, नही तो कौन नालायक़ है जो दूध पीकर माँ का, उसे क़त्ल करने का सोचे !' "

"बस बादशाहो, महासिंह को लग गयी। रात-भर नशा करता रहा और अगले दिन माई देस्साँ का काम तमाम।"

फ़तेहअलीजी ने हुक्के की नड़ी मुँह से निकाल ली—"कहते हैं न, इश्क़ और

अक़्ल में ज़िद है। जो कुछ अक़्ल में न आवे वह काफिर इश्क कर दिखाये।"

"ओ जी, बड़ी उम्र इश्क़ काहे का। यह तो टाँक लो या टाँग दो वाली बात हुई!"

"जो भी कहो, बात कुछ चंगी तो नहीं न!"

गुरुदित्तसिंह हस्वेमामूल छिड़ गये—"कक्कूखाँ, इसे चंगी कौन कहता है! धी-बहन की कभी गाढ़ी-न्यारी हो भी जाये पर जेकर पुत्रों की मायें उठ-उठ फँसने लगें तो इलाज फिर पुत्रों के पास वही जो महासिंह ने किया या खुदादाद ने।"

शाहजी ने एक और आतिशी छोड़ दी—"लो, और सुनो। जो बाप ने किया वही महासिंह के बेटे रणजीतसिंह को करना पड़ गया।"

"यह कुफ्र क्यों बरता शाह साहिब!"

"रब्ब जाने, हकूमत के लिए रास्ता साफ़ करने का बहाना था या महाराज की माँ की कुछ ऊँच-नीच थी दिवान लखपत राय से। रणजीतसिंह ने इकट्ठे ही ठिकाने लगा दिया।"

छोटे शाह ने जोखिमवाली टीप बदल दी—"बादशाहो, महाराजा ने जब खालसा फ़ौजें जम्मू भेजी तो यही अपने जफरवाल के रास्ते चढाई हुई। इधर लश्कर जम्मू के करीब पहुँचा, उधर जम्मू महाराज त्रिकोटा देवी जा पहुँचे। खालसा ने मैदान साफ देखा तो फरमान निकाल दिया अपनी फ़ौजों के नाम कि शहर जम्मू की लूट-मार न की जाये। दूसरे वहाँ के सर्राफे को हुक्म दिया कि हाट-बाज़ार खोल दिये जायें।"

"बादशाहो, इससे तो सही यह हुआ कि हकूमत सिर्फ़ अँग्रेज को ही नहीं आती!"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"बराबर बादशाहो। कोई भी उठ खड़ा हो मुल्क फ़तेह करने तो सयानफ़ों की क्या कमी! उसके चौतर्फ़ा अक़्लमन्दियाँ और दानिशमन्दियाँ!"

मौलादादजी को यह बात बड़ी मन लगी—"मुद्दा तो यह निकला शाहजी, कि घोड़े पर सवार हो कोई भी बहादुर क़ौम निकल पड़े मुल्क़ फतेह करने तो उन्हें न तो कोई कोह रोके, न रोकें दरिया।"

जहाँदादखाँ के माथे पर फ़ौज का रुआब झलकने लगा—"तातार, तुर्क, ईरानी, अफ़गानी कोई रुका! बस, मुँह किया हिन्दोस्तान की तरफ़ और टिल्ल पड़े!"

शाहजी ने छोटे भाई को उकसाया—"काशीराम, पंजाब की पुरानी मालकी तो तुर्क-अफ़गान-पठानों के हाथ ही थी न! बीस-बीस पच्चीस-पच्चीस पीढ़ियाँ हो गयी यहाँ आये। बस, रहते-रहते खानदान हिन्दोस्तान-ज़ाद हो गये।"

"हाँ जी। मुल्तान में मालकी बग़दादी सैयद शाह हबीब ने क़ायम की थी।

कबीरवाला तहसील में बगदाद पिण्ड उसी का बसाया हुआ है।"

मुंशी इल्मदीन कान की कन्नूनी मे उँगली फेर रहे थे—"इनकी एक और अल्ल भी निकली थी बगदाद से, जो उच्च मे आकर जमी। कस्सोकीवाले सैयद भी इन्ही के भाई-बन्द है। असल बात तो यह है शाह साहिब, कि ये सारे के सारे जफाकार हेरातिये, बगदादिये, क़ाबुल-कन्धारिये खोलकर दरवाज़ा हिन्दोस्तान का बढ़-बढ़ आगे आते रहे!"

जोश-खरोश में मजलिस के दिल भखने लगे। ढीले-ढाले पगगड़ोंवाले सिर अनोखे गुमान से हिलने लगे।

"जो भी कहो, जब्बरखान-खट्टरखान-नगखान जैसे हमलावर बादशाहतें तो क़ायम कर ही गये न हिन्दोस्तान मे! आये गये। हारे परते। पर फ़तेह हासिल करके ही रहे। की न गद्दी इस मुल्क मे कायम।

बज्ज के लश्कर डेहरी-शहान और कोट कमालिया जा पहुँचे! आगे मुल्क देखा पंजाब का तो आँखों पर दूध और खून का रंग चढ़ गया। फैला दिये सिपाही अपने अटक से लाहोर तक!"

आले मे जलते चिराग की रोशनी में दर्जनों आँखें लड़ाई के मैदान देखने लगी। घोड़ो पर चमकती बहादुरों की शमशीरें!

"आगे सुनो। साढे-चार हाथ का भारी गोहरा डील-डौलवाला पोरसवान खड़ा है शाह सिकन्दर के आगे—'आपके साथ कैसा सलूक किया जाये!'

"पोरसवान न हिला, न पलक झपकी। डट्ट के खड़ा रहा—'वैसा ही जैसा एक शहंशाह को दूसरे शहंशाह से करना चाहिए!'"

"वाह···वाह···वाह। पोरसवान, क्यों नही! पग पंजाब की थी तेरे सिर। बहादुरा, तू भी क्या बराबरी से दस्तपंजा हुआ है शाह सिकन्दर से!"

"क्यो न हो, बब्बर शेरों को कौन सिखाये गर्जना-दहाड़ना और कौन उठाये शेरों की क़ुव्वतें और वड्डियाँ!"

मुंशी इल्मदीनजी की बन आयी, "बादशाहो, लिखत बताती है कि सिकन्दर शाह ने अपनी जेहलम-चनाब की धरती देखी तो सिर को खुमार चढ़ गया। अपने रियाज के मुताबिक़ दोनो दरियाओं को मान-इज्जत से क़ुर्बानी दी। एक तरफ़ जेहलम जैसा जवांमर्द और दूसरी तरफ़ चनाब जैसा जवान!"

फ़तेहअलीजी ने मुँह से हुक्के की नड़ी निकाली। सिर हिलाया और बोले, "दोतरफ़ी खड़े हों चाहनेवाले जबरी तो धरती का मुख खुद महबूब हो गया!"

"बेशक़। आँखों में खुब्बनेवाला मुल्क़ पंजाब तो अपना है ही न! बड़ी-बड़ी क़ौमें आयीं, मामले उगराह के ले गयीं!"

"कहनेवाले कहते हैं पंजाब फ़ारस का एक सूबा रहा था। फिर यूनान का, ईरान का हुआ। अफ़गानों को भरते रहे मामले! बादशाहो, दूर क्यों जाना। मीर मुन्नू ने शाह अब्दाली को चार महल दे दिये थे। अपना स्यालकोट, गुजरात, पसरूर और औरंगाबाद।"

छोटे शाह बोले, "चौदह लाख मालिये की शक्ल में शाह अब्दाली हर साल मामला उठाता रहा!"

नजीबे ने अपने पुत्र का नाम सिकन्दर रखा था। बीच में ही टोका—"बादशाहो, सिकन्दर शाह का क्या बना! उसे कुछ खट्टी कमाई हुई हिन्दोस्तान से।"

गुरुदित्तसिंह हँसने लगे—"नजीबेया, तेरी भोली बातें। लड़ाई के मैदानों में या तौफ़ीक़ें बन गयीं या बिगड़ गयीं। बीच की तो कोई बात ही न हुई!"

"कई लड़ाइयाँ लड़नी पड़ीं शाह सिकन्दर को। फ़तेहयाब भी हुआ। पर उसकी फ़ौजों ने दरिया व्यास लांघने से इन्कार कर दिया। लौटती बार जब सिकन्दर शाह की फ़ौजों ने जेहलम पार किया तो दो हज़ार बेड़ियाँ पड़ी दरिया में। मुलतान में शाह को जहरीला तीर लग गया। बस जी, यूनानी फ़ौजें बिफर गयीं। इलाके में कत्ले-आम कर दिया!"

जहाँदादजी ने सिर हिलाया—"शाहजी, शाही फ़ौजें बिगड़ जायें, आगे बढ़ने से इन्कार कर दें तो बड़ी-से-बड़ी शहंशाही बेबाज़ू हो जाती है। फ़ौजें तो हुईं न जी हकूमतों की बाँहें!"

"बराबर जी। अब आगे सुनिये। सिकन्दर शाह जब पहुँचा है अपने पंजाब तो रावी तक के इलाक़े का नाज़िम सूबेदार था सत्रप सोबती। रावी व्यास के इलाक़े की मालकी उसके पास। एक तरफ़ आम्बी और पोरस ने सिकन्दर शाह का मुक़ाबला किया और दूसरी तरफ़ देखो सत्रप सोबती क्या करता है! आगे बढ़कर सिकन्दर शाह का इस्तक़बाल किया। हीरे-जवाहरातों की नज़र भेंट की। मुर्गों की लड़ाई दिखलायी शाह को और दोस्ताना बढ़ा लिया।"

"यह तो बात कुछ चंगी न हुई। न डंका बजा। न नगाड़ा। न घुड़चढ़ी। न लड़ाई लड़ी और हमलावर से बग़लगीरी कर डाली।"

शाहजी बोले, "कर्मइलाहीजी, इसका सबब यह था कि सत्रप सोबती रहनेवाला ही यूनान का था। इस टब्बर के मूरिसे-अव्वल यूनानी भगदोड़ों में पंजाब उतर आये थे।"

"हो गयी न बात साफ़। दोनों शरीक़ ही हुए न! हमवतनी! फिर तो सलूक निभाना ही था न!"

"यही समझो। सिकन्दर ने भी भरापरी बिरादरी निभायी। जाने से प सत्रप सोवती को रावी और व्यासवाले इलाके का नाज़िम बना दिया। उ पोरसवान को मालकी दे दी पोठोहार की। सिन्ध और जेहलम के बीच व इलाका! अभिसारा को चनाव और भिम्बर राजौरी की हदें हाथ पकड़ायी।"

"हां जी, कई शाह और कई सत्रप। मुल्क पंजाब कोई छोटा-सा तो नहीं न!"

काशीशाह ने सिर हिलाया—"पंजाब का नाम कभी सप्तसिन्धु होता था। यूनानी शाह-बादशाह पहुँचे तो नाम हो गया 'पैन्तपोताम्या'—पांच नदियों की धरती।"

मौलादादजी ने हुक्का छोड़ सिर हिलाया—"वाह-वाह! सच पूछो, बादशाहो, तो रूह बड़ी खुश होती है यह सोचकर कि अपने वजूद बने तो इसी मिट्टी-पानी से। सदक़े!"

कर्मइलाहीजी ने हां-में-हां मिलायी—"सच्च है। रब्बी बरकते अपने वतनों को!"

गुरुदित्तसिंह के ख्याल कहीं और विचर रहे थे, "सोबती सत्रप को क्या माड़ा रहा! बढ़-चढ़ पराहुनाचारी की, कुक्कड़-लड़ाइयां दिखायी और कुक्कड़-कड़ाहियां खिलायीं। रंग-तमाशे दिखाये शाह सिकन्दर को और ब्रादराना तआल्लुक़ात क़ायम कर लिये।"

फ़कीरा हँसने लगा—"बात तो यहां टूटी न कि बिना मैदान में उतरे फ़ायदे का सत्त निचोड़ लिया। यह बहादुरी तो न हुई, नीति हुई।"

नजीबा किसी सोच में था—"शाहजी, एक बात कहता हूं। भला यह कैसे सही हुआ कि ज़मानों पहले यह हुआ था, वह हुआ था! अब कोई चश्मदीद गवाह तो नहीं बैठा हुआ न! पता कैसे लगे यह सच्ची है, झूठी है या यह मिरास ने जोड़ी हुई है!"

"नजीबे, वाजिब सवाल है। होता यह है कि छोटी-बड़ी हकूमतें-सरकार अपने कारनामों-लड़ाइयों-फ़तेहयाबियों को महफ़ूज रखने के पूरे इन्तज़ाम करती हैं। पूरा दफ़्तर रखती हैं। बाकी माहत्तड़-सायों के लिए यही काम उनकी मिरास कर लेती है! जिस खानदान का कारज ढंग-पज्ज हुआ, मिरास उनकी सात पीढ़ियों तक नाम दोहरा लेगी! सिलसिला चलता रहता है।"

कृपाराम बोले, "शाहजी, मिरास भी कोई एक तो नहीं न! क्षत्रियों के मिरासी शोहाला, ब्राह्मणों के मिरासी कमाछो, मीर मिरासी, राय मिरासी, सेवक ...वाल। ब्लोचों के मिरासी अलग। शिया मिरासी अलग। अमीर हमज़ावाले ...रीं अलग।"

काशीशाह बोले, "अपनी मिरास की जड़ पीछे मुल्तान से है। तभी समय-... पर नवाब अली मरदान का शजरा ताज़ा करते रहते हैं।

"मुज़फ़्फ़र दीन जहांदादशाह, फ़ारुख़शाह बादशाह, शाह रुख मिर्ज़ा, शाहज़ादा अली कुली ख़ान, सरदार गंज अली ख़ान, नवाब अली मरदान ख़ान, सरदार बहराम अली ख़ान, सरदार महम्मूद हुसैन ख़ान, सरदार अली ख़ान, नवाब शाह बादल ख़ान, नवाब अमीर मुहम्मद ख़ान, सरदार शाह पसन्द ख़ान। नवाब अली मरदान के टब्बर को मुल्तान की जागीर मिली थी। पहले ये हेरात-कन्धार के सूबेदार थे!"

मौलादादजी बोले, "शाहजी, वह जंग-लड़ाइयों की बातें तो बीच में ही रह गयी!"

शाहजी ने फिर छू ली—"लो सुनो। महमूद गज़नी चलता है ग़ज़नी से दस हज़ार घोड़ों का लश्कर लेकर। इधर सम्राट जयपाल सामना करता है बारह हज़ार घोड़े, तीस हज़ार पदल और तीन सौ हाथी लेकर। मैदाने-जंग में पासा पलट जाता है और जयपाल बन्दी बना लिया जाता है! महमूद गज़नी को हीरे-जवाहरातों का बड़ा ठरक। नज़राने में बेशकीमती हीरे-जवाहरात लेकर जयपाल को छोड़ देता है।"

जहांदादख़ां हँसने लगे—"शाह साहिब, वह शहंशाह-सम्राट क्या हुआ जिसे हीरे-जवाहरातों की तृष्णा न हो!"

कवकूख़ां बोले, "मोटी-सी बात है। बादशाहों को तृष्णा-प्यास हीरे-जवाहरातों की, तो डाकू-लुटेरों को भी वही चस्का। दोनों में लम्बा-चौड़ा फरक क्या हुआ!"

गण्डासिंह हँसने लगे—"शाहजी, कक्कूख़ां के बयान से सही यह हुआ कि मजलिस में बैठकर लोगों की अक्ल-बुद्ध तेज़ हो जाती है। कक्कूख़ां, पहले तो हुई न डाकाज़नी और लूट-मार। पीछे बहादुरी के ज़ोर बन्दे ने ख़लकत साथ लगा ली। बस जी, जहान में तख़्तो-ताजवाली हट्टी चल निकली। मनचाहे फ़रमान निकाले, दो-दस चढ़ाइयाँ कीं। महल-परकोटे बनवा दिये। मामले लगा लिये। बस, फिर उम्र-भर के जलसे-जशन! अगले घर से आवाज़ पड़ गयी तो अपने शाही मान-इज़्ज़त से समाध-मक़बरों में जा लेटे!"

ताया तुफैलसिंह बड़ा हँसे—"गण्डासिंह, तुम्हारे हाथ में कोई पड़ न जाये। हो न हो पिछले जन्म में तू बिरादरी का अगू ज़रूर होगा।"

काशीशाह को याद हो आयी—"रणजीत महाराजा का दिल आ गया कोहेनूर हीरे पर, बस फिर कोई नीति-तरक़ीब नहीं छोड़ी और अफ़गान शाह शुजा से हथिया के छोड़ा। देखो, आख़ीर को हीरा कहाँ पहुँचा है! बरतानिया के ताज पर। कहते हैं दुनिया का सबसे बड़ा हीरा है यह! जो हीरा लगा हुआ है रूसी ताज में वह कबूतर की आँख के बराबर है और कोहेनूर उससे भी बड़ा। बड़े इक़बालवाला बाज़ूबन्द हीरा हुआ न कोहेनूर।"

"शाहजी, जयपाल जब छूट गया तो फिर सँभाली आकर राज की बाग-डोर!"

"बादशाहो, आगे सुनो। जयपाल राजा क्या करता है। गद्दी सौंपता है बड़े लड़के अनंगपाल को और आप चिता पर चढ़ जाता है!"

कृपाराम के सिर धर्म का खुमार चढ़ गया—"आखीर को विक्रमाजीत था। धर्म की लाज रखनी थी।"

"मुल्तान जीत महमूद गजनी मुँह करता है भटिण्डा की ओर। तीन दिन जबरदस्त लड़ाई होती है और गज़नी की फ़ौजें भारी गिनती में हलाक होती हैं। चौथे दिन ग़ज़नी ने मक्का शरीफ की ओर मुँह कर नमाज़ पढ़ी और सिपाहियों को ललकारकर कहा, 'बहादुरो, मक्का-मदीने से फतेह का हुक्म आया है। कोई डर नहीं। आगे बढ़ो।'

"भटिण्डावाले बिजी राय की फौज के पाँव उखड़ गये और सेहरा फ़तेह का ग़ज़नी के सिर जा चढ़ा!"

"क्यों नहीं जी, रब्ब रसूल हों इमदाद पर, गाज़ियों के हौसले बुलन्द हों, हाथ में शमशीरें चमकती हों, फिर कौन रोक सकता है इन्हें आगे बढ़ने से! आखीर को जीता न हिन्दोस्तान!"

शाहजी सिर हिलाने लगे—"काशीराम, इसका अगला हिस्सा भी हो जाये। आप सुनाओ!"

"बाज़ी हारी देख बिजी राय खुद अपनी गर्दन धड़-से अलग कर देता है।"

मौलादादजी से न रहा गया—"शाहजी, सोचनेवाली बात यह है कि चिता पर चढ़ने से या खुद को हलाक करने से हाथ में क्या आया! अपनी जान गयी, मैदान गया और अगली बाज़ी लड़ने से पहले ही हारी गयी!"

मुंशीजी ने मौका ताड़ा—"दरअस्ल गीता बेगर्ज़ काम करने, ख्वाहिशात और जज़्बात से आज़ाद होने की तालीम देती है। यह हिन्दुस्तान का पुराना अक़ीदा है। अपनी जान पर खेल मैदाने-जंग में जेकर सिर उठा लिय. ...

पड़ जायेगी और फ़तेह दूसरों के हाथ जा लगेगी।'

गुरुदित्तसिंह भड़क उठे—"बस ओ मुंशी इल्मदीन। महाराजा रणजीतसिंह ने किस-किस की पीठ नहीं लगायी! पता है न! पठान-बलोच-अफ़ग़ान कौन मादर रण छोड़कर नहीं भागा! गाँठ बाँध लो मेरी बात, बहादुरी किसी एक क़ौम की विरासत नहीं!"

जहाँदादजी ने बीच-बचाव किया—"बराबर सही। जब तक बावटा लहराया खालसों का, पंजाब में कोई कुसका नहीं! शेरे-पंजाब के आँखें मीटने की देर कि फिरंगी गोरों ने ताक़त पकड़ ली!"

"बादशाहो, तब एक गीत पढ़ा था—रब्ब सोया, देवता मर गये, राज फिरंगियाँ दा !"

मीराँबख़्शजी ने टीडा दिया—"महाराजा का पीछा सुनता है। खालसों ने बड़े-बड़े जुद्ध-लडाइयाँ लड़े। लश्कर सजाये। जंग जीते। फ़तेहयाब हो हकूमत की तो वह भी गज्ज-वज्ज के।"

फ़तेहअलीजी शामिल हुए बातचीत में—"बड़े-बड़े सूबेदार-कारदार रखे। बराबर मुगलोंवाला सारा ताम-झाम! शाहजी, आप नाम लिया करते हैं न! हो जाये···।"

"लो सुनो। दरोग़ा देग, दरोग़ा जवाहरात, दरोग़ा खज़ाना, फ़ौजदार द्वाब, दरोग़ा नहर, दरोग़ा रिसाले-सुल्तानी वग़ैरा-वग़ैरा।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "और तो और, मुल्तान की पक्की मालकी पठानों से खोंस ली।"

काशीशाह ने हरारत देख मज़मून बदल दिया—"दिवान सावनमल ने मुल्तान का नाज़िम बनकर बड़ा नाम कमाया था!"

"नाम भी और नाँवा भी। दौलत-माया के ढेर लग गये। मामला इकट्ठा किया जिवियों का। ज़रूरीवाला जमा किया लाहौर दरबार, बाक़ी परमानन्द!"

शाहजी बोले, "चौधरीजी, मालिया उगराने के लिए खालसा सरकार फ़सलों पर बोली लगवाती थी। पकी फ़सलें खड़ी हैं खेतों में और सरकार ने बोली लगवाकर निलाम करवा दी। जो सबसे ऊँची बोली दे, वह मामला इकट्ठा कर सरकारी खज़ाने पहुँचा दे। राज के लिए हिसाब-किताब जिवियों-फ़सलों का भी वही रखे। बोली से उगराई ज़्यादा हो गयी सो अपनी।"

"सरकारों की अपनी-अपनी सोच और अपने-अपने फ़रमान! अँग्रेज़ ने भी काम तो चंगा ही किया है शाहजी। अपने मुसलमीन दर्ज हो गये किसानी फ़ेहरिस्त में! अलबत्ता हिन्दुओं को घाटा ज़रूर रहा। चलो, उनके पास धन-दौलत काफ़ी। बीस सालवाला क़ानून आसामी के लिए तो माड़ा नहीं। गहने पड़ीं आधी ज़मीनें तो आप ही छूट जायेंगी।"

शाहजी हँसने लगे—"चौधरीजी, यह भी सही है। कोई और नया क़ानून आ गया तो फिर आप शाह और हम मुज़ारे!"

"अभी तक तो, चौधरीजी, इतना ही आया है न कि मुसलमान तीन हज़ार सालाना आमदन पर मामला भरे तो चोन का हक़दार बने। उधर हिन्दू तीन लाख सालाना पर मामला दे तो परची डाल सके! अब आप ही अन्दाज़ा लगा लो बादशाहो कि अपनी हालत क्या होनेवाली है!"

बड़ा हास्सा पड़ा।

"शाहजी, मान लो क़ानून ही बन गये, जिवियों की मालकी भी मिल गयी

काश्तकार को। पैसे-धेले को सँभालेगा कौन ! अपना कोई पुश्तैनी पेशा तो न हुआ पैसा-धेला सँभालना ! रब्ब आपका भला करे शाहजी, ऐसा हो गया अपने हक में तो दौलत-माया कौन सँभालेगा ! उसके लिए काबलियत भी तो होनी चाहिए न ! यहाँ कोई पुश्तैनी वारिसी तो न हुई रुपये-पैसे की !"

शाहजी के माथे पर माड़े-से बल उभरे, पर हँसकर कहा, "चौधरीजी, दरियाओं में हड़-बाढ़ उतर आयें तो किसने रोक सकना है। परिवर्तन के आगे किसने टिकना ! पानियों के रुख है, किसी के रोके नहीं रुकते।"

मौलादादजी हुक्का छोड़कर बोले, "मैंने कहा सावनमलवाला क़िस्सा आपने कैसे छोड़ दिया ! चंगा दिल लगा हुआ था !"

"दिवान सावनमल ने कम-से-कम तीन सौ मील लम्बी नहरें निकलवायी थी अपने इलाक़े में ! रियाया वहाँ की बड़ा चंगा मानती थी उसे !"

गुरुदित्तसिंह चौकन्ने हो के बैठे तो सबको खुड़क गयी कि कुछ नयी-ताज़ी है खालसा के पास !

"लाहौर फ़ौजों ने मुल्तान फतेह किया और दिवाली सज गयी लाहौर-अमृतसर। जशन मनाये गये। खुशियों में खिल्लत-खिताब बाँटे गये !"

शाहजी ने पैंतरा डाला—"मुलतान की हकूमत महाराजा रणजीतसिंह ने सँभाली और वहाँ के शाहज़ादों सरफ़राज खाँ और जुल्फिकार खाँ के गुज़ारे के लिए जागीरें लगा दीं।"

"शाहजी, मुलतान में शेख शम्सुद्दीन तबरीज़ी की खानकाँ बड़ी मशहूर है। ज्यों गुजरात के वली हाकम हुए साँई शाहदौला, मुल्तान के वली हुए शम्स तबरीज़ !"

काशीशाह ने प्रसंग उठा लिया—"पीर शम्स तबरीज़ ज़िन्दा कत्ल हो गये थे। क़त्ल हुए और ज़िन्दा रहे। सुननेवाली बात है यह। अपनी चमड़ी हाथ में लेकर चलते रहे। कहने में आता है कि मुलतान की ज़मीन पर सूरज इनकी हकूमत में है ! शाह शम्स का मेला शेखपुर मेरा में भी लगता है। बीमार लोग वहाँ नाइयों से नश्तर लगवा-लगवा खून बहाते हैं।"

कर्मइलाहीजी बोले, "मैंने कहा शम्सी तो अपने स्यालकोट में भी बहुत !"

कृपाराम दोहराने पर उतर आये—"सुनने में आता है सावनमल चंगा-तगड़ा इन्साफी हो गुज़रा है।"

'बराबर। सावनमल ने उठा अपने पुत्र को बन्दीखाने में डाल दिया। हुआ यह कि किसी जट्ट ने दरबार में जा शिकायत कर दी कि 'किसी दरबारी बन्दे ने मेरी पकी फ़सल बरबाद करवा दी है। अब क्या तो खाऊँ और क्या सरकारे जमा करवाऊँ !'

"सावनमल ने हुक्म दिया—'अगर वह आदमी दरबार में मौजूद है, चाहे

...ं हो क्यों न होऊँ, बेखौफ़ होकर हाथ रख दो।' बादशाहो, जट्ट अपनी ज़ात का फट्ट। उठा और दिवान सावनमल के फरजन्द रामदास पर हाथ जा रखा!

"दरबार सारा हक्का-बक्का। पर जी, दिवान सावनमल का हुक्म हो गया और अगले ही दिन क़ैद मुशक्क़त के लिए काका रामदास अन्दर। खैरों से लड़का हाक़म का। अमीर पुत्र। न मेहनत, न मजूरी। बन्दीखाने में बीमार पड़ गया। समझो सज़ा के गम में ही जाता रहा। पर सावनमल दिवान अपनी बात पर थिर।"

"दिवानों का शजरा तो बड़ा आला न हुआ जी। इस ख़ानदान में कई मशहूर नाज़िम कारदार हो गुज़रे हैं।"

मुंशी इल्मदीन कहीं से पुरानी पोटली निकाल लाये—"आगे जाकर इसी टब्बर के पुत्र-पोत्रे ने क़लमा पढ़ लिया और खैरों से दिवान रामस्वरूप गुलाम मोहीउद्दीन हो गये!"

मुहम्मदीनजी ने रफ़ा-दफ़ा की—"क़लमा तो हज़ारों ने पढ़ डाला। यह तो कोई नुक्सवाली बात न न हुई!"

शाहजी ने नया क़िस्सा छेड़ दिया—"हुआ यह कि सावनमल के बहनोई बदनहज़ारी मुलतान भेजे गये थे मुलतान के सरगना अहलकार की हैसियत से। बहन का दिल। घरवाले के पीछे पड़-पड़कर अपने भाई को बुला लिया। बहनोई ने किसी छोटे-मोटे काम पर लगा दिया साले साहिब को। साला बहादुर बड़े तेज़। जिस काम में हाथ डाले, बरकत बड़ाई। लोग लड़के पर बड़े खुश। बस जी, उड़ती-उड़ती लाहौर दरबार जा पहुँची। महाराजा रणजीतसिंह में एक बड़ी भारी सिफ़्त। सौ कोस से पहचान जाये कि आदमी मेरे मतलब का है! साल-भर बाद हुक्म कर दिया। भाइया बदनहज़ारी हकूमत के हेठ और सावनमल गद्दी के ऊपर।"

फ़तेहअलीजी बोले, "घरवालियों की ज़िद, और क्या! पेके-मायके के प्यार ने अपने घरवाले का नुक़सान करवा छोड़ा।"

मीरांबक़्श बोले, "बादशाहो, यह जनानी की खसलत। मर्द के माँ-बहन लड़ाई-झगड़े और तोहमतों के लिए और अपने पेके-पीहरवाले खातिर-त्वाज़ा को। यह तो नहीं कि बन्दा देखता नहीं। घूंट पीना हो रोज़ तो बताओ दूध की हंडियां फेंकी जाती हैं!"

कक्कूखां सिर हिला-हिला बोले, "आप्पे फांसड़िये, तैनूं कौन छुड़ाये! चौधरीजी, बन्दा धड़ से पकड़ा जाता है।"

फतेहअलीजी खैरों से दो बीवियों की सरदारी संभाले हुए थे। बड़ी सयानफ से कहा, "ख़ानदान की हड्डी पाक-साफ़ रहे, नहीं तो जहाँ इधर-उधर की लग-लबेड़ ख़ानदान में पहुँची, सूबियां-खामियां सब खिचड़ी हो जाती है।"

मौलादादजी मानो इसी मज़बून पर सोचते रहे हों। बोले, "फ़तेहअलीजी, जेकर नुक्स पैदा हो जाये तो उन हालातों में औलाद का ऊपरी धड़ बन जाता है मर्द का और निचला जनानी का! इसी तरह पिंजर मर्द का और दिल-दिमाग औरत के। कहने का मतलब यह कि ऐसे हालातों मे सालम-सबूते आदमी ज़रा कम ही पैदा होते हैं।"

गण्डासिंह शुरू हो गये—"चौधरीजी, सैयदोंवाली चिट्टी चादर तो न तान दो कि साक-सम्बन्ध करना है तो सैयदों से ही। कितने खानदान है जो पाक भी है और साफ़ भी। यह बात परदे मे ही रहे तो चंगा!"

शाहजी ने टोका—"कुल-गोत्र या खानदानी देखने-जांचने की टेव-टेक तो कोई बुरी बात नही। हमारे पुरखों ने सोच-समझ के ही यह बन्ध-बन्ना बनाया था। जो मेल नहीं मिलते उन्हे तर्क कर दिया।"

ताया तुफ़ैलसिंह ने बात दूसरी तरफ ही खींच ली—"बादशाहो, अपने खालसा को देखो। भांति-भांति की मिट्टी-हड्डी से गुरु साहिब ने एक धाकड़ धात पैदा कर दी!"

कृपाराम ने अपनी हांकी—"ठीक है, खानदान की पुश्त-पुश्तगी देखे मनुक्ख, पर ज़ात-बिरादरी की हदबन्दियां तो लगी हुई है न कबीलों के साथ। शास्त्र-मर्यादा यही कहती है न—क्षत्रिय क्षत्रियों से, जाट जाटों से!"

कर्मइलाहीजी को भी कुछ सूझ गयी—"गुजरात के अवान अपनी धी-धियानी चिब्ब-खोखरो के यहां नहीं देते। जेहलमवाले अवान रिश्ता करेंगे तो अवानों के घर। आपने भी सुना होगा शाहजी, कालाबागवाले मलिक ने रावलपिण्डीवाले मुहम्मद अली गेब्बे के यहां अपनी बेटी का रिश्ता करने से इन्कार कर दिया था!"

"धर्मशास्त्र कहते है कि किस्म और तासीर का फर्क सात पीढियों में कम होता है!"

शाहजी जाने किस ख्याल मे बेखबर-बेध्यान दिवटे की लौ की ओर देखने लगे तो देखते ही चले गये।

काशीशाह ने गला खँखार ज़रा ध्यान बँटाना चाहा पर शाहजी न हिले, न पलक झपकी। काशीशाह ऊँची आवाज़ में बोले, "आपसदारी में जहां गाढ़ी-गहरी मुहब्बतें और सलूक पैदा होते है वहां नाकस ज़हरीली बूटियां भी उगती रहती हैं। इसी को मद्देनज़र रख बडे-बज़ुर्गों ने कुछ कायदे-कानून बना दिये ताकि मर्यादा बनी रहे।"

नजीबे को कुछ न पल्ले पड़ा। खीजकर कहा, "बादशाहो, अगर रब्ब रसूल ने इन्सान को एक आला बरकत लगा ही दी है तो इन सब हकीकतों का क्या मतलब! मोटी बात तो ले-दे के इतनी ही हुई न कि बन्दा गरीब हो तो

गरीब से मेल मिलाये, अमीर हो तो अमीर से। बाक़ी एक बात पक्की है कि अकेली हव्वा बच्चे पैदा नहीं कर सकती! आखीर को अल्लाह तआला ने जो बनाये तो इसीलिए न!"

सुख सुख पट्टिये, लौंगा चट्टिये!
लौंग सुपारी, तेरी मेरी यारी!

राबयाँ ने आवाज़ दी—"लालीशाह, पट्टी आप ही सूख जायेगी। बैठकर रचती सबक़ याद करो।"

"राबी बहन, मैं स्याही रचाकर आया।"

लाली ने पीतल की दवात में छोटी-सी लीर डाली, काली रोशनाई का पुड़िया खोली, ऊपर से पानी की बूँदें डाल क़लम से रसाने लगा।

राबयाँ ने फ़िर बुलाया—"बस, अब धूप में रखकर चले आओ। आप रहेगी।"

लालीशाह ने चाकू ले क़लम को टक्क लगाया और उसे दवात में डाल राबयाँ के पास आ बैठा। हँस-हँसकर क़ायदा खोला और आँखें मीटकर शुरू हो गया—"बरकत पालने में पड़ा अंगूठा चूस रहा है। बरक़त की माँ पास बैठी सालन पका रही है। बरक़त का बाप हुक्का पी रहा है। बरक़त की माँ बच्चे को देख-देखकर खुश होती है। सोचती है बरक़त बड़ा होगा। मेहनत करेगा। कमायगा। आप खायगा। हमें खिलायगा।"

माँबीबी पास आन खड़ी हुई—"सदक़े जाऊँ अपने लालीशाह पर! भला सुनें तो किस-किस को खिलायगा!"

"राबी बहन, नाम ले दूँ! चाची को खिलाऊँगा। माँ को खिलाऊँगा। माँ-बीबी को खिलाऊँगा, राबयाँ बहन को खिलाऊँगा।"

चरखे पर बैठी चाची हाथ का तार रोक इधर देखने लगी, "मैंने कहा खिलायगा क्या हमें! क्या चीज़! नाम तो ले।"

शरारत से लाली दन्दियाँ चहकाने लगा—"पट्ठे, चाची, पट्ठे खिलाऊँगा—सबको पट्ठे खिलाऊँगा!"

राबयाँ उठकर पास आयी। लाली का कान खींचा और आँखों से घुड़कक कहा, "बड़ों को ऐसे कहते हैं! चलो, चाची और माँबीबी से माफ़ी माँगो!"

उछलते-कूदते लाली ने बारी-बारी दोनों के पाँव छू लिये ! फिर हाथ में कायदा पकड़ा और शताबी से राबयां को पैरीपौना कर दिया।

राबयां ने कान पकड़ लिया—"कितनी बार मना किया है। छोटों के पैर नहीं छूते। आज से याद रख ले मेरी बात ! नहीं तो मैं चाचाजी से शिकायत करूँगी !"

लाली फिर चौकड़ी मार बैठ गया और क़ायदा खोलकर कहा, "राबी बहन, मेरे से वड़ी हो। आपको पैरीपौना किया तो क्या हुआ ! न करूँ !"

चाची ने धमकाया—"मुड़ जा। आगे से आगे जिरह ज़ारी। एक बार कह जो दिया नहीं छूने पैर राबयां के, फिर बार-बार···"

लाली खीझकर बोला, "फिर राबी बहन को क्या करना है ! रामसत ! बोलो, रामसत करूँ ! ईद मिलूँ !"

लाली राबयां से लिपट गया।

चाची ने घुड़का—"छोड़ रे छोड़, मैं बताती हूँ तुम्हें। राबयां को तू सलाम किया कर !"

"सलाम राबयां बहन, सलाम !"

राबयां ने लाड़ से सिर पर एक धप्पा दिया—"कायदेवाली जमात कब से पीछे छोड़ चुका, फिर क्यों पढ़ रहा है !"

"मैं देखता था राबी बहन, मुझे याद है न ! कहीं भूल तो नहीं गया !"

शाहनी ने आवाज़ दी—"तेरी टर-टर नहीं मुकी !"

लाली ने सकीना छू ली—

कित मदीना कित शाह नजाफ
थिया शाम मकान सक़ीना दा
मालक पैगम्बर जात खुदा दी
करन अरमान सकीना दा।

एकाएक लाली के कान खड़े हो गये। चौकन्ने हो आवाज़ सुनी—"राबयां बहन, सुनो ! भैंस बोल रही है। सुनो न !"

"सुन लिया। अब पहाड़ा याद करो।"

"राबयां बहन, यह वाली भैंस भूरी भैंस जैसी नहीं है। पहले भी बोली थी एक बार। नवाब चाचा इसे छोड़ आये थे पर यह गब्बन नहीं हुई थी। यह भैंस फ़रड़ है।"

शाहनी ने उठकर एक लगाया—"हर बात में बोलना ! राबयां, इसे सबक़ दे और गलती करे तो कान खींच !"

"बोलता हूँ माँ, बोलता हूँ। आठ का पहाड़ा याद है मुझे। पर चाचा नवाब बाग्गे चाचा से कह रहे थे कि एक बार और देख लेते हैं। इस बार गब्बन न हुई

वापस भेज दी जायेगी।"

शाहनी ने आवाज़ कड़ी कर ली—"आऊँ उठ के!"

"अगर मुझे मारना ही है तो मैं ही उठ के आ जाता हूँ!"

राबयाँ ने ओठों में हँसी और तेवर चढ़ाकर कहा, "चलो पहाड़ा दोहराओ!"

लाली शुरू हो गया—

"आठ ठग औ आठ सुनार
आठ सुनार औ आठ लुहार
आठ चौका बतरी
एक पगला जया खत्री
खत्री तोड़ बनाया खोजा
ज्यो वालों का गन्दा बरोजा
खोजा सो ससुरे का ससुरा
खोजा शहद लपेटा मोहरा!"

नीचे से काशीशाह आन पहुँचे! त्योड़ियाँ चढ़ाकर कहा, "लाली पुत्र, यह क्या सुन रहा हूँ!"

लाली ने मुस्तैदी से चाचा साहिब के पाँव छूए और खड़े होकर कहा—

"अव्वल अल्लाह नूर उपाया
क़ुदरत के सब बन्दे
एक नूर से सब जग उपजा
कौन भले कौन मन्दे!"

"शाबाश। पुत्रजी, वह आठ का पहाड़ा कभी न सुनूँ! जानते हो, इसकी मनाही क्यों है?"

"जी। चाचाजी, इसमें खोजो के लिए बुरी बातें हैं। पर मदरसे में सब लड़के बोलते हैं।"

"उन्हें भी मना कर दिया जायेगा। तुम कभी नहीं दोहराओगे! समझे!"

"जी।" लाली ने अपने झगे में छोटी-सी गाँठ बाँध ली।

"बरखुरदार, यह किसलिए!"

"इससे आपकी बात याद रहेगी चाचाजी।"

"हूँ।" काशीशाह मन-ही-मन हँसे मगर ऊपर से रोबीली अदा बनाये रहे।

"तुम्हारे भाई गुरुदास-केशोलाल कहाँ हैं!"

लाली शशोपंज में पड़ गया—"चाचाजी, वे दोनों···वे गये हैं···वे दोनों गये हैं बेरियों पर!"

"क्या कहा! इन दिनों बेरियों पर क्या काम!"

लाली मुँह पर हाथ रखे कुछ सोचता रहा, फिर कपास की सूखी संटी उठा

ाया। काशीशाह के आगे कर कहा, "चाचा साहिब, मैं झूठ बोल रहा था। ुझे लगा लीजिए हाथ पर!"

चाचा साहिब ने तहक़ीक़ात की—"यह क्या ठीक कि तुमने सुबह से एक ही झूठ बोला है!"

लाली ने आँखें ऊपर उठायीं तो चाचा साहिब दिल-ही-दिल खुश हुए!

"चाचाजी, आपके सामने रोंगटी बिल्कुल नहीं। सची-मुची मैं एक ही झूठ बोला है!"

"चलो, आज तुम्हें माफ़ी मिली। हाँ, तुम्हारे जोडीदार कहाँ हैं भला, सोच-कर बताओ।"

"चाचा साहिब, वह मदरसे के पीछे खेल रहे है।"

"क्या खेल रहे हैं, गुल्ली-डण्डा, गोडियाँ, कौड़ियाँ—"

"जी, दोनों उत्तरी वण्डवाले लडकों के साथ कौडियाँ खेल रहे है।"

"हूँ!" काशीशाह ने मज़बून बदल दिया—"राबयाँ बेटी, लालो ने और क्या सीखा तुमसे! उन किताबों में से कुछ पढा-सुना!"

"जी, तीनों हिदायतें याद की है!"

लाली ने उतावली से पूछा, "राबयाँ बहन, सुना दूँ!"

"सुनाओ।"

काशीशाह इत्मीनान से चारपाई पर बैठ गये और लाली ने दोनों हाथ सीधे रख राबयाँ की ओर देखा और शुरू कर लिया—"रियाया जड़ है और बादशाह दरख़्त।

"जब नौशेरवाँ का आख़ीरी वक़्त आया तब उसने अपने बेटे हुरमुज़ से कहा, 'बेटा, दिल से फ़कीरों-दरवेशों की हिफ़ाज़त कर। अपने आराम की फ़िक्र न रख। कोई भी अक़्लमन्द यह पसन्द न करेगा कि चरवाहा पड़ा सोता हो और भेड़िया उसके गोल में रहे। होशियारी से दरवेशों-मुहताजों का ख़्याल रख। इसलिए कि रियाया की बदौलत ही बादशाह ताजदार होता है। रियाया जड की तरह है और बादशाह दरख़्त की तरह और दरख़्त जड़ से ही मजबूत होता है। ऐ मेरे प्यारे बेटे, जहाँ तक बन सके, रियाया का दिल मत दुखाना और अगर तू ऐसा करेगा तो अपनी जड़ खोदेगा। बेटा, अगर तुझे नेक राह की जरूरत है तो तेरे सामने फ़क़ीरों-परहेज़गारों का रास्ता खुला पड़ा है। जिसे यह खौफ़ है कि वह खुद तकलीफ न उठाये उसे भला दूसरों का नुकसान क्यों पसन्द आयेगा और अगर उसकी तबीयत में यह आदत नहीं है तो उसके मुल्क में अमन-चैन की बू भी नहीं है। अगर तू कानून-कायदे से मजबूर है तो खुशी अख़्तियार कर और अगर तन्हा है, पाक-साफ है तो अपना रास्ता ले। उस मुल्क में खुशहाली की उम्मीद न रख जिसमें बादशाह-रियाया एक-दूसरे से नाराज़ है। ख़्वाब में मुल्क को

आबाद वही देखता है जो लोगों के दिल बेजार रखता है। ज़ुल्म से खराबी-बदनामी होती है। ज़ुल्म के ज़रिये रियाया को तबाह करना ठीक नहीं। इसलिए कि वही हकूमत को पनाह देनेवाली है।' "

लाली ने चाचा साहिब के आगे ज़रा-सा सिर झुकाया और नाक फुला राबयां की ओर तककर मुस्कराने लगा।

"शाबाश बरखुरदार! शाबाश राबी!"

लाली की चढ़-बढ़ बन आयी, "चाचा साहिब, अमीर हमज़ा की भी दो हिदायतें याद कर ली हैं मैंने।"

"बेटे, सोचकर बताओ। जब से मदरसे गये हो, तुम्हें कितनी बार कुट्ट पड़ी है!"

लाली ने उंगलियों पर गिनती कर डाली—"चाचा साहिब, मुझे पांच बार मार पड़ी है! एक बार मसालेवाला गुड़ चुगला रहा था, एक बार सक़ीना गा रहा

लवीजी

: बिठा

! उस

दिन डाडी कुट्ट पड़ी। चाचा साहिब, राबी बहन ने चुपके-चुपके उस दिन घी और लौंग चुपड़ दिया था पीठ पर। मैंने किसी को बताया नहीं था!"

"राबयां बेटी, शागिर्द तुम्हारा क्या सच बोल रहा है!"

राबयां ने सिर हिलाया—"जी शाह साहिब!"

"चाचा साहिब, एक और सुनाऊं, इसका नाम है—

"जोरो-ज़ुल्म पर बुनियाद रखनेवाला फ़ना हो जाता है।"

सीढ़ियों पर पैरों का खड़का हुआ और शाहजी ऊपर आन पहुंचे!

लाली ने बढ़कर पांव छू लिये—"पिताजी, पैरीपौना!"

शाहजी के माथे पर तेवर उभर आये—"कौन फ़ना हो जाता है—क्या कह रहे थे?"

"जी, मैं चाचा साहिब को कहानी सुनाने लगा था।"

राबयां ने आंख से इशारा किया। लाली ने फुर्ती से मंजी खींच दी—"बैठिए, पिताजी!"

शाह साहिब चुपचाप लड़के को घूरते रहे!

लाली ने शाहजी के माथे पर तेवर देखे तो चाचाजी से पूछा, "गुरुदास भाई और केशोलाल भाई को मदरसे से बुलाकर ले आऊं!"

"नहीं। उन्हें आज आप ही आने दो।"

लाली ने फ़िक्र से कहा, "चाचा साहिब, आज उन्हें बहुत मार पड़ेगी न!"

"ज़रूर पड़ेगी। जो जैसा करेगा वह वैसा भरेगा!"

लाली ने हौले से बनेरे की तरफ़ छलांग मारी ही थी कि चाचाजी की आवाज़ सुन परत आया।

"कहाँ जा रहे थे!"

"जी मदरसे!"

"जाने की ज़रूरत नहीं।"

"चाचाजी, अगर मैं उन्हें रोक नहीं लेता तो दोनों गोडियाँ चुनने दरिया पहुँच जायेंगे। मैं भी एक गुलेल रेत में छिपा आया था। न गया तो मेरी गुलेल उनके हाथ लग जायेगी।"

शाहनी ने उठकर एक धप्पा दिया—"चुप रे! बड़ा बलभद्र बुद्धिमान बना फिरता है। आगे से आगे टीडा दिये ही जाता है! राबयाँ, जा छोटी बैठक में बैठकर इसे इमला लिखा।"

लाली को बाँह से पकड़े राबयाँ बैठक की ओर ओझल हो गयी तो भी देर तक शाहजी उधर ही तकते रहे!

काशीशाह बड़े भाई के बोलने का इन्तज़ार करते रहे—"जैन करियालीवाली ... ।"

... "अलिया मिल गया ..."

शाहजी ने आँख उठा भाई की ओर देखा—देर तक देखते रहे जैसे कुछ कहना चाहते हों और न कह पाते हों। एक लम्बा स्वास भरा—"रब्ब के रंग। लाखों में एक अपनी राबयाँ और उम्र हँडाये हुए सुल्तान। अलिये-सुल्तान को साथ-साथ देख मेरा दिल बुझ-सा गया है! सलाह-सूत करने आज आयेगा ज़रूर! सोचता हूँ..."

काशीराम कई पल इन्तज़ार करते रहे, पर शाहजी ने बात न पूरी की—"अलिया आया तो बैठक में ही ले आना।"

रोटी-टुक्कर खाके दोनों भाई बैठे ही थे कि अलिया आन पहुँचा।

बेटी ने सलाम किया तो सिर पर प्यार फेरा!

अलिये ने बैठते ही बात छेड़ दी—"शाह साहिब, सुलतान के पास घर-जिमियों की मालकी है। पहली बीवी जाती रही। धी ठिकाने जा पहुँचेगी तो मैं भी सुरखरू हूँगा। फ़तेह अपने घर राजी। ज़रा इसी की चिन्ता-फ़िकर है मन में।"

छोटे शाह बोले—"धी राबयाँ दूजी लड़कियों-सी नहीं अलिये, इसके दिल-मन में रोशनी। आप बाप हो, जो रुचेगा करोगे। बेशक साक-सम्बन्ध मिलाओ। ज़ोरा-ज़ोरी नहीं, सोच-समझकर। राबयाँ हमारी धी बराबर है, जो जुड़-बन आयेगा, करेंगे।"

"शाहजी, यही सोचा था कि सुल्तान पैसे-धेले से सौखा है…"

छोटे शाह ने हाथ से रोक दिया—"होगा, पर सुल्तान की उम्र तो देखो। अलिये, चाव से यह काम करो। धी तुम्हारी मोती है। उसकी रीझें चुण-विचुण न कर दो। यह न हो कि कँवारी के सौ चाव और ब्याही के सौ मामले। लड़की मुँह से न कहेगी पर महसूस करेगी।"

"जी शाह साहिब," अलिये को कुछ जवाब न सूझा। उठकर खड़ा हो गया, "कहीं और नज़र मारूँगा। आप भी ख्याल में रखें शाहजी। देखो, धी करतारो अपने चंगे घर पहुँच ही गयी।"

काशीशाह बोले, "भरम न कर अलिये, इसमें भी कुछ बेहतरी है।"

शाहनी दोनों भाइयों को गर्म-गर्म दूध के कटोरे दे गयी। जाते-जाते बैठक के पट भिड़ा दिये।

दोनों भाई चुपचाप बैठे रहे। अलिया ज्यों जाते-जाते कुछ अनकहा छोड़ गया हो। दीपक की लौ में अँधेरे की पलक न झपकी।

भित्त के बाहर दबी-दबी हिचकियाँ सुन पड़ीं।

काशीशाह ने आवाज़ दी—"कौन! कौन है!"

काशीशाह ने उठकर कपाट खोला, बाहर झाँका—"राबी बेटा, तुम! यह क्या, अभी सोयी नहीं! कुछ कहना है क्या!"…

राबयाँ ने सिर हिलाया—"जी।"

"अन्दर आ जाओ राबी, बाहर सरदी है!"

राबयाँ ने दलहीज़ लाँघी कि जहान लाँघ लिया। पहले रोते-रोते शाहजी की ओर देखा, फिर छोटे शाह की ओर और आँखों पर आँचर रख लिया।

"राबयाँ बेटी, अगेतरे-पच्छेतरे सब धिये अपने घरों को जाती हैं। रोना नहीं।"

राबयाँ सिर हिला-हिला बोली, "मैं कहीं नहीं जाती शाहजी, मुझे कहीं नहीं जाना!"

"सुल्तान के लिए हमने अलिये को मना कर दिया है। बेफ़िक्र हो जा राबी!"

राबयाँ ने कदम उठाया और शाहजी की पाटी पर सिर झुका दिया—"मैं मर जाऊँगी शाहजी, मैं आपके बिना नहीं जीती!"

"राबयाँ…!" शाहजी की आवाज़ की थरथराहट से जैसे दिवारें हिल गयी हों!

"लाली इस घर का बेटा है। समझो तुम्हारा भाई है और तुम इस घर की…"

राबयाँ रो-रोकर बोली, "यह न कहना शाह साहिब, यह कभी भी मत कहना। मैंने आपको…"

शाहजी की आँखों के आगे आँधियाँ उड़ने लगीं। एक निगाह भाई की ओर डाली और कांपता हाथ राबयाँ के सिर पर रख दिया—"रावी, दिल में कुछ न रख। कह दे! राबयाँ कह…काशीराम, इससे पूछ लो।"

राबयाँ कांप-कांप थिर हुई। उठी। दुपट्टे से आँखें पोंछीं और पाक-साफ़ आवाज़ में कहा, "शाह साहिब, मैंने आपको दिल में ऐसे धार लिया जैसे भगत मुरीद अपने साँई को धार लेते हैं।"

"यह क्या राबयाँ! तेरे दिल में अनहोनी बरत गयी! यह अनहोनी है, अनहोनी…राबयाँ, यह नहीं होना। यह नहीं होगा।"

छोटे भाई की बात से बेखबर शाहजी ने राबयाँ की ओर देखा तो अधमैली ओढ़नी में दमकते मुखड़े के सामने दिवटे की लौ कुम्हलाने लगी!

मजलिस हमेशा की तरह मंजियों पर सज गयी। आले में जलते दिवटे की लौ काशीशाह को कुछ कम जापने लगी तो मौलादादजी ने नवाब को हांक मारी—"बरखुरदार, ज़रा अपनी बैठक से शमादान उठा लाओ। खैरों से छोटे शाह कुछ पढ़कर सुनाने ही लगे हैं तो उनकी आंखों के आगे अक्खर तो साफ़ चमकें!"

जहाँदादजी आते ही कुछ कहने को बेताब—"बादशाहो, हादसा एक बड़ा बुरा हो गुज़रा है। गुजरात अड्डे पर एक ही मज़बून—शाहपुर के तहसीलदार नादिर हुसैन का क़त्ल कर दिया गया है।"

यकायक हुक्कों की गुड़गुड़ बन्द हो गयी—"बादशाहो, यह क्या कुफ़ वरता? ज़िला शाहपुर तो भरती निशान में बड़ा अव्वल और आला चल रहा है!"

"चलने को तो सरकार का जंगी-क़ानून ही चल रहा है। जंग-फण्ड तो जुरमाना हो गया न! फी खेत दस रुपया और फी मुरब्बा तेंतीस रुपया।"

मौलादादजी ने सिर हिलाया—"यह ज़्यादती है। लोगों के लिए यह सट्ट डाढी है।"

गुरुदित्तसिंह बोले, "सुनने में आया है कि जना जवान जो भरती के लिए अपने को पेश न करे उन्हें दफ़ा १०७-११० के मातहत अन्दर कर देने का हुक्म है। और सुनो, जो जट्ट किसान लड़ाई-लाग न दे, सरकार उसका पानी बन्द कर दे!"

करमइलाहीजी बोले, "असल में सरकार अब होले हथियारों पर तुल

गयी है। बात तो ऐसी हो गयी कि लोकों की बाँहें मैदाने-जंग में और ल
ही थूक। जमीन का परचा-काग़द हो, लेन-देन के टोम्बू-रजिस्ट्री हो, जं
की वसूली पहले ! शाह साहिब, यह सलूक-सरकारी भला कितनी देर चले

"बादशाहो, जंग-लड़ाइयाँ निरे झगड़े तो नहीं न ! ये रगड़े हैं। चलते
तो सालों-साल चलते जायें। शाही मामले !"

जहाँदादजी ने कहा, "बात एक और भी है। जंगपसन्द जंगजू लोगों ने
फ़ौजों में जाना ही जाना, उसका तो सरकार पर कोई अहसान नहीं। बाक़ी
हरजे-जुरमाने—वह भी समझो हकूमत के लिए लाज़िमी।"

मुहम्मदीनजी हँसने लगे—"क्यों न हो जहाँदादजी, आख़िर को फ़ौजी हो
न ! फ़ौजी बन्दों के सबक़-सूत्र बड़े आला। सरकार को ख़ैर-ख़्वाई पुज्ज के !
बाक़ी तंगी तो लोगों की हुई !"

फ़तेहअलीजी का ध्यान कहीं और भटक गया—"बादशाहो, अपने कौमी
शायर लालचन्द 'फ़लक' के पीछे सरकार बड़ा पड़ी हुई है। सुनने में आता है कि
सरकार ने पहले तो उसे एक लाख रुपया और सौ मुरब्बे देने का ऐलान किया।
लालचन्द ने मुण्डी हिला दी—मुझे नहीं चाहिए। तंग आकर सरकार ने दिल्ली-
वाली बम-वारदात में फँसा दिया !"

छोटे शाह बोले, "चौधरीजी, जेहलम करियालेवाले दो-चार बन्दे और भी
इसी लाट-बम्बी क़िस्से में अन्दर थे !"

"वही जी वही, बड़ा धूम-धड़क्का हुआ था। नाई बालमुकन्द को फाँसी
हुई तो अपने पसार में बैठी बालमुकन्द की घरवाली बीबी रामरखी रब्ब को
प्यारी हो गयी। न रोई, न करलाई, बस बैठे-बैठे ख़त्म। हाँ शाहजी, लालचन्द
'फ़लक' के पीछे सरकार क्यों पड़ गयी।"

शाहजी ने सिर हिलाया—"इसकी वजह एक और भी थी। लालचन्द
'फ़लक' ने कहीं जल्से में नज़्म गायी—"दाना-दाना हिन्द का, राली-ब्रादर ले
गया !"

कर्मइलाहीजी हुक्का छोड़ के बैठे गये—"शाहजी, है कोई क़ाबिले-एतराज़
बात इसमें ! वैसे कनक-कमेटी तो लगी हुई है पीछे अपने दानों को। सच पूछो तो
मुल्क अपना और हकूमत पराई। बस यही बात जड़ है खींचातानी की। नहीं तो
शायर लिखते आये और लोग सुनते आये ! स्यालकोटवाले शायर मुहम्मद
इक़बाल साहिब की भी शोहरत तो बड़ी !"

गण्डासिंह बोले—"शाहजी, आपने सुना हुआ है न यह भी—

चलो चल्लिये देश नू
युद्ध करन
ऐ ही आख़ीरी वचन

फरमान हो गया !

बादशाहो, अपने कनाडावाले बन्दो ने यह गीत जोड़ा था !"

नवाब ने शमादान ला काशीशाह के आगे तख्त पर रख दिया तो काशी-शाह किताब खोल पढ़ने लगे—"शाहजहाँ बादशाह के वक़्तों की बात है।

"उन दिनों शाह मियाँ मीर बड़े वलीयुल्लाह माने जाते थे।

"मियाँ मीर शाह अक्सर ग्रमल और शुगल मे रहा करते। हिन्दू-मुसलमान सब उनके दरबार मे आते। गवैयों-रण्डियो की तरफ से नाच-गाना और मुजरा भी होता रहता।

"किसी अहमक ने बादशाह सलामत के आगे शिकायत कर दी कि मियाँ साहिब के यहाँ ओबाश लोगों का हजूम रहता है। इसकी खोज-बीन की जाये।

"सो बादशाह सलामत ने फरमाया कि जब तक हम खुद मौके को न देखें, सुनी-सुनायी पर कुछ न करना चाहेंगे।

"चुनांचे एक दिन बादशाह घोड़े पर सवार हुए और उधर का रुख कर लिया। रास्ते मे दरिया रावी हाईल था। चूंकि पानी कम था, बादशाह सलामत ने घोड़ा पानी मे डाल दिया।

"जब घोडा ऐन दरिया के बीच पहुँचा तो घोड़े ने पेशाब और लीद कर दी। शाह मियाँ मीर दरबार मे बैठे-बैठे अपनी रूहानी आँख से सब देख रहे थे।

"बादशाह दरबार मे पहुँचे तो शाह साहिब ने हँसकर फ़रमाया—'आपके घोड़े ने तमाम दरिया गन्दा कर दिया है। अब हम वज़ू और गुसल कहाँ करेंगे !'

"शाहजहाँ बादशाह हँसे। कहा, 'साँई साहिब, भला घोड़ों की लीद से दरिया पलीत होते होंगे!'

" 'फ़कीर का दिल, जो बामस्त समुन्द्र है, अगर दुनिया की एलाइश से पलीत हो सकता है तो यह क्यों नहीं हो सकता !'

"सुनते ही बादशाह पर असर हुआ और शाहजहाँ ने साँई साहिब की शागिर्दी क़बूल कर ली।

"इतने मे बादशाह सलामत देखते क्या हैं, छज्जू भगत दरबार में आ खड़े हुए। देखते ही मियाँ मीर छज्जू भगत की पेशवाई के लिए उठे और बाइज्जत अपनी गद्दी पर बिठाया।

"बादशाह ने देखा मगर दरियाये-तकब्बुर में ग़र्क़ रहे और खुदा के बन्दे को न पहचाना। इधर शाही सवारी मियाँ मीर शाह के दरबार से रुखसत हुई, उधर बादशाही प्यादा दौड़ा-दौड़ा आन पहुँचा। अर्ज़ की—'साँई साहिब, बादशाह सलामत की हवा बन्द हो गयी है। पेट फूल गया है। और वह बड़े [illegible] हैं।'

"साँई साहिब ने फ़रमाया—'मैं इस मामले मे कुछ नही कर [illegible]

यह तक़लीफ सिर्फ़ छज्जू भगत ही रफा कर सकते हैं।'

"प्यादा भगतजी के आगे पहुँचा तो वह बोले—'मैं एक मामूली टटपूंजिया। दवा और दारू क्या जानूं!'

"प्यादे ने फिर अर्ज़ की—'भगतजी, साँई साहिब का कहना है कि सिर्फ़ आप और सिर्फ आप बादशाह सलामत की तक़लीफ़ को दूर कर सकते है।'

"छज्जू भगत बोले, 'यह साँई साहिब की बन्दानवाज़ी है। वह हर तरह साहबे-कमाल है।'

"हारकर प्यादा फिर साँई साहिब के दरबार मे हाज़र हुआ—'शाह साहिब, बादशाह सलामत बड़ी तंगी में है। कुछ तो करिए!'

"साँई साहिब ने फ़रमाया—'बादशाह सलामत से जाकर कहो कि भगतजी के यहाँ उन्हें प्यादा न भेजना था। उन्हें खुद जाना चाहिए था!'

"हारकर बादशाह सलामत छज्जू भगत के यहाँ पहुँचे। कहा, 'भगतजी, मेरी ख़ता बख़्श दी जाये। बड़ी मुश्किल मे हूँ!'

"छज्जू भगत बोले, 'ऐ बादशाह, तुम्हे अपनी शहंशाही पर इतना गुमान! बताओ, हम जैसे मामूली लोग किसी एक बादशाह के लिए कर भी क्या सकते हैं!'

" 'भगतजी, रहम कीजिए। मेरी परेशानी अब बरदाश्त के बाहर है।'

" 'ऐ शहशाह, यह तो बताओ अगर हमारी दया से राजी हो गये तो इसके एवज में क्या दोगे!'

" 'आप जो कहें महाराज, आप फ़रमाइए।'

"छज्जू भगत हँसे—'ओ भोले, शहंशाह, तुम्हारे पास है ही क्या! फ़कत बादशाहत ही न! वह भी तुम्हारी नही, रियाया की है। चलो, आज के लिए बादशाहत ही क़बूल किये लेते हैं। बादशाहत का पट्टा लिखो और मोहर लगाकर हमारे हवाले करो!'

"बादशाह सलामत शशोपंज में पड़ गये। सोचा, जान के मुक़ाबले माल क्या चीज़ है। जान निकल गयी तो पादशाही, तू यूँ भी चली जायेगी!

"बादशाह ने पट्टा लिख, छज्जू भगत के आगे पेश कर दिया!

"ज्यों ही भगतजी ने हाथ मे पकड़ा, बादशाह के पेट से हवा ख़ारिज हो गयी और पेट हल्का हो गया!

"बादशाह ने मुसाहिबों को हुक्म दिया—'जाने की तैयारी हो।'

"भगतजी ने यह शहंशाही अदा, देखी तो हँसे दिये—'होश में तो हो! अब कैसा हुक्म और कैसी बादशाहत! हिन्दुस्तान की हकूमत का पट्टा तो लिखा जा चुका और वह हमारे हाथ मे है! शाहजहाँ, अब तुम्हारी हस्ती बाक़ी भी है कुछ!'

"बादशाह झुंझलाये—'यह क्या तमाशा है।'

" 'अपने कौल से मुड़नेवाले बादशाह, एक पलड़े पर बादशाहत हिन्दोस्तान की और दूसरी तरफ गन्दी हवा का एक इख़राज। इस पर भी तुम घमण्ड और तकब्बुर का शिकार होकर उन लोगों का मुकाबला करने की हिमाक़त करते हो जो खुदा से हम-पंजा हैं। ऐ बादशाह, चले जाओ हमारी आंखो के सामने से और उठा लो अपनी सल्तनत का टण्डीरा भी।'

"भगतजी ने पट्टे के कागज़ को पाश-पाश कर दिया! बादशाह पानी-पानी होकर भगतजी के क़दमों पर पड़ गया—'मैं अपनी गलती और गुनाह दोनो समझ गया। इस नाचीज़ की ख़ता माफ की जाये!'

"भगतजी ने आंखें मूंद लीं—'माफी देने के हकदार सांइयों के सांई मियां मीर है। मैं नही!' "

"वाह-वाह! पीर-फ़कीर, साधु-संन्यासियों में एक तरफ़ जी भरकर हलीमी, दूसरी तरफ ऐसा रौब-दाब जो बादशाहो-शहंशाहों को भी न गरदाने!"

काशीशाह भक्ति-भाव मे जैसे छज्जू भगत के चबारे ही जा पहुंचे। सिर हिलाकर कहा, "कहावत मशहूर है—जो सुख बल्ख न बुखारे, वह सुख छज्जू के चबारे। शाह मियां मीर और छज्जू भगत की दोस्ती-मुहब्बत-सलूक तो दुनिया मे मशहूर। एक-दूसरे की सोहबत में न इन्हे दिन दिन लगता, न रात रात लगती। दोनो पर रब्ब की बख़्शश। बस, ज़िक्र मे खोये रहते।

"एक दिन शाह मियां मीर वज्दोहाल में बैठे थे! चौंककर उठे और छज्जू भगत के चबारे की ओर चल पड़े।

"पहुंचे तो देखा छज्जू भगत चौके में खाना बना रहे है। शाह मियां मीर ने चौके की दलहीज के बाहर खड़े हो पूछा—'अन्दर आ जाऊं!'

"छज्जू भगत ने कड़ी निगाह से देखा और सिर हिलाकर कहा, 'अन्दर आ ही जाते तो किसी को क्या इन्कार था! पर अब आप बाहर ही रह जाइए! मीर साहिब, पीर-फकीरों की भी जात-पांत होती है क्या! आपके दिल में यह ख्याल गुजरा तो कैसे गुज़रा! अगर आपके दिल में इसने सिर उठाया है तो यहां यह पहले है!'

"सुनकर मियां मीर बड़े हैरान-परेशान। दलहीज़ पर सिर झुका माफ़ी मांगी—'गुनहगार हूं भगतजी, जो सज़ा चाहें, दें। हाज़िर हूं!'

"छज्जू भगत का कण्ठ भर आया। भर्राये गले से कहा, 'मियां मीर, तुमने एक और ख़ता कर डाली! मेरे दोस्त, अन्दर आ के मेरे गले न लग गये तुम! लानत तो मुझ पर है! मुझसे बड़ा मेरा चौका समझ लिया! सांइया, मुहब्बत में यह गुनाह है गुनाह! इस एक लमहा में तुमने हम दोनों के बीच समुद्र ला बहाया है। अब मैं इधर और तुम उधर!'

"मियाँ मीर गीली आँखों से देर तक छज्जू भगत को देखा किये। फिर सलाम किया—'अपना गुनाह और आपकी सजा दोनों क़बूल करता हूँ! आपका मुरीद हूँ। मुरीद ही रहूँगा। न पन्न को भी भूलूँगा, न विसराऊँगा!' यह कहकर मियाँ मीर देखते रहे। देखते रहे। फिर सलाम किया और रुखसत हो गये।

"छज्जू भगत बस पनियारी आंखों से रास्ते की ओर देखते रहे, जब तक मियाँ मीर ओझल न हो गये।"

जहाँदादजी बोले, "शाह साहिब, दूध-मक्खन की तरह दिल के दर्पण में भी बाल आ जाये तो ख्याल मैला हो ही जाता है!"

शाहजी ने सिर हिलाया—"इसकी वजह कुछ और भी थी। साँई साहिब की नशा-ए-मुहम्मद मे मख्मूर आँख जब छज्जू भगत पर पड़ती तो उन्हें ऐसा मालूम देता जैसे उन पर इलाही बरक़तें बरस रही है। भगतजी जान गये कि जब तक मियाँ मीर और वह एक-दूसरे की सोहबत मे रूहानी दौलत से फैज़याब होते चलेंगे, साहिबे-कमाल को भूल जायेगे!"

गण्डासिंह का ख्याल कहीं और भटका हुआ! पहले पगड़ी ठीक की, फिर खेस की 'बुक्कल' खोली। बाँहें फैला दुबारा ओढ ली और सिर हिलाकर कहा, "शाहजी, यह तो बात हुई रूहानी इश्क की, पर जेकर कोई मुझसे पूछे तो आप-वाला बादशाही प्रसंग सरकार फिरंगी की ओर चल निकला है! होगा अब यह कि ग़दरी और इन्कलाबियों ने मिलकर सरकार का झाड़ा-मूत्र बन्द कर देने हैं। भावें टोम्बू लिखवा लो शाहजी, हकूमत का पट्टा देसी रियाया के हाथों मे पहुँचकर रहेगा। एक बार तख्त-ताज से होली हुई सरकार, फिर खलकत अपनी नहीं रुकती। नारा एक ही बुलन्द हो के रहेगा—आवाजे-खलक को आवाजे-खुदा समझो।

"कहते हैं सूरज को जन्मा शनीचर और उसके सत्त-बल का सोलहवाँ हिस्सा कम हो गया। सरकार की भी यही हालत। उधर जंग, इधर इन्क़लाबिये गदरी शहीदी पर!"

शाहजी कई देर सिर हिलाते रहे—"बादशाहो, दशम पातशाही गुरु गोबिन्द सिंहजी महाराज ने मुगल बादशाह औरंगजेब के जोर-जुल्म देखकर उसे खत मे लिखा—

चूँ कार अज हमाँ हीलते दरगुजश्त।
हलालस्त बुर्दन ब-शमशीर दस्त!!"

"जब दूसरे सब रास्ते कारगर न हो सकें तो जुल्म के खिलाफ तलवार उठा लेना जायज है!"

"वाह-वाह, गुरु साहिब, आपकी बहादुरी की वाह ही वाह!"

ज़िन्दगीनामा : एक
ज़िन्दा रूख

ज़िन्दा रूख : इस शताब्दी के पहले मोड़ पर लोक-संस्कृति और इतिहास की परतों से उभरा कृष्णा सोबती का नया उपन्यास।

ज़िन्दा रूख : एक धरती, इतिहास का एक टुकड़ा, एक काल खण्ड, एक चतिहर जीवन-शैली।

ज़िन्दा रूख : सिर्फ़ एक भूमिका आनेवाली छटपटाहट, टकराहट और तिड़कन की जिसने आखीर को धरती के टुकड़े कर दिये। दरियाओं को बाँट दिया और ज़िन्दादिल लोक-संस्कृति को विभाजित कर दिया।

ज़िन्दगीनामा : दो
इन्क़लाब ज़िन्दाबाद

"आज़ादी हमारा जन्मसिद्ध अधिकार है। हम उसके लिए लड़ेंगे, मरेंगे, लेकिन उसे लेकर रहेंगे।"

प्रथम महायुद्ध की ठण्डी राख में से क्रान्ति की चिंगारी सुलग उठी। गांव, कस्बे, सूबे—समूचा देश उठ खड़ा हुआ विदेशी सत्ता के खिलाफ एक दीवार बनकर। एक भीड़ एक जुट्ट। लाठियाँ, गोलियाँ, उम्र-क़ैद और फांसी—सब ज़ोर-ज़ुल्म उस इन्क़लाबी भावना को नहीं कुचल सके, जो मानवीय मन की सबसे ऊँची और सुच्ची धरोहर है।

स्वाधीनता की इस लड़ाई में हमारे साँझे नारों, साँझी ज़िन्दा-बादियों को किन साम्राज्यवादी तरकीबों और घुण्डियों ने बांट दिया और किस तरह हिन्दुस्तान के नक्शे पर भूगोल और इतिहास दो हो गये—इसे पढ़िए ज़िन्दगीनामा : दो में।